परिवर्तनकामी रचनाक संवाहक मैथिली त्रैमासिक



जुलाइ-सितंबर, 2008
पूर्णांक : 28 अंक : 2 वर्ष : 10

एहि अंक मे

सम्पादक
अनलकांत

संयुक्त-सम्पादक
श्रीधरम/रमण कुमार सिंह/अविनाश

कला सम्पादक
अशोक भौमिक

प्रबंध सहायक : **दीपक कुमार दिनकर**
समस्त छाया-चित्र राज मोहन झाक सौजन्य सँ
रेखांकन : **आर. पी. शर्मा**
शब्द संयोजन : **सरिता रौतेला**



संपादकीय कार्यालय :
सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन एक्सटेंशन-II, गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
ई-मेल : antika1999@yahoo.co.in
फोन : 0120-6475212

मूल्य : एहि अंकक : 30 टाका
सामान्य (एक प्रति) : 20 टाका, **वार्षिक :** 80 टाका
संस्था एवं पुस्तकालय : 100 टाका
विदेश : नेपाल : 300/- अन्य देश : 25 डालर/15पाउंड
आजीवन : 2100 टाका

चेक/ड्राफ्ट ***अंतिका*** क नाम सँ रहय।

अंतिका सँ संबंधित सभ विवादास्पद मामिलाक न्याय क्षेत्र दिल्ली रहत। रचना मे व्यक्त विचार सँ संपादकीय सहमति अनिवार्य नहि।

स्वामी-प्रकाशक-मुद्रक : **नंदिनी**
153 बी/पाकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95 सँ प्रकाशित आ तरुण प्रिंटर्स, 9267, शाही मोहल्ला, वेस्ट रोहतासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32 सँ मुद्रित।
सम्पादक : **अनलकांत**



नवीनतम पुस्तकें

उपन्यास

मोनालीसा हँस रही थी : अशोक भौमिक मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 80.00

कहानी-संग्रह

रेल की बात : हरिमोहन झा मू. सजिल्द 125.00 पे.बै. 70.00
छछिया भर छाछ : महेश कटारे मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 100.00
कोहरे में कंदील : अवधेश प्रीत मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 100.00
शहर की आख़िरी चिड़िया : प्रकाश कान्त मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 100.00
पीले काग़ज़ की उजली इबारत : कैलाश बनवासी मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 100.00
नाच के बाहर : गौरीनाथ मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 100.00
आइस-पाइस : अशोक भौमिक मू. सजिल्द 180.00 पे.बै. 90.00
भेम का भेरू माँगता कुल्हाड़ी ईमान : सत्यनारायण पटेल मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 90.00
कुछ भी तो रूमानी नहीं : मनीषा कुलश्रेष्ठ मू. सजिल्द 200.00 पे.बै. 100.00
बड़कू चाचा : सुनीता जैन मू. सजिल्द 195.00

कविता-संग्रह

या : शैलेय मू. 160.00
कुर्आन कविताएँ : मनोज कुमार श्रीवास्तव मू. 150.00
कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी : भोलानाथ कुशवाहा मू. 225.00
जीना चाहता हूँ : भोलानाथ कुशवाहा मू. 300.00
लाल रिब्बन का फुलबा : सुनीता जैन मू. 190.00
लूओं के बेहाल दिनों में : सुनीता जैन मू. 195.00
फैंटेसी : सुनीता जैन मू. 190.00
दु:खमय अराकचक्र : श्याम चैतन्य मू. 190.00

इतिहास, स्त्री-विमर्श और चिंतन

डिजास्टर : मीडिया एण्ड पालिटिक्स : पुण्य प्रसून वाजपेयी मू. सजिल्द 300.00 पे.बै. 160.00
एंकर की नज़र से : पुण्य प्रसून वाजपेयी मू. सजिल्द 350.00 पे.बै. 175.00
पालकालीन संस्कृति : मंजु कुमारी मू. 225.00
स्त्री : संघर्ष और सृजन : श्रीधरम मू. 200.00
अथ निषाद कथा : भवदेव पाण्डेय मू. 180.00

शीघ्र प्रकाश्य

बादल सरकार : जीवन और रंगमंच : **अशोक भौमिक**
किसान और किसानी : **अनिल चमड़िया**
माइक्रोस्कोप (उपन्यास) : **राजेन्द्र कुमार कनौजिया**
पृथ्वीपुत्र (उपन्यास) : **ललित** अनुवाद : **महाप्रकाश**
मोड़ पर (उपन्यास) : **धूमकेतु** अनुवाद : **स्वर्णा**
मोलारूज़ (उपन्यास) : **पियैर ला मूर** अनुवाद : **सुनीता जैन**
क्या कोई है (कहानी-संग्रह) : **शैलेय**

एक साथ हिन्दी, मैथिली में सक्रिय
आपका प्रकाशन

संपादकीय

कहिया पहिचानब अपन नायक केँ

हमरासभ एहि मामिला मे सेहो बड़ पछुआयल छी जे अपन नायकक सही पहिचान नइँ क' पबैत छी। ब्राह्मणवादी समाज मे प्रतिष्ठित बहरिया अलौकिक-काल्पनिक देवताक तुलना मे निम्नवर्गीय समाज मे प्रतिष्ठित स्थानीय लोकदेवता सभ जेना सब दिन कम महत्त्व पौओलनि, तहिना मिथिला भूमि सँ जुड़ल वास्तविक नायकक अवहेलना करबा मे हमरासभ कहियो कनेको लाजक अनुभव नइँ कयलहुँ। अपना ठाँ ब्राह्मणवादी कर्मकाण्ड आ आडंबरे टा नइँ पोसायल, पेटपोसना-पतचटा आ सत्तासेवी सेहो किछु बेसीए रहलाह। हमरासभ हरेक शिवसिंहक तुलना मे विद्यापति केँ कम महत्त्व देलहुँ अछि। कोनो टा मर्यादा पुरुषोत्तम आकि दुष्यंतक महिमागान करबाक तुलना मे सीता-शकुन्तलाक दर्द केँ छोट क'क' देखब हमरा लोकनिक खानदानी आदति रहल अछि। दरभंगा नरेशक वंदना मे लीन जाहि चंदा झाक यशोगान करैत एत'क पागधारी लोकनि नइँ अघाइ छथि, ओही नरेशक कुकृति आ आततायी प्रवृत्तिक आलोचक-निंदक किसान आंदोलन सँ जुड़ल संघर्षशील समाजसेवी लोकनिक संगहि यात्री-नागार्जुन केँ भठियारा बुझैवला एतहिक कुलीन वर्गक लोक छलाह। एहना ठाम समस्त कथा-उपन्यासक संगहि खट्टर कका सन चरित्रक माध्यमे एत'क ब्राह्मणवादी मिथ्याडंबर, रूढ़ि, अंधविश्वास आ पतनशील प्रवृत्ति सभ पर चोट कर'वला हरिमोहन झाक महत्त्व केँ कम क'क' आँक'वलाक संख्या तँ निश्चये बड़ पैघ रहल अछि। हुनक पाठकक जे विशाल वर्ग रहल अछि ओ रसिकताक प्रेमी छल, हुनक विचारक पक्षधर नइँ। विरोध मे हल्ला नइँ कर'वला शांत-सुशील पाठक सेहो 'मनोरंजन' चाहैवला पाठक रहलाह, हरिमोहन बाबूक विचारक पोषक नइँ। तखन के आ कतेक गोटे एहन हेताह जे हरिमोहन झा केँ एहि समाजक महानायकक रूप मे देखबाक साहस क' पाओत? स्त्री-विरोधी याज्ञवलक्यक छिया-पुआक एहि धरती पर स्त्रीगणक शिक्षा, सम्मान आ बराबरीक मुद्दा केँ पहिल बेर हरिमोहने बाबू महत्त्व देलनि अछि।

अनेक विद्वान आ समाजशास्त्री मिथिलाक पछुआओल होयबाक पाछाँ जे कारण सभ तकलनि अछि, ताहि मे ब्राह्मणवादी धार्मिक रूढ़ि-आडंबरक संगहि स्त्रीक प्रति प्रतिकूल दृष्टि केँ सेहो रेखांकित कयलनि अछि। निश्चये जातिवाद, कृषिक प्रति सम्यक दृष्टिक अभाव, व्यवस्थाजन्य त्रुटी सभ सेहो एहि समाज केँ पाछु ल' गेल अछि। मुदा जेँ कि हरेक लेखकक लेखनक एक टा सीमा होइ छै आ ई कतेक बेर, कतेको कारणें, लेखक केँ स्वयं सेहो निर्धारित कर' पड़ैत छै— से हरिमोहनो बाबूक रहलनि अछि। निश्चये हरिमोहन बाबूक साहित्य मे किसान-मजदूर, दलित आ अल्पसंख्यक लोकनि केँ तेना जगह नइँ भेटलनि जेना अमूमन एक टा कालजयी लेखकक रचना मे भेटबाक चाही। मुदा एकरा मिथिलाक तत्कालीन समाजिक परिप्रेक्ष्य मे देखल जाय तँ ई एक टा आरोप नइँ, तथ्य मात्र रहि जाइत अछि। किएक तँ मिथिलाक सब सँ पैघ समस्या हमरा जनैत आइयो ब्राह्मणवादी धार्मिक रूढ़ि, मिथ्याडंबर आ ओहि सँ जुड़ल अन्य पतनशील प्रवृत्ति सब सँ मुक्तिक उपाय ताकब थिक। भाग्य आ भगवान भरोसे जीब'वला किसानो मजदूर एत' सर्वाधिक एही समस्या सँ नाभिनालबद्ध छथि। तेँ एक टा रचनाकार जँ अपना केँ एहन खास समस्या पर चोट करबाक लेल केंद्रित क' लैत छथि, तँ एकरा हुनक विशिष्टताक रूप मे देखल जयबाक चाही।

•

एहि अंक केँ जेना निकालबाक योजना छल, से कोसीक आयाचित बाढ़िक कारणें संभव नइँ भ' सकल। पछिला दू मास बाढ़ि सँ जान बचाक' निकलि सकल परिजनक इलाज मे चलि गेल। समस्या एखनो यथावत अछि। भविष्य अनिश्चित, मुदा जेँ कि मृत्यु-बाढ़ि आदिक बादो जीवन स्थगित नइँ होइत अछि, तेँ ओकर संघर्ष सेहो जारी अछि। अनेक तय कयल सामग्री सेहो नइँ द' पाओल, मुदा हरिमोहन बाबूक जीवन आ साहित्यक मूल उद्देश्य केँ पाठक धरि पहुँचेबाक एक टा विनम्र प्रयास जरूरे देखाओत। प्रस्तुत सामग्री मे सँ पाँच गोट लेख (आरसी प्रसाद सिंह, सुधांशु शेखर चौधरी, कुलानंद मिश्र, हेतुकर झा आ मन मोहन झा लिखित जीवन-वृत्त) 'हरिमोहन झा अभिनंदन ग्रंथ' सँ आ मूल्यांकनपरक किछु लेख 'आरंभ' सँ साभार लेल अछि। बाकी आलेख केर आलावा पत्र आ डायरी अंश सभ पहिले बेर पाठकक सोझाँ आबि रहल अछि। आशा अछि जन्मशताब्दी वर्षहुँ मे आबि पाठक लोकनि अपन वास्तविक नायक केँ पहिचानैक प्रयास करताह। जँ से भेल तँ हरिमोहन झाक नामे कोनो डाक टिकट जारी करब आकि कोनो सड़कक नामकरण करब आकि अन्य एहेन-एहेन प्रयासक फल सँ बेसी पैघ सार्थक प्रतिफल यैह हैत।

•

एहि बीच 'अंतिका' परिवार सँ गहण रूपेँ जुड़ल वरिष्ठ कथाकार बलराम, जिनक कथा-संग्रह 'दकचल देबाल' अंतिका प्रकाशनक पहिल पोथीक रूप मे प्रकाशित भेल छल, दिवंगत भ' गेलाह। ओ पछिला किछु वर्ष सँ गंभीर रूपेँ बीमार छलाह।

शेष कुशल अछि

पिता जनार्दन झा 'जनसीदन' सँ हरिमोहन बाबूक नियमित पत्राचार होइत छलनि। एत' प्रस्तुत सात गोट पत्र हुनक व्यक्तित्वक किछु नव आयाम सँ परिचय करबैत अछि। ई पत्र सर्वप्रथम 'अंतिका'क माध्यमे पाठकक सोझाँ आबि रहल अछि।

(ओहि साल गामक पुरना मकान खसलाक बाद नव पक्का मकानक निर्माण भेल छलनि)

पटना
3.2.36

सविनय प्रणाम।

पत्र पहुँचल। हमरा लोकनि आब कुशल पूर्वक छी। मनीआर्डर 50/-क लिखल अछि। कल्हुका डाक सँ जायत। आशा करैत छी जे कोइला आबि गेल होयत। सभ टा लगा देने एक लाखक भट्ठा नीक जकाँ पाकि सकैत अछि, किन्तु कारीगर होशियार रह'क चाही। भट्ठा काँच रहि गेने सभ कयल-धयल व्यर्थ भ' जाइत छैक। अतएव जाहि सँ ईंट खूब नीक जकाँ पाकय तकर यत्न करबाक चाही। लकड़ी कोइला बेसीएक देल जाइक, कम नहि। कारीगर केँ कहि देबैक जे जतेक Ist class ईंट बहरायत ताहि हिसाब सँ ओकरा किछु कमीशन देबैक। श्री उपेन्द्र ककाक भट्ठा जे लगौने रहनि से खूब पकलनि। यथासंभव शीघ्रे पाजाबा लगैबाक प्रबन्ध कयल जाय। यदि शिवरात्रि धरि पजेबाक बन्दोबस्त भ' जाय जँ हमहूँ दू-एक दिनक छुट्टी ल'क' आबि जाइ। लोमाक पं.जी केँ एकर किछु तजुरुबा छनि। यदि किछु दिन आबिक' देखतथिन, नीक होइत। चनौर वला फेर गाम पर जाय बैसि नहि रहथि तकर ताकीद रखबनि। विशेष कुशल समाचार लिखल जाय।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•

(स्वास्थ्य लाभक लेल हजारीबाग बदरीदत्त शास्त्री ओहिठाम रहबाक व्योंत करैत)

पटना
29.7.1944

सविनय प्रणाम

आशा करै छी जे आब अपने पूर्णतया नीरोग हैब। आदेशानुसार (35+15=50) जा रहल अछि। महंथ जी सँ रसीद लाब'क हेतु श्री इन्द्र केँ कहि देने छियनि। गोपाल जी, लखन जी तथा फूल दाइ गाम जा रहल अछि। हमहूँ आबितहुँ, किन्तु देहक चेष्टा नहि बदललाक कारण विचार होइत अछि जे थोड़ेक दिन स्वास्थ्यप्रद स्थान मे रहिक' देखी। अतएव किछु दिनक हेतु हजारीबाग मे रहिक' देखै छी जे केहन फायदा पहुँचैत अछि। मंदारक वकील साहेब जे उधार देलनि से श्री इन्द्र सँ ज्ञात हैत। श्री चन्द्र अपना ओहि ठाम आग्रहपूर्वक बजबैत छथि, किन्तु ओतय शहरक समीप रहने तादृश लाभ नहि हैत। हजारीबाग पहाड़ी स्थान छैक। ओत' स्वास्थ्य सुधारक हेतु उपयुक्त छैक। यदि एक मास मे चेष्टा बदलि जाय, पुन: कार्य करबा योग्य भ' जाइ तँ खर्च और हैरानी सार्थक भ' जायत। खर्च ओतय रहने पटना सँ कमे पड़त। किएक तँ डेराक किराया बाँचि जायत। लकड़ी, दूध, तरकारी सस्त भेटत। केवल जैबा मे 10 टाका खर्च लागत। एक शास्त्री जी (पं. बदरीदत्त शास्त्री, सम्पादक समाजबंधु, बटमबाजार, हजारीबाग) ओतय डेरा आदिक प्रबन्ध लगा देताह। यदि ओतय गेने कोनो असुविधा वा क्लेश बुझि पड़त तँ पहिने चलि आयब। श्री इन्द्र केँ पैंट कमीज आदि बनबा देलियनि, परन्तु पुलिसक इंटरव्यू मे जेबाक विचार नहि भेलनि। कहलनि जे दौड़बा आदिक अभ्यास छूटल अछि। ससुर लिखै छथिन जे सबौर वला काजक कम संभावना, तेँ अन्यत्र यत्न करथि। एतय दू-एक टा तात्कालिक कार्य 75/-क भेटि जेतनि किन्तु से हिनका पसंद नहि। हिनका केवल कलकत्ता देखबाक लौल लागल छनि। एखन बहुत लड़कमति छनि।

पतड़ा एक टा कोनहुना भेटि गेल से पठा रहल छी। लोमोक पं. जी कहने छलाह, परन्तु हुनका हेतु नहि भेटि सकल। जौं अतिरिक्त भेटि जाय तँ पठा देबनि। ई आदमी नाँचर अछि और घर जाय लेल कनैत अछि, तेँ श्री इन्द्र केँ कहलियनि अछि जे 20 दिनक (बीस दिनक दरमाहा द'क') लोमा विदा क' देथिन। श्री माय ग्रहण स्नान सँ बचि गेलीह, किएक तँ श्री श्यामनारायण कका कहै छलाह जे कतेको पिचाक' बेहोश भ' गेल जाहि सँ पाछाँक टिकट देब बंद क' देलकैक। यदि हम मंदार वा राजगीर रहब तँ हुनको ल' जेबनि। से विचार गाम ऐला पर होयत।

भोजनक संयम पर पूर्ण ध्यान राखब। जाहि सँ पेट गड़बड़ नहि हो तेना भोजन करब। कुर्थीक झोर, दूध, गहूमक रोटी, घेरा-परोरक तरकारी खायब। तेल, अँचार, मसाला, मिरचाइ और गर्म, तरल, गरिष्ठवला सँ परहेज राखब। साँझ मे हलके आहार करी से नीक। गोपाल जी सर्दी नहि गीजय आ रौद मे नहि बूलय से कहि देबैक। एहि समय मे ई बहुत दु:खित पड़ै अछि। ऊपर कोठा पर नहि दौड़ैए देबैक। हिंदी, अंग्रेजी और हिसाबक किताब नेने जाइत अछि। नियमित रुटीन बना देबैक तँ पढ़य मे लागल रहै जायत।

कुशल समाचार आदि शीघ्र सूचित कयल जाय।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•

पटना
2.3.45

सविनय प्रणाम

पत्र द्वारा समाचार ज्ञात भेल। हम फगुआक छुट्टी मे गाम नहि आबि सकलहुँ। किएक तँ चारिए दिनक छुट्टी छल जाहि मे दू दिन बाट मे बीतल, दू दिन लोमा मे। दू सप्ताहक बाद ओतय सँ पटना ऐबाक विचार भेल छैक। हमर स्वास्थ्य पुन: ह्रस्त भेल जा रहल अछि और फेर कतहु स्वास्थ्यप्रद स्थान मे जैबाक आवश्यकता अनुभव क' रहल छी।

कन्यादान आब एहि शुद्ध मे नहि भ' सकल। S.D.O. वैशाली मे जे साहित्य सम्मेलन कर'क चाहैत छथि ताहि मे पढ़'क हेतु सभापतिक भाषण अथवा साहित्यिक संस्मरण तैयार करबैक। सभाक मंत्री एहि आशयक पत्र लिखने छथि जे पं. जीक भाषण 15 मार्च धरि तैयार भ' जाइनि जे समय पर छपबा सकी। हम लिखि देने छियनि जे ओ अपने कोनो मनोरंजक संस्मरण (द्विवेदीजीक समकालीन) पढ़िक' सुना देबनि। संभव जे ओहो लोकनि एहि विषय मे कोनो पत्र लिखथि। श्री इन्द्र लिखै छथि जे दू टा ट्यूशन क' रहल छी। ससुर जाहि कार्य द' कहने रहथिन तकर की भेलनि से नहि लिखैत छथि। दू-एक दिन मे मार्चक हेतु 50 टाका मनीऑर्डर सँ जायत। विशेष कुशलादि लिखल जाय।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•

(पहिने पटना सँ गाम जयबाक लेल पूसा रोड सँ बैलगाड़ी क' गाम अबैत-जाइत छलाह)

पटना

1.10.45

सविनय प्रणाम।

पत्र द्वारा कुशल ज्ञात भेल। हमरा लोकनि शुक्र दिन 2 बजे पूसा रोड उतरब। अतएव जकर नीक बैलगाड़ी बूझि पड़य से शुक्र दिन (ता. 5 केँ) भोर मे रवाना करबा देब जे दू बजे धरि स्टेशन पहुँचि जाय। बहलमान केँ कहबैक जे डाकखाना लग गाड़ी लगौने रहत। यदि कदाचित दिन मे नहि आबि सकी तँ रातिओ मे बाट देखि लेबय कहबैक। जे आदमी होशियार हो और बदमाश नहि हो तकरा बहलमान मे पठायब। संग मे लालटेन रहैक तँ और बढ़िया। और ऐबा मे देरी रहैत तँ काल्हि रुपया पठा दितहुँ। परन्तु आब तँ मनीऑर्डर सँ पहिने हम अपनहि पहँचि जायब। यदि गाड़ीक बन्दोबस्त नहि भ' सकय तँ ककरो द्वारा पूसा रोड डाकखाना मे सूचना देया देब। तखन हम ओतहि गाड़ी ठीक कय लेब।

आब क्रमश: सभक स्वास्थ्य ठीक भेल जा रहलैक अछि। यदि एहि बीच मे कोनो विघ्न बाधा नहि भेल तँ शुक्रक राति मे गाम पहुँचै जायब।

श्री माय तथा सावित्री बहिन केँ प्रणाम। विशेष भेट भेला पर।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•

पटना

21.7.1946

सविनय प्रणाम

श्री सूर्यकान्त द्वारा कुशल समाचारादि ज्ञात कय मन प्रसन्न भेल। हमरा लोकनि उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करैत छलहुँ, ताबत ई लोकनि पहुँचलाह। पत्र द्वारा तथा मौखिक रूप सँ बहुतो वृत्तांत ज्ञात भेल। एहूठामक समाचार सुरजू द्वारा विदित हेबै करत। माय नित्य गंगास्नान करैत छथि। ओझाजी प्रसन्नतापूर्वक रहैत छथि। आइ किछु सर्दी सँ क्लेशित भ' गेल छथि। दवाइ द' रहल छियनि। श्री इन्द्र आइ ललनजी केँ ल'क' सबौर गेलाह। सरयुगक आबि गेला सँ बहुत उपकार भेल। दरमाहा जतेक अपने लिखब से हम देल करबैक। एहि बेर वर्षाक प्रचुरता हैबाक लक्षण छैक। तँ बटाइदार सभ केँ चारूकात सिडरा बाओग करय कहबैक। (बकौल कैने दहा जेतैक से संभावना।) गंगाजी मे ततेक बाढ़ि आबि गेलैक अछि जे शहर मे पानि ऐबाक आशंका भय रहल छैक। वस्तु मात्र दुष्प्राप्य भ' रहल छैक। जाही वस्तुक दाम सरकार घटाबय चाहैत छैक सैह वस्तु दोकानदार सभ बाजार सँ गायब क' दैत छैक। जेना दियासलाइक सरकारी रेट दू पैसा भेलैक तहिया सँ सलाइए गायब। देहात मे चोराकय बेसी दाम पर बेचैत अछि। हिन्दुस्तानक अधिकांश लोक चोर तथा बेइमान भ' गेल अछि। तँ ई दुर्दशा छैक। सरकारक डर सभ केँ उठि गेलैक अछि। तँ आइ डाक पिउन सभ मिलिक' हड़ताल करैत छैक तँ काल्हि रेलक कर्मचारी सभ काज बंद करबाक धमकी दैत छैक। पटना मे तीन दिन सँ मेहतरक हड़ताल जारी अछि। आब छोटका कर्मचारी सभ यैह सिखैत गेल अछि। जकरा मजदूरी बढ़बैबाक होइ छैक से आपस मे एकमत कय हड़ताल क' दैत अछि। अस्तु। एखन चिट्ठी, पार्सल मनीऑर्डर आदि सब बंद छैक। श्री सूर्यकान्तक मारफत 50/- पठा रहल छी से पहुँचत। एकरा अतिरिक्त निम्नलिखित वस्तु जा रहल अछि—नवका पंचांग-2, पेंसिल-3, बढ़ियाँ रोशनाइक गोली-3, सनलाइट साबुन-1, चीनी-S1, अलूचा-14, आम-16। जखन माय जैतीह (मधुश्रावणी मे) तखन चीनी और आटा हुनका संग पठा देब। अन्यान्य आश्रमोपयोगी वस्तुओ ओ अपना संग नेने जयती। मायक विचार छैक जे ओझाजी केँ संग लय आगामी सोमक दिन (29 ता. केँ) एतय सँ विदा हैतीह और सोमक राति मे पूसा रोड उतरतीह। अतएव सोम दिन 2 बजे बेरिया मे एक टा बैलगाड़ी रवाना करबा देबैक जे 8 बजे राति धरि पूसा रोड स्टेशन पहुँचि जाय। ओही राति प्राय: भारोदोरक वस्तु उतरतनि। अन्हरोखे विदा भय ई लोकनि मंगल दिन 10 बजैत गाम पहुँचि जैतीह। सुरजू केँ सभ बात नीक जकाँ बुझा देलियनि अछि से कहताह। विशेष कुशलादि सूचित कैल जाय।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•

पटना

21.11.1946

सविनय प्रणाम

हम गत बुधवार (14 ता.)क राति मे एक्सप्रेस ट्रेन मे सवार भ' बृहस्पति (15ता.)क प्रात:काल प्रयाग पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम रानी साहिबा एक मास सँ बेसी संगम पर डेरा देने छलीह। गोट पचासेक खीमा छलनि। चारूकात कनात सँ घेरल। ताहि मे सकल परिवारक संग मास करैत छलीह। यज्ञ मे अपन समस्त आत्मीय कुटुम्ब तथा दूर-दूरक सम्बन्धी पहुँचल छलथिन (जेना उपनयनक अवसर पर होइत छैक)। बेटी, नाति, नतिनी, जमाय, भागिन, भगवानजीक सासु (अपन धियापुताक संग), माधवजीक सासु (तनिको धियापुता) इत्यादि-इत्यादि। सभ रावटी स्त्री-पुरुष तथा कच्चा-बच्चा सँ भरल छल। सुलतानगंजक कुमार कृष्णानन्द सिंह आयल छलथिन। एक तम्बू मे हुनक परिवार। एक तम्बू मे भीमनाथ बाबू, एक मे चन्द्रमोहन बाबू, एक मे रघुनाथ बाबू। एवं प्रकारें सभक हेतु इंतजाम छल। हमरो एक तम्बू मे डेरा पड़ल। बड़े आनन्द सँ समय बीतल। बालु पर गंगाजल मे भानस होइत छल। बड़का-बड़का टोकना मे। सभ गोटे एक संग बैसि खाइत छलहुँ। हमरा सभक कैम्प मे राजमाता स्वयं अपने हाथ सँ बिखजीक सामग्री (मेवा, मधुर आदि) साँठि क' पठबैत छलीह। हुनक बहिनोय सभ सेवा मे हाजिर। हद सँ बेसी अपनैती देख' मे आयल। दशमी केँ तुलसीव्रतोद्यापन तथा एकादशी केँ एकादशीक उद्यापन रहनि। दरिद्र कुटुम्ब नारायणक दृश्य ओहू ठाम खूब देखबा मे आयल। दू-एक टा कुटुम्ब केँ छोड़ि बाकी सब लेहि-लेहि करैत। घर-घर देखा, एके लेखा। घड़ी राति शेष रहैत छलैक तखने सँ स्त्रीगणक झुण्ड मे गंगामाइक गीत उठि जाइत छल, खूब टहंकार सँ। यज्ञक आचार्य छलथिन पं. दयानाथ झा। हमर नाम सूनि प्रयाग विश्वविद्यालयक डॉ. उमेश मिश्र आदि भेट करय ऐलाह और 17 ता. केँ मीटिंग आयोजन कय भाषण देबाक अनुरोध कैलनि। परंच ओहि दिन ओतय रहि गेने काशी नीक जकाँ देखबाक अवसर नहि भेटैत, तँ हम स्वीकार नहि कय सकलियनि और 10 बजे दिनक ट्रेन सँ सतीश बाबू, रघुनाथ बाबू ओ गंगा बाबू (राजा साहेबक बड़का जमाय)क संग

काशीक हेतु प्रस्थान कैल। विदा होमय काल राजमाता एक थार मे पान, सुपारी, जनेउ तथा 101/- ल'क' बिदाइ कयलनि। 36/- सेकेंड क्लासक ऐती-जैती रेलभाड़ा, तथा 65/- बिदाइक मद मे। कंट्रोलक कारणें सभ कुटुम्ब आत्मा कैँ नगदीए कैल गेलनि अस्तु। काशी मे हमरा लोकनिक हेतु श्यामा मंदिर मे रहबाक प्रबन्ध भेल। ई रानी चन्द्रावतीक बनवाओल छनि जाहि मे बहुतो छात्र ओ पंडित कैँ आश्रय भेटल छनि। अध्यक्ष छथिन स्वर्गीय रानीक सम्बन्धी काशीनाथ बाबू जे हमरा लोकनिक बहुत सत्कार कैलनि। पूर्णिमा स्नान दशश्वमेध घाट पर कैलहुँ। और सभ स्थान तँ देखले छल। केवल भारतमाताक मंदिर जे हाल मे बनलनि अछि से देखि ऐलहुँ। काशीस्थ छात्र ओ पंडित मंडली हमरा नाम सँ पूर्ण परिचित छथि। स्नान दर्शन आदि मे बहुत गोटे संग भ' गेलाह। 20 ता. कैँ भोजनोत्तर काशी सँ विदा भ' राति मे एतय पहुँचलहुँ।

एतय ऐला उत्तर पदमौलक एक पत्र भेटल जे एहि संग पठा रहल छी। बेरुआ सँ सम्बन्ध नहि भेल से बहुत नीक भेल, नहि तँ तंग-तंग क' दैत। ओ सभ रुपयाक आगाँ और कथूक विचार नहि करैत अछि। तीन हजार रुपया देलो उत्तर, दू अढ़ाइ सय गोटा सँ बरियात ल'क' पहुँचि जाइत और कतबो देने संतुष्ट नहि होइत। हमरा एको रत्ती अफसोस नहि होइत अछि। हँ, आरा कॉलेजक नवीन प्रोफेसर नवलकिशोर झा कैँ नेहरा मे तीन हजार देलकैक से ओ फेरि देलकैक, केवल कन्या कैँ शिक्षित देखि विवाह करब स्वीकार क' लेलकैक। हमरा मे तँ गुरुवत भाव रखैत अछि, टकाक चर्चो नहि करैत। एहन सुयोग्य प्रो. विचारवान वर हाथ सँ चलि गेल ताहि हेतु आब अफसोस भ' रहल अछि। ओहिठाम फूलदाइ कैँ कोनो बातक कष्ट नहि होइतैक। अस्तु। आब जहाँ भावी हेतैक। वैशाख मे निश्चय भ' जेतैक। कोनो चिन्ता नहि करब। जतेक खर्च लगतैक से क'क' योग्य पात्रक हाथ मे देबैक। हँ, वर तकबा मे कुटुम्ब आत्मा सभ एखने सँ सहायता करथि।

विशेष कुशलादि लिखल जाय। खेदक विषय जे बंगाली बाबू कैँ थाइसिस भ' गेलैक। धनकटनी कहिया सँ हैत? पत्रोत्तर शीघ्र देल जाय।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•

पटना

30.11.47

सविनय प्रणाम

एक लिफाफा पूर्वहि पठा चुकल छी से पहुँचल वा नहि? श्री माय कैँ हम खूब आरामपूर्वक पटना पहुँचा देलियनि। खूब प्रसन्न छथि और आनन्दपूर्वक गंगास्नान करैत छथि। साड़ी कीनि देलियनि। अपनेक हेतु बिछाओनक चादरो कीनि क' रखने छी। पहिली ता. कैँ समस्तीपुर नहि जा सकलहुँ। तार दय देलिऐक अछि। एखन बहुत कार्यक भार अछि। एहि सभ सँ अवकाश भेला उत्तर आयब तँ माय कैँ नेने ऐबनि। यदि एही बीच मे हुनकर गाम जायब आवश्यक होइनि तँ सूचित कैल जाय। श्री विष्णु ऐलाह वा नहि? कटनी कहिया सँ शुरू हैत? यदि जरूरत बूझि पड़य तँ कोनो आदमी ठीक क'क' पठा दी। हम 24 सँ 31 धरि गाम पर रहि सकब। ताहि सँ पहिने काज हो तँ श्री इन्द्र कैँ 15 ता. धरि पठा दियनि। जेहन विचार हो से सूचित करब। तावत् उपरवार वला धान काटय तँ अपने दरवाजा पर तैयार करबा लेब। गोपालजी और लखनजी कैँ इमतिहान खतम होइत देरी गाम पठा देबनि। आगाँ नव समाचार जे श्री ओझाजी एखन गाम सँ ऐलाह अछि। बहुत दुर्बल देखय मे अबैत छथि। गाम परक समाचार नीक छनि। विशेष कुशलादि लिखल जाय।

विनीत—**श्री हरिमोहन**

•



हरिमोहन झा नामे हुनक पारिवारिक-संबंधीक पत्र

मायक पत्र

श्री बौआ केँ हमर अनेकानेक आशीर्वाद। अहाँक कुशल समाचार तथा नीक समाचार बुझि मन ठेकान लागल अइ। खुशीपूर्वक रहू। द्वितीया आसिन मे हम एतहि ब्राह्मण भोजन करबा देबनि, पारबन अहाँ केँ ओत' नहि भ' सकत। कातिक अमावस्या केँ छुटल फुटल एकोदीष्ट होइत छैक। अहाँ अपना देहक हेफाजत करब। हम नहि जा सकलौं। एक तँ बस बंद दोसर नेना सभ एक ने एक दुखित पड़ल रहै अछि। अपना सभक कुशल लिखबाक बराबरि पठबैत रहब। इति।

श्री सौभाग्यवती कनिआ केँ आशीर्वाद। पत्र अहाँक भेटल। परम अंन्देशा मे छैक। आइ श्री सुधाकर बाबू सँ ज्ञात भेल जे नीके छलाह और विशेष समाचार नेना सभ केँ आशीर्वाद। अपना सभक कुशल लिखब। इति।

•

भावहुक पत्र

बाजितपुर
4.3.52

परमपूज्यवर श्रीमान भैयाजीक चरण कमल मे सादर प्रणाम। पूजनीया श्री बहिन केँ चरण कमल मे सादर प्रणाम। श्री माय सकुशल पहुँचि गेलीह, सब चीज पहुँचल। श्री लखनजी 28 तारीख केँ तिथरा गेल छथि, 2 केँ महाबीर विदा भ'क' आयल होयता। श्री लखनजी केँ जेबाक बहुत इच्छा छलनि तँ हम नहि रोकलियनि और परीक्षा देलाक बाद लड़का केँ बाहर जेबाक इच्छा होइत छैक तँ हम नहि किछु कहलियैन। एखन तक आयल नहि छथि, कहने रहियैन जे जल्दी चलि आयब। दू-एक दिन मे एता। तीनू भाइ केँ हमर आशीर्वाद। पत्रक जवाब शीघ्र दिहथि। श्री बौआ केँ हमर आशीर्वाद। नेना सब केँ आशीर्वाद। हम पहुँचि गेलहुँ। श्री गोपाल जी हमरा कूल मे पारस छथि। अहाँ सब हुनका नहि चिन्हि सकै छियैन। श्री गोपाल जी कोना पहुँचला से लिखब। दोसर पत्र मे सब लिखब।

हिनक
कनिया (लक्ष्मी देवी)

—भवानी बाबूक समाचार दोसर पत्र मे लिखब।

•

जमायक पत्र

टाटा कॉलेज
चाईबासा (सिंहभूमि)
21.9.53

सविनय प्रणाम,

गोपाल जीक पत्र सँ Philosophy Dept.क head क नियुक्ति द' सुनि हार्दिक प्रसन्नता भेल। तथापि एहि विषय मे विशेष जानबा लेल उत्सुकता बनले रहल।

हम स्वस्थ प्रसन्न छी। हम आओर हरिवंश बाबू एकहि संगे रहि रहल छी। एतय अबितहि एक टा बड़ सुन्दर डेरा भेटि गेल। परन्तु छुट्टीक पूर्व एकरा छोड़ि देबय पड़त। आब छुट्टीक बादे कोनो नव डेरा ताकब। एहि बीच मे हमरा सभक प्रयासेँ एक सतीश चन्द्र झा नामक व्यक्ति केँ Math मे नियुक्ति भेलनि अछि। अत: कॉलेज मे सेहो हमरा सभक अपन एक छोट-मोट समाज भ' गेल अछि जाहि सँ मन लगैत अछि।

29 तारीख केँ एतय युनिभरसिटीक इन्सपेक्टर लोकनि आबि रहल छथि। संभव जे दिसम्बर धरि कॉलेजक affiliation भ' जेतैक। हमरो सभक Payक Scale मे Revision प्राय: एही मास सँ भ' जैत। कॉलेज 12 अक्टूबर सँ पूजाक लेल बन्द हैत। हम एतय सँ 10 या 11 केँ विदा हैब। अपने पूजा मे कहिया गाम जा रहल छी। विशेष कुशल। अपना सभक कुशल पत्र लिखल जाय। सभ केँ हमर यथोचित कहि देल जाइनि।

अपनेक कृपाकांक्षी
शैलेन्द्र मोहन झा

•

पुत्र कृष्ण मोहन झाक पत्र

टोरंटो
21.5.64

सविनय प्रणाम।

अहाँक पत्र काल्हि भेटल। एहि बीच हमर डिपार्टमेंटक comprehesive exams चलि रहल छल। ओ ल'क' व्यस्त तथा चिंतित छलहुँ। आइ अंतिम दिन oral exam छल। पास भेलहुँ से एखने डिपार्टमेंटक सेक्रेटरी टेलीफोन सँ खबरि कैलनि अछि। एहि सँ छुट्टी भेटला पर आब अपना काज मे लागि सकब।

राँची यूनिवर्सिटीक जे चिट्ठी रिडाइरेक्ट कय पठौलहुँ अछि से एखन तक नहि भेटल अछि। हम अनुमान करै छी जे ओहि मे हमर लौटबाक अथवा extensionक संबंध मे पुछने होयताह। दू-तीन दिन और ओहि चिट्ठीक प्रतीक्षा क' हम एक वर्षक extensionक हेतु आवेदन पठा देबनि। छुट्टी भेटबा मे कोनो कठिनता तँ नहि होयबाक चाही। कारण छुट्टी बीच यूनिवर्सिटी हमरा वेतनक कोनो अंश नहि द' रहल अछि। दोसर जे ई छुट्टी हमरा commonwealth scholarship क उपयोग करबा लेल भेटल अछि, तँ यावत् धरि ई स्कॉलरशिप चलि रहल अछि तावत धरि तँ छुट्टी भेटबे चाही। हमरा सभक स्कॉलरशिपक extension क समाचार Canada Govt. एतय सँ Govt. of India (Edu. ministry) केँ पठा देने छै। हम एक पत्र Govt. of India Edu. ministry, Delhi केँ सेहो लिखि कय हुनका सँ आग्रह करबनि जे ओ हमरा यूनिवर्सिटी केँ एहि संबंध मे खबरि क' देथिन। (यदि पहिनहि नहि कयने होयथिन)। एहि संबंध मे राँचीक किछु परिचित लोकनि केँ सेहो लिखैत छियनि। ओना चिंताक विशेष कारण नहि देखि पड़ैत अछि। आगाँक जेहन हैत से फेर सूचित करब।

आशा करै छी ओतय सभ गोटे प्रसन्न हैबै।

श्री मती मैयाँ, माय केँ हमर प्रणाम।

विनीत—**लखन जी**

•

ज्येष्ठ पुत्र राज मोहन झाक पत्र

जमशेदपुर
4.4.61

पूज्य बाबूजी तथा पूजनीया माय केँ सविनय प्रणाम। हम सब एतय सकुशल छी। चिन्ताक आब कोनो बात नहि। एक टा लिफाफा पहिने पठा चुकल छी जे प्राय: भेटल हैत। किछु दिन पहिने चिट्ठी पत्री बहुत गड़बड़ होइत छलै, तँ भेटल कि नहि पहिलुका चिट्ठी से नहि जानि। ट्रांसफरक बात प्राय:जून जुलाइ धरि टरि गेल अछि एखन। अप्रैल मे 15-20 तक प्राय: राँची अथवा पटना मे सँ कोनो ठाम जायक अछि ऑफिसक काज सँ। स्थानक निश्चय नहि भेल छैक एखन।

रत्नाक की समाचार?

भागलपुर यूनिवर्सिटीक लेल lecturer क जगह निकलल छै। ओहि मे apply क' देने छिऐक।

शेष कुशल।

सभ गोटाक दिस सँ प्रणाम। भुवन जी, रमा, रमन जी, कँ शुभाशीर्वाद।

आज्ञाकारी

—गो.

•

राज मोहन झाक पत्र (मायक नामे)

जमशेदपुर
1 फरवरी 61

(ई पत्र एहि आशय सँ देल जा रहल अछि जे एहि सँ एक प्रसिद्ध लेखकक पारिवारिक स्थितिक आंतरिक परिचय पाठक कँ गाढ़ होनि।)

पूजनीया माय कँ हमर सविनय प्रणाम।

आइए अहाँक चिट्ठी भेटल अछि। 13 कँ आबि रहल छी से जानि प्रसन्नता भेल।

तरुणेन्दु शेखर सिन्हा जे हमर मित्र छथि और एहिठाम कंपनी मे काज करै छथि, इंटरव्यू लेल पटना जा रहल छथि। आइए एखन खबर भेटल अछि जे ओ जा रहल छथि तँ हड़बड़ी मे ई पत्र लीखि रहल छी। विशेष ई जे हरिश्चन्द्र मिश्र जे हमर साढ़ू छथि से एहिठाम सँ ट्रांसफर भ'क' जाय लेल छथि। ओ हमरा सभ कँ एक दिन भोजन पर निमंत्रित कयने रहथि। तँ हमहूँ सभ चाहै छी जे हुनका गेला सँ पहिने एक दिन भोजन करा दियनि। एखन धरि नहि बजौने छियनि किएक तँ बर्तनक कमी। तँ तरुणेन्दुक मार्फत एक बड़का पितरवला परात, 6टा स्टेनलेसक कटोरी, एक लोटा, एक गोल चायवला ट्रे (जाहि मे पीयर फूल इत्यादि छैक)—एक टा चिमटा जँ होइ तँ—एतेक वस्तु पठा देब। हरियरका बक्स सेहो हिनका संग क' देबनि।

विशेष दोसर पत्र मे।

एहिठाम सब गोटे सकुशल छी।

भुवन जी, रत्ना, रमा आदि कँ आशीर्वाद।

बाबूजी कँ प्रणाम।

अहाँक

—गो.

(दोसर पृष्ठ पर आशा झा)

—पूज्य माँ व बाबूजी के चरणों में सादर प्रणाम। जल्दी के कारण अभी विशेष नहीं लिख रहे हैं। आप 13 ता. को आ ही रही हैं। बहुत प्रसन्नता हुई। विशेष फिर।

आपकी
आशा

•

पुत्री उषा देवीक पत्र मायक नामे

लहेरियासराय
11.11.65

पूजनीया श्रीमती माय तथा काकी कँ हमर सविनय प्रणाम। बहुत पहिने एतय सँ पत्र लिखने छलहुँ, परन्तु एखन धरि उत्तर नहि आयल अछि। श्री अरुण सभ रामेश्वरम, सँ सकुशल 26 कँ अबैत गेलाह। वरुण कँ परीक्षा समाप्त भ' गेलनि। शान्ता सभ छठिक बाद अबैत गेल। श्री लखनजीक कुशल बहुत दिन सँ नहि ज्ञात भेल अछि, से लिखब। कहिया धरि पटना ऐबाक विचार छनि। मुजफ्फरपुर मे ज्ञात भेलनि जे श्री काकी बड़ जोर दुखित छथि। आब कोना छथि या डॉक्टर की कहलकनि से लिखब। एम्हर श्री दुलहिन से बिछाओन धैने छथि, ओहि दिन बहुत जोर दम्म फुलैत रहैन। डाक्टर दम्मा या की कहलकनि से नहि जानि। ई सभ सुनिक' मन अत्यन्त चिन्तित रहैत अछि। एहि समय मे हमहुँ किछु उपकार क' अबितियनि से नहि भ' सकैत अछि, एतय 15 दिन सँ माधुरी दाइ आयल छथि, पूरा मास छनि बच्चा हैबा लेल। अहाँक परिश्रम और चिन्ताक अनुभव हमरा पूरा भ' रहल अछि। श्री रत्नो द' किछु सुनने छलिऐ से सभक कुशल लिखब जे कोना के छथि। श्री गोपालजी बड़ परेशानी मे पड़ि गेलाह। अहाँ कँ अवकाश नहि भेटै तँ रमा सँ पत्र लिखबा देब। श्री मैयाँ कोना छथि से लिखब। एतय सभ नीके अछि। अपना सभक लिखब। मन लागल रहैत अछि।

पूज्यवर श्री मान बाबूजी कँ हमर सविनय प्रणाम।

चि. श्री रमणजी, तथा श्री भुवनजी कँ हमर स्नेहाशीर्वाद।

चि. श्री रमा कँ हमर स्नेहाशीर्वाद।

पत्रोत्तर शीघ्र देब।
अहाँक—**फूल**

•

साहित्यिक अग्रज, समकालीन आ नवतुरियाक पत्र

एहि कोटिक पत्र सभ मे तत्कालीन समय आ समाजक दस्तावेज तँ भेटतहि अछि संगहि ई एहि बातक प्रमाण अछि जे हरिमोहन बाबूक प्रति हुनक अग्रज, समकालीन आ नवतुरक की धारणा छलनि।

सचिव सदन, दरभंगा
30.6.51

चि. श्री हरिमोहन जी।

अहाँक 24.6 क पत्र सँ तथा समाचार पत्र सँ अहाँक पूज्य पिता और हमर प्रारंभिक अवस्थाक पूज्य गुरुक एहि संसार सँ महाप्रस्थान करबाक समाचार जानि अत्यन्त शोकसन्तप्त छी। परमात्मा हुनक दिवंगत आत्मा कँ शान्ति प्रदान करथुन। हमरा उत्कट अभिलाषा छल जे स्वर्गीय दादाजीक रचनावली प्रकाशित भेला पर हुनका श्रीनगर लय जाय हुनकहि अध्यक्षता मे ओकर उत्सर्ग करितहुँ, कारण हुनक सहचर मे वैह टा जीवित छलाह। परन्तु से मनोरथ आब मोनहि मे रहि गेल। अनिवार्य कारणवश हम श्राद्ध मे उपस्थित नहि भ' सकब और ताहि हेतु क्षमाप्रार्थी छी। हमर हार्दिक सम्वेदना स्वीकार करब।

शोकान्वित
कुमार गंगानन्द सिंह

•

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
सिन्हा-लाइब्रेरी, पटना-1
29-06-1951

मान्यवर पण्डितजी

आपका पत्र पाकर बड़ा दुःख हुआ। आपके पूज्य पिताजी बिहार के साहित्यिकों के पिता थे। द्विवेदी-युग का प्रतिनिधि बिहार से उठ गया। जिस दिन अखबार में समाचार पढ़ा उसी दिन कुमार गंगानन्द सिंह से उनकी मृत्यु पर शोकसूचक बातें हुईं। उन्होंने उनका संक्षिप्त परिचय

आर्यावर्त के लिए माँगा और वह परिषद्-कार्यालय से भेज दिया गया। वह आर्यावर्त में छपा भी है। 'साहित्य' में हम उनके संस्करण और कुछ पुराने पत्र छापने जा रहे हैं। आप पर सारे परिवार का भार आ पड़ा। अबतक आप निश्चिन्त थे। प्रभु की जैसी इच्छा। किन्तु संसार की यही गति है। आप स्वयं विद्वान और दार्शनिक हैं। आपको हम क्या समझावें। हम लोगों का अब यही कर्तव्य है कि अपने साहित्यिक पूर्वजों की कीर्तिरक्षा करें। आप जब पटना लौटेंगे तब बातें होंगी। अब तो आप परिषद् का पुरस्कार-निर्णयवाला काम भी पटना आने पर ही कर सकेंगे। आप इस समय निश्चित ही बड़े शोकाकुल होंगे। मगर विचलित होने से काम बिगड़ेगा। परिवार के मुखिया आप ही रह गए। आपकी दृढ़ता से ही बेड़ा पार होगा। यदि आते समय कुछ साहित्यिक चिह्न लेते आवें तो सम्मेलन-भवन के संग्रहालय में सुरक्षित रखबा दूँगा। पुरानी चीजों की रक्षा से सदैव स्मृति बनी रहेगी। आशा है, आप अपने को सँभाले रहेंगे। परिषद् की सम्वेदना आपके साथ है।

—शिवपूजन सहाय

•

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
सम्मेलन-भवन, पटना-3
25.11.54

मान्यवर झा जी,

सादर प्रणाम।

आपका दिनांक 20.11.56 का कृपापत्र मिला। उत्तर में निवेदन है कि आप जनवरी में ही ग्रंथ संपादन के विषय में विचार-विमर्श करने पधारें, मुझे कोई आपत्ति नहीं। किन्तु ग्रंथ-सम्पादन तो आपको ही करना है, कृपया यह स्मरण रखिएगा।

विश्वस्त
शिवपूजन सहाय

•

1, King George Avenue, Patna-1,
August 27, 1954

My Dear Proffessor

Dr. Harbans Rai Bachchan will be here for a few hours on September 1. I shall be happy if you will come to tea at 6 P.M. on the 1st and meet him.

Yours sincerly
(Amarnath Jha)

•

Pustak Bhandar
The Leading Publishrs Of India
P.O. Box No.-5, Patna-4
6-8-61

प्रिय हरिमोहन,

अच्छा किया। मंगल बाबू को मेरी ओर मोड़ दिया। क्या तुम यह नहीं जानते हो कि मैं अब—अब क्या गत 12-14 वर्षों से कहीं भी ऐसे कार्यों में जाने के लिए अपने को योग्य नहीं माना! अस्तु।

तुम समय निकालो। खुद जाओ। तुम्हें देश पुकार रहा है। आशीर्वाद है, निकट भविष्य में पूरी तरह चमक पड़ोगे। जाओ।

तुम्हारा
रामलोचन शरण।

•

लहेरियासराय
11.12.65

प्रिय हरिमोहनजी,

प्रणाम।

श्री सीताराम जी सपरिवार तुमको आनन्द मंगलमय रखें।

आज आनन्द से हम तुमको लिख रहे हैं। अपनी बहन इन्दिरा को दलदल से खींचकर पास ही रखकर हमारी आत्मा को शांति दी है। हम कृतज्ञ हैं। अब हमें अपने अन्तिम जीवन में कुछ कहना नहीं है। हाँ, अब उसके लिए जो उचित समझो, करोगे ही।

हो सकता है कि हम तुम्हें न दिखाई दें। जो कुछ अनुचित हो गया हो, अपनी ओर देखकर क्षमा कर देना।

अपनी पूज्या माताजी को हमारा प्रणाम चरण छूकर कहना। उन पर ध्यान रखना और प्रतिदिन चरण छूना, माथा टेक कर।

इन्दिरा को बुला कर थिसिस के विषय में समझ-समझाकर लिखकर शान्ति दो। घर-भर को प्रणाम।

सदा अपना
रामलोचन शरण।

•

वाराणसी
1.1.61

चि. श्री प्रोफेसर साहेब!

सस्नेह आशीर्वाद।

पत्र पहुँचल। हमरा जैखन रा.मा.प. लैँ सूचना आयल, तैखन विश्वास भेल जे ई ''अहाँक प्रयासक फल थिक।'' हमर प्रणम्य-प्रातः स्मरणीय-अहाँक पिता सँ तदन्तर अहाँक द्वारा जे मैथिल-मैथिली-ओ मिथिला देशक-गौरवान्वित वृद्धि भेल अछि, से लिखब सँ बाहर अछि। हम तँ वयसा ज्येष्ठ छी तथा आशीर्वाद मात्र द' सकै छी, जे अहाँ चिरंजीवी रही। आशा अछि जे अहाँ लोकनिक उत्साह-उद्योग ल' मिथिला देशक गौरव दिनानुदिन बढ़त। हम तँ मिथिला मे सम्प्रति उदीयमान कवि गणक अभिप्राय देखि परम प्रसन्न रहै छी। अहाँ स्वस्थ छी, ई बुझि हमहुँ सम्प्रति नीके छी। 22-23 मे पटना पहुँचब। तखन सोक्षहि...भेटे मे विशेष वार्ता।

सीताराम झा

•

12ए, बेली रोड, इलाहाबाद
7.11.49

प्रिय हरिमोहन बाबू,

अहाँक परिवार पर जे वज्रपात भेल अछि तकर समाचार आइ 'बटुक' ऑफिस मे कहल, ओह!

ओहि दिन अहाँक ओत' भोजन करबाक काल जे सौम्यमुख तरुण विहुँसैत हमरा सङे गप्प करैत रहथि से एना आकस्मिक रूपेँ डाका द' क' चलि जाइत रहलाह—कहाँ मोन मानैत अछि!

घनघोर विपत्तिक एहि काल मे अहाँ सन ज्ञानी व्यक्ति केँ की हम परिबोध दिअ' से फुरितहि ने अछि।

—यात्री

पुनश्च—हम काशी-प्रयाग आ प्रयाग-काशी करैत समय बिता रहल छी।

निम्नलिखित पता सँ पत्र लिखी तँ भेटि जायत—''भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस''—पत्र लिखबे टा करब। **—यात्री**

•

Rajkamal chaudhary
6/1, Baman Para Lane, Calcutta-19
14-12-57

पूज्य हरिमोहन बाबू

सादर प्रणाम!

पहिनहुँ अपनेक सेवा मे एक-दू टा पत्र लिखि चुकल छी। आब ई पत्र—संप्रति हम कलकत्ता मे छी। 'मिथिला दर्शन' मे सेहो छी! कलकत्ता प्रवासी छात्र संघक संकलित पत्र "SOUVENIR" मे अपनेक लेख, ''मिथिला की संस्कृति'' देखलौं। एहि लेखक संबंध मे दू टा प्रश्न—(1) एहि लेख कैँ मैथिली मे अनुवाद कए, ''मिथिला दर्शन'' मे प्रकाशित करबाक अनुमति अपने हमरा दिअ'।

(2) एहि लेख मे अपने दार्शनिक महिला ''गार्गी''क चर्चा कयने छी। (''गार्गी ने ब्रह्मविषयक गूढ़ प्रश्नों की बौछार से याज्ञावल्क्य को भी चकित कर दिया था।'') हम बूझए चाहै छी जे की ''गार्गी'' मैथिल-स्त्री छलीह? लोक कहइए जे नहि ओ द्रविड़-कन्या छलीह, 'त्रिवेन्द्रम' रहइवाली, । अहाँ कृपया एहि भ्रमक निवारण पत्र द्वारा करबाक कृपा हमरा पर करू। हम सकुशल छी। ''मिथिला दर्शन'' अपनेक रचनाक प्रतीक्षा करैए।

—राजकमल

•

वर्ष 1976
(जगह/दिनांक वला भाग फाटि गेल अछि)

श्रद्धेय,

कृपा पत्रक हेतु आभारी छी। मोन मे विश्वास ने होइत अछि जे चंचल और मेधावी दमनजी आब एहि संसार मे नहि छथि। 'मिहिर' मे अपनेक विह्वल शोकोच्छवास पढ़ि आँखि भरि-भरि आयल। दमनजीक बाबी कतेक मर्माहत भेल हेती तकर तँ कल्पनो केनाइ कठिन छल। फुरबे ने करय जे कोन शब्द मे सांत्वना पत्र पठाबी।

दमनजी सँ हमर 3 भेट छल। पुछने छला जे कोबीक गाछ मे किएक ने गुलाब फुलाइ छै। अपनेक अबैक प्रतीक्षा मे बैसल छलौं तँ हुनका सँ बहुत रास गप्प सप्प भेल छल। कहने छला जे हुनका बहुत फुल छनि गुलाबक।

अपने सन मनीषी कैँ आहत मात्र क' की कहि बुझाउ। जनिका शास्त्र आ पुराण हस्तामलक छनि। भगवती श्री 108 मैथिली सँ प्रार्थना जे अहाँ कैँ शान्ति देथि। दुनिया यैह भेल। सब किछु शून्य सँ अबैत अछि आ शून्य मे विलीन भ' जाइत अछि।

हमर पूज्य पिताजी चल गेला। प्रतापशाली लोक छला ओ। हुनके दुलारें, कान्ह सँ लटकैत बन्दूक, दोसर पार्श्व सँ केमरा आ हाथ मे कलम ल' क' उमकैत रहलौं। सहारा नहि रहल। एक टा असीम रिक्तताक अनुभव करैत रहैत छी। आर मोनक आश्रय मात्र ससरैत कलम रहि गेल अछि।

'लवहरि-कुशहरि' आ 'रायरणपाल' प्रकाशित भ' गेल अछि। कलकत्ताक उदार संस्था मैथिली प्रकाशन आ मैथिल संघ द्वारा। पटना आयब तँ अपनेक दर्शन सुनिश्चिते करब। किताब दुनूक पुष्प ल'क'।

अनुरोध जे अइ आकस्मिक बातें अपने आहत नहि बनल रही। अपनेक कलम सँ मैथिली साहित्य कैँ बड़ भरोस छैक।

स्नेहाभिलाषी
मणिपद्म

•

Village+P.O.- Sarisab Pahi, Dist.- Darbhanga
5.12.52

श्रद्धेय श्री हरिमोहन बाबू,

अपने कैँ ई समाचार पाबि हर्ष होयत जे हम सभ थोड़ेक व्यक्ति मीलि आधुनिक रुचिक तथा सस्ता मूल्यक मैथिली पुस्तक प्रकाशन करबाक हेतु एक संस्थाक स्थापना कयल अछि। जकर नाम राखल गेल अछि—मैथिली प्रकाशन समिति। ई संस्था Joint Stock-Company जकाँ अछि तथा हम सभ एहि कार्यक श्री गणेश करबाक हेतु एक सहस्रक करीब द्रव्यो एकत्र क' लेल अछि। संस्था कैँ कवि शेखर श्री बदरीनाथ झा, महावैया करण श्री दीनबन्धु झा, पं. श्री रमानाथ झा सन-सन विद्वान तथा बाबू श्री कृष्णानन्द सिंह तथा बाबू श्री मदनानन्द सिंह झा सन-सन लक्ष्मीवान व्यक्तिक बरदहस्त प्राप्त छैक।

एहि साहित्यिक अनुष्ठानक प्रारम्भ एक रोचक तथा Standard गल्प संकलन सँ हो तकर प्रस्ताव स्वीकृत भेल छैक, तकर सम्पादनक भार हमरहि पर देल गेल अछि। हमरा अपने तँ व्यक्तिगत रूपैँ नहि चिन्हैत होयब कारण जे अपनेक लग तँ हमरा सन नगण्य लोक सभ हरदम प्रस्तुत रहैछ। किन्तु अपने हमर पुस्तक 'अश्रुकण' पढ़ि हमरा बहुत प्रोत्साहन पत्र द्वारा देने रही आ तही बल पर आइ अपने सँ एक गल्पक याचना कैल अछि। कारण जे अपनेक रचना बिना कोनो पुस्तक मैथिली भाषाक प्रतिनिधि ग्रन्थ नहि कहा सकैछ।

अनेक तरहक सामाजिक तथा साहित्यिक कार्य मे व्यस्त रहने अपने कैँ समय कम रहैछ तकर वार्ता अछि किन्तु यदि अपने सन व्यक्तिक आशीर्वाद हमरा लोकनिक ई नव ज्ञान संस्था नहि प्राप्त करत तँ गल्प संग्रह सम्पूर्ण भेलहुँ अपूर्ण रहत।

हमरा विश्वास अछि अपने हमरा लोकनि कैँ निराश नहि करब। कृपया समय बना शीघ्र एहि पत्रक स्वीकारोक्तिक उत्तर देल जाय।

विशेष कृपा राखल जाय।

भवदीय
श्री मनमोहन झा

•

'शान्तम्'
पूर्वपल्ली, पो. शान्तिनिकेतन, पं. बंगाल।
23.12.65

परमकल्याणास्पदं हरिमोहन,

ममपुत्रस्य

विवाहकाले तव आशीर्वाचनं प्राप्य सुतराम् आनंदित आसम्। देवभाषायां विरचिते तव् रत्ना कारपतिमरोदयस्य च आशीर्वचने विदुषां प्रमोदम् अजनयत्यम।

भगवदनुग्रहेण सकलम् उत्सवकार्यं सुसम्पन्नम्। सपरिजनस्य तव सर्वथा कुशलं विदधातु इति परमेशं याचे। अत्रशम्।

शुभार्थी
धीरेन्द्र मोहन दत्तः।

•

शान्तम्
पूर्वपल्ली, शान्तिनिकेतन
30.8.70

कल्यानीय हरिमोहन जी,

आपका 24.8.70 का पत्र 28.8.70 को मिला। धन्यवाद।

डॉ. गंगादत्त झा यहाँ आए थे। उनसे मालूम हुआ कि आप सेवा की उच्चतम कोटि से शीघ्र ही निवृत्त हो रहे हैं, एवं भारत सरकार से पाँच वर्ष के लिए आपको ग्रन्थ रचना के लिए वृत्ति मिलेगी। जानकर

बड़ा सन्तोष हुआ।

आपका निर्वाचित विषय सुन्दर है। हिन्दी में इस भारतीय विषय पर लिखना ही अधिक उपयोगी होगा।

स्वयं पत्र अब लिख नहीं सकता हूँ। भगवान सपरिवार आपको सकुशल रखें। शुभैषी।

धी.मो.दत्त।

•

धरणीधर पथ, लहेरियासराय
14.12.71

आदरणीय श्री हरिमोहन बाबू

जय मैथिली।

कन्यादानक सफलता लेल हमर अभिनन्दन ओ नववर्षक हमर शुभकामना। परिवार कैँ यथायोग्य नमस्कार।

हमर सम्पादन काल मे *वैदेही* कैँ कोनो रचना-सहयोग प्राप्त नहि भेलैक। नववर्ष 1972 सँ *वैदेही* मे एक टा नवीन ऐतिहासिक स्तम्भ प्रारम्भ करय जा रहल छी, ''अतीतक आत्मचित्र'' (अपन अतीतक साहित्य-साधनाक लेखा-जोखा)। मैथिलीक विशिष्ट साहित्यप्रेमी मात्र सँ रचना पठेबा लेल निवेदन कैल जा रहल अछि। अपने मैथिलीक अवधूत साधक, आधुनिक संस्कारदायक ओ युगनिर्माता साहित्यकार छी, आर अपनेक लिखल संस्मरण चित्र चलचित्र जकाँ अपन इतिहास कैँ झलका कैँ राखि देत। संगहि अपनेक विषय मे सेहो कतेको भ्रांत, सत्यासत्य ओ अनावृत्त तथ्यक उद्घाटन एहि सँ भ' सकत आर भविष्य मे इतिहासकार समीक्षक लेल सामग्री पोषण क' सकत। विश्वास अछि अपनेक आशीर्वाद, अवश्य प्राप्त होयत। निबंध 20 पृष्ठ धरि भ' सकैत अछि। यथा इच्छा।

पुन: निवेदन। उताराक लेल प्रतीक्षारत।

स्नेहावनत
सोमदेव

•

ग्रंथालय, बुकसेलर
पब्लिसर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरभंगा
15.12.59

श्रद्धेय झाजी, सादर प्रणाम!

एहि ठाम सँ 'इजोत' नामक स्वस्थ मासिक प्रकाशित करबाक विचार स्थिर भ' गेलैक अछि। कोनो मैथिली पत्र अपनेक लेखक अभाव मे छुच्छ सन लगैत छैक। 11 जनवरी कैँ येन-केन प्रकारेण पहिल अंक प्रकाशित करबाक योजना छैक। की 'इजोत' कैँ पहिल अंकक हेतु अपनेक आशीर्वाद प्राप्त हेतैक?

आशा, जे अपनेक आशीर्वाद पाबि 'इजोत' चिरायु भै सकत।

श्रद्धावनत
शेखर

•

6/1, BAMAN PARA LANE, CALCUTTA-19
8.11.1954

श्रद्धेय श्री झाजी,

संघक प्रतिनिधि श्री शिवकान्त जी ठाकुरक पत्र द्वारा ई सम्बाद पाबि जे अपने श्री आरसी बाबू आर श्री यात्री जी संघक अनुरोध मानि 'विद्यापति जयन्ती महोत्सव' मे उपस्थित होयबाक स्वीकृति प्रदान कयल अछि। अत्यन्त आनन्दित आर उत्साहित भेलौं। अपने अध्यक्षता करय हेतु जे असमर्थता ज्ञापन कयल अछि ओहो हमरा लोकनि कैँ स्वीकृत अछि। कार्यक्रम मे परिवर्तन भ' गेलाक कारणें छपल कार्यक्रम नहि पठा सकलौं अछि। मुदा संघक दिस सँ ई प्रति श्रुती द' रहल छी जे एहन कोनो कार्यक्रम नहि प्रस्तुत कयल जयतैक जे अपने कैँ पसिन्न नहि हो। अपने तीनू व्यक्तिक लेल किराया हेतु श्री यात्री जीक पता सँ 40 टाका तार मनीऑर्डर द्वारा आइ पठा रहल छी।

यदि कोनो कारण वश टाका समय पर प्राप्त नहि हो (डाके गड़बड़ी सँ एहन भ' सकैछ) तइयो अवश्ये आयल जाय। एतए पहुँचैत संता टाका देल जायत। संघ दिस सँ प्रचार कार्य चलि रहल अछि। अपने लोकनिक परामर्श आर निर्देशक पालन करब हमरा लोकनि अपन पवित्र कर्तव्य बुझैत छी। शनि दिन ता. 13.11.54 जनता एक्सप्रेसक समय हमरा लोकनि हावड़ा स्टेशन पर रहब! ट्रेन मे जँ परिवर्तन होइ तँ पूर्वहि सूचित कयल जाय। आशा अछि अपने सपरिवार कुशल होयब। शुभागमन एवं दर्शनक प्रतीक्षा मे...।

विनीत—**श्री बाबू साहेब चौधरी**

•

6/1, BAMAN PARA LANE, CALCUTTA-19
05.03.55

श्रद्धेय श्री झाजी,

फरवरी 1955 धरि अपनेक सेवा मे 'मिथिला दर्शन' पठा चुकलहुँ अछि, आशा अछि पहुँचैत होयत। प्रकाशन मे विलम्ब होयबाक कारण अछि लेखादिक पूर्ण अभाव।

कतेक दिन सँ पाठक लोकनि अनुरोध क' रहल छथि जे श्री झाजीक नव गल्प दर्शन मे प्रकाशित होयबाक चाही आ हमहूँ एहि सम्बन्ध मे पहिने सेहो एक-दू बेर अनुरोध क' चुकलहुँ अछि। पुन: अनुरोध जे अपनेक रचना (विशेषतया गल्पादि) पठयबाक कष्ट कयल जायत। राज मोहन बाबू कैँ सेहो रचना पठयबाक अनुरोध क' रहल छियनि।

आशा अछि सानन्द होयब।

भवदीय
श्री बाबू साहेब चौधरी

•

दड़िभंगा
10.9.49

नमस्कार

कृपापत्र पाबि दर्शनक मुख्य आनन्द भेल। बड़े अनुगृहित छी। आनन्द भेल। चूड़ा दही तँ कहबी छैक जे नीक लोकक विदाइ परन्तु माछक न्योत अवश्य दैत छी ओ ताहि मे कनेको तारतम्य नहि। कारण प्रथमत: बरहगोड़िआ मे ओ पछाति श्री युत् एडवोकेट जेनरल साहेबक डेरा पर जे अहाँ कैँ भोजन करैत देखल ताहि सँ निमन्त्रण देबा मे निश्शंक छी। हँ, हमरा सन-सन खाधुर कैँ न्योत देबा मे लोक कैँ सोचए-विचारए पड़तैक।

नवम्बर मे दर्शन होयत। कृपा राखी, स्मरण रहए। इति।

भवदीय
श्री रमानाथ

•

वैदेही, दरभंगा
23.10.1955

आदरणीय श्री प्रोफेसर साहेब

सादर नमस्कार।

अपनेक 21क पोस्ट भेटल। तँ धन्यवाद। हम एक मास सँ दरभंगा सँ बराबरि बाहरे छलहुँ। श्री ओझाजी ओत' (नेहरा) सेहो गेल रही। खूब

डँटल भोजन मे। एहन भोजनक विन्यास अरुणक श्री मायक छनि से नहि बूझल छल। श्री ओझाजी थीसिस—आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास—पर व्यस्त छथि।

क्षमा कयल जाय तँ उत्तर एकोटाक नहि दै सकलहुँ। हम स्वयं अपनेक ओत' ऐबाक लेल इच्छुक रही। हम अग्रिम सप्ताह मे स्वयं ऐब तखन सभ निश्चय करब। हमरा सभ बड़ कृतज्ञ हैब यदि अपने लुत्ती, भोलबाबा ओ फुलझड़ी द' दी। हमरा सभ ई निश्चित कहि दैत छी यदि तीनू पोथी अपने देब तँ हमरा सभ जतेक शीघ्र बहार करब ततेक जयनाथ बाबू नहि क' सकताह। हमरा सभ तीनू छापै लेल तैयार छी। तीनू पोथीक प्रकाशन मे खर्च कम ओ विक्रय मे सुविधा। केवल हमरा सभ केँ एके वस्तुक ध्यान अछि जे पोथीक दाम बड़ कम राखै चाहैत छी कारण पोथीक दाम बेसी भेला सँ पोथी बिकाइत नहि छै। ई हमर सबहक कटु अनुभव अछि। आर यदि सभ टा तय भ' जैत तँ तीनू टा पोथी बड़ शीघ्र छापब। संदेह करबाक काज नहि। कृपया हमर पीसा श्री शिवाकान्त कुमर केँ खबरि क' देल जाइन जे हम अबैत छी।

कृपया पत्र देखैते सूचना दी जे समस्तीपुर सँ बस कखन भेटतै। अपनेक गामक हेतु ओ वर्षा मे बन्द भ' जाइ छै ने।

—श्रीकृष्णकांत मिश्र

•

वैदेही, लालबाग, दरभंगा
17.12.58

आदरणीय श्री प्रोफेसर साहेब

सादर नमस्कार।

आगाँ एतए सभ कुशल। 'वैदेही' मे अपनेक सतत सहयोग प्राप्त छल। 1 सितम्बर सँ नियमित रूप सँ प्रकाशित होइत आयल अछि। आब संचालनक भार पुन: अपना हाथ मे ल' लेल अछि तँ प्रकाशनक व्यवस्था मे गड़बड़ी नहि हैबाक सम्भावना। अपने सँ आशीर्वाद स्वरूप कथा ओ ''बुचकुन बाबा'' सन गद्य नियमित रूप सँ अपने दी। काल्हि पू. श्री बाबूजी कहैत रहथि जे अपने सँ की आब मैथिली मे रचना करबाक प्रयास नहि कैल जैत। इम्हर कोनो रचना नहि देखलनि तँ। मिथिला इन्स्टीट्यूट मे ऐला सँ हमरा सभ केँ विशेष उपकार।

अपने रचना निमित्त जे हमरा सँ पत्र पुष्पं जुरत से पठा देल करब तकरा सेहो स्वीकार कैल जाय। 1 जनवरीक हेतु मैटर छपि रहल अछि तँ पत्र देखैत पठा देबाक कष्ट कैल जाय। एखन मासिक रूप मे बहार होइछ। अपने कृपया अगिला मासक हेतु रचना पछिला मासक 10 तारीख धरि पठा देबाक कष्ट कैल जाय।

डेराक पता की अछि? विशेष कथा लिखल जाय।

श्रीकृष्णकान्त मिश्र

•

147, कॉटन स्ट्रीट,
कलकत्ता-7
23.4.1968

पूज्यवर

सविनय प्रणाम!

'आखर'क लेल अपनेक कथाक बहुत मास सँ प्रतीक्षा क' रहल छी। हमर अनुरोध-पत्र सभ प्राप्त भेल हैत। आशा अछि, अपन रचना पठा 'आखर' केँ अवश्य गौरवान्वित करबैक।

अप्रैल अंक पठा चुकल छी। राजकमल अंकक योजना केहन लागल? उक्त अंकक लेल अपने राजकमल जीक सम्बन्ध मे अपन विचार अथवा संस्मरण अवश्य पठाओल जाय। नवतुरिया वर्गक प्रति क्षमाशील एवं उदार अपने सभ दिन सँ रहलिए अछि। अत: एहि विशेषांक केँ सहुल बनाब' मे अपेक्षित सहयोग अवश्य देल जाय। कृपा-पत्रक प्रतीक्षा रहत।

10 मइ धरि सामग्री प्रेस मे जायत।

स्नेहाधीन
—कीर्त्तिनारायण मिश्र

•

मिश्र टोला, दरभंगा
3.9.68

स्वस्ति!

परमादरणीय श्री हरिमोहन बाबू

सविनय अभिवादन।

26.8.68क लिखल बम्बइ सँ मुंशी जीक एक पत्र 31.8.68 केँ भेटल अछि जे 20 सँ 30 सितम्बर धरि *कन्यादान*क काज आगाँ बढ़यबाक हेतु हमर प्रयोजन छनि तँ छुट्टीक प्रबन्ध करू आ 16 केँ पटना मे भेट करू। हुनका हम उत्तर द' रहल छियनि, परन्तु अपनहुँ केँ सूचित क' रहल छी जे 21-9 केँ पढ़ा क' हमर स्कूल 3-10 धरि बन्द रहत। अत: 20-9 सँ हम छुट्टी नहि ल' सकैत छी। 16-8 केँ पटना आबिक' भेट करी से 25-30 टाकाक हत्या करब हमरा सक पार लागत?

तेसर बात समय कत' लेताह आउटडोर वा इनडोर? आब तँ अतीचारो समाप्त होइत छैक तँ एहि अजग्गि कन्याक दान सम्पन्न भ' जाय। एहि सँ बढ़िक' हर्षक गप्प आर की? परन्तु हमरा हेतु संकट उपस्थित अछि। S.T.C. करब बाँकी अछि। से बिनु कयने कोठारी कमीशन वला वेतन क्रम भेटबा मे व्यवधान भ' जायत। एहि हेतु आवेदन क' चुकल छियैक आ एही दुर्गापूजा छुट्टी सँ वर्ग आरम्भ होयतैक। ओकरा छोड़ि दी तखने संभव अछि, परन्तु अपनहुँ केँ ई कथा स्मरण होयत जे लाल काकाक अभिनयक हेतु हमरा कोनो प्रकारक अनुबन्ध नहि भेल। बाद मे भ' जायत से कहि टारि देल गेल। बम्बइ जखन छोड़' लगलहुँ तँ मुंशीजी दर्शन पर्यन्त नहि देलनि। मात्र पटनाक टिकट कटबाक' पठा देलनि। यदि ओत' श्री उदयभानु सिंह नहि रहितथि तँ हम भुखले पियासले पटना आबितहुँ। पटना मे श्री हीराबाबू अनेक बेर दौड़बैत रहलाह, मुदा मुंशीजी पर टारैत रहलाह। एमहर हमर सर्विस बुक खराब भ' गेल। क्षमा-याचना कर' पड़ल आ एहि चारि वर्ष सँ लोकक मुँह मे झीक दैत-दैत अकच्छ भ' गेलहुँ। अंत मे यैह उत्तर दैत छलियैक जे एखन अतीचार छैक तँ तकर बाद विचार कयल जयतैक।

अपने सँ निवेदन जे कृपया श्री हीरा बाबू सँ एहि प्रसंग गप्प कयल जाय आ भविष्यक हेतु एकदम स्पष्टीकरण भ' जाय जे हमर अनुबन्ध बनि जाय आ मुंशी जी भरोस पर नहि छोड़ल जाय।

यदि से सभ भ' जायत तँ हम गर्मी छुट्टी मे S.T.C. केँ टारि क' ल' जाइ। यद्यपि एहि हेतु हमरा 15 टाका मासिक क्षति उठाब' पड़त, किन्तु जखन सम्पूर्ण जीवन मैथिलीक नाम पर कष्ट करबे कयलहुँ तँ एहि काजक हेतु एक वर्ष आरो।

16.9.68 केँ पटना पहुँचबाक हेतु टी.ए.क व्ययवस्था करथि। यदि से भ' गेल तँ हम 15क सबेरे अपनेक ओहिठाम उपस्थित भ' जायब आ मुखोत्तर भेला पर और गप्प होयत।

25 अगस्तक कवि सम्मेलन प्रेम सँ सुनलहुँ।

इति शुभम्।

विनीत
श्री अमर

•

ग्रा.+पो.-बनैनियाँ, जिला-सहरसा
7.5.68

श्रद्धेय धरणेषु प्रणामा:,

अपनेक पत्र दहाइत भसिआइत अनेक विलम्ब सँ प्राप्त भेल। असीम आनन्द भेल, बल्कि एहि साल मे सर्वोपरि। ओहि दिन रेडियो सुनल गेल छलैक से जानि—एक टा उपलब्धिक अनुभव भेल।

मुदा भेंट नञि भ' सकल तकर दारुण कचोट अछि। असल मे भोर पहुँचलहुँ आ साँझे बिदा भ' गेलहुँ।

अपनेक जे स्नेह हमरा भेटैत रहल अछि—से हमरा लेल वस्तुत: सम्पत्ति थिक, काल्हि गाम जा रहल छी छुट्टी मे। 1 जुलाइ केँ आयब। शेष कुशल।

आज्ञाकारी
मायानन्द

•

ग्रा.+पो.-कोइलख, जिला-दरभंगा
27-9-68

स्वस्ति परमादरणीय श्रीमान हरिमोहन बाबू केँ सादर प्रणाम। एक अपरिचित व्यक्ति ''वर्षा ऋतु मे घाट-बाट पर बहैत पानिक टघार'' सँ अपनेक पद-प्रक्षालनक हेतु उपस्थित भेल अछि। पानि एकदम मटियैल रहितो अपनेक सम्मुख उपस्थित होइत एहि हेतु संकोच नहि भ' रहल अछि, कारण जे सहृदय विद्वानक हृदय सागर मे जत' बहुमूल्य मणिमाणिक्यक अम्बार रहैछ, तत' अति तुच्छो जल-जन्तुक लेल स्थान सुरक्षित रहैछ।

अपनेक दिशा-निर्देश सँ हमर मार्ग साफ हैत, आ तकर भरोस हमरा अछिये।

कृपा राखल जाय।

कृपाभिलाषी
भीमनाथ

•

भागलपुर
6.8.68

आदरणीय प्रणाम,

कुशल अछि। आशा अछि जे अपने सेहो स्वस्थ हैब। श्री शैलेन्द्र बाबूक पत्र आयल छल। हुनक पत्रक यथोचित उत्तर द' देलियनि। आब अपने केँ एक बातक पुन: कष्ट द' रहल छी। अपनेक लग छओ पेज छपल मैटर अछि। ओहि मे जत'-जत' सुधारक प्रयोजन अछि तत' मार्क क' क' तथा ओहि स्थान पर केहन नव-नव मैटर जेतैक तकरा एक कॉपी पर लिखि क' पठा देल जाय। कारण जतेक दिन अपनेक लग बैसिक' काज करब ओतेक दिन काज बन्द रहतैक। ओ नीक नहि हैत। तेँ हमर विचार भ' रहल अछि जे कृपया उपर्युक्त भार केँ वहन कैल जाय। हम जानैत छी जे अपने केँ समयाभाव रहैत अछि तथापि एतेक समय तँ अपनहुँ केँ देमहि पड़त। पांडुलिपिक हेतु हम कलकत्ता लिख देने छिऐक। जखने आबि जायत तखने हम ओ ल' क' अपनेक सेवा मे प्रस्तुत भ' जायब। अतएव अपने सँ आग्रह अछि जे जतेक मैटर अपनेक लग अछि तकरा शीघ्रातिशीघ्र पठा दी।

दोसर पूजा मे अपने कहिया दिल्लीक हेतु प्रस्थान करब तकरो सूचना देल जाय। हम जे पटना आबि रहलहुँ अछि ओही हिसाबेँ आयब।

कहिया अपने मैटर पठा रहलहुँ अछि तकर सूचना पत्र द्वारा यथाशीघ्र देल जाय। जाहि कॉपी पर नव-नव मैटर देल जयतैक ओहि पर छपलाहा पेज नव अवश्य देल जयतैक और एक अपन सिरीएल नं. चला देल जयतै। एहि रूपक सलाह अपने छावनी कोठी मे देल गेल छलैक। विशेष भेट भेला पर।

पत्रक प्रतीक्षा मे।

आज्ञाकारी
प्रेम शंकर

प्रथम विमान यात्रा का अनुभव

छोड़ती उच्छवासकण वीरांगना फुफकारती सी
देशकाल ग्रसित करती चंडिका हुंकारती सी
मत्स्यवदना अप्सरा डैने युगल झटकारती सी
मछलियों सी तैरती आकाश को ललकारती सी
उठ रही भू पर। उड़ रही ऊपर।
और हम भी उठ रहे ऊपर। उड़ रहे भू पर।
और यह क्या हो रही घटना।
बदलता है जा रहा पटना।
क्या ये जादू है या छू मंतर
जो जमीं आकाश का अंतर
आ गया हर चीज में ऐसा
था न पृथ्वी पर कभी जैसा
क्या ये माया का करिश्मा है
इन्द्रजालिक क्या ये चश्मा है।
जो धरा पर उच्च थे सहगर्व
हो गए वे एक धुन में खर्व
और नीचे का विशाल प्रदेश
बन गया है वामनों का देश
क्या छोटे इन्हीं घरौंदों से निर्मित्त यह पटना सारा है?
क्या यही श्वेत चादर फैली गंगा की विस्तृत धारा है?
क्या यह पुरैन का पत्ता यही गाँधी मैदान समूचा है?
क्या मधुमक्खी का छत्ता यह या हाईकोर्ट का साँचा है?
क्या वह औंधी हाँड़ी है या मशहूर गोल घर ऊँचा है।
ये है सलाइ के डब्बे या राजेंद्रनगर का ढाँचा है?
क्या खड़ा ताजिया गज भर का यह सेक्रेटरियट घंटाघर है?
क्या ये छोटा सा शिवलिंग यही पटने का वोटर ढाबा है?
क्या हरी फिरोजा और नीली
साड़ियाँ बिछी हैं चमकीली?
या हैं ये धरती के आँचल
जिनमें लहराती नई फसल
जो वर्गाकार गलीचे हैं
वो सचमुच बड़े बगीचे हैं
क्या ये छोटे-छोटे दरपन
हैं बड़े बड़े तालाब गहन?
क्या यह आँगन के सदृश झील
है चौक बरैला कई मील?
या बया नदी बल खाती है?

माछ, मखान, कुतरूम, सिवरत्तीक सातु...

हरिमोहन झा

ईहो आश्चर्येक गप्प जे अनेक धार्मिक अनुष्ठानक प्रसादात् उत्पन्न बालक मे कोनो विशेष धार्मिक प्रवृत्ति नहि जाग्रत भेल। बाबूजी केँ सामान्यो पूजा-पाठ करैत हम-सभ नहि देखलियनि कहियो। एक टा कारण ई भ' सकैछ जे धर्म-पथक दोबगली पसरल गंदगी पर हुनकर नजरि पड़ि गेल होनि आ मन भिनकि गेल होनि। पाखंड ओ आडंबर देखि तेहन वितृष्णा भ' गेल होनि जे धर्मे सँ विमुख भ' गेल होथि। विरोधाभास केँ अपने उजागर करबाक साहस नइँ भेल होनि तँ आगाँ चलिक' काल्पनिक पात्रक सृजन क' खट्टर ककाक मुँहे सभ टा कहबौने होथिन। जे-से!

बाबूजी केँ देखला सँ दू टा चित्र झलकैत अछि— एक दोसरा सँ सर्वथा भिन्न। एक टा पुरना फोटोक बुलंद-रोबियल चेहरा तँ दोसर बादक जर्जर-झुरिआयल चेहरा। रानीघाट क्वार्टरक राजभवन जकाँ ऐश्वर्यशाली-वैभवशाली चित्र मन मे खचित अछि। लोक-सभक महफिल सदिखन जमले रहैत छलै। कखनो कोनो दार्शनिक तँ कखनो कोनो तांत्रिक। आइ कोनो गवैया तँ काल्हि कोनो नर्त्तक। कहियो क्यो जादूक खेल देखाब' पहुँचै, तँ कहियो क्यो महज दर्शन लेल। कहियो घर मे डिबेट लेल विभागीय छात्र-छात्रा लोकनि पहुँचथि। तँ कहियो नाटकक रिहर्सल होइक। हमर बालमन पर राजदरबारक कल्पना साकार भ' उठय। बाबूजीक दोसर चित्र पीड़ादायक रहल अछि। रिटायरमेंटक कारणेँ, कि जहाज जकाँ विशाल क्वार्टर छोड़ि छोट-छीन मोहल्ला मे किरायाक डेरा (नाव सन) मे अयबाक कारणेँ, आ कि एकमात्र पौत्र (दमनजी)क मृत्युक कारणेँ— बाबूजीक उमेर दस साल बढ़ि गेल छलनि आ ओ बूढ़ ओ रुग्ण भ' गेल छलाह। हुनकर रोबीला व्यक्तित्व केँ जेना कालचक्र थकुचि असक्त ओ असहाय बना देने छल।

बाबूजी एक दिस घोर अव्यावहारिक एवं अपटु रहथि तँ दोसर दिस ततबे व्यवहार कुशल। फुल शू नहि पहिरलनि किएक तँ फीता बन्हबाक प्रक्रिया अबूह बुझाइन। हुनका लेल रेडियो मे स्टेशन धरायब इंजीनियरक काज छलै। अपनो कहल करथिन जे हमर एक लाख टका व्यायवहारिक बुद्धिक अभाव मे एक लाख सजमनि भ' गेल। दोसर दिस अपन सभ टा दायित्वक निर्वाह नीक जकाँ कैलनि। गाम पर वृहत् परिवार छल जकर भार हिनकहि पर छल। बाबाक संग विष्णु भैया, सूर्य्यू भैया, चन्द्र भैया (पिसियौत-ममियौत) सभ गोटे रहलाह। रमा, रत्ना (पितियौत) केँ पढ़ा-लिखा बिआह-दान करौलथिन।

बाबूजी ततेक भावनाशील छलाह जे दोसरक दुःख सँ मर्माहत भ' उठैत छलाह। दुःखी अथवा कोनो रूपेँ अशक्त महिला केँ ओ विशेष क' मानथिन। सिनेमा नहि देखथि जे करुण दृश्य मे दहो-बहो नोर खसय लगनि।

लेखक अनागतक प्रवक्ता होइछ, भविष्यद्रष्टा होइत अछि। बाबूजीक कैक टा कल्पना अविकल ओहिना साकार भेलनि अछि। 'ग्रामसेविका'क विमला देवी सँ प्रेरणा लय ए गोट महिला पत्र लीखि अपन 'सृष्टिकर्त्ता'क प्रति आभार प्रकट कैने रहथिन। तहिना 'एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार मे' सौराठ सभाक विरोध ओ प्रदर्शन बाद मे ओहिना भेलै जेना लेखक कल्पना कयने छलाह।

बाबूजीक हिस्सक रहनि नित्य डायरी लिखबाक जे ओ कखनो अंग्रेजी, कखनो हिंदी तँ कखनो मैथिली मे लिखथि। रमा सभ साल डायरी पठबनि जकर जवाब मे ओ लिखथिन जे लिखब शुरू तँ कैलहुँ अछि जानि नहि पूरा क' सकब वा नहि। तहिना मन मे आयल विचार केँ सेहो ओ Stray Thoughts क अंतर्गत कैक टा नोट बुक मे लिखने छथि।

बाबूजी खैबाक सौखीन रहथि आ कहियो गुजराती तँ कहियो मराठी डिश माय सँ फर्माइश क' बनबबैत छलाह। बाहरो सँ जँ कोनो नीक वस्तु खाक' अबैत छलाह तँ ओकर बनैबाक विधि सेहो लिखबाक' लबैत छलाह। कहियो रोट तँ कहियो शीतल प्रसाद अनदिना बनबाक' खाथि। तेँ डायरी मे की खैलहुँ से लिखनाइ नहि बिसरथि। कन्हौली स्टेट सँ मैत्री संबंध बाबाक समय सँ चलल आबि रहल छै आ हम बच्चे सँ दूना बाबू, ठाकुर बाबू, पंडित बाबू (शुक्ला परिवारक तीनू भाइ) केँ परिवार-सहित अबैत देखल अछि आ पाओल अछि हुनकर सभक अपार सिनेह। ओ-सभ हमर-सभक छूल नइँ खाइत रहथि। भनसिया एक टा डराड़ि घीचि ओहि भीतर भानस करैत छल आ ककरो लक्ष्मण-रेखा टपिते भोजन छुआ जाइत रहै आ फेका जाइत रहै। ओ-लोकनि खाइतो ओही घेरा मे छलाह। एक बेरक मन अछि, रानीघाट बला डेरा मे तीनू भाइ पत्नी समेत आयल रहथिन। किछु पड़बा दाना चुगय उतरलै। पंडित बाबू अपन दोनाली मँगबा नेशाना साधि दू-तीन टा केँ ओंघड़ा देलथिन। आ एक टा जोरदार ठहक्का लगौलनि। हमरा ओ साहेब-बीवी और गुलाम सिनेमाक जमीन्दारक अट्टहास सन लागल छल। ''हुनका सभक संग वा एकसरो मे पुजेरी जी अबैत रहथिन आ तखन बाबूजीक चानी भ' जाइत छल। शतरंजक अष्टयाम जे शुरू होइत छल से खतम हैबाक नाम नहि लैत छल। बीच-बीच मे चिकरा-चिकरी तते जोर सँ होमय लगैत छलै जे लगैत छल झगड़ा भ' रहल छै। ककरो चालि आपस कयला सन्ता मारा-पीटि जकाँ होमय लगै। पुजेरी जी हारला पर एमकी-एमकी (एहि बेर) बाजथि जे हम भाइ-सभक बीच सेहो प्रचलित भ' गेल छल।

रत्नाक भगिनीक विवाह क्वाटरे सँ भेल रहै। विवाहक एक दिन पहिने सँ शतरंजक अखंड खेल जे शुरू भेलै ताहि सँ सभ क्यो आजिज रहय। ने नहयबाक होश ने खयबाक होश। विवाहक घर आ घरबैया खेल मे मशगूल। डा. रामावतार शुक्ल आबि बाबूजी लग बैसि गेलथिन। मुदा बाबूजीक ध्यान खेल पर। रत्ना कहलकनि जे शुक्ल जी अयलथिन अछि तँ ओ खेलैत हाँ-हूँ कहिक' रहि गेलाह। रत्ना तामसे बिछाओन बिसात उनटि देलकनि। तखन जाक' हुनकर ध्यान टुटलनि।

जत' केर जे किछु प्रसिद्ध होइ से मँगयबा मे बाबूजी संकोच नहि करथि। मुजफ्फरपुरक सिबरत्तीक सातु आनय ओ ककरो कहि देथिन,

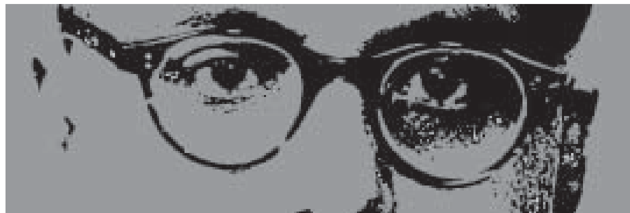
जकर बेसी काल ओ मुठरा बनबाक' खाथि, तँ ककरो सँ भागलपुरक कतरनी चूड़ाक फर्माइश क' देथिन।

रानीघाट क्वार्टरक अहाता बड्ड फैल रहै जकर मैदानक चारू कात चक्कर लगबैत ओ टहलथि। कै चक्कर सँ एक मील होइत छैक तकर गणना ओ कयने छलाह आ ताही हिसाब सँ ओ टहलैत रहथि। आ ओकरा डायरी मे नोट करथि जे आइ 40 तँ आइ 50 चक्कर लगाओल।

अंत समय मे मजबूरी मे पटना छोड़य पड़लनि। गोपाल जीक ट्रांसफर दरभंगा भ' गेलनि। पटना मे एकसरे रहबाक प्रश्ने नइँ उठैत छलै। हारिक' बेमन सँ आबय पड़लनि मुदा बेसी दिन नइँ रहि सकलाह। कय बेर ई मृत्यु केँ धक्का देने छलथिन। लोक जखन तैयार छल, विदा करबा लय अवधारि लेने छल, तखन ई रहि गेल छलाह। लोक जखन निश्चिंत भ' गेल रहय तँ ई चकमा द' चलि गेलाह। दरभंगा सँ जीवनक प्रारंभ भेल रहनि आ नियति केँ दरभंगे सँ अंत करयबाक रहै।

आ प्रस्तुत अछि हिंदी, अंग्रेजी आ मैथिली मे लिखल बाबूजीक डायरीक किछु अंश...

—मन मोहन झा



10.03.1950

Did not take dinner due to lack of appetite. Went to college at 10. Showed my notes on अवच्छेदकता to Dr. Dutta. Went to see Science exhibition with Madhav Jee, Anirudha Jha and N. Mishra. Had refreshment at Pintu together. Witnessed Mock Parliament in Senate Hall. Ascertained date of I.A. Logic exam.

Got a letter to Durga Babu. Thakur Jee came from Raghopur. Munshi came from Khusarapur.

11.03.1950

Babujee's Maithili Padyamala is in print from Mathurji (27 March). Corrected proof of it. Master Saheb came in the morning. Wrote to father to send a preface and a photo if possible.

12.03.50

Morning- Vegetable Mart

10 A.M.- Harindra Babu came from Nehra—took his meals pest and punch here. Went with him to Satish Babu who came with me to the lawn and had a talk till late in the evening. Harindra Babu went by the night steamer. The date for Phuldai's Vidagri is 25th Apr.

13.03.50

Morning 10 A.M.- Invigilation.

Paid off Rs. 120. to Munshi of Khusarapur as houserent of the old house against reciept from Mahadev Lal. Ojhajee came from Nehra. He staged my drama (Ayachi Mishra and Babu ka Dan) at home during Holi. Had a plesasant recreation by Bhawani Babu.

(आनंदमय दिन)

27.03.1976

भोर में ठगन (गामक खवास) रमण जी के लिए सब चीजें+100 रुपया लेकर आया। W (वाइफ) ने वैसे तीस रुपया दूध के मद में, और पाँच रुपया राह खर्च देकर विदा किया। मुखिया जी+ रवीन्द्र (सुपुत्र) सवेरे आठ बजे गाड़ी लेकर आए। स्नान-जलपान (दही-चूड़ा-चीनी) कर तैयार हो गए। गणेश जी भी। एक सौ पच्चीस रुपया साथ में लिया। नौ बजे विदा हुए। 12 बजे समस्तीपुर पहुँचे। डी.एम. (जे एल आर्य) ने ऑफिस मे चाय पिलाई। कृष्णा होटल में मछली-भात, दही-चीनी रसगुल्ला भोजन हुआ। चार बजे दरभंगा पहुँचे। रेडियो स्टेशन जाकर कन्ट्रेक्ट साइन कर दिया। ऋद्धि बाबू, भट्टाचार्य, साकेतानंद आदि से भेंट हुई। छः बजे शाम में गाड़ी से थलवारा पहुँचे। रसगुल्ला जलपान किया। अशोक पेपर मिल के अधिकारीगण स्वागत में थे। आठ बजे से समारोह शुरू हुआ। मैंने अध्यक्षता की। दरभंगा राज के द्वारिका बाबू ने उद्घाटन किया। मधुप, अमर, मणिपद्म, मिहिर, प्रवासी, श्रीश, सोमदेव आदि ने कविता-पाठ किया। मैंने हिन्दी-मैथिली सुनाई, पाहुन भी। 12 बजे रात मे कवि-सम्मेलन समाप्त हुआ। रात में दही-भात, रोहू मछली का सिरा भोजन हुआ। खूब आनंद से सोए। आज का दिन बड़े आनंद से बीता।

28.07.1976

दरभंगा

आठ बजे भोर में दही-चूड़ा-चीनी खाकर गाड़ी से विदा हुए। नौ बजे लहेरियासराय डेरे पर पहुँचे। अरुण और भुवन जी थे। भुवन जी से रेडियो वाली रचना (मंगल-प्रभात) फेयर कराई। अरुण से तीस की रात के लिए रिजर्वेशन कराया। कृष्णानन्द मिलने आए। उन्हें कनिया को बाजितपुर भेजने को कहा। एक बजे दिन में भुवन जी, अरुण के साथ माछ-भात, दही-चीनी भोजन किया। गणेश जी निरामिष खाकर गए। सायंकाल शिशिर आई। कल अपने कॉलेज में मेरा रिशेप्शन करेगी। रात में पराठा-तरकारी-दूध खाकर आराम से पंखा चलाकर सोए।

29.03.1976

दरभंगा

सवेरे गणेश जी थलवारा से आए। वहाँ उन्हें 25 रुपया विदाई मिली। मुखिया जी रवीन्द्र पटना गए। 11 बजे दही-भात-चोखा खाकर अरुण के साथ दरभंगा गए। भुवन जी का फ्लैट देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। दो कमरे का क्वार्टर रहने लायक है। रघुवंश, दयानन्द, ध्रुवगोपाल, प्रतिभा आदि ने वहाँ चाय पी। तीन बजे प्रतिभा के साथ महिला कालेज

गए। वहाँ शिशिर और उसकी प्राध्यापिकाओं ने स्वागत किया। छात्राओं ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सामूहिक फोटो हुआ। पार्टी हुई। वहाँ से मिथिला यूनिवर्सटी आए। भोगेन्द्र बाबू तथा V.C., Gilani से भेंट हुई। वे रेडियो स्टेशन मुझे पहुँचा गए। रेडियो में ऋद्धि बाबू को स्क्रिप्ट दे दिया। एस ई से देर तक बातें हुईं। साहित्य-रसिक हैं। ऋद्धि बाबू सात बजे गाड़ी से डेरा पहुँचा गए। रामदेव जी आए। उनसे पटने का समाचार ज्ञात हुआ। तदुत्तर केदार आए। रात में रोटी-दूध-तरकारी खाकर आराम से सोए।

30.03.1976
दरभंगा

सवेरे मनोज तथा किशोर आकर निमंत्रण दे गए हम तीनों को। भुवन जी तो नहीं गए, हम और अरुण 12 बजे गए। माँगुर मछली-भात दही-चीनी सेबई आदि का भोजन हुआ। कुमकुम की माँ भी बाजितपुर जाएगी। शुक्रवार को। कनियां को साथ ले जाएगी। एक बजे से चार बजे तक डेरे में आराम किया। 6 बजे तक मधुप जी, व्यास जी, आरसी जी, सब जुट गए। साढ़े छ: से 7 बजे तक ब्रॉडकास्ट हुआ। 253 का चेक मिला। आठ बजे गाड़ी से डेरा आए। खीर खाई। गणेश जी नींबू (घर का) लेकर आए। उन्हें दो श्लोक बनाकर दिया। नौ बजे रिक्शा से स्टेशन आए। भुवन जी, अरुण तथा प्रकाश ने बर्थ पर बिछावन कर दिया। व्यास जी भी मिल गए। आराम से सोते आए।

काल दिवस
31.07.1976

आज दिन भर दमन जी कौमा में रहा। डॉ. शरण ने आकर आश्वासन दिया कि वे बेस्ट ट्रीटमेंट देंगे। डॉ. मुकीम को उन्होंने विशेष रूप से तैनात कर दिया। वे रात-दिन दमन जी की देख-रेख करेंगे। रत्ना और चौधरी जी खबर पाते ही अस्पताल आ गए। वे ब्लड बैंक से मैच ग्रुप का ब्लड ले आए जो चढ़ाया गया। रत्ना गाड़ी से डॉ. शरण को भी ले आई। आज गोपाल जी के द्वारा रमण जी को तार भिजवाया, आने के लिए दमन जी की माँ के साथ। रात में चिंताजनक स्थिति देखकर विचार हुआ कि इन्हें लाने के लिए तुरंत आदमी भेजा जाय। चार बजे रात में रूदल को पचास रुपए राह-खर्च देकर लिवा लाने को भेजा। चिट्ठी देकर। दमनजी की बेहोशी बढ़ती ही जा रही है। उन्हें ऑक्सीजन तथा कोरामीन भी दिया गया। रात-भर हमलोग जगे रहे। सब लोग भगवान को पुकारते रहे। शंकर-गुड्डी भी दमन जी को देखने आए। चौधरी जी ने कनिया तथा रमा को आने के लिए सीतापुर तार भेजा। दमन जी चल बसे। वज्रपात हो गया! हा दमन जी...। रात में रमण जी आदि भी आ गए। तमाम चिकित्साओं के बावजूद पाँच बजे दमन जी चल बसे। हाहाकार मच गया। रत्ना मुन्ना की माँ वगैरह किसी तरह पछाड़ खाती हुई Wife को अंदर ले गई। हमलोग गोपाल जी, चौधरी जी, मुन्ना आदि एम्बुलैंस कर गुलबी घाट आए। चेतकर, दिवाकर आदि भी घाट पर आ गए और कहा कि जल-प्रदूषण के कारण ऐसे कई केस हो गए हैं। रानीघाट में तिलांजलि देते हुए 11 बजे लौटे। भीमनाथ, मोहन भारद्वाज, कुलानन्द आदि भी साथ थे। डेरे पर Wife बेसुध पड़ी हुई है। योगेन्द्र मिश्र की पत्नी, डॉ अशोक, मुन्ना की माँ, भीमनाथ जी तथा मोहन भारद्वाज की माताएँ आकर सांत्वना देतीं रहीं। रत्ना यहीं रही। पं. जी ने कहा त्रिरात्र श्राद्ध होगा। मंगल को पिण्डदान तथा बुध को ब्राह्मण-भोजन होगा। मेरे जीवन का यह सबसे बड़ा अभिशाप है कि प्राण समान प्यारे पोते को मुँह में ऊक लगानी पड़ी। जो काम वह मेरे लिए करता वह मुझे उसके लिए करना पड़ा। यह विधि-विडंबना है। यह ऐसा भीषण-आघात है जिसे इस वृद्धावस्था में सँभालना संभव नहीं। दिन भर दमन जी की स्मृतियाँ आती रहीं। और उसके बारे में हमलोग बात करते रहे।

25.09.1979

आइ *धर्मयुग* प्रेस सँ प्रथम फर्मा (बाबूजी) छपल पठा देलक। भात-दालि तरकारी भोजन भेल। दुपहर मे पुजेगरी जी ऐलाह। तखन सँ दिन भरि शतरंज चलल। साँझ मे बोरिंग रोड गेलाह। अपराह्न मे आरसी जी, वर्मा जी ऐलाह। ओहो सभ शतरंज मे सम्मिलित भेलाह। साँझ मे ओ लोकनि चाह पीबिक' गेलाह। राति मे रामसेवक जी तथा बलराम ऐलाह। गामक कुशल कहलनि। कटनी नीक जकाँ चलि रहल छै। गहूमो नीक जकाँ आबाद छै। राति मे गोपाल जी दरभंगा सँ ऐलाह। मखान कुतरुम नेने। भुवन जी सिवरत्तीक सातु मँगाक' रखने छला सेहो देलथिन। ओ सभ छुट्टी मे नहि आबि सकताह कारण जे बच्ची केँ इंजेक्शन पड़ैत छै। पत्नी तथा गुड्डीक रंगीन फोटो शांता अमेरिका सँ पठौने छलै सेहो नेने ऐलाह।

26.12.1979

आइ MU वला 194क चेक मुन्ना मार्फत जमा कराओल। पत्नी कुतरुमक जेली बनौलनि। श्रमक कारण चक्कर आबि गेलनि। दवाइ देल गेलनि। दुपहर मे आराम कैलहुँ! पेपर पढ़लहुँ। काशी सँ 'पाग' नामक पेपर आयल। दुपहर मे पुजारी जी एलाह। तखन सँ जे शतरंज चलल से राति मे नौ बजे धरि चलैत रहल। अहिल्या विभाकर संग अयलीह सायंकाल बूटक साग ल'क'। अवकाश मे सुमन सरीनक कहानी देखि नेने गेलीह। राति मे रोटी-साग-सीमक तरकारी-दूध खैलहुँ। जेली स्वादिष्ट लागल। ठाकुर बाबू तथा दुलहिन केँ सेहो चखाओल गेल। पत्नी केँ चक्कर अयला पर जखन दू-चारि घंटा सूति रहैत छथि तखन आराम पहुँचै छनि।

25.04.81

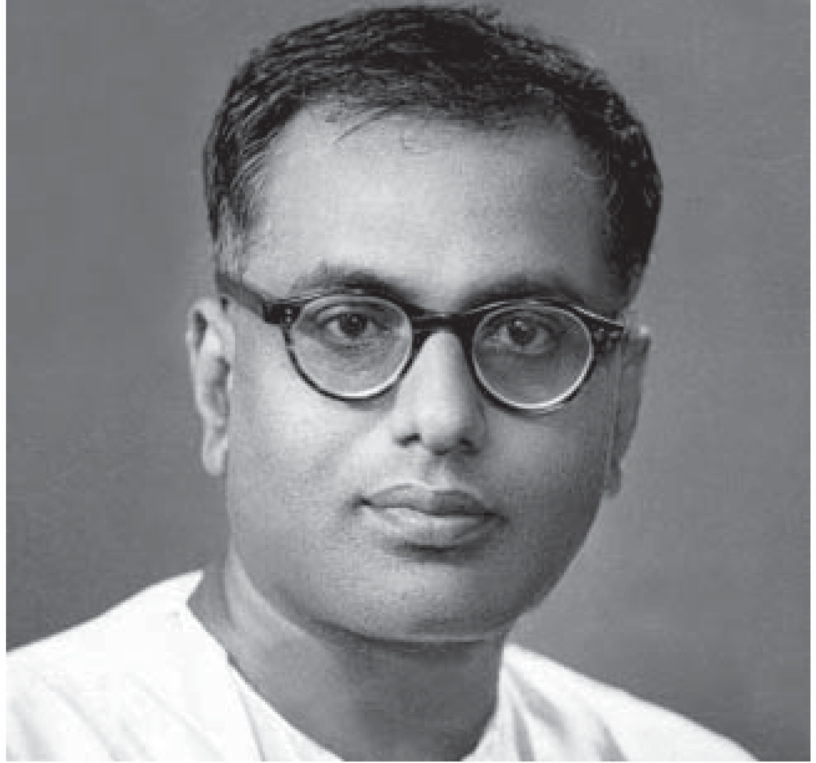
आइ घी-खिचड़ी-चोखा-पापड़ भोजन भेल। रानीघाट पृष्ठ 168 एरेंज कयलौं। रीता अपन मायक संग अयलीह। चाय-मखान भेलनि। सायंकाल ओझाजी दरभंगा सँ अयलाह। मैथिली अकादमीक मीटिंग मे सम्मिलित हेबाक हेतु। भीमनाथ, मोहन भारद्वाज सेहो ऐलाह। चाय-चूड़ा भेलनि। ओझाजी भोजन क' मैथिली अकादमी गेलाह। पं. महेश झा ऐलाह सिवरत्तीक सातु आ कलाकंद ल'क'। पचास राउण्ड देलहुँ। सातुक शर्बत पीलहुँ।

27.04.81

आइ भोर मे सुमन जी ऐलाह। शुभकामना देलनि। कलाकंद खुअलियनि। आइ वन्दना केँ 99° भ' गेलैक। पावरोटी देल गेलै। हमरा दू-तीन बेर दस्त भेल। थालाजल खैलहुँ। राति मे पत्नी गुड्डी केँ ल'क' वर्माजी ओत' गेलीह। बर्थडे मे कल्पना केँ पाँच रुपया देलथिन। पुरी-कचौरी, मिठाइ आदि खा क' अयलीह। राति मे हम केराक साना खैलहुँ परन्तु खा नहि भेल। राति मे विश्वनाथ ऐलाह। अमरनाथ भागलपुर गेल छथि। बहादुर सँ ज्ञात भेल जे अहिल्या गाम गेल छथि, एक मासक बाद ऐतीह। आइ कोनो दवाइ नहि खेलौं। राति मे निद्रा खूब भेल।



पाँच पत्र



(1)

दड़िभंगा
1.1.19

प्रियतमे!

अहाँक लिखल चारि पाँति चारि सय बेर पढ़लहुँ। तथापि तृप्ति नहि भेल। आचार्यक परीक्षा समीप अछि। किन्तु ग्रन्थ मे कनेको चित्त नहि लगैत अछि। सदिखन अहींक मोहिनी मूर्त्ति आँखि मे नचैत रहै अछि।

राधा रानी! मन होइत अछि जे अहाँक ग्राम वृन्दावन बनि जाइत जाहि मे केवल अहाँ ओ हम राधा-कृष्ण जकाँ अनन्त काल धरि विहार करैत रहितहुँ। परन्तु हमरा ओ अहाँक बीच मे भारी भदबा छथि अहाँक बाप-पित्ती जे दू मासक बाद फगुआ मे हमरा आब'क हेतु लिखै छथि। साठि वर्षक बूढ़ केँ की बूझि पड़तनि जे साठि दिनक विरह केहन होइ छै।

प्राणेश्वरी, अहाँ एक बात करू। माघी अमावस्या मे सूर्यग्रहण लगै छै। ताहि मे अपना माइक संग सिमरिया घाट आउ। हम ओहिठाम पहुँचि अहाँ केँ जोहि लेब। हँ, एक टा गुप्त बात लिखैत छी। जखन स्त्रीगण ग्रहण-स्नान करय चलि जैतीह, तखन अहाँ कोनो लाथ क' क' बासा पर रहि जायब। हमर एक टा संगी फोटो खीचय जनै अछि। तकरा सँ हम अहाँक फोटो खिचबाएब। देखब ई बात केओ बूझय नहि। नहि तँ अहाँक बाप-पित्ती जेहन छथि से जनले अछि।

हृदयेश्वरी, हम अहाँक फरमाइशी वस्तु (चन्द्रहार) कीनि क' रखने छी। सिमरिया मे भेट भेला पर चुपचाप दय देब। मुदा क्यो जानय नहि। हमरा बाप केँ पता लगतनि जँ खर्चे बन्द क' देताह। हँ, एहि पत्रक जवाब फिरती डाक सँ देब। तेँ लिफाफक भीतर लिफाफ पठा रहल छी। पत्रोत्तर पठेबा मे एको दिनक विलम्ब नहि करब। हमरा एक-एक क्षण पहाड़ सन बीति रहल अछि। अहाँक प्रतीक्षा मे आतुर।

—अहींक कृष्ण

पुनश्च- चिट्ठी दोसरा केँ छोड़'क हेतु नहि देबैक। अपने हाथ सँ लगायब। रतिगरे आँचर मे नुकौने जायब और जखन केओ नहि रहैक तँ लेटरबक्स मे खसा देबैक।

(2)

हथुआ संस्कृत विद्यालय
1.1.29

प्रिये,

बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि आनन्द भेल। अहाँ लिखै छी जे ननकिरबी आब तूसारी पूजत। से हम एक टा अठहत्थी नूआ शीघ्र पठा देबैक। बंगट आब स्कूल जाइ अछि कि नहि? बदमाशी तँ नहि करैत अछि? अहाँ लिखै छी जे छोटकी बच्ची केँ दाँत उठि रहल छैक से ओकरा दस्तक दवाइ वैद्य जी सँ मँगवा क' द' देबैक। अहूँ केँ एहि बेर गाम पर बहुत दुर्बल देखलहुँ। जीरकादि पाक बनाक' सेवन करू। जाड़काला मे देह नहि जुटत तँ दिन-दिन और ह्रस्त भेल जायब। ओहिठाम दूध उठौना लेल करू। कम सँ कम पाव भरि नित्य पिउल करब।

हम किछु दिनक हेतु अहाँ केँ एहीठाम मँगा लितहुँ। परन्तु एहिठाम डेराक बड्ड असोकर्य। दोसर जे विद्यालय सँ कुल मिला साठि टाका मात्र भेटैत अछि। ताहि मे एहिठाम पाँच गोटाक निर्वाक हैब कठिन। तेसर ई जे फेर बूढ़ी लग के रहतनि। यैह सभ विचारि क' रहि जाइ छी। नहि तँ अहाँक एतय रहने हमरो नीक होइत। दुनू साँझ समय पर सिद्ध भोजन भेटैत। बंगटो केँ पढ़बाक सुभीता होइतैक। छोटकी कनकिरबी सँ मन से बहटैत। परन्तु कैल की जाय?

बड़की ननकिरबी किछु और छेटगर भ' जाय तँ ओकरा बूढ़ीक परिचर्या मे राखि किछु दिनक हेतु अहाँ एतय आबि सकैत छी। परन्तु एखन तँ घर छोड़ब अहाँक हेतु संभव नहि। हम फगुआक छुट्टी मे गाम ऐबाक यत्न करब। यदि नहि आबि सकब तँ मनीआर्डर द्वारा रुपैया पठा देब।

—अहाँक देवकृष्ण

(3)

हथुआ संस्कृत विद्यालय
1.1.39

शुभाशीर्वाद।

अहाँक चिट्ठी पाबि हम अथाह चिन्ता मे पड़ि गेलहुँ। एहि बेर धान नहि भेल। तखन साल भरि कोना चलत? मायक श्राद्ध मे पाँच सय कर्ज भेल तकर सूदि दिन-दिन बढ़ले जा रहल अछि। दू मास मे बंगटक इमतिहान हैतनि। करीब पचासो टाका फीस लगतनि। जौं कदाचित पास क' गेलाह तँ पुस्तको मे पचास टाका लागिए जैतनि। हम ताही चिन्ता मे पड़ल छी। एहिठाम एक मासक अगाउ दरमाहा ल' नेने छिऐ। तथापि उपर सँ नब्बे टाका एतय हथपैंच भ' गेल अछि। एहना हालति मे हम बहत्तर टाका मालगुजारीक हेतु कहाँ सँ पठाउ? जौं भ' सकय तँ तमाकू बेचि कय पछिला बकाया अदाय क' देबै। भोलबा जे खेत बटाइ कैने अछि ताहि मे एहि बेर केहन रब्बी छै? कोठी मे एक्को मास योग्य चाउर नहि अछि। ताहि पर अहाँ लिखै छी जे ननकिरबी सासुर सँ दू मासक खतिर आबय चाहैत अछि। ई जानि हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ भ' गेल छी। ओ चिल्काउर अछि। दू टा नेना छै। सभ कें डेबब अहाँ बुतें पार लागत? आब छोटकी बच्ची सेहो दस वर्षक भेल। तकर कन्यादानक चिन्ता अछि। भरि-भरि राति यैह सभ सोचैत रहै छी। परन्तु अपन साध्ये की? देखा चाही भगवान कोन तरहें पार लगबै छथि।

शुभाभिलाषी
देवकृष्ण

पुनश्च- जारन निघटि गेल अछि तँ उतरबरिया हत्ताक सीसो पँगबा लेब। हम किछु दिनक हेतु गाम अबितहुँ। किन्तु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबि क' की करब?

(4)

हथुआ संस्कृत विद्यालय
1.1.49

आशीर्वाद!

हम दू मास सँ बड्ड जोर दु:खित छलहुँ। तेँ चिट्ठी नहि दय सकलहुँ। अहाँ लिखै छी जे बंगट बहु कें ल'क' कलकत्ता गेलाह। से आइ काल्हिक बेटा-पुतोहु जेहन नालायक होइ छै से तँ जनले अछि। हम हुनका खातिर की-की ने कैल! कोन तरहें बी.ए. पास करौलियनि से हमही जनैत छी। तकर आब प्रतिफल द' रहल छथि। हम तँ ओही दिन हुनक आस छोड़ल जहिया ओ हमरा जिबिते मोंछ छटाबय लगलाह। सासुक कहब मे पड़ि गोरलग्गीक



रुपैया हमरा लोकनि कें देखय नहि देलनि। जौं जनितहुँ जे कनिया अबितहि एना करतीह तँ हम कथमपि दक्षिण भर विवाह नहि कराबितियनि। पन्द्रह सय टाका गना क' हम जे पाप कैल तकर फल भोगि रहल छी। ओहि मे सँ आब पन्द्रहो टा कैंचा नहि रहल। तथापि बेटा बुझै छथि जे बाबूजी तमघैल गाड़नहि छथि। ओ आब किच्छु टा नहि देताह। और ने पुतोहु अहाँक कहल मे रहतीह। हुनका उचित छलनि जे अहाँक संग रहि भानस-भात करितथि, सेवा-शुश्रुषा करितथि। परंच ओ अहाँक इच्छाक विरुद्ध बंगटक संग लागलि कलकत्ता गेलीह।

ओहिठाम बंगट कें एक सय पचास टाका मे अपने खर्च चलब मुश्किल छनि। कनिया कें कहाँ सँ खोऔथिन? जे हमरा लोकनि तीस वर्ष मे नहि कैल से ई लोकनि द्विरागमन सँ तीन मासक भीतर क' देखौलनि। अस्तु। की करब? एखन गदह-पचीसी छनि। जखन लोक हैताह तखन अपने सभ टा सुझतनि। भगवान सुमति देथुन। विशेष की लिखू? 'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति।'

—देवकृष्ण

पुनश्च-जौँ खर्चक तकलीफ हो तँ छौ कट्ठा डीह जे अहाँक नाम पर अछि से भरना ध' क' काज चलायब। अहाँक चन्द्रहार जे बंधक पड़ल अछि से जहिया भगवानक कृपा हैतनि तहिया छुटबे करत।

(5)

काशीत:
1.1.59

स्वस्ति श्री बंगट बाबू कें हमर शुभाशिष: सन्तु। अत्र कुशलं तत्रास्तु। आगाँ सुरति जे एहि जाड़ मे हमर दम्मा पुन: उखड़ि गेल अछि। राति-राति भरि बैसिक' उकासी करै छी। आब काशी विश्वनाथ कहिया उठबै छथि से नहि जानि। संग्रहणी सेहो नहि छुटैत अछि। आब हमरा लोकनिक दबाइए की? 'औषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरि:'। एहि ठाम सत्यदेव हमर बड्ड सेवा करै छथि। अहाँक माय कें बातरस धैने छनि से जानिक' दु:ख भेल। परन्तु आब उपाये की? वृद्धावस्थाक कष्ट तँ भोगनहि कुशल। बूढ़ी कें चलि-फिरि होइ छनि कि नहि? हम आबिक' देखतियनि, परंच ऐबा जैबा मे तीस-चालीस टाका व्यर्थ खर्च भ' जायत। दोसर जे आब हमरो यात्रा मे परम क्लेश होइ अछि। अहाँ लिखै छी जे ओहो काशी वास करय चाहैत छथि। परन्तु एहिठाम बूढ़ी कें बड्ड तकलीफ हैतनि। अप्पन परिचर्या करबा योग्य तँ छथिए नहि, हमर सेवा की करतीह? दोसर जे जखन अहाँ लोकनि सन सुयोग्य बेटा-पुतोहु छथिने तखन घर छोड़ि एतय की करय औतीह। मन चंगा तँ कठौती मे गंगा। ओहिठाम पोता-पोती कें देखैत रहै छथि। चि. पौत्र सभ कें देखबाक हेतु हमरो मन लागल रहै अछि। परंच साध्य की? उपनयन धरि जिबैत रहब तँ आबि क' आशीर्वाद देबनि। अहाँक पठाओल तीस टाका पहुँचल। एहि सँ च्यवनप्राश कीनिक' खा रहल छी। भगवान अहाँ कें निकें राखथु।

चि. पुतोहु कें हमर शुभाशीर्वाद कहि देबनि। ओ गृहलक्ष्मी थिकीह। अहाँक माय जे हुनका सँ झगड़ा करै छथिन से परम अनर्गल करै छथि। परन्तु अहाँ कें तँ बुढ़ीक स्वभाव जनले अछि। ओ भरि जन्म हमरा दु:खे दैत रहलीह। अस्तु।'कुमाता जायते क्वचिदपि कुपुत्रो न भवति' एहि उक्ति कें अहाँ चरितार्थ करब।

इति देवकृष्णस्य

पुनश्च- यदि कोनो दिन बूढ़ी कें किछु भ' जाइनि तँ अहाँ लोकनिक बदौलति सद्गति हेबै करतनि। जाहि दिन ई सौभाग्य होइनि ताहि दिन एक काठी हमरो दिस सँ ध' देबनि।

—इति देवकृष्णस्य

(*चर्चरी* सँ -1960)

कन्याक जीवन

''हे औ पाहुन! देखू, फेर हमरा दस पड़ल। आब अहाँक गोटी कटा गेल।''

''ए तित्तिर दाइ! कन्ना नहि करू। अहाँ केँ दू खुदरा पड़ल अछि।''

''नहि! दस पड़ल अछि। एक टा कौड़ी चित्त छै से नहि सुझै अछि?''

''नहि! दू टा कौड़ी चित्त छल। अहाँ कंगना सँ घुसका देलिऐ ताहि सँ एक टा पट भ' गेल। एना बेइमानी नहि करू।''

''बेइमानी तँ अहाँ करैत छी। हारय लगै छी तँ एहिना कन्ना करय लगै छी। जाउ, आब अहाँ सँ नहि खेलायब।''

ई पचीसीक झगड़ा चलिते छल कि धप्प द' गाछी मे एक टा सिनुरिया आम खसलै। तित्तिर दाइ दौड़लीह। और हमहूँ तँ आखिर दसे वर्षक रही। आम लूटय लेल नहि दौड़ितहुँ तँ फेर बाल्यावस्था कहौलकैक की?

फल ई भेल जे दुनू गोटे एके बेर ओहि आम लग जाक' खसलहुँ। तित्तिर ओहि आम केँ बकबका क' मुट्ठी धैने! और हम तित्तिरक मुट्ठी केँ अपना मुट्ठी मे कसने! केओ छोड़य लेल तैयार नहि।

तित्तिर बजलीह, ''हे औ पाहुन! ई आम हम पौलहुँ अछि। अहाँ हमर मुट्ठी छोड़ि दिय', नहि तँ आब हम दाँते काटब से कहि दैत छी।''

हम जा जवाब दियनि ता तित्तिर दाइ ततेक जोर सँ दाँत काटि लेलनि जे हम किकिया उठलहुँ और बक्क द' हाथ छोड़ि देलियनि। तित्तिर दाइ ओ आम लय पड़ैलीह।

हम अप्रतिभ भ' गेलहुँ। तित्तिर दाइ मचान पर बैसलि दाँत सँ कुतरि-कुतरि आम खाय लगलीह। हमरा उदास देखि बजलीह, ''की औ पाहुन! अहूँ खायब? एहि दिस निरैठ छै। अहाँ खा लिय।''

हम कहलियनि, ''बेस, रह' दिय'। हमर जनउ भ' गेल अछि।''

ओ बजलीह, ''अहाँ पाहुन छी। हमरा अहाँ सँ छीनिक' नहि खैबाक चाहै छल। ई अनुचित भेल। आबो अहाँ खा लिय'। खूब मिठ छैक।''

हम कहलियनि, ''हमहीं दौड़लहुँ से अनुचित भेल। ई की हमर गाछी थिक?''

ओ लज्जित होइत बजलीह, ''ई अहाँ की कहै छी? बहिन-बहिनोयक धन की अनकर होइ छैक? भौजी सुनतीह तँ हमरा कतेक फज्झति करतीह? अहाँ केँ हमर सप्पत अछि, ई आम ल' लिय'।''

ताबत हमर नजरि हुनक पहुँची पर पड़ल। कहलियनि, ''ऐँ! ई शोणित कोना बहैत अछि?''

ओ बजलीह, ''वाह रे पुछनाइ! अपने चुड़ियो फोड़ि देलनि अछि और पुछै छथि कोना शुभ्रशाभ्र भ'क'?''

हम सिहरि उठलहुँ। कहलियनि, ''देखू, बहिन केँ नहि कहबनि।''

ओ बदमासी सँ बजलीह, '' वाह! कहबनि ने तँ की? भैया केँ देखा देबनि।''

हम भय सँ अवाक् रहि गेलहुँ। नेहोरा करैत कहलियनि, ''तित्तिर दाइ, अहाँ केँ हमरे सप्पत अछि। जँ बहिन आ ओझाजी केँ कहबनि तँ हम आइए अपना गाम चलि जायब।''

ओ बजलीह, ''तखन ई आम खा लिय'।''

अगत्या निरुपाय भ'क' हमरा सन्धि करय पड़ल। परन्तु जहिना एक चोभा लगबैत छी कि तित्तिर दाइ थपड़ी पारैत खिलखिला उठलीह, ''जाउ, अहाँ केँ भठा देलहुँ, हम सभ केँ कहि देबैक जे अहाँ हमर ऐंठ खैलहुँ अछि।''

ई कहैत तित्तिर दाइ आमक जलखरी हाथ मे उठौलनि और घर दिस विदा भ' गेलीह। हमहूँ हुनकर पाछाँ लगलहुँ।

आँगन मे अयलहुँ तँ देखै छी जे दीदी ठाँव-बाट कैने बैसलि छथि। बजलीह, ''आइ कतेक देरी भ' गेलौह! एखन धरि पानिओ ने पिउने छह।''

हम पैर धो क' पीढ़ी पर बैसि गेलहुँ। बहिन पहिनहि सँ चूड़ा थारी मे भिजौने छलीह। तित्तिर ओही ठाम पहुँचि गेलीह।

हमरा देखि बजलीह, ''की औ पाहुन! ओ बात हम भौजी सँ कहि दिऔन?''

हम अनुरोधपूर्वक कहलियनि, ''अहाँ कहबनि तँ हमहूँ कहि देबनि। देखू, अहाँ जे दाँत काटि लेलहुँ से एखन धरि भकभका रहल अछि।''

ई कहि हम हुनका अपन हाथ देखाबय लगलियनि। ओहि पर चारि टा दाँतक चिह्न ओहिना अंकित रहय। ताबत बहिन एक बाटी आमक रस नेने पहुँचि गेलीह।

हमर हाथ देखि बजलीह, ''ऐँ! ई की भेलौह अछि?''

तित्तिर दाइ ओहिठाम सँ पड़ैलीह और जाक' अमौट पारय लगलीह।

बहिन केँ नहि जानि कोना बुझा गेलनि। ननदि केँ डँटैत बजलीह, ''जाउ, अहाँ केँ एको रत्ती ज्ञान नहि भेल अछि। विवाहक वयस भ' गेल और हमरा भाय सँ एकपिठया जकाँ करैत छी। काल्हि सँ अहाँक संग गाछी नहि जाय देबैह।''

एकरा बादक गप्प नीक जकाँ स्मरण नहि अछि। हँ, एतबा मन अछि जे जाहि दिन हम गाम जाय लगलहुँ तहिया गाछीक कोन मे तित्तिर दाइ ठाढ़ रहथि। हमरा सड़कक बाट धरैत देखि ओ बाजि उठलीह, '' हे औ पाहुन! कनेक सुनैत जाउ।''

हम लग मे गेलियनि तँ ओ बजलीह, ''हमरा सँ कतेक अपराध भ' गेल हैत, से कहल-सुनल माफ करब।''

ई कहि ओ हमरा हाथ मे एक टा सिनुरिआ आम ध' देलनि।

हम कहलियनि, ''दीदी बहुत रासे आम हमरा संग क' देने छथि। देखैत छिऐ नहि ओ खबासक माथ पर चडेरा।''

परन्तु ओ बजलीह, ''अहाँ नहि लेब तँ हमरा मन मे बड्ड दु:ख हैत।''

ई कहि ओ आँचर सँ अपन आँखि पोछय लगलीह। हम ओ आम जेबी मे ध' लेल।

चौदह वर्ष बाद। एहि बीच मे हम एम.ए. क' गेलहुँ। लॉ क' गेलहुँ। ठाम-ठाम सँ विवाहक प्रस्ताव आबय लागल। परन्तु हम एके जवाब

दिऐ, ''पहिने जीवन मे प्रवेश क' जायब अर्थात् जीविका स्थिर भ' जायत तखन।''

एहि बीच मे ओझा जीक पत्र आयल, ''अहाँक बहिन दु:खिता छथि। आबिक' देखि जैयोन।''

हम ओतय पहुँचलहुँ तँ देखैत छी—ने ओ नगरी ने ओ ठाम। एहि चौदह वर्ष मे जेना सभ किछु परिवर्तन भ' गेल होइक। जे विशाल हवेली हमर देखल रहय तकरा स्थान मे पुरना पोखरिक भीड़ पर एक टा छोट-छीन टाटक मड़ैया देखय मे आयल जे पूर्वक उपहास करैत छल। जहाँ सात-सात टा बखारी रहैत छल तहाँ केवल एकमात्र टूटल भूसखाड़ टा ठाढ़ छल। ओझाजी परम शिकस्त हालत मे छथि ई बुझबा मे भाङ्ठ नहि रहल।

आङन पहुँचलहुँ तँ बहिन अनुरोध करैत बजलीह, ''ह'! एक युग पर तोरा मन पड़लौह। हमरा लोकनि केँ एकदम्मे बिसरि गेलाह।''

तदुपरान्त ओ अपना दु:खक महाभारत पसारलनि। कौशिकीक बाढ़ि सँ एहि दशा मे प्राप्त भ' गेल छथि। साले-साल अन्न दहा जाइत छनि। खेत बेचिक' बेसाह चलैत छनि। सासु मरि गेलथिन। हुनका काज मे कर्ज भ' गेलनि। महाजनक ऋण दिन-दिन बढ़ल जाइ छनि। कलमबागो भरना पड़ल छनि। देयादिनी भिन्न भ' गेलथिन। राति-दिन पट्टीदारी चलैत रहैत छनि। ओझा जी केँ तेहन गठिया धैने छनि जे आब अकार्यक भ' गेलाह। बहिन अपने सुखि क' काँट भ' गेलीह अछि।

हुनक विवर्ण मुँह देखि मन कानि उठल। कहय लगलीह, ''हमरा छौ मास सँ पेट मे पिलही अछि। केओ देखनिहार नहि। आब बेसी दिन नहि बचबौह। माय सँ भेंट करा दैह, ताही खातिर बजौलिऔह अछि''

हमरा आँखि सँ टपटप नोर खसय लागल। ओ हमर आँखि पोछैत बजलीह, ''दुर बताह! कनै छह किऐ? दुर जो! हमहूँ केहन छी जे तोरा अबितहि अपन रामायण सुनाबय लागि गेलिऔह! एकर की कोनो अंत छै? चलह पैर धोअह।''

बहिन हमरा हाथ पकड़िक' पीढ़ी पर ल' गेलीह। हम संदेश मे जे पेड़ा ल' गेल रहियनि ताहि मे सँ चारि टा हमरा आगाँ मे राखि देलनि। ओहिना कोना दितथि? तँ पातिल सँ थोड़ेक माढ़ बहार कयलनि।

ताबत एक टा नेना जे पोखरि मे बंसी खेलाइत रहनि से दू चारि टा गरइ माछ नेने पहुँचि गेलनि। बहिन उल्लसित भय बजलीह, ''बौआ! तोरा माछक बड़ सौख रहै छौह। नहूँ-नहूँ खा। दू टा पका क' साना क' दैत छिऔह। हे रौ बड्ट बाड़ी सँ हरियर मरिचाइ तोड़ि ला।''

ताबत एक टा मलिन-वस्त्रा प्रौढ़ा सेहो पोखरि सँ स्नान कैने पहुँचलीह। गर मे तुलसीक माला, हाथ मे अछिञ्जल, गंगास्तव पाठ करैत। वैधव्यक साकार मूर्त्ति जकाँ। हम बहिन केँ पुछलियनि, ''हिनका नहि चिन्हलियनि?''

ओ माछ पकबैत बजलीह, ''चिन्हबहुन कोना? एहिठाम अबैत रहितह तखन ने! ई हमर परिहारपुर वाली ननदि थिकीह।''

ओ हमरा देखि किछु धखैली। बहिन कहलथिन, ''ई हमर भाय थिकाह। नहि कोनो हर्ज।''

विधवा हाथक लोटा तुलसी चौरा पर रखैत बजलीह, ''धन्य भाग! एतबा दिन पर बहिन मोन पड़लनि। कोन दिन हिनकर चर्चा नहि होइत छलनि?''

हम देखल जे हुनका वस्त्र मे ठामठाम पेओन लागल छनि जाहि कारण सँ समक्ष ऐबा मे संकोच भ' रहल छनि। ओ तीतल नूआ नेने सोझे पछुआड़ मे चलि गेलीह और प्राय: ओहिठाम बैसि नूआ सुखाबय लगलीह। हम बहिन केँ पुछलियनि, ''ईहो तोरे संग रहैत छथुन?''

ओ साना मे मिरचाइ गुरैत बजलीह, ''की कहै छह? विपत्ति पर विपत्ति। हिनका सासुर मे देओर बड्ड दु:ख दैत छनि। छौ मास सँ एतहि छथि।''

हम पुछलियनि, ''हिनका धिया-पुता?''

ओ बजलीह, ''एक टा बंगर छथिन। और तीन टा कन्या। एक कन्या सासुर बसै छथिन। दू टा कुमारिए छथिन। आइ चतुर्दशी थिकै। ई महादेव पूजै छथि। तेँ दुनू बहिन पोखरि सँ माटि लायब गेल छनि।''

हम पुछलियनि, ''हिनका स्वामी केँ की भेलनि?''

ओ बजलीह, ''विधाता हरण क' लेलथिन। पूर्णिया जिला मे नौकरी करैत रहथिन। ओहीठाम मलेरिया ध' लेलकनि। आब हिनका दू-दू टा बेटीक कन्यादान करबाक छनि। राति-दिन चिंता मे डूबलि रहै छथि।''

ताबत दू टा बालिका खोंइछ मे माटि नेने पहुँचि गेलथिन। बहिन बजलीह, ''यैह, श्यामा पार्वती आबिए गेलि। हे गै! पाहुन ऐलथुन अछि। तरकारी बनतैक। गै श्यामा! चार पर कदीमाक फूल छैक से तँ चारि टा तोड़ि दे। और हे गे पार्वती! तोँ झट द' बाड़ी सँ पटुआक साग तोड़ने आ!''

ओहि बालिका केँ देखि हमरा मन मे हठात तित्तिरक रूप नाचि उठल। हम बहिन केँ पुछलियनि, ''दीदी! हम द्विरागमन मे तोरा संग आयल रहियौक तँ एक टा एहने छौंडी रहैक। प्राय: तित्तिर नाम रहैक। ओकर कतय विवाह भेलैक?''

बहिनक ठोर पर हँसी आबि गेलनि। बजलीह, ''आब तोँ ओकरा देखबहौक तँ चिन्हबहौक?''

हम कहलियनि, ''जरूर चिन्हबैक। ओ चलय काल एक टा आम हमरा देने रहय से ओहिना मोने अछि।''

ताबत परिहारपुर वाली सेहो नूआ बदलि क' ऐलीह और माटिक महादेव बनाबय लगलीह। हमरा बूझि पड़ल जेना हुनका शरीरक सभ टा शोणित पानि बनि क' आँखिक मार्ग सँ खसि पड़ल होइनि। केवल अस्थि ओ चर्म टा शेष रहि गेल छनि।

हम जलखै करी से घोंटल नहि जाय। बहिन पंखा हौंकैत-हौंकैत पुछि बैसलीह, ''बौआ तोँ विवाह किऐ नहि करैत छह?''

हम कहलियनि, ''मन लायक कन्या भेटय तखन ने?''

बहिन हँसैत पुछलनि, ''केहन कन्या चाहैत छह?''

हम कहलियनि, ''ओही तित्तिर सन। जँ ओकर विवाह नहि भेल होइक...''

बहिन बजलीह, ''धुर बताह! तोँ एके रंग सभ दिन रहि गेलाह। वैह तित्तिर दाइ तोरा सोझाँ मे बैसल छथुन से नहि चिन्हैत छहुन?''

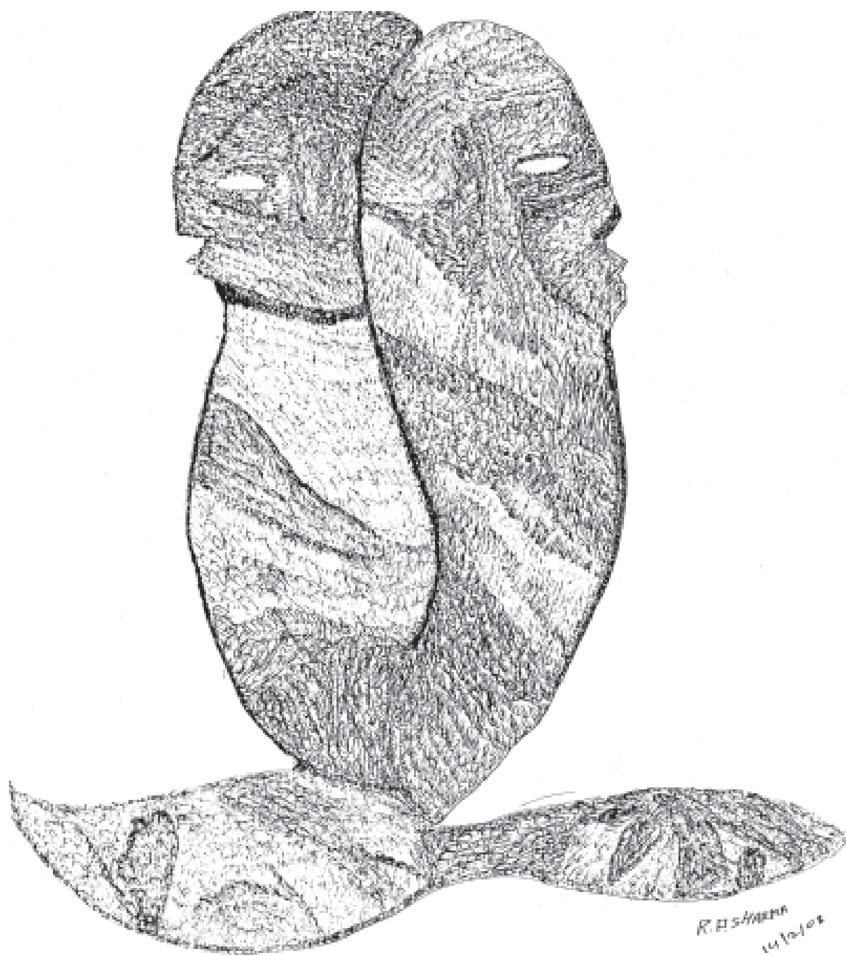
ई सुनैत परिहारपुरवाली लजाक' मुँह झाँपि लेलनि। और हमरा तँ आश्चर्यक कोनो सीमा नहि रहल। एतबे दिन मे ई अंतर! कहाँ ओ अज्ञातयौवना! कहाँ ई अकालवृद्धा! कहाँ ओ स्वच्छन्द चहकयवाली तित्तिर! कहाँ ई बंगटक माय!

हम अविश्वासक स्वर मे बहिन केँ पुछलियनि, ''ऐँ! यैह तित्तिर दाइ थिकीह? हम ई एक संग खेलाएल छी। हम एखन जीवन मे प्रवेशो नहि कैलहुँ और हिनकर सभ टा समाप्त भ' गेलनि!''

एहि बेर पूर्व परिचित स्वरक किछु आभास सुनाइ पड़ल, ''हे औ पाहुन! अहाँ अपना सँ हमरा किऐ मिलान करैत छी? अहाँ पुरुष छी। और हमरा लोकनि जखने कन्या भ'क' जन्म लैत छी तखने सभ किछु अवधारि लैत छी। ओहि समय नेना मे ज्ञान नहि रहय तँ अहाँ सँ बराबरी करैत रही। हमरा सँ जे अपराध भेल हो से बिसरि जायब। ''ऐँ! अहाँ पुरुष भ'क' कनैत छी? दुर! तखन हमरा लोकनि कोना धैर्य धारण करब? जौं हम सभ अपन नोर बहाबय लागी तँ गामक गाम दहा जाय।''

(*रंगशाला* सँ—1949)

मर्यादाक भंग



आइ पंडितजीक आँगन मे हूलिमालि उठल छनि। कारण जे एक पाहुन आबि गेल छथिन। सेहो विशिष्ट लोक। दुलारपुरक चौधरी। हुनक सेवा-सत्कार मे कोनो भाँगठ नहि होमक चाही। परन्तु समस्या ई जे पं. जी केँ कचहरीक काज सँ ऐखन लहेरियासराय जैबाक छनि। आब की हो?

पंडिताइन कहलथिन, ''और ओरिआओन तँ हमरा लोकनि सभ टा कय देबनि। एक टा भाँटा-अदौड़ी भ' जैतनि। चार पर सजमनि छैहे। भँटवर हैतनि। तिलकोरक पात तरि देबनि। तखन बड़-बड़ी, पापड़, तिलौरी। परन्तु भारी बात तँ ई जे भोजनक हेतु बजाबय के जैतनि?''

पं. जी किछु सोचि कय बजलाह, ''जखन सभ टा पीढ़ी-पानि ठीक भ' जाय तखन बचनू केँ कहबै। बजा अनतनि। पाँचे वर्षक अछि तें की। बेस ढिठगर अछि—की हौ बचनू! पाहुन केँ बजा अनबहुन से हेतौह कि ने? कहिअहुन—चलू, खाय लेल। तखन हम तोरा लेल बाजार सँ लड्डू नेने ऐबौह।

ई कहि पं. जी बचनू केँ दुलार सँ चुम्मा लेलथिन और पनही पहिरि दलान पर ऐलाह। चौधरीजी केँ कहलथिन, ''चौधरी जी, कहैत तँ संकोच होइत अछि। परन्तु एहन संयोग जे आइए एक टा मामिलाक तारीख छैक, से हमरा दस बजे कचहरी पहुँचब जरूरी अछि। अपने केँ एतय एकसर छोड़ि क' जायब तँ महा अनर्गल लगैत अछि। परन्तु कैल की जाय? हम सायंकाल धरि वापस आबि जायब। यदि अपनेक आज्ञा हो तँ...''

चौधरी जी कहलथिन, ''नहि, नहि, कोनो बात नहि। अपने अवश्य गेल जाओ। ई तँ हमर अप्पन घर थिक। और धियापुता छैहे। संध्याकाल फेर गप्प हैबे करत। अपने कोनो बातक चिन्ता नहि कैल जाय। गेल जाओ।''

पं. जी पुनः एक बेर उचिती क्षमाप्रार्थना करैत झटकल कचहरी दिस विदा भेलाह।

आब आँगनक हाल सुनू। पंडिताइन चारू देयादिनी मिलि भानस-भात मे जुटि गेलीह। ओसारा पर छनन-मनन होमय लागल। और थोड़बे काल मे बड़-बड़ी ओ तरुआक पथार लागि गेल। चारू जनी तेहन अपस्याँत रहथि जे किनको अपना देहक होश नहि रहनि। सभ घामे पसीने तर। मुँहो धोयबाक अवकाश नहि। परन्तु घरक पुतोहु कर्णपुर वाली कनिया अविचलित भाव सँ स्नान क' अपन केश थकड़ि रहल छलीह। ई देखि सासु लोकनि अपना मे कनखी-मटकी चलाबय लगलीह। आशय ई जे हमरालोकनि तँ फाटि रहल छी और हिनका यैह सीटक बेरि छनि। परंच कनियाक स्वभाव सभ केँ जानल छलनि, तँ किनको जोर सँ बजबाक साहस नहि भेलनि।

ता दालान पर पाहुन केँ झक्क लागि गेल छलनि। परन्तु दैवी लीला! बचनू कोम्हरो सँ खेलाइत-धुपाइत ओहिठाम पहुँचि गेलाह। हुनका ने हरलनि ने फुरलनि, पाहुनक पैर ध' क' उठाबय लगलथिन— की औ पाहुन! सुतले रहब? खाय लेल नहि चलब?

चौधरी जी धड़फड़ा क' आँखि मिड़ैत उठलाह। पुछलथिन—की? भ' गेलैक? बेस, चलू।

चौधरी जीक पैर खड़ाम खोजय लगलनि। परन्तु से नहि छलनि। एखन घरबैया रहितथि तँ एहन त्रुटि नहि होइत, ई सोचैत चौधरीजी खालिए पैर बचनूक संग विदा भ' गेलाह।

ओम्हर आँगन मे ककरो खबरि नहि जे बचनू पाहुन केँ बिझौ करौने आबि रहल छथि। फलस्वरूप तमाशा लागि गेल। ओसारा पर नवहथवाली पलथा लगौने सजमनिक चक्का कटैत छलीह। एकाएक देखै छथि जे बीच आँगन मे पाहुन ठाढ़ भेल छथि। ई देखितहि ओ पड़ैलीह। भारी भरकम शरीर। तलमलाइत दौड़लीह से बिसहथवाली सँ टकरा गेलीह। दुनू गोटाक नाक थौआ भ' गेलनि। बिसहथवाली ठाढ़ि भ'क' अदौरी भाँटाक झोर लाड़ैत छलीह। ओहो करछु फेकि, आँचर सम्हारैत, कोनियाँ घर मे जा नुकैलीह। भटसिम्मरवाली घाठि फेनैत छलीह। ओहो घठियाहे हाथे मरौत काढ़ि दुरुखा दिस पड़ैलीह। पंडिताइन आँगन मे पीढ़ी पर बैसि नहाइत छलीह। एक लोटा पानि देह पर देने रहथि और दोसर लोटा ढारैत ताबत ई कांड उपस्थित भ' गेल। ओ जहिना भीजल-तीतल रहथि तहिना लते-पत्ते पछुआड़ दिस पड़ैलीह।

एके क्षण मे तेहन भगदड़ मचि गेल जेना कोनो बाघ आबि गेल हो। चौधरी जी बीच आँगन मे किंकर्तव्यविमूढ़ ठाढ़ रहलाह। पाछाँ फिरिक' बचनूक दिस तकलनि, परन्तु एहि बिहाड़ि मे बचनू कखन लंक ल'क' पड़ैलाह तकर पता नहि। चौधरी जी 'श्लैधिराजतनया न ययौ न तस्थौ' जकाँ गह्वरित भेल ठाढ़ छलाह। ओ प्रायश: फिरिक' दलान पर चलि जैतथि, परंच एही काल मे एक अद्भुत घटना भ' गेल। आँगन सँ और-और स्त्रीगण तँ पड़ा गेलीह परन्तु कर्णपुरवाली कनियाँ दही-चूड़ा-चीनी जलपान करैत छलीह से करिते रहलीह। पछुआड़ सँ सासु थपरी पाड़ि इशारा देमय लगलथिन। कोनियाँ घर सँ दुनू देयादिनी चुटकी बजाबय लगलथिन। दुरुखा सँ भटसिम्मरवाली गर जाँतिक' कहलथिन—ऐ! अहाँ केँ पड़ा नहि होइ अछि? पाहुन देखैत छथि। केहन गब्बर छी?

परन्तु कर्णपुरवाली किनको दिस कर्णपात नहि कैलनि। ओ निर्विकार भाव सँ पाहुन केँ सम्बोधित कय बजलीह, ''चौधरी जी! ओना थकमकाएल ठाढ़ किएक छी? आउ!'' चौधरी जी स्तम्भित रहि गेलाह। मैथिलक आँगन मे अठारह वर्षक नवयौवना पुतोहु मे एतबा साहस भ' सकैत छैक, ई कहियो कल्पना मे नहि आयल छलनि। आइ जीवन मे प्रथम बेर ई दृश्य देखि विस्मय-विमुग्ध भ' गेलाह।

युवती अपन जलखइ समाप्त करैत कहलथिन, ''अहाँ केँ बचनू किछू पहिनहि बजा अनलक। बेस, कोनो हर्ज नहि। अहाँ ताबत बैसू। हम पाँच मिनट मे सभ टा ठीक कय दैत छी।

ई कहि युवती हुनका एक छोट चौकी पर बैसाय हाथ मुँह धोब'क हेतु एक लोटा जल देलथिन और आसन लगाक' थारी मे भात साँठय लगलीह। चौधरी जी लाजे कठुआक' धड़ नीचा क' लेलनि। एहन अभूतपूर्व दृश्य देखि स्त्रीगण दाँत तर जीभ काटय लगलीह। पंडिताइन तामसे भूत भ' गेलीह। ओ बारंबार पछुआड़ मे खखसय लगलीह। अभिप्राय ई जे—हे औ पाहुन! कनियाँ तँ सहजेँ बताहिए अछि, परन्तु अहाँ तँ सज्ञान छी। आबो जाक' कनेकाल बाहर बैसू ग'। एम्हर सभ ठीक भ' जायत तखन आयब! ई बतही कोना परसत, की देत, की नहि देत, तकर कोन ठेकान?

परन्तु पंडिताइन खखसिते रहि गेलीह। एम्हर कर्णपुरवाली बेस सुभ्यस्त भ' चौधरीक संग गप्प करैत हुनका भोजन करबय लगलथिन। पछुआड़ मे पंडिताइन छाती पीटि बाजय लगलीह, ''बाप रे बाप! ई कलियुगी जग जीति लेलक। एहि घरक आइ नाक काटि लेलक। हमरा लोकनि एना करितहुँ तँ सासु जीवितहि माटि तर गाड़ि दितथि।''

कोनियाँ घर मे दुनू देयादिनी फुसफुसा लगलीह, ''कुलबोरनी नाश क' देलक। हमरा सभ भरि थारी भात जाँतिक' परसितियैक। से ई छुछी पाव भरि चाउरक भात देलकैक अछि। बाप रे बाप! पाहनु मन मे की कहैत हेतै!''

''देखथुन ऐ दीदी! तरकारी जे चीखिक' दैत छै। हथकट्टी केँ जी नहि सिहरैत छै। हे देखथुन, सभ टा तरकारी एके तश्तरी मे परसि देलकै। हमरा लोकनि सात टा बाटी लगबितिएक।''

दुरुखा सँ भटसिम्मरवाली कनफुसकीक स्वर मे बाजय लगलीह—हे भगवान! नैवेद्य उत्सर्गक हेतु पात कहाँ पड़लनि? घृत फराक बाटी मे परसल जइतनि।

ताबत कर्णपुरवाली घी कड़कड़ाक' दालि-भात पर ध' देलथिन।

ओम्हर पछुआड़ मे पंडिताइन पुतोहु केँ गारि देबय लगलीह, ''जो गय धोंछी! केशो झाँपि लेबै से नहि होइत छौ। माथ उघारने बैसल छेँ। आब कनेक पाहुन केँ जाय दहीक तखन ने तोहर दशा करैत छियौक।''

कर्णपुरवाली पंद्रह मिनट मे पाहनु केँ खोआ-पिआक' विदा क' देलथिन।

पाहुनक बाहर होइतहि चारू सासु पुतहु पर छुटलीह। परन्तु कर्णपुरवाली कोनो बात मे अपन गलती मानय लेल तैयार नहि भेलथिन। तखन पंडिताइन खिसियाक' पीढ़ी सँ अपन कपार फोड़ि लेलनि। देयादिनी सभ हरदि-चून लगाबय लगलथिन। बचनू कतय पतनुकान लेलक तकर ठेकान नहि। कनियाँ कालेजक पता सँ अपना स्वामी केँ चिट्ठी लिखय लगलीह। केओ अन्न-जल ग्रहण नहि कैलक।

पं. जी संध्याकाल गाम ऐलाह। ता पाहुन जलाशय दिस गेल छलाह। पं. जी आँगन आबि देखै छथि चारू कात सुन्न। पंडिताइन केँ सोर क' पुछलथिन, ''ऐ, की बात छैक? ई कपार पर टोपर किएक लगौने छी।''

पंडिताइन केँ पहिने तँ कंठे नहि फुटलनि। पश्चात आँचर सँ नोर पोछैत बजलीह, ''कर्मक बात! आइ एहि घरक मर्यादा नष्ट हैबाक छलैक से नष्ट भ' गेलैक।

पं. जी सशंकित चित्त सँ बजलाह, ''से की?''

तत:पर पंडिताइन कनैत-कलपैत सभ टा कथा आद्योपान्त कहि सुनौलथिन।

पं. जी किछु काल धरि गुम्म रहि गेलाह। तदन्तर दीर्घ श्वास छोड़ैत बजलाह, ''अनका बतहे हँसी, अपना बतहे कानी। एहि बतही केँ नैहर पठा देब'क चाही। नहि तँ समाज मे रहब कठिन भ' जायत। कनटिरबूक दोसर विवाह करौनाइ आवश्यक भ' गेल।''

ताबत पाहनु पोखरि दिस सँ आबि गेल छलाह। पं. जी संकुचित होइत हुनका लग जा कहलथिन, ''चौधरी जी, हमरा परोक्ष मे तँ आइ अपने केँ बड्ड कष्ट भेल।''

चौधरी जी बजलाह, ''नहि, कष्ट किएक हैत?''

पं. जी किछु अप्रतिभ होइत कहलथिन, ''हमरा घर मे एक टा कनियाँ छथि से किछु झनकाहि जकाँ छथि। ओहि बताहि सँ यदि किछु अनट-विनट भेल हो तँ से प्रकाश नहि कैल जाय।'' चौधरी जी नाकक पूरा मे नसि लैत गंभीर भाव सँ बजलाह, ''हमरा तँ एहि घर मे सभ सँ बेसी सम्मत वैह बूझि पड़ैत छथि। बूझि पड़ल जेना हमर अपने कन्या होथि। यैह चाही। आइ हमरो आँखि फुजि गेल। यदि प्रत्येक घर मे एहने तेजस्विनी बेटी-पुतहु बहराथि तँ फेर मिथिला केँ शिथिला के कहि सकैत अछि।

पं. जी मुँह बौने अवाक् रहि गेलाह।

(*चर्चरी* सँ—1960)

कालाजारक उपचार

अखबार मे बड़का-बड़का मोट हेडलाइन मे बहरायल—कालाजार फेर आबि गेल। चारू कात खलबली मचि गेल। कालाजारक उन्मूलन करबाक हेतु पचास करोड़क पंचवर्षीय योजना बनल छल। घोषणा कयल गेल छल जे ''कालाजार सर्वदाक हेतु देश सँ विदा भ' गेल। जे व्यक्ति कालाजारक समाचार देताह तनिका एक हजार टाका पुरस्कार भेटतनि।''

आपातकालीन सभा भेल। कालाजारक विरुद्ध एक सँ एक जोरदार भाषण होब' लागल। ''कालाजार राक्षस थिक। ई जोंक जकाँ लोकक शोणित पीबि रहल अछि। एहि भयंकर रोग केँ शीघ्र देश सँ भगयबाक चाही।''

एक उच्चस्तरीय आयोग बैसाओल गेल। जाँचक विषय निर्धारित कयल गेल जे—

1. कालाजार कि सरिपों आबि गेल अछि?

2. ई कोम्हर सँ, कोना आ किएक आबि गेल?

3. एकर अयबाक हेतु के उत्तरदायी छथि?

4. कालाजार केँ कोना जड़ि-मूल सँ नष्ट कयल जाय जे फेर भविष्य मे एकर अयनाइ असंभव भ' जाइक?

आयोगक समक्ष दस हजार गवाही पेश भेल। भिन्न-भिन्न वर्गक लोक सँ बयान लेल गेल। दस मासक अथक परिश्रम सँ एक हजार पृष्ठक रिपोर्ट बहरायल। अध्यक्षक वक्तव्य एक लाख शब्द मे प्रकाशित भेल।

एहि सभ कार्यकलाप मे देशक चारि करोड़ टाका व्यय भेल। समुद्र-मंथनक फलस्वरूप निष्कर्ष रूप मे चारि टा महावाक्य सामने आयल—

1. कालाजार सरिपों आबि गेल अछि।

2. ई वस्तुत: देश सँ गेल नहि छल, दबल छल, पुन: उभड़ि गेल अछि।

3. एकर अयबाक हेतु उत्तरदायी छथि समाजक लोक जे स्वास्थ्य-रक्षाक नियमक पूर्णत: पालन नहि करैत छथि।

4. कालाजारक समस्त कीटाणु केँ तेना समूल नष्ट क' देबाक चाही जाहि सँ फेर भविष्य मे एकर अयनाइ असंभव भ' जाइक।

आयोगक सिफारिश भेलैक जे कालाजारक विभीषिका केँ देखैत सभ मोर्चा पर ओकर सामना कयल जाय। प्रत्येक संभव उपाय कयल जाय।

सरकार दिस सँ चौबीस-सूत्री कार्यक्रम निर्धारित भेल आ राति-दिन भोंपू पर ओकर प्रचार होब' लागल।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रांतीय स्तर पर, जिला स्तर सँ ल' ब्लॉक स्तर पर नाना समिति आ उपसमिति संघटित कयल गेल। किछु सरकारी, किछु अर्द्धसरकारी, किछु गैर-सरकारी। भिन्न-भिन्न झंडाक तर कालाजारक विरुद्ध निन्दाक प्रस्ताव पास कयल गेल। विचार भेल जे पुन: पंचवर्षीय अभियान चलाओल जाय, आर जोर-शोर सँ।

विशेषज्ञ लोकनिक टीम बनाओल गेल जे देश-विदेश मे घूमिक' कालाजारक अध्ययन करथि, अनुसंधान करथि जे आन-आन ठाम एहि रोगक कोना निवारण आ उपचार कयल जाइत छैक। एलोपैथिक, होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी आ प्राकृतिक चिकित्सा वला सभ केँ प्रतिनिधि-मंडल मे आनुपातिक स्थान भेटलनि। कोनो जाति-धर्म, वर्ग वा अल्पसंख्यक समुदायक लोक छूटल नहि पाबथि, ताहि पर विशेष ध्यान राखल गेल।

विश्वविद्यालय सभ मे कालाजार पर शोध करबाक हेतु छात्र आ अध्यापक-गण केँ लाखक लाख अनुदान भेटलनि। शोधसंस्थान मे वेद-पुराण-रामायण, महाभारत आदि मे कालाजारक उत्पत्ति पर 'रिसर्च' होब' लागल। स्कूल-कॉलेज मे कालाजार विषयक निबंध ओ विवाद-प्रतियोगिता आयोजित होब' लागल। आकाशवाणी मे नित्य कालाजार पर वार्त्ता, परिचर्चा आ लघुनाटिका प्रसारित होब' लागल।

अस्पताल सभ मे नोटिस टाँगल गेल—कालाजार सँ सावधान। किछु बेसी देशभक्त डॉक्टर 'सँ' केँ काटि देलथिन, ''कालाजार सावधान!''। मेडिकल कालेजक छात्र, छात्रा, नर्स, डॉक्टर, सभ कालाजारक विरोध मे बाँहि पर कारी पट्टी लगौलनि, ''कालाजार देशक शत्रु थिक।'' लोक केँ पकड़ि-पकड़ि क' जबर्दस्ती कालाजारक सुइ देब' लागि गेलथिन। शहर सँ ल' देहात पर्यन्त प्रभातफेरी आ नाराक स्वर गूँजि उठल, ''कालाजार मुर्दाबाद।'' एक टा कवि 'कालाजार-संहार' नामक महाकाव्य एगारह सर्ग मे प्रस्तुत कयलनि।

अखबार सभ मे धुरझाड़ कालाजार पर सनसनीदार लेख-कविता आ चित्र प्रकाशित होब' लागल। किछु पत्र-पत्रिका 'कालाजार विशेषांक' बहार कयलनि।

रेल मे, बस मे, देबाल पर कालाजार विरोधी पोस्टर साटल गेल। डाक-विभागक दिस सँ पोस्टकार्ड, लिफाफ पर्यन्त पर कालाजार-विरोधी टिकट लगाओल गेल। सड़कक नुक्कड़ पर सम्मेलन होब' लागल—

आयल कालाजार छै
मरैत हजार छै
मरघट बजार छै
लोक बेजार छै
रक्षक सरकार छै

कालाजार-कोष संग्रहक हेतु 'चैरिटी शो'क आयोजन कयल गेल। नृत्य मंदिर मे कालाजार पर भरतनाट्यम् भेल। कलाभवन मे कालाजार विषयक एकांकीक मंचन भेल।

टेलीभीजन पर कालाजारक भयंकर दृश्य देखाओल जाय लगलैक, जाहि सँ दर्शकक मन मे ओकरा प्रति घृणा जागृत होइक।

प्रचार विभाग एक करोड़क लागत सँ एक रंगीन फिल्म बनाब' लागल जाहि सँ कालाजार फेर कहियो अपन मुँह नहि देखा सकय।

पण्डितो लोकनि पाछाँ नहि रहलाह। ठाम-ठाम कालाजार-संहारक हेतु यज्ञ आ पुरश्चरण कर' लगलाह। अहर्निश मंत्र पढ़ि हवन कर' लगलाह—ओम् वषट् कालाज्वराय स्वाहा।

साधु-समाजक एक प्रधान नेता महाकालानन्द स्वामी जी अनशन पर बैसि गेलाह—यावत् ई दुष्ट कालाजार देश सँ नहि जायत, तावत पर्यन्त अन्न-जल ग्रहण नहि करब।

महिलोगण जोर लगौलनि। गाम-गाम, घर-घर, घूमि क' गृहिणी सभ केँ आँचर कसि कालाजार विरोधी अभियान मे योगदान देबाक हेतु आह्वान कयलथिन। आँगन मे रेडियोक लोकगीत भोंभिया उठल—

भाग-भाग हमरा घर सँ रे,
लुचबा कालाजरबा।
बाढ़नि सँ तोरा मारबौ रे,
धरकट-कालाजरबा॥

परन्तु बहिरा करैत जकाँ कालाजार पर एहि

सभक कोनो प्रभाव नहि पड़लै। ओ बढ़िते गेल। अजगर साँप जकाँ मोटाइते गेल।

विधानसभा मे, लोकसभा मे, विधान परिषद् मे, राज्य सभा मे, प्रश्न पर प्रश्न बौछार होब' लागल।

सांख्यिकी विभाग सँ बुलेटिन बहरयलै जे विगत वर्षक एहि मास मे कालाजारक जतबा प्रकोप छलैक, ताहि मे मात्र 0.0001क वृद्धि भेल अछि।

परन्तु एहि उत्तर सँ लोक कैं संतोष नहि भेलैक। सरकारक दिस सँ पुनः दोसर आयोग बैसल। एहि बेर युद्धस्तर पर कालाजारक मोकाबिला करबाक हेतु एक अरबक योजना बनल।

कालाजार कैं राष्ट्रीय अपराध घोषित क' देल गेल। कठोर सँ कठोर कानूनक धारा बनाओल गेल। कैक टा अधिसूचना जारी भेल। राज्य-मंत्री घोषणा कयलनि—हम सभ कालाजार कैं निर्मूल करबाक हेतु कृतसंकल्प छी, कटिबद्ध छी।

केन्द्रीयमंत्री एलान कयलथिन, ''यदि कालाजार आब आर उपद्रव करत तँ हम सभ चुप नहि बैसल रहब।''

पहिने चेतावनी देल गेल, तखन अपील कयल गेल। जखन अपील सँ काज नहि चलल तँ पुनः चेतावनी देल गेल। जखन चेतावनी सँ काज नहि चलल तँ पुनः अपील कयल गेल।

एहि बेर कालाजार सँ जुझबाक हेतु युद्धस्तरीय सैन्य दलक मोर्चा संघटित कयल गेल। तकर मुख्य सेनानी बनाओल गेलाह एक तेहन 'महाचिकित्सापाल' जे संग्राम मे 'परम वीरचक्र' प्राप्त कयने रहथि।

ओ अबिते घोषणा कयलनि जे छौ मासक अभ्यंतर कालाजार आ ओकर सहायक तत्त्व कैं नष्ट क' देल जायत। ककरो कालाजार सँ मर' नहि देल जायत।

लोकक मन मे आशा जगलैक जे जहिना चाणक्य कुशक जड़ि मे मट्ठा पटाक' ओकरा निर्मूल क' देने रहथिन, तहिना आब कालाजार जड़ि-मूल सँ साफ भ' क' रहत।

परन्तु ओ आशा बकाण्ड-प्रत्याशा मात्र सिद्ध भेल। एक दिन अकस्मात् रेडियो सँ समाचार घोषित भेलै—खेदक विषय जे महाचिकित्सापाल कालाजार सँ मरि गेलाह। ओ कालाजार सँ लड़ैत-लड़ैत वीरगति कैं प्राप्त कयलनि। देश-कल्याण मे शहीद भ' गेलाह। हुनक अन्त्येष्टि-क्रिया पूर्ण राजकीय सम्मान सँ कयल जयतनि।

आब समस्या अछि, दोसर सेनानी किनका बनाओल जाइनि?

(*मिथिला मिहिर* मे प्रकाशित-1977)

रेलक अनुभव

वैद्यनाथधाम सँ गाम अबैत रही। ओहि डिब्बा मे एक बंगाली सज्जनक परिवार छलनि। बंगाली बाबू, हुनक स्त्री, एक युवती कन्या तथा एक स्तन्धय शिशु। ओ लोकनि एक सम्पूर्ण गद्दा पर अपन एकाधिकार स्थापित कयने छलाह। ओहि बेंच पर और केओ आबि क' बैसए से हुनका लोकनि केँ अभीष्ट नहि छलनि। तेँ खूब पसरि क' बैसल छलाह। संगहि-संग पेटी-बिस्तर ओ अन्यान्य समानक तेहन चक्रव्यूह बनौने छलाह जकरा भेदि क' प्रवेश कयनाइ ककरो हेतु सहज नहि छलै। आगन्तुक शत्रु सँ मोर्चा लेबाक हेतु बंगाली बाबू स्वयं अगिला मोहड़ा पर बैसल छलाह।

शेष बर्थ लोक सँ गचागच भरल छल।

झाझा मे दुइ टा मारवाड़ी सज्जन चढ़लाह। बेस भारी भरकम। अढ़ाइ-अढ़ाइ मन सँ कम नहि। बंगाली बाबू आक्रमणकारी केँ आयल देखि अपन दुर्ग रक्षाक हेतु सन्नद्ध भ' गेलाह। दुनू सज्जन एम्हर-ओम्हर ताकि बंगाली बाबू केँ सम्बोधन क' कहलथिन, ''उधर भोत जगह है! आप जरा खिसक जाइये तो हमलोग भी बैठ जाँय।''

बंगाली बाबू बिगड़ि क' बजलाह, ''जोगह कहाँ है? दोशर डब्बा देखिये।''

मारवाड़ी, ''बाबू शाब! और कहीं जगह नहीं है। जरा आप ही तकलीफ कीजिए।''

परन्तु बंगाली बाबू टस-सँ-मस नहि भेलाह। अगत्या दुनू मारवाड़ी सज्जन हमरा लोकनिक बर्थ लग आबि ठाढ़ भ' गेलाह। कोनो-कोनो तरहें बैसयबाक समावेश कयल गेलनि।

ओम्हर बंगाली बाबू अपन प्रौढ़ा पत्नी केँ आराम सँ ओङठि जयबाक ब्योंत लगाबए लगलाह। हुनका कष्ट नहि होइनि तदर्थ एक टा गलतकियो राखि देलथिन।

गिद्धौर मे एक टा वृद्धा चढ़लीह। दीनतापूर्ण दृष्टि सँ बंगाली बाबू दिस तकैत ठाढ़ि भ' गेलीह। परन्तु बंगाली बाबू ओहि मूक-प्रार्थना सँ विचलित होमयबला जीव नहि छलाह। ओ दोसर दिस ताकय लगलाह, जेना लोक भिक्षुक सँ आँखि फेरि लैत अछि।

अन्त मे बूढ़ी स्पष्ट शब्दें एक बीत बैसबा योग्य स्थानक भिक्षा मँगलथिन। बंगाली बाबू एहि हेतु पहिनहि सँ तैयार छलाह। कहलथिन, ''जोनानी गाड़ी मे जाइये, जोनानी मे।''

बूढ़ी कहलथिन, ''जनानी गाड़ी मे स्थान नहि छै। हमरा एक स्टेशन जयबाक अछि। जमुइ मे उतरि जायब।''

बंगाली बाबू उत्तर देलथिन, ''एक स्टेशन जाना है। तब तो उसी माफिक खड़े-खड़े भी चोलने शोकता है।''

ई कहि बंगाली बाबू और पसरि क' बैसि गेलाह। हम स्वयं ट्रंक पर बैसि गेलहुँ आ वृद्धा केँ अपना स्थान पर बैसा देलिअनि। ओ हमरा आशीर्वाद दैत बैसि गेलीह और जमुइ पहुँचला पर उतरि गेलीह।

जमुइ मे तीन टा गोरखा चढ़ल। डाँड़ मे एक-एक हाथक खुखरी खोंसने। ओ सभ सोझे बंगाली बाबू दिस धावा क' देलकनि।

बंगाली बाबू फराके सँ घुड़की देलथिन, ''इधर कहाँ आने माँगता है? दोशर डोब्बा मे जाओ।''

परन्तु नेपाली बोको की बुझौ! हुनक किलाबन्दी केँ धड़ैत-धड़ैत लग मे पहुँचि गेलनि। बंगाली बाबू भयभीत होइत बजलाह, ''ओ रे बाबा! जोनाना शोभ के मुड़ी पर बोशेगा की? हाम एलार्म खींचता है।''

बंगाली बाबू धड़फड़ा क' जिंजिर खिंचबाक हेतु उद्यत भेलाह। ई देखि नेपाली सभ हँसैत दोसर कोठली मे चल गेल।

आब बंगाली बाबू सुभ्यस्त भ' थर्मस बहार कयलनि। हुनक स्त्री पियाला सभ मे चाह भरि-भरि क' बाँटए लगलथिन। कन्या टिफिन-केरिअर सँ बिस्कुट बहार कयलथिन। सभ गोटे चाह-पानी मे लगलाह।

तावत गाड़ी किउल पहुँचि गेल। एक सज्जन हाथ मे 'आनन्द बाजार पत्रिका' नेने कोठलीक सामने पहुँचलाह। हुनका पाछाँ दुइ टा स्त्री बांग्ला परिधान मे छलथिन आर एक टा दस वर्षक बालक।

हुनका देखितहि बंगाली बाबू सोर कयलथिन, ''मोशय! एइदिगे आशुन!''

दुइए मिनटक भीतर दुहू परिवार दूध-चीनी जकाँ घुलि-मिलि क' तेना एकाकार भ' गेल जे अनठिआक हेतु फुटकायब कठिन छलैक।

हम अनुमान कयल जे नवागन्तुक व्यक्ति बंगाली सज्जनक कोनो आत्मीय सम्बन्धी होइथिन। परन्तु जखन दुनू मे वार्त्तालाप होमय लगलनि, तखन बुझल जे हिनका दुनू केँ पूर्व मे कहियो भेट नहि छलनि। बंगला मे जे बातचीत भेलनि ताहि सँ हमरो किछु परिचय भेटि गेल।

ई जे सज्जन पहिने सँ बैसल छथि तनिका नाम छनि राखाल बनर्जी। नदिया जिला घर छनि। मेरठ मे ठिकेदारी करैत छथि। दुर्गापूजा मे देश आयल छलाह। आब पुन: काज पर जा रहल छथि। कन्या आइ.एस-सी. मे पढ़ि रहल छथिन।

नवागन्तुक छथि अतुल बनर्जी। घर छनि मुर्शिदाबाद। जमालपुर मे डाक्टरी करैत छथि। बड़का भाइ बम्बइक एक मिल मे इंजीनियर छथिन। भतीजी बी.ए. मे पढ़ैत छथिन, तनिक विवाह हेतनि। तेँ माय तथा स्त्री-पुत्र केँ ल' क' ओतए जा रहल छथि।

आब बनर्जी तथा चटर्जी परिवार मे शिष्टाचारक आदान-प्रदान होम' लागल। बनर्जीक पत्नी चटर्जीक माता केँ आँचर जोड़िक' प्रणाम कयलथिन। चटर्जी पत्नी बनर्जीक शिशु केँ कोरा मे ल' दुलार कर' लगलथिन। बनर्जीक कन्या चाह बिस्कुट ल'क' चटर्जीक पत्नीक आगाँ बढ़ा देलथिन। बनर्जी महाशय चटर्जीक बालक केँ पुछलथिन, ''बलो, की प'ड़ छ'।''

चटर्जी साहेब नीचाँ उतरिक' पूरी तरकारी ल' अएलाह। चटर्जीक पत्नी परसय लगलथिन। बनर्जीक पत्नी टिफिन-केरिअर सँ खीरमोहन बहार क' ओहि मे मिला देलथिन। सभ गोटे तेना सहज भाव सँ खाय लगलाह जेना एके परिवारक होथि।

ई दृश्य देखि हमरा अपूर्व आनन्द भेल। मन मे अनेक भावक तरंग उठय लागल। एहि दुनू परिवार केँ कहियो पूर्वक भेंट नहि। प्राय: एकरा बाद पुन: भेंट हैबाक संभावनो नहि। तथापि एतबे काल मे, आर एतबे कालक हेतु, दुनू मे कतेक अपनैती भ' गेलैक अछि। यैह कारण थिक जे एहि जातिक सर्वत्र अभ्युदय छै। यैह बनर्जी महाशय जे थोड़ेक काल पहिने पाथरक मूर्त्ति भेल बैसल छलाह, तनिका मे एकाएक सरसताक स्रोत कोना फूटि पड़लनि? ई 'आनन्द बाजार पत्रिका'क माया थिक। बंगभाषा मे एतेक

शक्ति छै जे दू नितान्त अपरिचित व्यक्ति कें क्षण भरि मे ऐक्य सूत्र मे बान्हि देलक। यदि कदाचित बंगला भाषाक ई प्रताप मैथिलिओ मे आबि जइतै? परन्तु...

यैह सभ सोचैत-सोचैत मोकामा घाट आबि गेल। इच्छा तँ रहय जे ई अभिनव दृश्य, जे अपना देश मे देखब दुर्लभे अछि, किछु और दूर धरि देखैत चली। परन्तु मोकामाघाट मे उतरबाक छल।

जहाज सँ गंगा पार क' अपना भूमि पर पयर देलहुँ। सिमरिया घाट मे ट्रेन लागल छल। परन्तु ओहि मे जे दृश्य देखल से आइ धरि ओहिना आँखि मे नाचि रहल अछि।

हाथ मे गंगाजली नेने एक टा वृद्धा चढ़य चाहै छथि, परन्तु लोक चढ़ए नहि दैत छनि। गाड़ीक भीतर मल्लयुद्ध भ' रहल अछि। वृद्धाक बेटा दरवाजा फोलिक' भीतर जयबाक हेतु भगीरथ प्रयत्न क' रहल छथि और ओम्हर सँ तीन-चारि गोटे गरदनिया द'क' बाहर ठेलि रहल छनि।

वृद्धाक हाथ मे एक टा साजी आओर गंगाजली छनि। पाछाँ मे पुतहु अपन दुग्धपा शिशु कें नेने ठाढ़ि छथिन।

वृद्धा कें अपन एकमात्र सरवन पुत्रक भरोस छनि। तें चुपचाप ठाढ़ि छलीह। परन्तु जखल देखलनि जे बेटाक कंठ पर चारि गोटे सवार अछि तँ चिचिआ उठलीह, ''हे, औ बाबू लोकनि! हम नेहोरा करै छी। हमर सरवन पूत छओ मास सँ दुखिताह छथि। हुनका चढ़' दिऔन।''

परन्तु वृद्धाक अनुनय पर केओ ध्यान नहि देलकनि। सरवन पूत कें बाहर धकेलिक' भीतर सँ दरवाजा बन्द क' लेलकनि।

वृद्धा कलपिक' कहय लगलथिन, ''हे औ बाबू! हमरो लोकनि कें चढ़ा लिय'। हम सभ ठाढ़िए जायब। दोहाइ बाबू भैया कें। बहुत पुण्य हयत।''

परन्तु वृद्धाक कातर प्रार्थना आरण्यरोदन भेलनि। पुतहु बेचारी नेना कें नेने अवग्रह मे पड़लि। जहाँ स्वामी ओ सासु बजनिहार मौजूद छथि तहाँ ओ की बजतीहि? अपना स्थान पर संकुचित भेलि ठाढ़ि रहलीहि। कुलवधुक अनुरूप शालीनतापूर्ण मर्यादा कें ओ एहूठाम नहि छोड़ि सकलीहि। कोना छोड़थु? मिथिलाक कन्याक जन्मे एहि हेतु होइ छनि जे ओ पृथ्वी जकाँ सर्वसहा बनिक' रहथि। तखन ओ देवी अपन जन्मसिद्ध कुलीनताक कोना त्याग करथु? सहिष्णुताक मूर्त्ति बनल ठाढ़ि रहलीह।

जखन हमरा नहि देखल गेल तखन ओहिठाम जा पहुँचलहुँ और कोठलीक भीतरवला यात्री सभ कें सम्बोधन क' कहलिअनि, ''देखू, एतीकाल सँ अहाँक एक टा देशी भाइ नेहोरा क' रहल छथि, संग मे वृद्धा माता छथिन, प्रसूतिका स्त्री छथिन। अहाँ लोकनि कें कनेको विचार नहि अछि?''

एक गोटे बजलाह, ''देशी भाइ छथि तँ कि माथ पर उठा लिऔन? एहि मे जगह कहाँ छै?''

हम कहलियनि, ''देखू, अहाँ लोकनि जँ अपन मोटरी नीचाँ राखि ली तँ ई तीनू गोटे खुशी सँ बैसि जा सकैत छथि।''

एक गोटे उत्तर देलनि, ''मोटरी मे खयबा-पिउबाक वस्तु अछि। नीचाँ कोना रहत?''

हम, ''तँ ऊपर बर्थ पर राखि देऔ। हे, ई बेचारे कहुना ठाढ़ो भेल चल जएताह, परन्तु ई दू टा अबला जे छथि। अहूँ लोकनिक संग मे स्त्रीगण छथि। हुनके बीच मे बैसा दिऔनि।''

दोसर गोटे बजलाह, ''से कोना हएतनि? ओहिठाम बच्चा सूतल छै। ओकरा हम पिचाए दिऔक?''

हम, ''अहाँक बच्चा नहि पिचायत। ई लोकनि ओहि कोन मे सटिक' बैसि जइतीह! हिनका संग मे तँ ओहू सँ छोट नेना छनि। अपने सन्तान जकाँ दोसरो कें बूझक चाही।''

आब तरह-तरहक बोली भीतर सँ आबए लागल।

एक, ''ओकील बनिक' पैरबी करय आयल छथिन।''

दोसर, ''सभ टा कानून एहीठाम झाड़य आयल छथि।''

तेसर, ''बड़े दरेग होइ छनि तँ अपने जगह पर किऐ ने ल' जाइत छथिन।''

चारिम, ''हमरा लोकनि जत' बैसल छी, तत' सँ किन्नहु नहि हटि सकैत छी।''

हम विनयपूर्वक कहलिअनि, ''बेस, तँ अहाँ लोकनि कें कनेको घुसुकबाक प्रयोजन नहि। ई दुनू सासु-पुतोहु एहि पेटी पर बैसि रहतीह। और हिनका कतहु ठाढ़ होयबाक जगह दिऔन।''

कोठलीक यात्रीगण एक दोसराक मुँह ताक' लगलाह। एक गोटाक मन मे किछु दयाक संचार भ' उठलनि। कहलथिन, ''की करबहक? आब' दहक।''

हम श्रवण कुमार कें सम्बोधन करैत कहलिअनि, ''अहाँ लोकनि अबै जाउ। ई लोकनि जत' देखा देथि, बैसि जाउ।''

श्रवण कुमार आगाँ बढ़लाह। हुनका पाछाँ वृद्धा माता। ततःपर सलज्जा पुत्रवधु।

हम आश्वस्त भ' अपना डिब्बा मे गेलहुँ। जीवन मे एक टा पुण्य कार्य तँ आइ भेल!

यैह विचारैत खिड़की सँ बाहर देखैत छी कि देह सिहरि उठल। श्रवण कुमार कोठलीक मुँह मे आधा प्रवेश कयने छथि, वृद्धा माता रेलक पाओदान पर ठाढ़ि एक पैर भीतर देबय चाहैत छथि, गजगामिनी पुत्रवधु एक चरण प्लेटफार्म पर ओ दोसर पाओदान पर देने छथि। गाड़ी फुजबा-फुजबा पर अछि।

तावत पाछाँ सँ एक झुंड मोगल हू-हू करैत पहुँचि गेल और वृद्धा तथा पुत्रवधु कें ठेलिक' नीचाँ करैत, श्रवण कुमार कें धकेलि बाहर करैत, अपने सभ भीतर चलि गेल। गाड़ी चल' लागि गेल। श्रवण कुमार नीचाँ खसि पड़लाह। वृद्धा माताक ओ करुण दृष्टि और कुलवधुक मुख पर ओ विवशताक चिह्न एखन धरि हमरा नहि बिसरैत अछि। ओ बिसरबाक वस्तुओ नहि।

तहिया सँ हम नहि जानि कतेक बेर एहि प्रश्न पर विचार कैने हैब। चटर्जीक माता ओ बनर्जीक पत्नी मे जे मर्यादा छलनि सैहे मर्यादा एहू वृद्धा ओ युवती मे छलनि। परन्तु हुनक नारीत्वक आदर किएक नहि भेलनि? बंगालिनी वृद्धा जकाँ एहू वृद्धा कें केओ अपना स्थान सँ उठि हाथ ध'क' किएक नहि बैसोलकिन? आर ई जे गृहिणीत्वक गरिमा सँ मण्डित कुलवधु छलीह से कि चटर्जीक पत्नीक समान आसन पर बैसाबए योग्य नहि छलीह? हुनकर केओ उचित सत्कार किएक नहि कयलकनि? गाड़ी मे तँ कतेको स्त्री छलीह, किऐ ने किनको भेलनि जे बनर्जीक पत्नी जकाँ आगाँ बढ़ि प्रेमपूर्वक अपना लग ल' जैअनि? बनर्जीक शिशु जकाँ हुनको बच्चा कें दुलार करयवला केओ किऐ ने भेटलनि?

हम जतेक अधिक एहि पर सोचै छी ततेक समस्या जटिल भेल जाइत अछि। गाड़ी मे भरिक' अपन देशवासी रहथि! परन्तु जखन चारि टा आगाँ पहुँचि गेलनि कि सभ सकदम! किनको बजबाक साहस नहि पड़लनि। टुकुर-टुकुर माता ओ कुलवधुक अपमान देखैत रहि गेलाह। शोणित मे रंचमात्र उफान किएक ने उठलनि? किएक ने केओ जिंजिर खिंचबाक हेतु ठाढ़ भेलाह? किएक ने केओ सपूत एहन बहरएलाह जे श्रवण कुमारक हाथ ध' भीतर ल' अबितथि और सासु-पुतहुक मार्ग प्रशस्त बना कहितथिन, ''अहाँ लोकनि अबै जाउ!''

बात अछि जे बंगवासी अपना लोक कें माथ पर चढ़बैत छथि और हमरा सभ अपना लोक कें पएर सँ ठोकरबैत छी।

थोड़बे दूरक तँ अन्तर छैक। तखन बंग ओ मिथिलाक भूमि मे एतेक भिन्नता किएक? 'पद्मा' ओ 'कमला' तँ एक्के अर्थक वाचक थिकीह, तखन दुनूक पानि मे एतबा अन्तर किएक?

(*रंगशाला* सँ—1949)



कन्यादान

हरिमोहन झा

जे समाज कन्या केँ जड़ पदार्थवत् दान देबा मे कुंठित
नहि होइत छथि,
जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक केँ पढ़ैबाक पाछाँ
हजारक हजार पानि मे बहबैत छथि और कन्याक
हेतु चारि कैंचाक सिलेटो कीनब आवश्यक
नहि बुझैत छथि,
जाहि समाज मे बी.ए. पास पतिक जीवन-संगिनी
ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन,
जाहि समाज केँ दाम्पत्य-जीवनक गाड़ी मे सरकसिया
घोड़ाक संग निरीह बाछी केँ जोतैत कनेको
ममता नहि लगैत छनि,
ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे
ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय
समर्पित

—लेखक



कन्या माइक ओरिआओन

—हँ ऐ बहिना! यैह तँ कठिन भ' गेलैक अछि। जहाँ वर भारी गिलास' मे अंग्रेजी पढ़ि जायत छैक, तहाँ वरक बाप हजार सँ नीचा पर गप्पे नहि करैत छैक। गरिवहा लोक एतेक कतय सँ आनत!

ततबे धरि नहि। विवाह होइत देरी, ''मोटर दिय', बाइसिकिल दिय', आगाँ पढ़क लेल फीस दिय'।'' अंग्रेजियाक फरमाइश मे जुमब कठिन छैक।

—ऐ बहिना! सुनैत छिऐ जे अंग्रेजिया सभ केँ जाति-पाँतिक किछु विचार नहि रहैत छैक।

—जाति-पाँति आब ककरा मे छैक? विशेष रानीक जमाय आयल छलथिन से कोन अंग्रेजी पढ़ने छथिन। पनहिए पहिरने पानि पिबैत छथिन। लोक कहनि जे, ''ओझा, जल ल'क' लघुशंका दिस जाउ'', तँ कहथिन जे से कि हमरा आगि बहराइत अछि!

—दुर जो! ओहो कोनो लोक छथिन। ज्यातिषीजी एक टा मोचण्ड केँ उठा अनलनि। हम तँ ई दस लोकक बीच मे कहबनि। पढ़ल 'सी' अक्षर नहि, किन्तु फीटफाट भेले चाहय। दिन-राति माउगिक झुण्ड मे बैसल, रड़-धुम्मस करैत, बनहुल्लुक जहाँ एकरा ताकब, ओकरा ताकब एहन कतहु लोक भेलय!

एतबहि मे बिलटी केँ अबैत देखि लाल काकी झट द' आवेशरानीक पैरक कनगुरिया आँगुर केँ दाबि देलथिन जाहि सँ ओ लगले चुप भ' गेलीह। तखन लाल काकी चतुरता सँ बात केँ बदलि कय बजलीह, ''तँ ! आब तँ चौदहे टा दिन बाँकी रहि गेल अछि! कथाक एखन धरि किछु निश्चय नहि। कोना की हेतैक से बूझि नहि पड़ैत अछि।''

आवेशरानी—आबह ने बिलटि! बैसह, ठाढ़ि किएक भेल छह? हँ, बुचिया तँ बिलटिएक दतरी होयतैक?

लालकाकी— ई तेरहम चढ़लैक अछि। एहि बेरि कन्यादान करब परम आवश्यक छैक। बुचियाक बाप तँ यैह सपनि क' गेल छथिन जे ई सभ सँ कोरपोच्छू नेना थिक। अपने भीखो दुख माँगि कए एकरा सुठाल मे क' देबै। ओना तँ भावी सर्वोपरि।

आवेशरानी—हँ, लिखलाहा तँ सभ सँ ऊपर। भगवती अहिबात बनौने रखथुन। अपन लूरिमुँह नीक होयतनि तँ सभक आँखि मे रहतीह।

लालकाकी—हँ ऐ बहिना! यैह आशीर्वाद देथुन। विवाहदान होइनि, अपन घर-द्वार सम्हारथि। सासुर सँ ई उपराग नहि देयाबथि जे धोंछी कोना केँ बेटी केँ पोसलक। यैह हम चाहैत छी।

एतबहि मे दक्षिण भर सँ भारी घटा उठल। चारू कात सँ मेघ उमड़ि आयल। थोड़बहि काल मे गर्जन-तर्जनक संग मुसलाधार वृष्टि होमय लागल। शोसराक कोनिया चुबैत देखि लालकाकी बाजय लगलीह—की कहू बहिना! अहिना सभ घर मे सहस्रधार चुबैत छैक। एको हाथ कतहु निचू नहि अछि। अपने घरहटक काज सम्पन्न कय जैतथि से बिचहि मे भदबा पड़ि गेलनि। आब कोबर कोन ठाम होयतैक ताही लेल झँखैत छी।

एतबहि मे ढुनमुन काकी लदफद करैत हँफैत-हँफैत ओहि ठाम पहुँचलीह। अबैत देरी चिचियाय लगलीह, ''हे! अदौरी जे हम पटिया पर सुखाय देने छलिऐ से सभ भीजि गेलनि। हम की करियौक?''

ई सुनितहि लालकाकी लाल-पीयर होमय लगलीह—बाढ़नि मारी एहन बुद्धि केँ! एहन भसन्नरि लोक! जैखन घटा देखलिऐ तैखन ने समेटि कय उठा लितहुँ। हाथ मे कि मेहँदी लागल छल? सभ अदौरी भिजाक' तखन समाद नेने आयलि छथि!

फेर आवेशरानीक दिस ताकि कए बाजए लगलीह—कहू तँ भला! आब कोन उपाय होयतैक? कतेक यत्न सँ अदौरी खोंटने छलहुँ से सभ ई दुरि क' देलनि। कहाँ सँ आइ हिनका सुखाबहु कहलिएनि! हिनका सन लदगोबरि एहि परोपट्टा मे नहि भेटतनि। मरुआ भरि कथूक

लूरि नहि छनि। काल्हि कनेक कहलिएनि जे अँचारक बासन मे तेल द' दियौ। बस, जमाइक लेल चमेलीक तेल मँगबौने रही, भरलो बोतल उझीलि देलथिन।

ढुनमुन काकी कान सँ कम सुनैत छलीह। तेँ ई सभ वार्त्तालाप हुनका सुनबा मे नहि ऐलनि। किन्तु क्रम सँ बूझि गेलीह जे हमरे शिकायत चलि रहल अछि। ठोर पटपटबैत विदा भेलीह—मर्र! आँगन मे एक टा हमही लोक छिएनि जे एतेक ललकैत छथि!

एतबहि मे बिलटी बाजि उठलि—छीया! ए छीया! ढुनमुनकाकीक नुआ मे की भेलनि? सौंसे पीठ थाल लागल छनि।

ताबत मे बुचिया हँसैत-हँसैत आबि क' कहलकनि—थाल लगलनि स्वाइत! गेल छलीह बाड़ी मे मुनिगा तोड़य। एके बेरि दुइ टा मुनिगा केँ दुनू हाथ सँ ध'क' खूब जोर सँ झीक' लगलथिन। मुनिगाक डंटी तँ टूटि गेलैक, लेकिन अपने भट्ट द' चितँगे खसि पड़लीह।

ई सुनि बिलटी हँसैत-हँसैत ओंघड़ाय लागलि। आवेशरानी आवेश देखबैत कहलथिन—आह! हा! बड़ चोट लागल हेतैनि। जाउ ऐ फुचुकरानी! झट द' नुआ बदलि लिअ'। कोना द' लगैत अछि।

ढुनमुनकाकीक गेला पर लालकाकी बाजय लगलीह—देखथु बहिना, काजक घर थिकै। से ने एखन कोबर ढेबरल गेलैक अछि ने अहिबातक पातिल लिखल गेलैक अछि, ने ठकबक बनलैक अछि। हम एकसर की-की करू? जनउ-टकुरी काटू की निपिया बढ़िया करू? पुतहु छथि तनिका दिनराति किताबहि सँ ने छुट्टी। बुचिया सहजेँ एक टा खड़ पर्यन्त नहि टसकाओत। मैयाँ पाकल आम छथि, कखन टगि जैतीह तकर ठेकान नहि। फुचकरानीक हालति देखितहि छथिन। हम करी तँ हो नहि करी, नहि हो। तिलौरी-दनौरी सभ पड़ले छैक। जौं कदाचित झपसी लाधि देलक तँ औरो प्रलय। फेर विधकरी के होयतैक से फुरितहि ने अछि।

आवेशरानी—से किएक? बड़कागामवाली कनियाँ तँ छथिए।

लालकाकी—ओ पढ़ूआरानी छथि। रंग-विरंगक किताब सभ नेने रहैत छथि। एहि पाछाँ खैनाइयो-पिनाइ बिसरि जाइत छनि। हम मुँह पर कहैत छिएनि। कतहु सुनितो होइतीह। एक दिन पुछलिएनि तँ कहै छथि जे नाक-कान धरब मुरखाहा विधि छैक। हमरा बुते ई सभ नहि होयतनि।

आवेशरानी—तखन फुचुकरानी होयथिन।

लालकाकी—ईहो एक टा स्याख करै छथि। ओ विधि की करथिन अंगोर? काजर करय जैथिन तँ वरक आँखिये फोड़ि कय बैसि रहथिन। धरक नाक, धय लेथिन कान' कोबर मे जैतीह त पोटे सुरकैत जैतीह।

एतबहि मे बुचिया बाजि उठलि—ढुनमुनकाकी केँ तँ भरि देह जुड़ापित्ती उठि गेलनि अछि।

ई सुनितहि बड़का गाम वाली कनियाँ गर सँ जाँति कय कहलथिन—वेश कोनो क्षति नहि। कनियाँ विधिकरी दुनू अपनहि बनि जायब।

बुचिया—भौजी केँ तँ अहिना रहै छनि। सभ बात मे एक-एक टा अर्थ लगबैत रहैत छथि।

लालकाकी—बेजाय कोन कहैत छथुन? तोरा बीच मे बजबाक कोन काज? जहाँ विवाहक कोनो चर्चा उठैत छौ कि कोनटा मे ठाढ़ भ' कान पाथि कय सुनय लगै छह। जाह, अपन काज देखह ग'।

ई सुनि बुचिया लजा कय ओहिठाम सँ विदा भेलि। बिलटियो ओकरा पाछाँ लागलि।

क्रमश: वर्षा थम्हि गेल। किन्तु मेघक आटोप बनले रहल। रहि-रहि क' आकाश मे बिजली चमकय लागल। साँझ होयबा मे किछु देरी छलै। किन्तु मेघाडम्बर सँ चारू दिस अंधकार भ' गेल छल। आवेशरानी चलबाक उद्योग मे छलीह। एतबहि मे स्थूल शरीर सँ केबाड़ केँ धकियबैत अपना बज्रविनिन्दक स्वर सँ आंगन केँ कम्पायमान करैत, दुलारमनि पिउसी पहुँचलीह—अयँ! ऐ! मधुरानी! अहाँ बेटी केँ कतेक डाढ़ी खोआओल जे पहिनहि सँ एतेक वर्षा होमय लागल।

एहि प्रश्नक उत्तर मे लालकाकी कनेक बल सँ हँसिक' बुचिया केँ सोर पाड़लथिन—कहाँ गेलैक गे बुचिया! झट द' आसन द' जो। बड़की दाइ ऐलथुन अछि।

दुलारमनि पिउसीक स्वरे तेहेन रहनि जे बिनु कहनहु बुचिया बुझि जइतनि। किन्तु ओ आँगन सँ टरि गेल छलि। लालकाकी धड़फड़ाक' अपनहि उठय लगलीह, तावत पुतहु घर सँ चटकूनी द' गेलथिन।

दुलारमनि दाइ फेर अपना उदात्त स्वर सँ घर-ओसारा दलमलित करैत बजलीह—अयँ ऐ मधुरानी! अहाँ केँ टोल-पड़ोसक एकोरत्ती धाख नहि होइ अछि। राम! राम! राम! कन्या अजग्ग भय गेलि। एतेक बयस मे तँ चारि खेप सासुर सँ भ' आइलि रहैत। नैहरे मे युगपाकड़ि भ' जायत तँ सासुर बसत ग' बुढ़ारी मे?

लालकाकी (माथ निहुरा क')—हँ, ऐ दाइ! आब कन्या रक्षणीत नहि अछि। किन्तु अपन कोन साध्य? नीक घर-वर कतहुँ भेटलो तँ चाहय।

दुलारमनि दाइ एहि बेरि और जोर सँ चिकड़िक' बाजय लगलीह—ई अहाँ की बजलहुँ? नीक घर मे ने देबै तँ की इनार मे फेकि देबै? एहि सँ तँ भोथ हाँसु ल'क' गरदनि रेति देबै से नीक। हमर ममियाँ ससुरक प्रपितामह महादेव झा पाँजि। उनतीस टा विवाह कैलनि। जखन एक टा विवाह और करय सभागाछी गेलाह तँ एगोटा केँ पुछल, कहलथिन जे मास मे उनतीस दिन तँ उनतीस ठाम जायब, तीसम दिन कतय जायब अहाँक कपार पर? ताहि दिन एहन वंशक मर्यादा रहैक। आब तँ कोक छोटवभना केँ उठा अनैये। ऐं! कनेक जोड़न देब?

लालकाकी—बड़की दाइ! जोड़न तँ आब नहि हेतैक। मटकूरी मे एक मिसिया दही छलै से घोरि-घारिक' बुचियाक आगाँ दय देलिऐ। कनेक पहिने अबितथि तँ भ' जएतनि।

ई सुनितहि दुलारमनि दाइ लगले हाथक बाटी केँ पटकि ठाढ़ि भ' गेलीह। फेर गरजैत बिदा भेलीह—कोन पाप लागल जे ऐबो कयलहुँ। जनितहुँ जे आइ रवि दिन जोड़न नहि देतीह तँ की करय छिछिआयल अबितहुँ? पहिने आँजन बनाब' लेल घी मँगैक तँ घैलक घैल भुभका दैक। आब तँ सितुआ भरि घोर देबा मे लोक केँ करेजा फटैत छैक।

जखन दुलारमनि पिउसी के शब्द कणपथ सँ बहिर्भुत भ' गेल, तखन लालकाकी बजलीह, ''हँ! हँ! यावत् धरि ई छलीह तावत् धरि हम हड़कम्प कँपैत छलहुँ। आब जाक' कतहु सँ प्राण मे आयल अछि।'' आवेशरानी सहानुभूति देखबैत कहलथिन, ''तँ! हम तँ चुप्पी साधि देलहुँ। कोन ठेकान, किछु अनट-बिलट कथा मुँह सँ बहार भ' जाइत तँ हमरे पर उनटि जैतथि।''

लालकाकी हिनका मुँह मे जहाँ कनेक क्यो टोक देलक कि बुझक चाही जे बिढ़नीक छत्ता केँ खोचारलक।

आवेशरानी— हँ ऐ बहिना! हिनका द' जे लोक कहै छनि से हमरा सत्ते बूझि पड़ैत अछि। (नहूँ-नहूँ) देखैत ने छथिन बजैत काल कोना दुनू आँखि उनटि जाइत छनि। गुनझिक्कू डाइनक जतेक लक्षण होइत छैक...

लालकाकी—की करथिन, जाय देथु। आइ-काल्हि भीतो केँ कान होइ छैक। (ढुनमुन काकी दिस) जाउ ऐ फुचुकरानी! झटपट भानस चढ़ा लिअ'। वर्षा-विकालक समय अछि। के जाने कखन की होय?

आवेशरानी—बेश बहिना! आब हमहूँ चलैत छी। साँझ देबाक बेरि भ' गेलैक।

फुलमतिया एकसरिये होइति।

लालकाकी—हिनके पर तँ आस अछि बहिना। जौँ ई नहि सम्हारतीह तँ सभ काज भण्डुले भ' जायत।

आवेशरानी आ हे कहू तँ भला! हमरा लोकनि सँ जे सक लागत से किन्नहुँ उठाए राखब?

ई कहि आवेशरानी ठाढ़ि भ' गेलीह। लालकाकी हुनका अरियातने-अरियातने दरवाजा पर नेबोक गाछ लग धरि नेने गेलथिन। ओहि ठाम दुनू गोटा ठाढ़ि भ' फेर गप्प करय लगलीह। पहिने नेबोक चर्चा उठल, जे एहि बाटे जे चलैत अछि से एक टा क' तोड़नहि जाइत अछि। तखन निमकीक गप्प होमय लागल जे जतेक बनल छलैक सभ मे फुफरी पड़ि गेलैक। तदुपरान्त गप्प उठल जे परुकाँ लालकका पटना सँ बड़ दिब अँचार लायल रहथि। पटनाक नाम सुनैत लालकाकी फुसिए आँचर सँ नोर पोछैत बाजय लगलीह—जनैत छी, बड़का बौआ पटना सँ कहिया अबैत छथि! भुट्टू बाबू परसू कहि गेलाह जे बी.ए. मे पढ़ैत छैक तकरा पलटन मे लय जाइत छैक। कॉलेज तँ बन्द भ' गेलनि, लेकिन ओ ओत्तहि रहि गेलाह। मास दिन बाँकी रहतनि तँ औताह।

पलटनक नाम सुनैत आवेशरानीक सौसे देह सिहरि उठलनि। बाप रे बाप! सुनैत छिऐ जे पलटन मे दिनराति गोर्राक पहरा पड़ैत रहैत छैक। जहाँ क्यो बहरायल कि लगले किरिच भोंकि दैत छैक। पहरा द' सुनि लालकाकी केँ मन पड़लनि जे आइ-काल्हि कोतवाल नीक जकाँ नहि ठहकै अछि। एहि पर चोरक गप्प उठल। अजगैबी नाथक घर मे सेंध पड़ल छलनि से एक टा फुटलो काँसा नहि रहय देलकनि। लालकाकी कहय लगलथिन जे राति मे हम जहाँ कनेक पातो खड़खड़ाइत सुनैत छिऐ कि खूब जोर सँ रामायण पाठ करय लगैत छी। चारे कोढ़िए ई तँ बुझताह जे एखन सभ जगले अछि। ताहि पर आवेशरानी कहथिन—हम तँ कुकुरक भुकबे सुनि दम साधि क' पड़ि रहैत छी। उकल गौना मुर्दो बूझिक' तँ छोड़ि देत।

तदन्तर दू-एक टा चोरक खिस्सा-पिहानी चलल। आवेशरानी कनेक और लग मे घुसुकि क' कहय लगलथिन—परसुक्की राति फुलमतिया फुजले केबाड़ छोड़ि देलकैक। आधा राति क' देखि तँ दुनू पट्टा दुहू दिस! आब एतेक साहस नहि पड़य जे खाट सँ उतरि क' केबाड़ लगा आबी। कतहु चौकटिए लग गरदनि दबा दैत! भरि राति भगवान-भगवान गोहरबैत प्रात कैलहुँ। छन-छन डर होय जे कतहु केओ आबि तँ ने रहल अछि।

फुलमतियाक असावधानी सुनि लालकाकी केँ अपन फुचुकरानी मन पड़लथिन। भरि ढाकी अपन दुःख कहि सुनऔलथिन। तखन किछु बड़कागामवालीक समालोचना भेलनि। अन्त मे घुरि फिरि क' फेर कन्यादानक ओरिआओन पर गप्प पहुँचि गेल।

एवं प्रकारेँ पौन घण्टा धरि वार्त्तालापक क्रम बनल रहल। जखन टिप-टिपक' फेर बुन्नी पड़य लगलैक तखन जाक' आवेशरानी केँ मन पड़लनि जे आब साँझ देबाक बेरि भ' गेल। लालकाकी चलयकाल पुराइ कैलथिन—थम्हू, सूप लेने अबैत छी, ओना भीजि जायब। किन्तु आवेशरानी कहलथिन, ''नहि-नहि एतबहि दूर लेल कोन! ओहिना झटकियेक' चलि जेबैक।'' आवेशरानीक गेला उत्तर लालकाकी गाछ सँ दुइ टा पैघ नेबो तोड़ि आँगन ऐलीह।

आँगन मे पैर दितहि लालकाकी बजलीह, ''हे लोकनि! आइ चोर-डाकूक गप्प-शप्प भेलै अछि, खूब सतर्क भ' क' रहैत जैह'।''

बुचिया बाजलि—ई सभ कहबहुन तँ ढुनमुनकाकी भरि राति सूतल मे घिघिऐथुन।

ढुनमुनकाकी भनसा असोरा पर पटुआक झोर करैत छलीह। बुचियाक मुँहेँ अपन नाम सुनि भनभनाय लगलीह—ढुनढुनकाकी ककरा लोह दगलथिन अछि? की द' कहैत छैक तकर परि। हट्टि घड़ी सभ गोटे हमरे अदगोइ-बदगोइ करैत रहतीह।

एतबहि मे झुनियाँ माय हन-हन पट-पट करैत पानि देबय आइलि। पाँचे मिनट मे कतेक बात बाजि गेलि तकर ठेकान नहि। ''घैलची, लग लोक पिच्छड़ बनौने रहैत अछि, कतेक रासे पानि उठि जाइत छैक, दोल पुरान भ' गल, उवहनि सड़ल जा रहल छैक'' इत्यादि। तखन कोनो अज्ञातनाम व्यक्ति सँ झगड़ा करय लागलि—सौख मे सौख मिरचाइयोक सौख! हम दिन भरि बही-तरबाक तज्जी ने रहय- और ओम्हर निचिन्त सुतथि पद्मावती बहुरिया। ताहि पर कहनाइ जे मथा मे दर्द होइए। अहा हा हा! छवि ने छटा मसुरीक दालि बड़ खट्टा! देहो जरैए।

ई कहि झुनियाँ माय चमकि क' घैल उठौलक और चलल दरवाजा दिस। दिन मे ककरो सँ झगड़ा भेल रहैक से मन पड़ि गेलैक। बस, लागल फेर चरखा ओटए। ''हँ, आँखि देखौला सँ जेना झुनियाँमाय डेराइये तँ जाइत। हम थाना दरोगा सँ डेरबे न करी से...''

ई बजैत-बजैत झुनियाँ मायक नजरि सहसा कोनो वस्तु पर पड़ि गेलैक जाहि सँ डराय ओ जान ल'क' पड़ाइलि। ओतय सँ पड़ाइलि-पड़ाइलि ओ सोझे लालकाकीक लग आबि भरि पाँज हुनका ध' लेलकनि और कसकसाक' गरदनि पकड़ि लेलकनि। मुँह मे बकौर लागि गेलैक। लालकाकी बजलीह—देखै जाह लोक सभ। ई हमरा नीक क' बरोबरी कैने अछि ऐँ गे! तोरा भूत लगलौक अछि जे एना करैत छँ?

एके छन मे आँगन मे सभ लोक जमा भ' गेल। ई देखि झुनियाँ माय केँ कनेक साहसक संचार भेलैक। पहिने तँ ओकरा मुँह सँ बकारे नहि बाहर होइ। तखन लागलि ओ लटाड़म करय—आब नहि भरबै पानि हम ककरो आँगन। आरे बाप! जीउब तँ करमीक साग तोड़ि गुजर करब। उँहुँ! आब कहाँ!

क्यो बाजथि जे एकरा साँप कटललैक अछि, क्यो बाजथि जे आइ दुलारमनि पिउसी केँ जोड़न नहि देलिएनि तकरे फल थिक। अन्त मे ओ बहुत पुछला पर बाजलि—गे मैया गे मैया! दरवाजा पर पाँच हाथक सिपाही बन्दूक नेने बैसल छनि। बीचे मुँह घेरि लेलकनि अछि। हम जौं कि घुरखुर पर लात दै छी कि झपटल हमरा दिस। हम घैल पटकिक' पड़एलहुँ, नहि तँ आइ प्राण नहि बचैत हे महतमाइन। ई कहि झुनियाँ माय हिचकि-हिचकि कानय लागलि।

ई समाचार सुनितहि सभ गोटेक जी सन्न द' उड़ि गेल। लाल काकी थरथर कँपैत बजलीह, ''कहाँ सँ छुच्छी सभ आबिक' गोर्रा पलटनक हाल कहि जाइ-ए। ई सभ तँ चर्चा करैत देरी लगले पहुँचि जाइत छैक।''

अन्त मे ई विचार होमय लागल जे प्राणरक्षाक कोन उपाय करबाक चाही। लालकाकी साहस क' कहलथिन—सभ गोटा मिलिक' सुन्दरकाण्ड रामायण पाठ करैत जाह। कनियाँ केँ कहून हनुमान चालीसा पढ़थुन। (जोर सँ) 'महावीर विक्रम बजरंगी। सुमति निवारि कुमति के संगी' दुरजो। उनटे भ' गेलैक। नहि की लिखल अछि रे दैवा।

मैयाँक विचार भेलनि जे सभ गोटा मिलिक' एके बेर घोल करबह तँ ओ आबिक' सभक ठोंठ दबाय देतौह। से नहि, पछुआड़क मुँह सँ एगो टा जाक' ज्योतिषीकका केँ बजा लबहुन। ताहि पर झुनियाँ माय बाजलि—नहि रे बाप! ओहु मुँह पर क्यो ठाढ़ होयतैक। हमरा बुट्टी-बुट्टी काटि क' घर मे गाड़ि दिय' लेकिन हम आब बाहर नहि जायब। ई कहि ओ फेर घेवना पसारलक।

मैयाँ कहलथिन जे पहिने गनि लइ जाह जे आँगन मे सभ गोटे छह की नहि? लालकाकी सभक देह ध'क' क' गन' लगलीह। दू-तीन बेरि गड़बड़ा गेलनि। चारिम बेर गनैत बजलीह—जाह! फुचुकरानी की भ' गेलीह! दैवा रे दैवा! ल' गेलनि घिसियाक'।

ताहि पर झुनियाँ माय कहलकनि जे ओ तँ पहिनहि सँ जा रन घर मे जाक' किल्ली लगा बैसलि छथि। मैयाँ रुद्राक्षक माला ल' भगवती कैँ गोहरबैत कबुला कर' लगलीह जे एहि बेर जँ प्राण बचि गेल तँ कुमारि भोजन करायब।

ई हाल देखि बड़कागामवाली टनकिक' बजलीह—ई लोकनि एतेक डेराइ छथि किऐ? हमरा लोकनि की चोरी-खून कैने छी जे फाँसी पड़त? बुच्ची दाइ कैँ पुछय कहथुन जे के अछि। बुचिया सुरफुराक' विदा भेलि जे 'तोरा लोकनि कैँ डरे बग्घा लगैत छह तँ लैह हमही जाक' देखि अबैत छिऐ। डर कथिक छैक? किछु बाघ तँ नहिएँ छैक जे लोक कैँ टप द' गीड़ि जेतैक।'

एतबहि मे बाहर चौकी पर लाठी पटकि क्यो कड़किक' बाजल—कोई है?

मैयाँ झट द' लालकाकीक हाथ टीपि कहलथिन—कहि दियौ जे केओ नहि अछि।

तावत् सिपाही बाजल—पं. भोलानाथ झा के नाम से एक तार आया है। कोई अन्दर से आकर ले जाइए।

मैयाँ कहलथिन—तार आया है तँ दरबज्जे पर रह' दीजिए। एकसरि आँगन मे के उठा आनेगा?

एतबहि मे बाहर ज्योतिषीकाक शब्द सुनि सभ लोक फक द' निसास छोड़लक।

सभागाछीक दृश्य

जखन सभागाछी पहुँचबा मे आध कोस बाँकी रहि गेलनि तखन घूटर झा कैँ बाह्यभूमि दिस जैबाक शंका बूझि पड़लनि। अपन नसिदानीक बटुआ भोलानाथ झाक हाथ मे दैत कहलथिन—हौ बाबू! तोरा लोकनि आगाँ बड़क गाछ तर बैसे जाह। हम एहि पोखरि सँ भेने अबैत छी।'' ई कहि घुटर झा कान पर जनउ चढ़ाय लग्गा सन-सन डेग दैत विदा भेलाह।

ठकबा कैँ पछुआयल देखि भोलानाथ झा गर्द कैलथिन—चल रौ ठकबा! पैर मे जाँत बान्हल छौ की? एना चलबे तँ एही ठाम राति भ' जैतौक। ठकबा मुँह गोहछाक' कुड़बुड़ाय लागल—ईह! दौड़बैत-दौड़बैत जान मारिक' छोड़ि देलनि। गाड़ीक टेने तँ जेना छूटल जाइ छनि! तदुपरान्त काँख तरक मोटरी कैँ माथ पर राखि कसिक' फाँड़ भिड़लक और लगौलक दुलकी चालि।

बड़क गाछ तर पहुँचला पर ठकबा पहिने मोटरी कैँ नीचाँ पटकलक। तखन दुइ हाथ भूमि कैँ झाड़ि-फूकिक' चिक्कन बनौलक। ताहि पर अपन अंगपोछा ओछौलक। कनेक काल ठेहुन पर माथ राखि बैसल। फेर मोटरी पर ओठंगि गेल। तदुपरान्त एम्हर-ओम्हर ताकि शनैःशनैः दुनू पैर कैँ लम्बायमान कैलक। थोड़बहि काल मे अपना महिष जकाँ फोंक काटय लागल। भोलानाथ झा बेचारे बड़क सोर पर बैसल अपन फराठी ल' एक टा पकोहा कैँ चिचैत रहलाह।

अढ़ाइ दण्डक उपरान्त घूटर झा लोटा डोलबैत पहुँचलाह। अबैत देरी एक चुरू पानि ठेकबाक कान मे ढारि देलथिन। ओ कुनमुना क' उठल। घूटर झा बजलाह—एँ रौ! तोरा देह मे फुर्ती नहि छलौक तँ मधुबनी मे दू कैञ्चाक कीनि किऐ ने लेलै? परदेश मे लोक चड़फड़ भेल रहैत अछि और तों जतय जाइत छें तत्तहि पेटकुनिया देमय लगैत छें।

फेर भोलानाथ झाक दिस ताकिक' बाजय लगलाह—हौ बाउ! ई मेघक टिक्कड़ नहि मानतौह। पैर झाकिक' चलह नहि तँ भीजि जैब'। ई कहि घूटर झा अपन साबिक बला दनहा छाता बाहर कैलनि। ई छाता हुनक पिता कैँ मातृक मे भेटल रहनि। छाताक छिद्र सभ देखला उत्तर बूझि पड़ए जे सहस्राक्ष शब्दक व्यञ्जनाशक्ति एही मे घटित भ' रहल अछि। कमानी सभ देखाबथि जे हम अष्टावक्र मुनिक साक्षाते मसियौत थिकहुँ। छाताक घोड़ा टूटि गेल रहनि तकरा स्थान मे घूटर झा एक टा काठी लगा देलथिन। तदनन्तर नसिदानी सँ नासिकानन्द चूर्ण ल', नाकक उभय पूरा मे कोंचि, एके बेरि पूरक श्वाँस चढ़ौलनि। ई क्रिया समाप्त भेलनि तखन ठाढ़ भ' विदा भेलाह। पाछाँ-पाछाँ भोलानाथ माथ निहुरौने चललाह। ठकबा तमाकू चुनौने छल, ठोर बिचकाक' एक जुम्म रखलक, तखन पिच-पिच थूक फेकैत सभ सँ पाछाँ चलय लागल।

थोड़ेक दूर गेला पर फूही पड़' लागल। भोलानाथ झा कैँ मन पड़लनि जे, पनही भिजैत होयत। हड़बड़ाक' ठकबा कैँ पुछलथिन, ''रौ! पनही देखही तँ भिजै तँ ने छौक?'' ठकबा मोटरीक ऊपर ससरफानी लगा क' पनही बन्हने रहैक। एखन जे टोयलक तँ एके टा बूझि पड़लै। बाजल—एक पबाइ तँ कतहु खसि पड़ल, एक टा बाँचि गेल अछि से लिअ'। ई कहि पनही आगाँ मे फेकि देलकनि। भोलानाथ झा ओही पनही ल' ठकबा कैँ मार' हेतु उद्यत भेलाह, किन्तु घूटर झा रोकि देलथिन। भोलानाथ झा बजलाह, ''नवे पनही छल। सालमसाही! एक रुपैया चौदह आना मे!'' एतेक दामक आइ धरि कहियो ने किनने छलहुँ!। चलबाक काल एड़ी मे कटैत छल—तँ सार कैँ कहलिऐ जे नेने चल—आब एक पबाइ ल'क' की करू? एकरो फेंकि दैत छिऐ।

घूटर झा भरिगरहा चुटकी नसि लय आश्वासन देमय लगलथिन—की करब? सर्वनाशे समत्पन्ने अर्द्ध त्यजति पण्डितः। एके पबई ने गेल? गाम पर नेने चलू। यदि अहीँ जकाँ ककरो एक पबाइ हेरा गेल होयतैक तँ ओकरा सँ माँगिक' जोड़ लगा लेब। नहि तँ ओकरे ईहो पबाइ द' देबैक। हम तँ थाल-कीचक समय मे पनही रखितहि ने छी। 'नाँगट नहायब की गाड़ब की?' जौं पनहिए नहि रहत तँ हेरायत कोना?

एतबहि मे मटर सन-सन बूँद पड़य लागल, जाहि सँ तीनू गोटा भागिक' एक दलान मे पहुँचलाह।

सभागाछी आइ बेश जमकल बूझि पड़ैछ। पाकड़िक गाछ मौलल देखि बहूतो अनुभवी वृद्ध अनुमान करैत छथि जे एक लाख ब्राह्मण पूरि गेलाह। जतय धरि दृष्टि जाइछ पागहि पाग देखि पड़ैछ। एतबहि मे कनेक फूही आयल कि सभ पागक ऊपर मे एक-एक टा छाता तना गेल। श्वेत मरालपंक्ति जेना सहसा श्याम काकावली मे परिणत भ' गेल हो!

पाठकवृन्द! एक मन सूझाए—बन्दा बूझए। कत्तहु पर—कत्तहु पर—घूटर झा तँ देखा दिय'। वैह देखियौन, हाथ मे नसिदानी नेने हँसि-हँसिक' घटकराज टुन्नी झा सँ गप्प क' रहल छथि। टुन्नी झाक ठढ़ौका चानन, भगजगार ठोप तथा अष्टोत्तरशत रुद्राक्षमाला देखि बूझि पड़त जे ई कर्मकाण्ड मे घौतपरीक्षोत्तीर्ण हैताह, किन्तु असल बात पूछी तँ...किऐ देखार करबनि—जाय दिय'—बेचारे दोसरा दिस ताक' लगलाह।

घूटर झा नसि लैत पूछलथिन—बालकक मूल की कहल?

टुन्नी झा आँखि-भौं चमकबैत बजलाह—मूल तँ वश मूले छनि। माने लिअ' जे शोदरिपुरिये शरिशब। बिकौआ वंश! मानि लिअ' जे चारि टा वंश छनि। एक तँ ब्राह्मण एहन पैघ। दोसर शुठाम परक। ई कथा करी तँ मानि लिअ' शोन मे शुगन्ध भेटत!

घूटर झा—बालकक आस्था कोन तरहक छनि?

टुन्नी झा—आस्था! मानि लिअ' जे कम आस्था नहि छनि। अपन सात बीघा ब्रह्मोत्तर छनि आओर सवा बीघा कलम शूदिभरना नेने छथि। चालीश मन तँ मरुए भेल छलनि।

भोलानाथ झा—पढ़ल-लिखल की छनि?

टुन्नी झा—पढ़ल कोना ने छनि? मानि लिअ' शीघ्रबोध पढ़ैत छथि। मंगलाचरणक श्लोक सम्पूर्ण कण्ठस्थ छनि। हमरा लोकनिक पुरुखा तँ मानि लिअ' जे चिड़चिड़ायो पाड़'

नहि जनैत रहथि। ताहि सँ तँ संस्कार उत्तम छनि।

घूटर झा—बालकक पिता छथिन कि नहि?

टुन्नी झा—मानि लिअ' पिता नहिए छथिन तँ हर्ज की? हमरा लोकनि तँ छियनि। मानि लिअ' माय तँ एखन जीविते छथिन। आओर भाय मे सेहो एकसरे छथि।

घूटर झा—कोन तरह सँ कथा कर' चाहैत छथि?

टुन्नी झा—मानि लिअ' सवा सय टाका तत्काल मे अपने द' देताह। भार-दौर मानि लिअ' नहिए जाएत तँ हर्ज की? सोमक दिन सिद्धान्त लिखाक' अपना संगहि नेने जैयौन। ओतय मानि लिअ' एक खण्ड धोतिए पहिरा क' विदा क' देबनि।

ई सभ कथा-वार्त्ता भेलाक उपरान्त घूटर झा और भोलानाथ झा ओहिठाम सँ हटिक' एकान्ती कर' गेलाह। माम कैँ अनेक पसिन्दे जहाँ पड़लनि, किन्तु भागिन कलपिक' कहलथिन—औ मामा! बुचिया योग्य वर हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि। आँगन मे भरि जन्म खोभाटनि दैत रहतीह।

अन्ततोगत्वा दुहु माम-भागिन आबिक' टुन्नी झा कैँ कहलथिन जे कनियाँक प्रति टाका गनायब हमरा लोकनिक अभीष्ट नहि। कनेक नीक कथा चाहैत छी। बेसी तँ नहि, किन्तु दस-पाँच टाका यदि अपनो दिस सँ खर्च पड़य तँ ताहि सँ पाछाँ नहि हटब।

ई सुनि टुन्नी झा मटियार खेतक दराड़ि जकाँ मुँह बाबि कहलथिन—आहि रौ नैयायिक! ई हमरा पहिनहि किऐ ने कहल? मानि लिअ' जे हमरा ओहिठाम तँ सभ तरहक कथा अबैये। एक टा खनखनौआ—जाहि मे कन्यागत खनखना कैँ टाका हँसोथि लैत छथि। दोसर मानि लिअ' टनटनौआ जाहि मे वरपक्ष टनटना क' हजार-पाँच सौक तोड़ा गनबैत छथि! तेसर मानि लिअ' जे ठनठनौआ जाहि मे वर कन्यागत दुहु ठनठन गोपाल भ' काज करैत छथि! हमरा तँ पहिने बूझि पड़ल जे अहाँ खनखनौआ कथा करब, किऐ तँ अहाँ सन मैल पाग वला कन्यागत मानि लिअ' जे बहुत खरनाएले अबैत छथि—तैँ ई कथाक उत्थान क' देल। अहाँ बेसी हिसाब रखैत छी—टनटनौआ कथा करब—से मानि लिअ' हम की जानय गेलहुँ? नहि तँ कथा तँ मानि लिअ' जे हमरा मुट्ठीए मे अछि। एखन चलू बालक पसिन्द क' लिअ' । संयोग सौं एहन कथा मानि लिअ' जे सभागाछी ने आबि गेछ अछि मानि लिअ' ई कथा जौं पटि गेल तँ कन्याक भाग्य बूझक चाही।

ई सुनि माम-भागिन टुन्नी झाक संग चलबाक हेतु प्रस्तुत भ' गेलाह। टुन्नी झा भरि बाट हिनका लोकनि कैँ सामयिक शिक्षा प्रदान करैत गेलथिन जकर मुख्य सारांश ई—हम पहिने बर्नी किछु कहि देने छलहुँ—ओ कथा अहाँक योग्य नहि छल—आब जे कथा कहैत छी से यथार्थ मे सोन अछि—एकरा बिगाड़क हेतु बहुतो लोक प्रयत्न करत—तैँ सतर्क रहब—अनका कथा पर ध्यान नहि देब—आब अहाँ अपन लोक भ' गेलहुँ—हम जौं सपरि क' एहि मे पड़ि जायब तँ कथा निश्चय भ' जायत...इत्यादि-इत्यादि।

टुन्नी झा कैँ देखितहि एगोटा पाछाँ सँ आबिक' नमस्कार कैलथिन! टुन्नी झा बाजि उठलाह—नमस्कार! नमस्कार वैदिक! छी निकै?

तदुपरान्त टुन्नी झा घुटर झाक दिस संकेत कैलथिन जे अहाँ लोकनि तावत् एहीठाम रहू—हम पहिने जाक' कथाक रंग-ढंग देखने अबै छी। आधा घण्टाक बाद टुन्नी झा ओही वैदिक कैँ संग नेने प्रत्यागत भेलाह। टुन्नी झा अबितहि बजलाह—औ बाबू! अहाँक कार्य तँ शूतरि गेल। किन्तु पुछिऔन वैदिक सँ हम अहाँक पक्ष सँ कतेक लड़लहुँ अछि। मानि लिअ' जे गर बाझि गेल। अन्त मे मानि लिअ' स्वीकार करहि पड़लनि। आब अपने गप्प-शप्प क' सभ टा फरिछा लिअ'।

भोलानाथ झा पुछलथिन—वरक की मूल छनि? कत' रहै छथि?

टुन्नी झा कानक जड़ि कुड़ियबैत बजलाह—मूल सँ अहाँ कैँ कोन काज? मानि लिअ' शुरगणें छथि तँ की? शुद्ध मैथिल ब्राह्मण तँ छथि। की औ वैदिक?

वैदिक माथ झुलाय क' अनुमोदन कैलथिन। तखन। घूटर झा प्रश्न कैलथिन—वरक घर कत' छनि?

टुन्नी झा कनेक खखसिक' बजलाह—मानि लिअ' दक्षिणे भर छनि तँ हर्ज की? सेहो बेसी दूर नहि—दलसिंहसराय सँ चौदह कोस पर घर छनि। हमर देखले अछि। घर-द्वार परम सुखितगर। की औ वैदिक?

वैदिक पुनः माथ झुलाय एहि कथाक समर्थन कैलथिन। तखन टुन्नी झा अपन ब्रह्मास्त्र रूपी वचनक प्रयोग कर' लगलाह—वर मानि लिअ' जे एम.ए. मे पढ़ैत छथि। कन्यागतक द्वारे मानि लिअ' जे दरवाजा पर एक टा बरहमसिया चूल्हि बनले रहैत छनि। पहिने मानि लिअ' चलै छल महादेव झा पाँजि, श्रीकांत झा पाँजि, आब चलैत अछि मानि लिअ' डिप्टी पाँजि, वकील मास्टर पाँजि। वरक पिता मानि लिअ' जे नाक पर माछिए नहि बैस' दैत छलाह जे यावत् बेटा मानि लिअ' बी.ए. पास नहि करताह तावत् मानि लिअ' जे माथ पर मौर नहि देबनि। तखन हम अपने मानि लिअ' जनउ जोड़िक' ठाढ़ भ' गेलियनि। तखन कहलनि जे बेस सात सय टाका अहाँ कहियौन—हम बेटा द' देबनि। सम्भव थिक जे अधिक दबौला सँ पचीस टाका आओर छूटि जायत। आब सुभ्यस्त शीघ्रम् करबाक चाही। की औ वैदिक?

वैदिक जी महादेवक बसहा जकाँ फेर माथ झुलाब' लगलाह। घूटर झा एवं भोलानाथ झा घटक पक्ष संग वरपक्ष सँ गप्प कर' गेलाह। पूरे अढ़ाइ घण्टा महोजरो भेला पर ई निष्कर्ष बहरायल जे छौ सय सँ एक कौड़ी कम पर कथा नहि भ' सकैछ। भोलानाथ झा बेचारे बहुत साहस क' पौने दू सँ टाका फाँड़ मे नेने आयल छलाह, षट्शत मुद्राक नाम सुनि प्राण सुखा गेलनि। अन्त मे हारि-दारिक' दुहु मामा-भागिन डेरा अबैत गेलाह।

डेरा पर पहुँचल उत्तर घूटर झा चपकनक भूड़ी फोड़ैत बजलाह—हौ बाबू! आइ भरि दिन दाउनिक बरद जकाँ घूमितहि छी। पहिने पाक-शाकक उद्योग करै जाह, तखन बुझल जेतैक।

भोलानाथ झा टीक सोहरबैत बजलाह—मामा! हम तँ भरि जन्म अपना हाथ सँ कहियो भूमिदान नहि कैने छी। माथ पर दू-चारि पसेरीक बोझ बरू राखि दी, तँ से ध' आयब। किन्तु भानस कैल हमरा बुते पार नहि लागत।

घूटर झा कहलथिन—हौ बाबू! हम तँ आठमहि वर्ष सँ चूल्हिक मुँह मे आँच लगबै लगलहुँ। बिनु सिद्धान्ते कल्याण नहि। बेस, हम सीधा सामग्री ल' अनैत छी। तावत् तों ठकबा सँ चौका ठीक करबौने रहिह'।

ई कहि घूटर झा कैँझा ल' हाटक दिसि विदा भेलाह। ओत' आँगुर सँ टनटनाक' एक टा छोट-छीन पातिल किनलनि। जखन डेरा पर प्रत्यागत भेलाह, तखन ठकबा पर तमसाय लगलाह—भारी धिम्मड़ अछि। हम कहैत छलहुँ जे चुल्हि बनाक' आँच पजारने होइत से एखन धरि भूमिए खड़बैत अछि। आध घण्टाक अविरल परिश्रमक अन्तर घूटर झाक चूल्हि तहिना धधकि उठल जेना कन्यागत द्वारा विशेष विदाइ नहि भेटला पर समधिक कोपाग्नि धधकि उठैत छनि।

जखन घूटर झा अदहन मे दालि लगाब' लगलाह तखन पाछाँ सँ क्यो व्यक्ति आबिक' प्रणाम कैलथिन। घूटर झा पाछाँ ताकिक' बजलाह—के मुकुन्द? निकैँ रह'! हौ तों कत' सँ?

मुकुन्द झा मुँह कोचियबैत बजलाह—की कहू मामा? भारी ठकान मे पड़ि गेलहुँ।

घूटर झा दालि लगायब छोड़िक' पुछय लगलथिन—से की? से की?

मुकुन्द कह' लगलाह—हमरा पर जुड़ानपुरक वर्तुहार आयल छल। कथाक निश्चय भ' गेलैक चालीस टा रुपैया पर। हम अपना दिस सँ दू टका खर्च क' सिद्धान्तो लिखबौलहुँ। चलबाक काल मे हमरा कहलक जे रुपैया पहिने गना दिय'। हम गनाब' लगलिऐ ताहि मे संयोग सँ एक टा रुपैया खराब बहरा गेलैक। दोसर रुपैया संग मे रहबे नहि करय। आब लाख-लाख कहियैक जे एक टा पाछाँ ल' लेब से किन्नहु मानबे नहि कैलक। अन्त मे मझौलियाक एक टा द्वितीय वर चालीस रुपैया गनि देलकैक। तकरे ल' गेल। हम मुँह तकैत रहि गेलहुँ।

भोलानाथ झा नेत्र विस्फारित क' बजलाह—कहु तँ केहन भारी धरकट बाभन छल। हमर पिसियौत भाइ केँ एहिना भेल रहनि। 'भलमानुस' केँ जाइत रहनि। एक्का ठीक भेल सभ गोटे चढ़ैत गेलाह। जखन मधुबनी पहुँचैत गेलाह तखन एक्कावला अठारह आना भाड़ा माँग' लगलनि। आब झगड़ा उठल जे किरायाक कैंचा के देतैक। एही पर त्वंचाहंच होइत-होइत मारि बजरल। छत्ता-छत्तौअलि, जूता-जूतौअलि सभ किछु होमय पर वृत्त भ' गेल। तावत् एक टा दोसर बालक सभागाछी सँ फिरल जाइत रहै। कन्यागत परिचय-पात बूझिक' पुछलकैक—औ बाबू! अहाँ भाड़ा देबैक? बालक तुरन्त अठारह आना ढेउआ फेंकि देलकै। कन्यागत ओही बालक केँ नेने-देने चल गेल। हमर पिसियौत भाइ टुकुर-टुकुर तकैत रहि गेलाह।

ई सभ कथा सुनि घूटर झा गम्भीरतापूर्वक बजलाह, ''हौ बाबू! तोरा लोकनि देखलहौक अछि? सभागाछीक डकैती ओ भोजपुरक डकैती दुहू नामी छल। एक बेरिक हाल कहैत छियौ। एक टा साठि वर्षक बूढ़—बेश लक्ष्मीपात्र तनिका जखन कोहा-कौड़ी जुगताबक समय ऐलनि, तखन जाक' विवाह करबाक' उक्खी-विक्खी लेलकनि। बस एक टा दीयरक छोटबभना परतारिक' अपना ओहिठाम ल' गेलनि। पूरे नौ सँ टका गनबा लेलकनि। राति मे एक टा निमोछिया जवान सँ विवाह करा देलकनि। कोबर करय गेलाह तँ विधिकरी कहलथिन जे कनियाँ केँ कोदवा भ' गेल छैक। चतुर्थीक प्राते वर राम केँ विदा क' देलकनि। जकर हाथ धेलथिन तकर मुँहों नीक जकाँ नहि देखि सकलाह। जखन दुल्हा राम अपन गाम पर पहुँचलाह, तखन ससुर हजाम पठौलथिन जे हमर बेटी कोदवा सँ शान्त भ' गेलीह। कहू एकरा ठकैती कहब की डकैती?

भोलानाथ झा मुकुन्द केँ आश्वासन दैत बजलाह—की करबहक, मुकुन्द। रुपैया तँ बाँचि गेलौह! कोन ठेकान तोरो कतहु पुरुषे सँ विवाह करा दितौ, तँ कोन उपाय करितह?

घूटर झा फेर एक टा कथा पसारबाक सूर-सार कैलनि, तावत् आँच मिझा गेलनि। तेँ गप्प छोड़ि पाक-क्रिया मे तत्पर भ' गेलाह। जखन चाउर पूर्ववत् खदकय लगलनि, तखन मुकुन्द दिस ताकिक' कहलथिन—की हौ मुकुन्द! भोजन तँ नहि कैने होयबह?

मुकुन्द—नहि, की होयतैक? दोकान पर जाक' किछु खा लेबै।

घूटर झा—ओह! दोकान पर असिद्ध की खैबह? घी मे चरबी फैँटने रहैत छैक। एहिठाम सिद्ध अन्न मे जे स्वाद भेटतौ, से बजारू पूड़ी मे कत' पैबह?

मुकुन्द—हँ से तँ हमरो आइ चारि साँझ सँ असिद्ध खाइत-खाइत जी उमठि गेल अछि। किन्तु...

घूटर झा—किन्तु की? त्रयाणां पाकसम्पन्ने, चतुर्णामपि भोजनम्। तों खैबे कतेक करबह?

मुकुन्द—हँ से तँ हम बहुत कम खाइत छी। ताहि मे भूखे कम्म अछि।

घूटर झा खिचड़ीक पातिल उतारि चारि टा पात पर परसलनि। फेर ओहि मे सँ आलू बीछिक' साना कैलनि। तखन बजलाह—जे बेश, आब अबैत जाउ, नमोनारायण करू। दुहू गोटे पैर धोक' बैसैत गेलाह। मुकुन्दक पेट तेहने रहनि जे चारू पात परक खीचड़ि आगाँ मे देल जैतनि तैयो छुछुआयले उठितथि, किन्तु करताह की? जैह नैवेद्य भेटलनि ताही पर सन्तोष क' उठि गेलाह।

अचाबय काल मुकुन्द बजलाह—मामा! आइ दालि बड़ दिब सिद्ध भेल, स्वादिष्टो तेहने भेल छलैक। बूझि पड़ैत छल जेना गंगाजल मे बनल हो।

घूटर झा खरिका करैत ठकबा सँ पुछलथिन—की रौ! पानि कत' सँ अनने छलें?

ठकबा गोंहछि क' बाजल—एही उत्तरबारी पोखरि सँ अनलहुँ और कोन मे सँ आनब?

घूटर झा—रौ! लधियाही पोखरि सँ तँ ने अनलैं?

ठकबा—तँ की हड़ाही पोखरि सँ नेने अबितहुँ!

घूटर झा बजलाह—हौ बाबू! आब किछु बाजह जुनि। फिरती बेरि सिमरिया घाट मे एक डूब देब' पड़ैत गेलौह।

तदन्तर कम्बल बिछाक' गप्प-शप्प करैत तीनू गोटा स्वप्न राज्य मे प्रविष्ट भेलाह।

प्रात भेने मुकुन्द उठिक' दोसरा दिस विदा भेलाह। दुहू माम-भागिन झटपट स्नान-भोजन क' सभागाछी मे प्रवेश कैलनि। थोड़बहि दूर पर काँख तर एक पुलिन्दा कागज नेने घटकराज टुन्नी झा भेटलथिन। घूटर झा पुछलथिन—औ घटक! ई की थिक?

टुन्नी झा आँखि मटकबैत कहलथिन—एही मास सँ एक टा मासिक पत्र चललैक अछि मानि लिअ' जे *मिथिला सुधारिणी*। तकरे विज्ञापन थिकैक। हमरा पचाशेक बाँटक हेतु देने छल। हम देखल जे मानि लिअ' एक पीठ खालिए छैक। उतेढ़ि लिखबा योग्य तँ भ' गेल। यैह कहाँक थोड़? आगि लगन्ते झोरड़ जे निकशै से लाभ। एक टा अहूँ ल' लिअ'। मानि लिअ' जे पाग मे धर' योग्य तँ होयत।

घूटर झा एक चुटकी नसि सुरकैत बजलाह—हँ, हँ! हमरो मधुबनी स्टेशन पर एगो टा भेटल रहय। जैखन गाड़ी सँ उतरलहुँ कि दिक करय लागल जे अपनहुँ ग्राहक बनि जाउ। हम पुछलियैक जे औ बाबू! मंगनी देबैक कि किछु नगदो नारायण लेबैक? ताहि पर कहलक जे तीन टाका साल मे लागत। हम कहलियैक जे एहि पत्र सँ हमरा एको साँझक खर्चा चलत? ओ कहलक—से तँ नहि होयत। हम कहलियैक—बेस, चुपचाप अपन बाट धरू। सभ सँ बाढ़ि बुरि ढहलेल अहाँ केँ हमहीँ बूझि पड़लौं? तीन टाका मे हमरा दू सालक नोन चलत। एकबार ल'क' कि चाटब? फेर एहन कथा बजबै तँ लोक उकठि करय लागत।

टुन्नी झा अपन चातुर्यक दाबी देखबैत बजलाह—हमर नाम तँ मानि लिअ' जे जबर्दस्ती ग्राहक मे लिखि लेलक। तँ की अहाँ केँ बुझि पड़ैत अछि जे हम एको टा कैंचा देबैक?

भोलानाथ माथ कुड़ियबैत बजलाह, *मिथिला-सुधारिणी* पुस्तक हम देखने छलियैक। ज्योतिषी कका अनने रहथि। ओ बजैत रहथि जे पत्र व्यर्थ टाँहि-टाँहि क' रहल अछि। मैथिल-जाति मे सुधार-तुधार किछु नहि भ' सकैत छैक। टुन्नी झा अपन पाण्डित्यक प्रखर प्रकाश देखबैत बजलाह—ई पत्र तँ मानि लिअ' जे अपनहि आर्यसमाजी थिक। ई सुधार की करत? मानि लिअ' अपनहि जातिक निन्दा करैत अछि। ई परम अनर्गल थिक। जौं अपनहि घरक दोख अपने देखार करय लागब, तखन तँ दोसर जाति मानि लिअ' जे धूसि क' छोड़ि देत। हमरा जौं सम्पादक सँ भेंट होइत, तँ कहितिऐन जे अपने कनेक ज्ञान झाक योग द' क' देखियौक।

एहि प्रकारक समालोचना होइते छल कि फराक सँ टुन्नी झा केँ क्यो सोर पाड़लकनि। टुन्नी झा स्वर सँ गर्द क' कहलथिन—यैह ऐलहुँ। कनेक थम्हि गेल जाओ।



काव्य-गोष्ठीक हास्य-विनोद

हरिमोहन झा

हमर जीवन अधिकांशत: काव्य-शास्त्र-विनोद मे बीतल। अनेको काव्य गोष्ठी मे सम्मिलित भय काव्य-रसक आनन्द आदान-प्रदान कैलहुँ।

हमरा पहिले-पहिल सार्वजनिक सभामंच पर कविता सुनेबाक अवसर भेटल रहय अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मुजफ्फरपुर अधिवेशन (1928) मे (जखन हम बीस बर्खक रही)। हरिऔध जीक अध्यक्षता मे कवि-सम्मेलन होइत रहै। ओही बीच मे एक अभ्यागत कवि (आराक सरदार हरिहर सिंह) मंच पर एलाह और ठेठ भोजपुरी मे तिरहुतिया कैँ बनाबय लगलाह—

अइली अइसन तिरहुत देस
मउगा अदमी उजबुक भेस
मन लायक भोजन ना पैली
चूड़ा दही फेंट कर खैली (इत्यादि)।

स्वागत समितिक लोकसभ (रामधारी बाबू, श्यामधारी बाबू, नटवर, मनोरंजन जी प्रभृति) दंग रहि गेलाह। ई की बरियातिक महफिल मे ऐलाह अछि जे एना सुना रहल छथि? परन्तु जखन ठनिए गेल तखन एम्हरो सँ जवाब भेटबाक चाही। परन्तु सरियाती दिस सँ एहि हेतु केओ तैयार नहि छलाह।

ओहि समय हमरा आशु कविता करबाक अभ्यास छल। बाबूजी हमरा कान मे पुछलनि, ''ननकिरबु! तों एकर जवाब द' सकैत छहुन?'' विकल जी सुनि लेलनि। ओ हमरा उठा क' मंच पर ल' गेलाह और ठाढ़ क' देलनि। हम धारा प्रवाह मैथिली पद्य मे सरदारजी कैँ जवाब देबय लगलियनि—

भोजपुरिया सब केहन कठोर
पुछथि— तसलबा तोर की मोर
सतुआ कैँ मुठरा जे सानथि
चूड़ा दहीक मर्म की जानथि (इत्यादि)।

सभा भवन करतल ध्वनि सँ गुँजि उठल। हरिऔध जी आशीर्वाद स्वरूप माला पहिरा देलनि। बेनीपुरी जी पीठ ठोकैत बजलाह, ''बबुआ! खूब सुनैल' मजा आ गेल। थइथइ हो गेल!'' सरदारजी भरि पाँज ध' क' कहलनि, ''आब तिरहुत कैँ लोहा मान गेली।'' पटना कालेजक प्रो. अक्षयवट मिश्र ततेक प्रभावित भेलाह जे 'बालकवि' शीर्षक सँ हमर सचित्र परिचय औरंगाबादक 'श्री कृष्ण' (मासिक पत्र) मे छपौलनि।

तकर बाद तँ हमर नाम सभारोशनक रूप मे ख्यात भ' गेल और कवि-गोष्ठी सभ सँ निमंत्रण आबय लागल। 1930-40क बीच पुस्तक-भंडार (लहेरियासराय) मे खूब साहित्य-गोष्ठी होइत छलै जाहि मे हमर प्रमुख योगदान रहैत छल। 1942 मे पुस्तक-भंडारक जयन्ती-समारोह मे वृहत् कवि-गाष्ठी भेल रहै। मनोरंजन जी बच्चनक *मुधशालाक* पैरोडी सुनाक' लोकक खूब मनोरंजन कैलनि। दिनकर जी बजलाह, ''हमर *हिमालयक* पैरोडी केओ नहि कैने छथि।'' (दिनकर जी हमर संगतुरिया छलाह। हुनको जन्म 1908 सितम्बर मे भेल छलनि। भैयारी बला नोंक-झोंक चलैत छल।) हम चुपचाप हाथ मे कागज-पेन्सिल लेलहुँ और जैखन हुनकर कविता समाप्त भेलनि तैखन पैरोडी सुना देलियनि—

मेरे गिरिवर मेरे विशाल
उत्तुंग तुम्हारा आलवाल
मेरे यौवन के हिमकिरीट
हे कामदेव के भव्य भाल



किछुए शब्दक हेरफेर सँ सम्पूर्ण हिमालय यौवनगर्विता नायिकाक दर्पोक्ति बनि गेल छलनि। वीर रस पर शृंगारक रंग चढ़ि गेल छलनि। आचार्य शिवपूजन जी मुस्कुराय लगलाह। नेपाली जी मस्ती मे झूमि उठलाह। दत्त जी हँसी सँ लोट-पोट होइत मसनद पर ओंघड़ा गेलाह। दिनकर जी सरस-हृदय व्यक्ति छलाह। कृत्रिम रोष सँ बजलाह, ''बेस हरिमोहन जी! हमहूँ कहियो बदला लेब।''[1]

1948क ओरिएन्टल कानफरेन्सक दरभंगा अधिवेशन मे आयोजित पंडित सभा मे हम सहस्रो पंडितक बीच ठाढ़ भ' एक कविता सुनौने रही, ''हे पंडित आबहु दया करू, जितिया पाबनि लय नहि झगड़ू।'' हमरा भय छल जे मधुमाछीक छत्ता खोंचाड़ि रहल छी। परन्तु मंच पर डॉ. अमरनाथ झा और महापंडित राहुल सांकृत्यायन छलाह। ओ सभ बहुत प्रसन्न भेलाह। आश्चर्य तँ ई जे राज पंडित बलदेव मिश्र पर्यन्त हमर अनुमोदन करैत बजलाह। ''बात सभ टा उचिते कहलिऐक अछि। परन्तु तथापि पंडित लोकनिक संतोषार्थ किछु अंगरेजियो बला पर कहियौक।'' तखन हम 'टी पार्टी' सुना देलियनि। अध्यक्ष (म.म. उमेश मिश्र) संतुष्ट भ' घोषणा कैलनि जे महाराजक दिस सँ ओहन टी पार्टी नहि हैत।

ओहि समय (1950 सँ 60क बीच) पटना मे खूब काव्य-गोष्ठी होइत छलै। हमर नाम हास्य-व्यंग्यक क्षेत्र मे सुप्रसिद्ध भ' चुकल छल। जहाँ कतहु हिन्दी-मैथिलीक कवि-सम्मेलन वा उर्दूक मोशायरा होइ छलैक, हमरा आग्रहपूर्वक ल' जाइत छल। सभा मंच पर ठाढ़ होइतहि श्रोतावर्ग मे आनन्दक लहरि आबि जाइत छलनि।

विनोद गोष्ठी सभ मे हमर किछु फुलझड़ी (व्यंग्यपूर्ण परिभाषा) बेस प्रचलित छल जेना—

जो सर कहते हैं टीचर को
वे अफसर हैं बहुत थोड़े
जो सर करते हैं टीचर को उन्हें सरकार कहते हैं
जिन्हें है कार हासिल जिन्दगी उनकी सकारथ है
बिना जो कार के चलते उन्हें बेकार कहते हैं

अगर है छौ बजे उठना तो फिर छुट्टी हुई कैसी
खुमारी नौ बजे उतरे उसे एतबार कहते हैं
क्लबों में होटलों में मेस में सब जो डालडा मिलता
जहाँ घी की मिले पूड़ी उसे ससुरार कहते हैं

एक बेर कैंटीन मे ई सभ फुलझड़ी छुटैत रहैक। आख़िरी शेर सुनि लॉ कालेजक विनोदी प्रिन्सिपल भगवती बाबू कैंटीनवला सँ चुटकी लेलथिन, ''सरदार जी, अब यह साइनबोर्ड (यहाँ शुद्ध घी की पूड़ी मिलती है) हटा लीजिए।''

स्टाफ क्लब मे खूब आमोद-प्रमोद होइत रहैत छलै। हम फगुआक अवसर पर सभ प्रोफेसर पर गुलाबी फोहारा (विनोदपूर्ण शेर) छोड़ैत छलियनि। A B C D (प्रो. अनिरुद्ध झा, बेचन झा, चेतकर झा, दिवाकर झा) सँ लय Z (जैनुल अब्दिन) पर्यंत। जेना जयदेव बाबू पर छलनि—

'जे' सँ जयदेव मिसर छथि,
मिथिला संस्कृति केर ज्ञानी
जे सूट पहिरिक' जेबी मे
छथि रखैत नसिदानी

स्थूलकाय प्रो. नलिन विलोचन शर्मा पर छलनि—

'एन' से हैं नलिन विलोचन
माखन मिश्री के पाले
जिनके डर से डरते हैं,
पटना के रिक्शेवाले

हम हुनकर 'नकेनवाद'क व्याख्या करैत छलियनि न केनचित् बोद्धु शक्यते इति नकेनवाद। ओ मुस्कुरा क' रहि जाइ छलाह।

एक बेर डॉ. अमरनाथ झाक ओतय एक गोष्ठी मे कविवर बच्चन आयल रहथिन (प्राय: 1953 मे)। ओ अपन प्रसिद्ध कविता सुनौलनि, ''इस पार प्रिये तुम हो मधु है, उस पार न जाने क्या होगा।'' ओहि समय गंगाक ओहि पार (उत्तर बिहार मे) तेहन बाढ़ि आबि गेल रहै जे रेल बन्द भ' गेल रहैक। और पानि जमि गेलाक कारण मलेरियाक भयंकर प्रकोप भ' गेल रहै। डॉ. झा हमरा संकेत कैलनि जे बच्चन जी कें हुनकर कविताक पैरोडी बनाक' सुना दियनि। हम तैखन फरमाइशक पूर्त्ति क' देलियनि। (जकर दू पंक्ति मन अछि) —

इस पार प्रिये गाड़ी चलती
उस पार न जाने क्या होगा
खाकर कुनैन तेरे सुनैन का
प्यार न जाने क्या होगा

बच्चन जी अन्तिम पंक्ति पर झूमि उठलाह, ''यह तो पैरोडी नहीं, सुन्दर एडप्टेशन है।''

एक बेर डॉ. झाक अध्यक्षता मे बज्मे सखुन दिस सँ सीनेट हॉल मे एक मोशायरा भेल रहैक। ओहि मे ओ 'तरह' (समस्या) देने रहथिन, ''भरी बहार में क्या था जो अब खिजाँ में नहीं।'' हम ओहि तर्ज पर किछु शेर पढ़ने रही जाहि मे आशिक माशूक पर एक फिलोसफरक मत व्यक्त कैल गेल रहैक—

पता नहीं इश्क कोई क्यों किसी से करता है
क्या उसे काम कोई और जहाँ में नहीं
अगर हसीन है कोई तो बला से मेरी
वो तो बरसायेगा लड्डू मेरे मकाँ में नहीं
जरा सी आग है, धुआँ है और पानी है
क्या है आशिक में जो हुक्का के दरमियान नहीं
क्या लबे यार से कम मीठा है हलवा सोहन
क्या है हसीना में जहाँ में जो रेस्तराँ में नहीं

एहन-एहन मिसरा पर आनन्द विनोदक फोहारा छूटय लगैत छल।

ओहि समय फगुआ आदिक अवसर पर हिन्दुस्तानी प्रेस मे हास्य-गोष्ठी होइत छलैक जकर संचालक छलाह वाचाल बाँकीपुरी और हीरा प्रसाद चतुर्वेदी। गिलासक गिलास ठंढइ शर्बतक संग-संग वाग्विलासक रस चलैत छलैक। ओहि मे हमर सिनेमा स्तोत्र और शेरे अस्पताल आदि खूब जमैत छल।

ताहि दिन सिनेमाक अभिनेत्री सभक तेहन आकर्षण छलनि जे ओ देवी जकाँ बूझल जाइ छली। (गीता सँ बेसी गीतावाली और दुर्गा सँ अधिक दुर्गा खोटेक कीर्त्तन होइत छलनि।) ई देखि हम देवी स्तोत्र जकाँ फिल्म तारिका स्तोत्र बनौने रही (जाहि मे दोहा, कवित्त, श्लोक आदि छलैक)।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय
ढाइ अक्षर फिल्म का पढ़े सो पंडित होय

× × ×

रबि को रेहाना कहो, सोम को सुरैया कहो
मंगल को मधुबाला नाम आप जपिए
बुध को बनमाला और गुरु को गिरिबाला कहो
शुक्र को शशिकला नाम आप भजिए
शनि को शकीला और रवि को रमोला कहो
दिन में देविका और रात रेणुका सुमरिए
संध्या में संध्या और निशा में निशा का नाम
आठो पहर कोई नाम प्रेम सहित कहिए

× × ×

अनेक नामरुपास्तु तारिका: भवतारिका:
तासां स्मरण मात्रेण प्रेमानन्द: प्रजायते

शेरे अस्पताल मे एक तेहन मरीजे इश्कक शायरी छलनि जिनका अस्पतालो मे रोमांसे सुझैत छलनि।

इस सादगी पे कौन न मर जाय ऐ खुदा
हैं दर्दे दिल को देख रहीं स्टेथेस्कोप से

मेरा वो 'पल्स' 'फील' करती हैं
काश! मैं भी उनका कर पाता

मेरी बाँह में वो सुई दे रही है
रकीबों के दिल में वही चुभ रही है

टानिक का काम कर गई मुस्कान उनकी एक
दस माइल से मैं आया हूँ इस 'स्माइल' के लिए

अटैची बन्द कर लेती गई वो
मेरा दिल भी उसी में रह गया है

एक बेर चित्रगुप्त पूजा (छज्जूबाग) मे राजा राधिका रमण सिंह एक-एक शेर पर झूमि उठल रहथि।[2]

विश्वविद्यालयक साहित्य गोष्ठी मे हमर किछु कविता श्रोता कें विशेष रस प्रदान करैत छलनि। यथा, मच्छर गौता, पूर्वोत्तर रेलवे आदि। (ओ सभ प्राय: 'हुंकार' वा 'उत्तर बिहार' मे छपलो छलैक)। हमर एक टा कविता छल 'एक चोर और पाँच दार्शनिक'। पाँच टा दार्शनिक एक चोरक फैसला करबाक हेतु जज नियुक्त होइ छथि। परन्तु शंकरक मायावाद, स्पिनोजाक सर्वेश्वरवाद, बर्कलेक प्रत्ययवाद, लाइब्निजक मनोऽणुवाद और ह्यूमक संशयवाद—कोनो दर्शन सँ चोरीक सत्यता सिद्ध नहि भ' सकैत छनि और ओ चोरक निर्णय करबा मे असमर्थ रहि जाइत छथि।

ई कविता मुख्य न्यायाधीश लक्ष्मीकान्त बाबू कें ततेक प्रिय लगैत छलनि जे ओ बारंबार फरमाइश क' हमरा सँ सुनैत छलाह।[3]

1968 मे इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेसक अधिवेशन पटने यूनिवर्सिटी मे भेल रहैक। ओहि मे हम स्थानीय मंत्री रही। हमर स्वागत भाषण अंगरेजी पद मे भेल रहय। ओहि कविता मे ई विशेषता रहैक जे प्रत्येक पंक्तिक आद्यक्षर मिलौने ई वाक्य बनि जाइत छलैक—PATNA UNIVERSITY WELCOMES YOU ALL ! ओ पटना आकाशवाणी सँ प्रसारित भेल रहैक और ओहि अवसर पर प्रकाशित स्मारिका मे छपल रहैक।

एक बेर नगरपालिका भवन मे आयोजित गोष्ठी मे हम 'पटना स्तोत्र' सुनौने रहिऐक—

हे धन्य नगर पटना महान
मच्छड़ करैत छथि यशोगान
... ...
सड़कक रोड़ा अछि शोभमान
अलगल ओलक टौंटी समान
... ...
हम देखि रहल छी तेहन शान
जे देखि ने सकला फाहियान (इत्यादि)।

एक बेर बरहगोरिया मे मैथिली साहित्य परिषद मे हमरा 'बुचकुन बाबा' सुनेबाक आग्रह भेल। परन्तु ओ कविता हमरा संग नहि रहय। एही बीच पूर्णिया जिलाक एक वयोवृद्ध कवि (पं. शिवानन्द चौधरी) उत्साहपूर्वक मंच पर आबि हमरा कहलनि, ''हमरा सम्पूर्ण कविता कंठस्थ अछि। आज्ञा हो तँ आद्योपांत सुना दी।'' और ओ सुनेबे टा नहि कैलनि, बुचकुन बाबाक अभिनयो क'क' देखा देलनि। सभा मे विनोद-लहरी आबि गेल। परन्तु जहाँ ओतेक लोक उल्लास सँ फड़कि उठलाह, तहाँ किछु पंडित भड़कियो उठलाह। हमर खट्टर ककाक 'रामायण' सुनि एक महापंडित उठिक' सभा सँ ई कहैत विदा होमय लगलाह जे एहिठाम रामचन्द्रक निन्दा भ' रहल छनि। परन्तु पाछाँ जाक' लोक कहलकनि जे खट्टरकका रामजीक सासुर (मिथिला)क ब्राह्मण हैबाक कारणेँ परिहास कैलथिन अछि तखन जाक' हिनकर क्रोध शान्त भेलनि।

एक बेर सहरसाक कवि-सम्मेलन मे हास्य और करुण रसक दंगल भ' गेल। कवि चूड़ामणि मधुपजी अपन 'घसल अठन्नी' सुनाक' श्रोता सभ केँ कना देलथिन। हम अपन 'ढाला झा' सुना सभ केँ हँसा देलियनि। चारि-पाँच तोड़ यैह क्रम चलैत रहल। अंत मे मधुप जी हँसि पड़लाह। दंगल बराबरी पर छूटल। ओहि बीच घिउ खिचड़ियाक आनन्द जे सभ नेने हैताह, तिनका आइयो धरि मन हैतनि।

एक बेर पटना ट्रेनिंग कालेजक हास्यगोष्ठी मे हम 'पंडित आ मेम' कविता सुनौने रही—

पंडित छथि काढ़ा, मेम छथि कॉफी
पंडित छथि भुसबा, मेम छथि टॉफी
पंडित छथि मन्दिर, मेम छथि क्लब
पंडित छथि पोखरि, मेम छथि 'टब'
(इत्यादि)

एक-एक पंक्ति पर हँसीक लहरि आबय लगलैक। किन्तु एक टा पंडित बिगड़ि क' उठय लगलाह। जखन हम हुनका बुझा देलियनि जे एहि उपमा सभ सँ पंडितक विशालता ज्योतित होइ छनि तखन ओ संतुष्ट भेलाह।

एक बेर राँचीक कवि सम्मेलन मे विद्यापतिक श्रृंगार कविताक उपरान्त एक गलमोँछावला चकैठ जवान मंच पर आबि बजलाह, ''अब हम एगो भोजपुरी विरह गीत सुनाबी ला।'' ओ जोर-जोर सँ कूदि-कूदि एक पंक्ति दोहराबय लगलाह—बलमुआ हमसे रूसल बा। हमरा सँ नहि रहल गेल। अपना दिस सँ दोसर पंक्ति जोड़ि देलियनि—तँ हमरो हाथ मे मूसल बा। हुनकर विरहगीत हँसीक हिलकोर मे बहि गेलनि।



एक बेर आकाशवाणी मे कलाकारक चयन करबाक हेतु संगीत प्रतियोगिता भेल रहैक। जकर निर्णायक हम और कुमार गंगानन्द सिंह रही। एक टा गायक समदाउनि उठौलनि—बड़ रे जतन सँ सियाजी केँ पोसलहुँ सेहो रघुवर नेने जाय। परन्तु तेहन चलती लय मे खिसिया क' गाबय लगलाह जेना सियाजी केँ पोसबाक खर्च माँगि रहल होथि। कुमार साहेब पूछलनि, ''समदाउनि केहन लागि रहल अछि?'' हम कहलियनि, '' 'सम' हटाइए देल जाय, 'दाउनि' टा क' रहल छथि।''

काव्य गोष्ठीक एक और आनन्द छलैक सहभोजन। नवरस, षट्रस, दुहूक समागम भ' जाइत छलैक।

एक बेर गयाक कवि-सम्मेलन मे हम 'पाहुन' वला कविता सुनौने रहिऐक—छाल्हीए मे रसगुल्ला लपेटि एक-एक टा मुँह मे दैत जायब। ई सुनि संयोजक महोदय केँ गयाक प्रसिद्ध मधुर लपेटा मन पड़ि गेलनि, जे मलाइये लपेटल रहैत छैक। दोकान मे जतेक बनल रहैक सभ टा मँगवा लेलनि। भोजन काल कविगण केँ आनन्द आबि गेलनि। एक तँ लपेटा, दोसर भरि पेटा। यात्री जी, मधुप जी, अमर जी, गोपेश जी, आनन्द जी आदि हमरा ओहि कविताक हेतु धन्यवाद देबय लगलाह।

तहिना हमर भोजनक एक सूत्र प्रसिद्ध भ' गेल 'मामा भाइ' (माँगुर माँछ भात इत्यादि)। इत्यादि माने दही रसगुल्ला)। अतएव जे कवि सम्मेलन मे ल' जैबाक हेतु अबैत छलाह से अबितहि अपना ओहिठामक माँगुर माछक आकर्षक वर्णन करय लागि जाइत छलाह। आब एक टा दोसरो सूत्र बनि गेल अछि। 'अदाम' (एकर अर्थ ई नहि जे दाम नहि लागय, मुदा ई जे दालदा-मरचाइ सँ रहित हो)।

एक बेर कटिहारक 'रसधार' मे हमर 'रस निमंत्रण' सँ सरिपहुँ रसक धारा बहि गेलैक। आधा राति धरि श्रोतागण काव्यक रसपान करैत रहलाह। तदुपरान्त हम सभा विसर्जित हैबाक घोषणा करक हेतु ठाढ़ भेलहुँ। ओही समय एक कवि आबिक' हमरा हाथ मे एक टा 'स्लिप' थम्हा देलनि—केवल दू मिनट। परन्तु ओ अबितहि अपन मोट बस्ता टेबुल पर राखि पीबक हेतु पानि मँगलथिन। तैखन हमरा बुझा गेल जे आइ ई सभ केँ पानि पिया केँ छोड़थिन। ओ बस्ता सँ अपन 'हिडिम्बा वध' नामक महाकाव्य बाहर कय एक दिस सँ सुनाबय लगलाह। जेना आइ वध कराइए केँ छोड़थिन। श्रोतासभक धैर्य स्खलित होमय लगलनि। केओ पैर घसलाह, केओ जोर-जोर सँ थपड़ी पारय लगलाह। परन्तु कवि जीक लेखे धन सन। ओ

पृष्ठ पर पृष्ठ उनटबैत रहलाह। जेना आइ कटिहारक श्रोता केँ छठिहारक दूध स्मरण कराइएक' रहथिन। हम घंटी बजौलहुँ। कवि जी निर्विकार भाव सँ घंटी केँ अपना जेबी मे राखि लेलनि और आगाँ पढ़ैत रहलाह। जखन संयोजक महोदय अग्रिम पंक्ति मे बैसल किछु व्यक्ति केँ अपन कुर्ताक आस्तीन चढ़बैत देखलथिन तँ भय भेलनि जे कदाचित हिडिम्बा वध सँ पहिने कोनो दोसरे वध नहि भ' जाय। ओ पाछाँ सँ कवि जी केँ ध'क' नेपथ्य मे ल' गेलथिन। तथापि अन्तिम क्षण धरि कविजी श्रोता सभक दिस मुँह कैने अपन कवित्त सुनबितहि गेलाह 'शर्व सर्व गर्व खर्व पर्व मध्य कय देल।' एक बेर (1963 दिसम्बर मे) मित्रवर डॉ. जयकान्त मिश्र दिल्ली मे मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित कयने रहथि। ओहि अवसर पर नेहरू जीक अध्यक्षता मे एक विशिष्ट साहित्यिक समारोह भेल रहैक। हम खट्टर ककाक 'माछ' पढ़ने रही जे नेहरू जी केँ खूब पसन्द पड़लनि। हमर हिन्दी आ मैथिली शीर्षक कविता, मायानन्द जीक कोमल पदावली और राघवाचार्य जीक वीर रसक प्रवाह सँ ओ बहुत प्रभावित भेलाह और मैथिली भाषाक माधुर्यक भूरि-भूरि प्रशंसा कैलनि।

कहियो काल संयोगवश हँसी-हँसी मे कोनो नव आविष्कार भ' जाइत छैक। एक बेर उज्जैन विश्वविद्यालयक कोनो समारोह मे गेल रही। (ओतय तेहन संस्कृत-निष्ठता देखबा मे आयल जे हजामक सैलून मे साइन बोर्ड लागल छलैक—केश कर्त्तन कला केन्द्र!) हम जाहि अतिथिशाला मे ठहरल रही तहाँ लाउडस्पीकर सँ फिल्मी गजल बजैत रहैक—या इलाही मिट न जाय दर्दे दिल, मिटने वालों को मिटाए दर्दे दिल। हठात हमरा मन मे एक प्रश्न उठि गेल। ई उर्दूक गजल संस्कृत पिंगलशास्त्रक अनुसार कोन छन्दक अंतर्गत आबि सकैत अछि? हठात मन मे संस्कृतक ई पद आबि गेल—रामचन्द्र कोशलेशं सुन्दरम्, जानकी नाथं भजेऽहं सर्वदा। दुनूक मात्रा गनिक' देखलिऐक तँ दुनू मे बराबर (19 मात्रा, अंत मे एक लघु, एक गुरु।) अरे, ई तँ अपन पीयूषवर्षी छन्द थिक। दुनू गाबिक' देखलिऐक तँ बिल्कुल एक रंग।

ताबत दोसर गजल होमय लगलैक—ये जिन्दगी उसी की है जो किसी का हो गया, प्यार ही में खो गया। अर्थात् जगण, रगण, एक लघु, एक गुरु। ई प्रमाणिका छन्द थिक। यथा, नमामि भक्तवत्सल, कृपालु शील कोमलम्।

तकरा बाद तेसर गजल होमय लगलैक—बड़े बेवफा होते ये हुस्नवाले, इन्हें आजमाने की कोशिश न करना। ई अपन भुजंग प्रयात छन्द मे आबि गेल। यथा, नमामीश मीशान निर्वाण रूपम्, विभुंव्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपम्।

एही तरहेँ जे जे गजल गबैत गेलैक हम सभ केँ संस्कृतक छन्द मे अंतर्भुक्त करैत गेलहुँ। एक दर्जन गजल भेलैक और सभ केँ हम संस्कृतक छन्द मे बन्हैत गेलहुँ। रतुका गोष्ठी मे हम ओ गजल और श्लोकक समीकरण सस्वर गाबिक' सुना देलियनि तँ ओहि गंगा यमुनी मे पंडित और मौलाना सभ आनन्द लहरी मे निमग्न भ' गेलाह।[4]

कवि सम्मेलनक नाना प्रकारक अनुभव अछि (जकर किछु रोचक संस्मरण *मिथिला मिहिर*क फगुआ विशेषांक 1978 मे छपल अछि)।

एक बेर काठमांडू मे बन्धुवर पं. जयमन्त मिश्रक ओतय काव्य चर्चा चलैत छल। एक प्रोफेसर जे अपना केँ यथार्थवादी प्रयोगवादी प्रगतिवादी कहैत छलाह, बजलाह जे चन्द्रमा, कमल आदि बिम्ब बहुत पुरान पड़ि गेल। ओहन-ओहन बुर्जुआ प्रतीक छोड़ि आब नव नव उपमानक प्रयोग होमक चाही जे चिर उपेक्षित रहल अछि, जेना धथूर, गोबरछत्ता इत्यादि। तावत् भीतर सँ जलपान आबि गेल। हम कवि जी केँ कहलियनि—ई सेब अंगूर आदि बुर्जुआ फलक स्थान मे कठजामुन, लसफसियाक प्रयोग हो तँ केहन? परन्तु ओ एहन प्रयोगक हेतु तैयार नहि भेलाह।

1950-55 मे हिन्दीकरणक प्रयोग काल छलैक जाहि मे एक सँ एक विलक्षण शब्दक निर्माण होइत छलैक। यथा चीफ एनेस्थेटिक ऑफिसरक हेतु महामूर्च्छक। रेलवे टिकट हेतु 'लौह पथगामी धूम्रयान शकटारोहण शुल्क प्रमाण पत्र।' हम एहन-एहन विश्वामित्री सृष्टि पर खूब व्यंग्य करैत छलिऐक। एक बेर अफसर क्लबक गोष्ठी मे ओहि कृत्रिम भाषाक किछु नमूना सुनौने रहिऐक।

पार्वत्य प्रदेशोत्पन्न श्यामपर्ण पर्युषित रस चीन देशीय धवल मृत्तिका निर्मित्त लघु पात्रियों में उच्छवसित रूप में परिवेशित किए जा रहे हैं। कुछ अतिथि मुखमार्जन वस्त्रखंड से मुँह पोछ घुर्णित तमाल ज्वालोत्पन्न कुंडलायित धूम त्याग कर रहे हैं। (अर्थात् प्याली मे भफाइत चाह परसल जा रहल अछि। किछु गोटे रूमाल सँ मुँह पोछि सिगरेटक धुआँ उड़ा रहल छथि)[5]

एक टा मनोरंजक बात मन पड़ि जाइत अछि। एक बेर दिल्ली मे ललित बाबू (केंद्रीय मंत्री) फोन पर हमरा निमंत्रण देने रहथि। जखन हुनका आवास (9, अकबर रोड) पर पहुँचलहुँ तँ एक टा नव पी.ए. टोकि देलक। बिना प्रिवियस एप्वायंटमेंट के मिनिस्टर साहब से मुलाकात नहीं होगी। हम एक टा स्लिप पर दू पाँति लिखि केँ हुनका पठा देलियनि—

ये दावत में भी कर रहे हैं अदावत
जो पी.ए. हुए हैं वो पीए हुए हैं!

मिश्र जी तुरन्त हँसैत ऐलाह और हमरा भीतर ल' गेलाह।

कवि गोष्ठी मे खूब वाग्विनोद होइत छल। एक बेर अमर जी केँ अबैत देखि केओ कहलथिन—आब उदास नहि रहत। अमर जी चोट्टे जवाब देलथिन, ''जहाँ ई दास रहत, ओहिठाम उदास किएक रहत?'' एहन-एहन श्लेषक चमत्कार मे अपन कवि सभ विशेष प्रवीण होइ छथि। एक बेर मधुप जी केँ खैबा काल पुछलकनि अपने शाक्त वा...। मधुप जी बिच्चहि मे टोकैत कहलथिन—विषाक्त नहि दुद्धा शाक्त छी।

एक बेर दू टा पंडित मे अतीचार पर बजरि गेलनि। बारंबार मिथुने गुरुः सुनैत हमरा नहि रहि भेल। कहलिऐनि—जखन गुरु अपने मिथुन मे छथि तँ अनकर विवाह-*द्विरागमन* किएक रोकबैत छथिन?

वाग्विलास मे अमृतक गिलास सँ कम आनन्द नहि छैक। ओ असमयो केँ रसमय बना दैत अछि। तँ कहल गेलैक अछि—

संसार विषवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे
सुभाषित रसास्वादः संग सहृदये जने।

संदर्भ

1. ओ विडम्बना काव्य मुद्रित भय भंडारक कोनो विनोद-गोष्ठी मे बाँटल गेल रहै।
2. तहिया सँ ओ हमरा ततेक मानय लगलाह जे हमरा सँ रस की चाशनी नाम सँ सूक्ति संकलन करबाय 'नई धारा' मे लगातार कइएक अंक मे छपैत रहलाह और अपन 'बिखरे मोती' (तृतीय खंड) मे प्रकाशित कैलनि।
3. ओ कविता मुरादाबादक प्रो. जगत-प्रकाश केँ ततेक पसंद पड़लनि जे अपन दार्शनिक त्रैमासिक पत्र 'गवेषणा' मे (प्रायः 1960क आसपास) प्रकाशित कैलनि।
4. ओ गंगा यमुनी जाहि महफिल मे पढ़ल जाइ छल तहाँ आनन्द लहरी बहि जाइत छल। ओ ततेक लोकप्रिय भ' उठल जे पटना सँ कलकत्ता-दिल्लीक लोक आबिक' टेप क' गेलाह और आकाशवाणी सँ सेहो प्रसारित भेल। किछु मित्र ईहो कहलनि जे ई हिन्दू-मुस्लिम एकता मे सेहो सहायक होयत।
5. एतद्विषयक हमर कतिपय लेख।'सरकारी हिन्दी का नमूना', 'दैनन्दिनी का एक पृष्ठ', 'सरकंडावाद' (सरकार कटक जी डॉ. रघुवीरक भाषा) 'नई धारा' मे छपल रहय।

(*आरंभ सँ*)



मैथिली सेवा

हरिमोहन झा

भोलाबाबू हमरा आग्रह कैलनि जे *मिथिलाक* लेल एक टा धारावाहिक सामाजिक उपन्यास दिऔक। गाम पर सोन दाइक विवाहक प्रसंग माय केँ आइमाइ सँ जेना गप्प होइत सुनने रहियनि, तहिना किछु अंश लिखि क' द' देलियनि। कनियाँ मायक ओरिआओन। ओ छपैत देरी पाठक-पाठिका केँ एतेक रोचक लगलनि जे सम्पादकक नामेँ चिट्ठी पर चिट्ठी आबय लगलनि। भोलाबाबू कहलनि, ''अहाँ चखना चखा देलिऐक अछि। आब ओना नहि मानत। पूरा भोजन देबय पड़त।''

जहाँ *मिथिलाक* अग्रिम अंक छपबाक होइ छलैक कि भोलाबाबू आबिक' सवार भ' जाइत छलाह—आब आगाँक मैटर लिखि दिऔक। ओही बेत्रेक फर्मा रुकल अछि।

एही प्रकारेँ हम मासे मास एक-एक अध्याय लिखिक' दैत गेलियनि जे पाछाँ जा'क' *कन्यादान* नाम सँ पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।

कन्यादान (1933) छपैत देरी समाज मे क्रान्ति आनि देलक। ओहि मे युगक चेतना बाजि उठलैक। शिक्षित नवयुवकक आकांक्षा और ग्रामीण बालिकाक भावना बाजि उठलैक। ओ उपन्यास एतेक लोकप्रिय भ' उठल जे कनियाँक पौती मे सँठाय लागल। कतेक अमैथिली-भाषी सेहो *कन्यादान* पढ़बाक हेतु मैथिली सिखलनि।

कन्यादान कोनो व्यक्ति विशेष पर आधारित नहि छल। बुच्ची दाइ और सी.सी.मिश्र प्रतीक मात्र छलाह। ताहि दिन घर-घर मे बुच्ची दाइ होइत छलीह। प्रत्येक कॉलेज मे सी.सी.मिश्र छलाह। कोन आँगन मे लाल काकी नहि होइत छलीह? कोन लाल काकी केँ आवेशरानी नहि रहैत छलथिन? कोन गाम मे झारखंडी नहि भेटैत छलाह? पात्र-पात्री केँ खोजक हेतु दूर नहि जाय पड़ल। *कन्यादान* समाजक आगाँ एक मार्मिक प्रश्नचिन्ह छोड़ने छलैक 'एकर उत्तरदायी के?' मिथिलाक सुकुमार हृदय बुच्चीदाइक करुण व्यथा नहि सहि सकल। भावुक पाठक-पाठिकाक अनुरोध होमय लागल जे वर-वधुक पुनर्मिलन अवश्य होमक चाही। अगत्या हमरा



द्विरागमन (1943) लिख' पड़ल। *कन्यादान* स्वान्तः सुखाय छल, *द्विरागमन* फरमाइशी छल। एक समस्यामूलक छल, दोसर समाधानपूरक। परन्तु दुनू तेना हास्यक चाशनी सँ शराबोर छल जे पाठक केँ नोरो खसैत काल हँसा दैत छलनि।

कन्यादान असंख्यो कन्या और अभिभावकक आँखि खोलि देलकनि। हमरा अपन जीवन-काल मे एहि बात सँ संतोष भेल जे कतेको अध्यापिका-चिकित्सिका हमर डेरा मे आबि क' पैर छूबि क' प्रणाम करैत छलीह और कहैत छलीह 'अपने केँ हम धर्मपिता बुझैत छी।' हम जे स्वप्न देखने छलहुँ से बहुत-किछु अपना जीवन मे फलित होइत देखि लेलहुँ।

एही प्रसंग मे *कन्यादान* फिल्मक सम्बन्ध मे सेहो कहि दैत छी। एक दिन (प्राय: 1963 मे) वीणा सिनेमा (पटना) क हीरा बाबू (वीरेन्द्र कुमार सिंह) एक टा मुंशीजीक संग हमरा डेरा पर अयलाह। ओ *कन्यादानक* फिल्म बनैबाक इच्छा प्रकट कैलनि। बजलाह ''हम अपनेक 'रंगशाला' पढ़ने छी। बम बाबू नहि छी। बढ़िया चित्र बनायब। प्रकाश स्टुडियो बम्बइ मे शूटिंग हैत। निर्देशक फणि मजूमदार और पटकथा लेखक नवेन्दू घोष रहताह। अपने स्वीकृति दिय'। हम स्वस्ति द' देलियनि।

हमर विचार रहय जे एहि मे अधिक सँ अधिक कलाकार मैथिली भाषी होथि। पात्र पात्रीक चयनक हेतु इंटरव्यू भेलैक जाहि मे अनेक मैथिल कलाकार आयल रहथि। परन्तु नहि जानि कोन बम्बैया चक्र चललैक जे प्राय: सभ भूमिका अमैथिली भाषी केँ द' देल गेलनि। एक मात्र अमर जी (लाल ककाक भूमिका मे) रहलाह। नैवेद्यक तुलसी दल जकाँ।

हीराबाबूक अनुरोध पर हम 1964 (जुलाइ) मे सपत्नीक मुहुरत मे बम्बइ गेलहुँ। ओतय ग्रीन होटल मे दस दिन रहि प्रकाश स्टुडियो मे शूटिंग देखैत रहलहुँ। बुच्ची दाइ (लता सिन्हा), विधिकरी (चाँद उस्मानी), लाल काकी (पद्मा चटर्जी), फुचुकरानी (दुलारी दाइ), पनिभरनी (टुनटुन) — सभ तेहने छलि जे मैथिली बजबाक कोन कथा, सुननहु नहि छलीह। 'छइ' बाजय लगैत छलीह तँ 'छय' भ' जाइत छलनि। पत्नी एक्ट्रेस लोकनि केँ मैथिलानी जकाँ कोंचावाली साड़ी पहिरब सिखौलथिन। हमसभ भगीरथ प्रयत्न सँ मैथिली शब्दक उच्चारण सिखाबय लगलियनि। शेष भार अमर जी केँ सौंपि हमसभ वापस ऐलहुँ।

चित्र जेहन हम चाहैत छलहुँ तेहन नहि

बनि सकल। पटकथा लेखक और निर्देशक जबर्दस्ती एक टा खलनायक गढ़ि क' घुसिया देलथिन और ततेक रासे उठा-पटक आ मारिपीटक दृश्य भरि देलथिन जे विनायकम् प्रकुर्बाण: रचयाभास वानरम् भ' गेलैक। मूल कथाक आत्मा हनन भ' गेलैक। केवल एतबे संतोष रहल जे आर्थिक लाभ नहियो भेला पर एक टा चित्र तँ मैथिली मे बनि गेल। अकरणान मंदकरणं श्रेय:।[1]

प्रणम्य देवता (1945)क हास्य सेहो सोद्देश्य छल। ओकर उद्देश्य छलैक समाज कैँ दर्पण मे अपन प्रतिबिम्ब देखाक' आत्मबोध करायब। 'विकट पाहुन'क भीमेन्द्रनाथ, 'घरजमाय'क चुल्हाइ झा, 'भदेशक नमूना'क मौजेलाल झा, 'अंगरेजिया बाबू'क मधुकान्त झा आदि प्रतीक (टाइप) बनि गेलाह। *प्रणम्य देवता* सभ ('विकट पाहुन', 'आदर्श कुटुम्ब' आदि) अनेको ठाम अभिनीत भेलाह। ओ सभ मिथिले मे सीमित नहि रहलाह, आनो आन प्रान्त मे पसरि गेलाह। वर्धाक राष्ट्रभाषा धरि पहुँचि गेलाह। ओतय (1948 मे) सुमन वात्सायन जी आदि 'विकट पाहुन'क अभिनय करैत गेलाह, जकर चित्रो प्रकाशित भेल रहनि। तहिना एक बेर (1958 मे) जयपुर गेलहुँ तँ संस्कृत विद्यालयक एक पंडित द्वारा विकट पाहुनक संस्कृत मे अभिनय देखि प्रसन्नता भेल। क्रमश: आनो आन देवता सभ हिन्दी जगत मे अनूदित होमय लागि गेलाह। पंडित जी, ज्योतिषी जी आदि प्रयागक *कहानी* मे 'बीमाक एजेन्ट' दिल्लीक *साप्ताहिक हिन्दुस्तान* मे (22.1.56); 'कवि जी', 'घर जमाय', 'अंगरेजिया बाबू', 'भदेशक नमूना', बम्बइक *धर्मयुग* मे (27.5.58, 24.9.58, 26.11.58, 22.1.59, 24.5.59) छपल।

रंगशाला (1949)क कथासभक रसास्वादन सेहो आन भाषाक पत्र अपन पाठक कैँ करौलक। यथा, *कहानी* (नवंबर 54, 56, 58) मे 'रेशमी दुलाई', 'परिचय' (धोखा) , 'दारोगा जी की मूँछ' ; 'नोंक-झोंक' (इलाहाबाद) मे 'ससुराल का चिह्न', 'सनातन धर्म' (काशी) मे 'मैं सनातनी कैसे हुआ' (देवी जीक संस्कार) ; *धर्मयुग* मे 'आदर्श भोजन', 'प्रेस की लीला', 'रसमयी के ग्राहक' (27-60) आदि प्रकाशित भेलैक। बम्बइक गुजराती *चित्रलेखा* (7.12.59) मे 'धोखा'क अनुवाद छपलैक 'बुझानो दोष'। 'महारानीक रहस्य' (गुलाबी गप्प) क हिन्दी अनुवाद *सारिका* (1978) मे प्रकाशित भेल।

खट्टर ककाक उद्भावना हमरा दुर्गापाठ देखि क' भेल रहय। पूजाक छुट्टी मे गाम गेल रही। पंडित लोकनि कैँ एक सुर सँ पाठ करैत देखलियनि—रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि। मन मे आयल, आन-आन देश अपन पराक्रम द्वारा प्रत्येक क्षेत्र मे आगाँ बढ़ि रहल अछि और हमसभ 'देहि देहि' करैत बैसले बैसल सभ किछु चाहैत छी। यैह भिक्षुक मनोवृत्ति देश कैँ पंगु बना देने अछि। ई विचारधारा नि:शंक रूप सँ प्रकट करबाक हेतु हम एक पात्र खट्टर कका कैँ ठाढ़ कैलियनि और हुनका मुँहेँ ई सभ बात कहौलियनि, सेहो भाँग पिआ क' (कट्टर पंडित सँ खट्टर ककाक रक्षा करबाक हेतु एतबा सुरक्षाक कवच लगायब आवश्यक छल।) एहि रूप मे खट्टर कका नि:शंक भ' अंधविश्वास और पाखंडक खंडन करय लागि गेलाह। खट्टर कका जे कहैत छलथिन से तेना युक्ति द्वारा सिद्ध क' दैत छलथिन जे लोक संदेह मे पड़ि जाइत छल जे सरिपहुँ कहै छथि अथवा परिहास क' रहल छथि। हुनका मे गंगेशक तार्किकता और गोनू झाक विनोद-प्रियता दुहूक सम्मिश्रण छलनि।

खट्टर ककाक किछु प्रारंभिक तरंग (चूड़ा-दही-चीनी आदि) सुमन जीक मासिक पत्र *स्वदेश* (दरभंगा) मे 1948 मे प्रकाशित भेल रहनि। ओहन दुर्घर्ष पंडितक गढ़ मे रहितहुँ सुमन जी जे ओ छपलनि तकर एकमात्र कारण हुनक रसमर्मज्ञते कहल जा सकैत अछि। जहाँ एक दिस किछु पोंगापंथी रूढ़िवादी खट्टर कका कैँ नास्तिक कहि क' गारि देबय लगलथिन तहाँ दोसर दिस बड़का-बड़का विद्वान आलोचक हुनका सर्वत्र स्वतंत्र मौलिक चिन्तक कहि हुनकर भूरि-भूरि प्रशंसा करय लगलथिन। कोनो कोनो पाठक कैँ एतेक कुतुहल होइत छलनि जे हमरा चिट्ठी लिखैत छलाह—ई खट्टर कका के थिकाह? कतय रहै छथि? की करैत छथि? (बाद मे तँ कतेको गोटा हमरे खट्टर कका कहय लगलाह।)

*खट्टर ककाक तरंग*क प्रथम संस्करण 1948 मे जयनाथ बाबूक अजन्ता प्रेस सँ प्रकाशित भेल। ओहि मे बारह टा तरंग छलैक—दही-चूड़ा-चीनी, चाणक्यक जन्मभूमि, माछक महत्त्व, आयुर्वेद, रामायण, दुर्गापाठ, ब्राह्मण भोजन, सत्यदेवक कथा, ज्योतिष, महाभारत, देवताक चरित्र, ब्रह्मानन्द आदि। द्वितीय संस्करण (1955) मे बारह टा और तरंग जोड़ि देलियनि—शास्त्रक वचन, प्राचीन आदर्श, भूतक मंत्र, चन्द्रग्रहण, पंडितक गप्प, गीताक मर्म, मोक्षक विचार, भगवानक चर्चा, धर्मक तत्त्व, काव्यक रस, पुराणक चाशनी, वेदक भेद। 1967 मे *खट्टर ककाक* तृतीय संस्करण भारती भवन (पटना) सँ बहरैलनि। एहि मे हम तीन टा और तरंग जोड़ि देलियनि—प्राचीन सभ्यता, मिथिलाक संस्कृति, दर्शन शास्त्रक रहस्य। एवं प्रकार सत्ताइस टा तरंग प्रकाश मे आबि गेलनि।

कन्यादान सामाजिक क्रान्ति अनने छल, खट्टर कका वैचारिक क्रान्ति अनलनि। *खट्टर कका* कैँ ल' क' मनोरंजक विवाद छिड़ल जे *मिथिला मिहिर* मे छओ मास (मइ सँ नवम्बर 54) धरि चलैत रहल। *प्रणम्य देवता* हमरा हास्यरसाचार्यक विशेषण देऔने छलाह, *खट्टर कका* व्यंग्य-सम्राटक उपाधि देऔलनि।

खट्टर कका केवल मिथिले मे सीमित नहि रहलाह। ओ देखैत देखैत आनो आन भाषा मे पसरि गेलाह। प्रयागक *कहानी* हुनका अमर तार्किक विशेषण दैत तरंग पर तरंग प्रकाशित करय लगलनि—गीता का मर्म, चंद्रग्रहण, भूत का मंत्र, पंडित जी की बात, आयुर्वेद, पौराणिक आदर्श, देवता का चरित्र, मछली का महत्त्व, धर्म का तत्त्व, दर्शन शास्त्र का रहस्य, (सितंबर 1959) प्राचीन सभ्यता (नवम्बर 1960)। *धर्मयुग* (9.3.58, 25.1.59, 26.2.59 आदि अंक) मे फलित-ज्योतिष, मोक्ष का मार्ग, प्रभृति अनेक तरंग बहरैलनि। आनो आन भाषाक पत्र-पत्रिका मे हुनक हिलकोर आबि गेलनि; यथा गुजराती *युगान्तर* (अहमदाबाद) मे *गीता नूँ मर्म,* (12.9.59), *नवनीत* (बम्बई) मे *रामायण नूँ रामायण* (1.1.74)।

हमर मैथिली कथाक अनुवाद तँ बहुत रासे पत्रिका मे बहरायल छल। किन्तु कोनो-कोनो अनुवादक तेहन अर्थक अनर्थ क' दैत छलाह जे देखिक' रोमांच भ' जाइ छल। जेना, एक टा महानुभाव *नखक्षतक* अनुवाद कैने छलाह *नाखून बनवाना*। अतएव किछु साहित्यिक मित्र विचार देलनि जे हम स्वयं *खट्टर ककाक* हिन्दी रूपान्तर क' पुस्तकाकार छपाबी।

हम खट्टर कका पर किछु शहरू रंग चढ़ा देलियनि। तदनुरूप परेवेश आ कथानक मे कतहु-कतहु परिवर्तन क' देलिऐक। मिथिलाक 'कका' दिल्लीवला 'काका' बनि गेलाह। आकारक वृद्धि तँ भेबे कैलनि, प्रकारो मे किछु अंतर आबि गेलनि। हम किछु क्षेत्रीय गप्प (जेना चाणक्यक जन्मभूमि, मिथिलाक संस्कृति, दही-चूड़ा-चीनी, माछ) हटाय ओकरा स्थान मे किछु सार्वदेशिक महत्त्वक नवीन गप्प (यथा 'युगलहरी') देलिऐक और पहिलुको तरंग सभ मे बहुत ठाम नव अंश जोड़ि देलिऐक। ओ हिन्दी संस्करण राजकमल प्रकाशन (दिल्ली) सँ 1973 मे प्रकाशित भेल।

खट्टर ककाक हिन्दी जगत मे व्यापक स्वागत भेलनि। समीक्षा *प्रकर* आदि पत्रिका मे हुनकर मौलिक विचारधारा और चमत्कृत शैलीक बहुत प्रशंसा कैल गेलनि। हरिशंकर परसाई जी प्रभृति मित्र सँ बधाइ भेटल। कका हाथरसी तँ

खट्टर ककाक प्रशंसा मे एक टा कविते बना क' पठा देलनि।

1950 सँ 1960क अभ्यन्तर हमर अनेकानेक रचना विविध पत्रिका यथा *वैदेही* (दरभंगा), *पल्लव* (नेहरा), *मिथिला दर्शन* (कलकत्ता) आदि मे छपल छल। ओहि मे कथा, एकांकी, प्रहसन, छाया रूपक, गप्प, चिट्ठी आदि भिन्न-भिन्न विधाक वस्तु छलैक। ओही बीच एक दिन (प्रायः 1958 वा 59) हमरा रानीघाटक डेरा मे कलकत्ता सँ बाबू साहेब चौधरी ऐलाह और ओ समस्त सामग्री पुस्तकाकार प्रकाशनार्थ ल' गेलाह। ओहि दिन श्रीमतीजी माछ, कोबी, आलू, छीमी, भाँटा, मूर आदि द' क' स्वादिष्ट चर्चरी बनौने रहथि। तदनुसार ओहि संग्रहक नाम *चर्चरी* राखल गेल। बीस प्रतिशत रायल्टीक एग्रीमेंट लिखि चौधरी जी अपन मैथिली प्रकाशन (6/1, वामनपाड़ा लेन, कलकत्ता-19) सँ *चर्चरीक* प्रथम संस्करण (1960) तीन हजार प्रति मे छापलनि। पाँच प्रति हमरो पठा देलनि। रंगीन आवरण पृष्ठ पर माछक आकर्षक चित्र देखि प्रसन्नता भेल। ईहो ज्ञात भेल जे *चर्चरी* प्रेसक कड़ाही सँ उतरैत देरी लोक हथोहाथ ओकर रसास्वादन करय लागि गेल छथि।

तकरा बाद की भेलैक से पता नहि। हमरा ने पुस्तक भेटल ने रायल्टीक हिसाब। अनेक वर्षक बाद संयोगवश एक समारोह मे चौधरी जी सँ भेंट भेल तँ कहलनि जे दफ्तरीखाना मे बहुत रासे छपल फर्मा नष्ट भ' गेलैक। मैथिली प्रकाशनक इतिहास मे ई एक तेहन दुःखद दुर्भाग्यपूर्ण घटना भेल जे हमरा निरूत्साहित क' देलक।

चर्चरी मे संकलित रचना मे सँ अधिकांश सेहो हिन्दी मे आबि गेलैक। 'ग्रामसेविका' (जे *वैदेही* कथा-विशेषांक 1955 मे छपल छल) *आदर्श* (नागपुर) और *धर्मयुग* (3.2.57) मे प्रकाशित भेल। 'पाँच पत्र' कैँ *धर्मयुग* (11.3.60) शीर्ष स्थान मे प्रकाशित कैलक। 'अलंकार शिक्षा' (*वैदेही*-अप्रैल 1959) *छात्रबन्धु* (पटना) *कहानी* (प्रयाग) तथा *चित्रलेखा* (बम्बइ-28.11.59) मे प्रकाशित भेल। 'ब्रह्मा का शाप', *कहानी* मे तथा 'नौ लाखक गप्प', *उत्तर बिहार* मे छपल।

एही तरहेँ बाद मे *मिथिला मिहिर* (15.1.61) मे छपल 'निरसन मामाक सिनेमा', *कहानी* मे 'ठाकुर साहब का सनीमा' नाम सँ छपल। 'शास्त्रार्थ', *मिथिला मिहिर* (18.3.62) कैँ *धर्मयुग* अपन होली विशेषांक (1964) मे प्रकाशित कैलक। प्रगतिक पथ पर (*मिथिला मिहिर* -23.5.61) *कहानी* मे 'विनिमेय'क नाम सँ, रामलोचन पाकेट बुक्स (दिल्ली) मे *रेल की बात* नाम सँ और मद्रास तमिल पत्रिका *कल्कि* (26.7.70) मे प्रकाशित भेल।

रेल की बात नाम सँ (रामलोचन पाकेट बुक्स दिल्ली) सँ हमर दस टा मैथिली कथाक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित भेल। ग्रंथालय प्रकाशन(दरभंगा) सँ *एकादशी* नाम सँ एगारह गोट मैथिलीक हमर चुनल कथाक संग्रह बहरायल।



हमर रचना सँ जन-मनोरंजन तँ भेबे कैले, संगहि संग बहुत गोटाक जीवनो पर प्रभाव पड़लनि। एक बेर तँ एक अपरिचित सज्जनक पोस्टकार्ड आयल, ''झाजी! हमहूँ एक बौआक बाप छी और पचीस हजार रुपैया गनाबय चाहैत छलहुँ, परन्तु अपनेक 'बौआक दाम' देखिक' आब संकल्प कैलहुँ अछि जे आब टका नहि लेब।''

तहिना एक बेर एक मित्र आबिक' धन्यवाद देलनि। हुनकर स्त्री घोर पर्दा करैत छलथि और दरवज्जा पर पाहुन कैँ देखि आँगन पड़ाइत छलथिन। परन्तु 'मर्यादाक भंग' पढ़ि हुनका मे ततेक साहस आबि गेलनि जे आब समधीओक सोझा आबि गप्प करय लगलथिन।

जीवन मे एहि तरहक अनेक अनुभव भेल अछि। एक टा घटना कहैत छी। एक दिन हम अपना बरामदा मे बैसल अखबार पढ़ैत रही। तावत एक श्वेतवसना महिला आबिक' प्रणाम कैलनि। हमर प्रश्नवाचक दृष्टि देखि अपन परिचय देलनि—हम छी ग्रामसेविका विमला देवी।

हम चकित रहि गेलहुँ। कइएक वर्ष पूर्व *वैदेही* (1956 कथा विशेषांक) मे हमर 'ग्रामसेविका' नामक कथा छपल छल जकर नायिकाक नाम छलनि विमला देवी। तखन कि हमर कथा नायिका साकार भ' अपन लेखक सँ भेंट कर' ऐलीह अछि? अथवा परिहास तँ ने क' रहल छथि?

परन्तु हुनका मुखमंडल पर गाम्भीर्य छलनि। ओ अपन गाथा कहि सुनौलनि—विवाहक किछुए दिन बाद हम विधवा भ' गेलहुँ। जीवन भार लगैत छल। एक दिन अपनेक 'ग्रामसेविका' पढ़लहुँ। मार्ग भेटि गेल। पटना आबि महिला चर्खा समिति मे रहि ट्रेनिंग लेलहुँ। आइ ग्रामसेविका बनि मधुबनी जा रहल छी। विचार भेल जे जैबा सँ पूर्व अपन धर्मपिता सँ आशीर्वाद नेने जाइ।

हमर नेत्र सजल भ' उठल। कहलियनि, ''शुभास्ते पंथानः।'' बूझि पड़ल जेना हमर लेखनी धन्य भ' गेल। ओहि सँ एक नारीक जीवन बनि गेलनि। कोनो लेखक कैँ एहि सँ बढ़ि पुरस्कार और की भ' सकैत छैक?

हमर कतेको कथाक भविष्यवाणी आश्चर्य रूप सँ घटित भेल। एम्हर हाले मे (1975 जून) एक दिन हमर रानीघाट आवास मे बम्बइ सँ तीन टा प्रगतिशील महिला हमरा सँ भेंट करय ऐलीह (जाहि मे एक टा मैथिलानी सेहो छलीह मोहिनी झा) ओ लोकनि सौराठ सभा मे जाक' तिलक-दहेजक विरूद्ध आन्दोलनक करय चाहैत छलीह। जखन हुनका सभ कैँ ज्ञात भेलनि जे बीस वर्ष पूर्वहि हम एहि पर 'एहि बाटै अबै छथि सुरसरि धार' छाया-रूपक मे कल्पना क' चुकल छी, तँ ओ सौराठ सभा मे अभिनय करक हेतु नेने गेलीह। परन्तु ओही समय 'एमरजेंसी' घोषित भ' गेलैक और हुनका लोकनि कैँ आन्दोलन स्थगित करय पड़लनि।

हमर साहित्य सर्जनाक एक और दिशा छल हास्य-व्यंग्यपूर्ण कविता। सभ कविता समय-समय पर *मिथिला मिहिर, वैदेही, मिथला दर्शन, चाणक्य, पल्लव, अभिव्यंजना, चित्रेतना* आदि भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिका मे छपल और आकाशवाणी सँ प्रसारित भेल। विगत पचीस वर्ष सँ हम चेतना समिति तथा अन्यान्य संस्थाक कवि-सम्मेलन मे सम्मिलित होइत आबि रहल छी। एहि क्रम मे अनेको ठाम (पटना, दरभंगा, राँची, धनबाद, भागलपुर, सहरसा, कटिहार, बेगूसराय, छपरा, बेतिया, आरा, गया, टाटा नगर, बाटा नगर, साहेबगंज, डाल्टेनगंज सँ लय दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास) धरि मैथिली कविताक रसास्वादन श्रोता कैँ करौने छियनि।

मैथिली सेवाक प्रसंग मे हम जहाँ-जहाँ गेल छी, तहाँ-तहाँ ई अनुभव भेल अछि जे जतेक दूर गेलहुँ अछि ततेक बेसी एकता और प्रेमक भाव देखबा मे आयल। एक बेर (1963)

उज्जैन गेलहुँ तँ दू टा मैथिली भाषी व्यक्ति भेंट करय ऐलाह। हुनका दुनू गोटा मे ततेक प्रेम रहनि जे एक गोटाक घर मे जे तरकारी चटनी बननि से दोसरोक घर पहुँचि जाइनि। परन्तु ज्ञात भेल जे गाम पर दुगोला छनि और हकार-तिहार नहि होइ छनि। गाम जाइत काल मोकामाक पुल पार करैत देरी नहि जानि केहन बसात लागि जाइ छनि जे दुनू घर मे बएन आयब-जायब बन्द भ' जाइ छनि। हम दुनू गोटा सँ प्रतिज्ञा करौलियनि जे एहि बेर गाम पर कोजागराक भोज मे संग बैसि भोजन करताह।

1969 मे हम सपत्नीक बम्बइ मे रही। विक्टोरिया टर्मिन्स लग पत्नी सहित एक होटल मे ठहरल रही। ई समाचार मिथिला मंडलक सचिव तिलकधारी झाक कान मे पड़ि गेलनि। ओ स्वयं आबि हमरा सभ केँ अपना निवास-स्थान शारदा स्टेट बोरीवल्ली पर ल' गेलाह। झाजीक पत्नी, कन्या प्रभृति तेहन विन्यासपूर्वक भोजन करौलनि जे वोरीवल्ली केँ वल्लीपुर बना देलनि। एतबहि नहि हमरा सभ केँ मम्बईक मुख्य-मुख्य स्थान घुमा-फिराक देखा देलीह। मंडलक अध्यक्ष विमल चंद्र दास ब्रिस्टल होटल मे हमरासभक स्वागत आयोजित कैलनि। ओहि मे उमाकान्त मिश्रजी (एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट कंट्रोलर) आदि अनेक बन्धु सम्मिलित छलाह। एक प्रगतिशील मैथिल युवक नम्बूदरीपाद कन्या सँ विवाह कैने छलाह, ओहो आबिक' आशीर्वाद ग्रहण कैलनि। ई सत्कार हमर नहि हमर मैथिली सेवाक छल।

तहिना 1970 मे मद्रास विश्वविद्यालय गेल रही। हम सपत्नीक अजन्ता होटल मे ठहरल रही। ई सुनैत देरी बिहार एसोसिएशनक सचिव शोभाकान्त दास आबिक' हमरा सभ केँ अपना ओतय (चाइना बाजार, वाड्रियन स्ट्रीट, जहाँ हुनक जड़ी-बूटीक कारखाना छलनि) ल' गेलाह। हुनक पत्नी सुकन्या हमरा सभ केँ अपने घरक जकाँ सत्कार कैलनि। एक मैथिल नारीक हाथक बनाओल दक्षिणी भोजन (डोसा-साँभर आदि) अपूर्व लागल। एसोशिएशनक अध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र चौधरी अपना ओतय ल' गेलाह। दासजीक भाय सत्यनारायण जीक ओतय स्वागत-समारोह भेल जाहि मे सैकड़ो बिहारी बंधु ऐलाह। ओहि अवसर पर सत्यनारायणक पूजा और प्रसाद-भोग सेहो भेल।

एहि प्रसंग मे एक टा मनोरंजक घटना मन पड़ैत अछि। ओही आसपास मद्रासक पत्रिका *कल्कि* मे हमर एक मैथिली कथा (*प्रगतिक पथ पर*)क तमिल भाषा मे अनुवाद छपल रहय। ई देखि एक टा मद्रासी प्रोफेसर जे हमरा फिलोसफरक रूप मे जनैत छलाह, हमरा पूछि बैसलाह, ''ई दोसर हरिमोहन झा के थिकाह?'' जखन हुनका ज्ञात भेलनि जे हमहीं छी तँ हमरा पाँज मे लगा लेलनि। दर्शन शास्त्र माथ पर भने चढ़ा दौक, परन्तु हृदय मे सटैबाक शक्ति साहित्य मे छैक।

रानीघाट मे हमरा संग रहैत गोपाल जी कहिया सँ मैथिली मे लिखय लगलाह से हमरा ज्ञात नहि भेल। *मिथिला मिहिर* आदि मे राज मोहन झा नाम देखि होइत छल जे ई केओ दोसर व्यक्ति हैताह। बहुत दिन बाद जखन ओझाजी हुनक कथा-संग्रह (*एक आदि : एक अंत*)देखौलनि तखन विश्वास भेल। (आब तँ ओ युवा लेखकक वर्ग मे मनौवैज्ञानिक विश्लेषण परक कथा लिखबा मे अग्रणी बूझल जाइ छथि)। भुवन जी (मनमोहन) सेहो अपन ज्येष्ठ भ्राताक अनुसरण करैत ओही शैली मे कथा लिखय लगलाह अछि। आब दुनू भाइक मैथिली कथाक अनुवाद हिन्दियो पत्रिका मे छपय लगलनि अछि।

आइ सँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्व हमर बाबूजी माँ मैथिलीक मन्दिर मे दीप जराक' पूजा प्रारम्भ कैने रहथि। तदनन्तर हमहूँ हुनक चरण-चिह्न पर चलैत किछु और दीप राखि देलियनि। आब तेसरो पीढ़ी मे हमर पुत्र जमाता ओहि परम्पराक पालन क' रहल छथि। ई देखि प्रसन्नता भ' रहल अछि जे हुनका संग नव पीढ़ीक असंख्यो कलाकार (जिनका सभ केँ हम अपने परिवार क'क' बुझैत छिऐनि) मातृभाषाक मन्दिर मे दीपावली सजा रहल छथि। आशा होइत अछि जे मातृभाषाक मन्दिर मे जे दीप प्रज्वलित भ' रहल अछि से स्नेहक अभाव मे मिझाय नहि पाओत और अखंड ज्योति जगमगाइत रहत।



1. आइ ई देखि प्रसन्नता होइछ जे जहाँ फिल्मी क्षेत्र मे केओ मैथिलीक नामलेवा नहि छल, तहाँ आब मधुश्रावणी, बाबा वैद्यनाथ, ललका पाग, ममता गाबय गीत आदि कय टा मैथिली चित्र बनबाक चर्च सुनि रहल छी।

(*आरंभ सँ*)

चरैवेति चरैवेति

मन मोहन झा

वंश

मधुबनी सँ चारि पाँच मील दक्षिण: विद्वान ओ पंजीबद्ध मैथिल ब्राह्मणक ग्राम बिरसायर मे नाथ झा नामक यजुआरे भरगाम मूलक शांडिल्य गोत्रीय पंडित रहैत छलाह। हिनक पितामह पं. दुर्मिल झा कोइलख वासी छलथिन। हुनका ई एक टा विचित्र अभिशाप रहनि जे संतान जीवित नहि रहैत छलनि। तखन ओ ई उपाय कयलनि जे एक टा जे पुत्र भेलथिन, तिनका जनमितहि मातृक मे बेचि देलथिन। तँ हिनक नाम बेचन झा पड़बो कयलनि। यैह बेचन झा बिरसायर गामक पं. नाथ झाक पिता छलाह।

पं. नाथ झाक संग एक टा ई विचित्र संयोग भेलनि जे जहिना हुनक पिता अपन मातृक मे आबि क' बसल छलथिन, तहिना पुत्र सेहो अपन मातृक कुमर बाजितपुर मे जा क' बसलथिन। एक टा पुत्र ओ तीन कन्याक बाद 1872 ई.क कार्तिक कृष्ण तृतीया कैँ पं. नाथ झाक घर मे कनिष्ठ बालक जन्म लेलकनि। तीन कन्याक बाद जन्म लेनिहार बालक तेतर कहबैत अछि आ भाग्यहीन मानल जाइत अछि। से ई नेना जखन अढ़ाइ वर्षक भेल तखने जेठ भाइ प्यारेलाल झा, जे घर-गृहस्थीक सभ भार सम्भारने रहथिन, असमय मे दिवंगत भ' गेलथिन। आ पाँच वर्षक भेल, तँ पिता सेहो अनाथ क' गेलथिन। वैमात्रेय भाइ अबोध नेना आ विधवा सतमाय कैँ अकारण सतबय लगलथिन। एहना स्थिति मे दुनू माय-पुतक लेल ओत' रहब कठिन भ' गेलनि। मामा पुरना जमींदार रहथिन आ जखन हुनका विपत्तिक हाल बुझल भेलनि तँ ओ हुनका सभ कैँ बजबा पठौलथिन। आ एक दिन ओ नेना मायक संग बिरसायर सँ अपन मातृक कुमर बाजितपुर (समस्तीपुर सँ दस मील दक्षिण-पश्चिम वैशाली जिला) आयल से ओतहि रहि गेल। वैह बालक कालांतरे पं. जनार्दन झा 'जनसीदन'क नाम सँ प्रसिद्ध भेल।

पं. जनार्दन झा 'जनसीदन'क मातामह पं. चंद्रमणि कुमर मिथिलाक प्रसिद्ध राजवंश ओइनवार कुलक संपन्न जमींदार छलथिन। राजवंशक होयबाक कारण हुनक वंशक लोक 'कुमर' कहबैत छथि आ तेँ गामोक नाम मे कुमर लागल छनि। स्व. राय बहादुर जयानंद कुमर, जे 'जनसीदन' जीक ममियौत भाइ छलथिन, एही कुलक भूषण छलाह।

जाहि समय 'जनसीदन' जी कुमर बाजितपुर अयलाह, ता धरि मामाक पैतृक जमींदारी बहुत-किछु नष्ट भ' चुकल रहनि आ आर्थिक स्थिति कोनो मजबूत नहि रहनि। एहि स्थिति मे 'जनसीदन' जी कैँ स्कूल मे नाम लिखा क' पढ़बाक सुविधा नहि भेटलनि। मुदा बाल्यावस्थहि सँ हुनक तेहन अपूर्व संस्कार छलनि जे थोड़बे दिन मे स्वाध्यायक बलैँ काव्य-शास्त्र मे निपुण तँ भैए गेलाह, व्याकरण आ ज्योतिषक सेहो मर्मज्ञ भ' गेलाह। अपन सहज प्रतिभा सँ संस्कृत, बंगला तथा अंग्रेजीक निविष्ट ज्ञान प्राप्त क' लेलनि। स्वत: ब्रजभाषा मे कविता कर' लागि गेलाह, संगहि संस्कृत आ हिंदी मे समस्या पूर्त्ति। कविता मे 'जनार्दन' शब्दक प्रयोग ठीक-ठीक नहि बैसैत रहनि तँ अपन गुरु रामलोचन मिश्र सँ पुछलथिन जे उपनाम की राखल जाय? ताहि पर ओ 'जनसीदन' उपनामक सुझाव देलथिन। यद्यपि व्याकरणक हिसाबैँ शुद्ध शब्द 'जनसादन' होइतैक, परंतु गुरुक आदेश कैँ शिरोधार्य क' ई 'जनसीदन' उपनामक प्रयोग करय लगलाह।

कोनो डिग्री नहि रहितो संस्कृतक अपन ज्ञानक बल पर हिनक नियुक्ति बैरगिनिया अपर प्राइमरी पाठशाला मे भेलनि, मुदा तीन चारि मास बाद ओत' सँ जी उचटि गेलनि। तत्पश्चात हिनक बदली सुरसंड अपर प्राइमरी पाठशाला मे भेलनि, जतय दू वर्ष धरि रहलाह। तकर बाद धबौली पाठशाला ओ जैतपुरक महंथ रघुनाथ दास संस्कृत विद्यालय मे शिक्षण कार्य कयलनि। मुदा अध्यापनक ई काज हिनका बहुत पसिन्न नहि छलनि।

नियति कैँ हिनका सँ विशेष काज लेबाक छलै। हिनका पर सरस्वतीक विशेष कृपा रहनि जे अवसर पाबि प्रस्फुटित भेलनि। ताहि समय कानपुर सँ *रसिक मित्र* पत्रिका बहराइत छलै जाहि मे ई समस्यापूर्त्ति पठबय लगलाह।



श्रीनगरक राजा कमलानंद सिह रसमर्मज्ञ छलाह आ समस्यापूर्त्ति सँ प्रभावित भ' ओ पत्र लिखि हिनका बजबा पठौलथिन। ई 1901 ई.क गप्प थिक। ताहि समय राजा साहेब 'अभिनव भोज' कहबैत छलाह। पं. अंबिका दत्त व्यास, यज्ञराज कवि, पं. खुद्दी झा, पं. श्रीकांत मिश्र प्रभृति अनेक पंडित गुणी हिनक दरबारक शोभा बढ़बैत रहथिन। गुणग्राही राजासाहेब हिनक प्रतिभाक सम्मान करैत हिनका अपन सेवा मे राखि लेलथिन, जत' ओ आठ वर्ष (1901-1908) हुनक दरबार मे कवि पंडित ओ मोसाहेबक रूप मे रहलाह। ओहिठामक सरस साहित्यिक वातावरण आ कार्य हिनक रुचि ओ प्रवृत्तिक अनुकूल छलनि। राजा साहेबक दिस सँ साहित्यिक पत्राचार करबाक भार 'जनसीदन' जीक ऊपर छलनि। एहि क्रम मे 1902 ई. मे *सरस्वती* बहरयला पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सँ संपर्क भेलनि, जे शीघ्र आत्मीय संबंध मे परिणत भ' गेलनि। द्विवेदी जी हिनक प्रतिभा सँ बड़ प्रभावित रहथिन आ *सरस्वती* लेल बराबरि हिनक सहयोग लैत रहलथिन। 1908 मे राजा साहेबक निधन भेला पर ओ श्रीनगर सँ गाम चलि अयलाह आ ओतहि रहि लेखन कार्य करय लगलाह।

जन्म

1908 ई. 'जनसीदन' जीक जीवनक निस्संदेह सभ सँ सुखद ओ महत्त्वपूर्ण वर्ष छलनि, कारण जे हुनक चिराभिलषित पुत्रजन्मक आकांक्षा एहि वर्ष सफल भेलनि। एहि सँ पूर्व दू टा संतान कन्या भ' चुकल छलनि आ अपन अवस्था पैंतिसक भ' गेल छलनि, तेँ 'जनसीदन' जी पुत्र प्राप्ति लेल चिंतित रहथि। 1907 ई. मे ओ राजा साहेबक संग मुंगेर मे छलाह। ओ हिनक चिंता द' बूझि एहि निमित्त हिनका देवी भागवत आ गर्गसंहिता बाँचबाक परामर्श देलथिन। 'जनसीदन' जी धार्मिक प्रवृत्तिक आस्थावान पंडित छलाह। मुंगेरक एक टा पैघ महात्मा स्वामी नरसिंह दास सँ हिनका भेंट भेलनि। ओहो हुनका यैह कहलथिन। तदनुसार 'जनसीदन' जी नित्य प्रात: कष्टहरणी घाट पर जा देवीभागवत ओ गर्गसंहिता बाँचब प्रारंभ कयलनि। एहि धार्मिक अनुष्ठानक प्रसादात एक वर्षक अभ्यंतरे आश्विन कृष्ण अष्टमी (जितियाक प्रात) तदनुसार 18 सितंबर 1908 ई. केँ 'जनसीदन' जीक ज्येष्ठ बालकक जन्म भेल, बाद मे जकर नाम 'हरिमोहन' राखल गेल।

ओही वर्ष जनसीदन जी श्रीनगर सँ गाम आबि गेलाह। कालांतर मे हुनका फेर एक टा कन्याक बाद एक टा आर पुत्र जन्म लेलथिन आ अंत मे तखन एक टा कन्या भेलथिन। एहि तरहेँ चारि कन्या दू पुत्र-'जनसीदन' जीक छओ टा संतान मध्य बालक हरिमोहनक स्थान तेसर आ भाइ मे प्रथम छल।

बाल्यावस्था

दू टा कन्याक बाद भेल पहिल बालक, सेहो धार्मिक अनुष्ठान आदि कतेको प्रयत्नक फल सँ प्राप्त। स्वाभाविक छल जे बालक सभक हाथक खेलौना बनल रहै छल। हँसमुख, प्रसन्नचित्त आ चंचल ई नेना 'ननकिरबू' घर सँ बाहर धरि सभ केँ मोहने रहैत छल। घर मे सभक दुलारक केंद्र। पितामही मायो सँ बेसी मानथिन। हुनक अतिरिक्त दुलार ततेक जिद्दी बना देने छलनि जे दैयाक मुह सँ बिनु खिस्सा सुनने निन्न नहि पड़नि। दैया रखनहु रहथिन रंग-बिरंगक पिहानीक पेटारा। रामायण-महाभारत सँ ल'क' डेढ़बितना फुलकुम्मरिक खिस्सा धरि ओ दूधक घोटी संग हिनका घोरि क' पिया देलथिन। बाल-मन पर सभ सँ गहींर आदि प्रभाव पितामहिएक पड़ल।

तकरा बाद सभ सँ अधिक प्रभाव बालक हरिमोहनक मन पर जनिक पड़ल से छलाह हुनक पिता 'जनसीदन' जी। 'जनसीदन' जी साते-आठ वर्षक अवस्था सँ 'ननकिरबू' केँ अपन सान्निध्य मे राख' लगलथिन आ अपना संग घुमब' लगलथिन—पचगछिया, श्रीनगर, पूर्णियाँ, गिद्धौर...। जाहि अवस्था मे नेनाक हाथ मे खेलौना रहैत छै, ई छंद-अलंकार सँ खेलाय लगलाह। घर मे पिता-पुत्र मे वार्त्तालापो सानुप्रास पद्य मे होइत छल। 'जनसीदन' जी दुलार मे कहथिन—'हरिमोहन भागत फिरत, क्यों न लगावत तेल?' बालक हरिमोहन लगले उत्तर देथिन-'मुझे खेल से मेल है, नहीं तेल से मेल।'

पिताक साहचर्य शिक्षाक आदि स्रोत भेलनि। नियमित विद्यालयीय शिक्षा हिनका शुरू मे प्राप्त नहि भेलनि। ओना पचगछिया प्रियव्रत हाइ स्कूल मे, जत' 'जनसीदन' जी दू वर्ष (1916-18) संस्कृत ओ हिंदीक अध्यापक छलाह, कक्षा मे जा क' बैसैत छलाह। मुदा लगले फेर 'जनसीदन' जीक संग-संग अन्य स्थान मे भ्रमणशील भ' जयबाक कारणेँ, आ संगहि 'जनसीदन' जीक आर्थिक स्थिति बहुत अनुकूल नहि होयबाक कारणेँ हिनक नाम स्कूल मे नहि लिखाओल जा सकल। मुदा ताहि सँ कोनो क्षति नहि भेलनि। आदि गुरुक रूप मे विद्वान पिता भेटलथिन जे बाल्यावस्थाहि मे संस्कृतक श्लोक सभ कंठस्थ करा देलथिन आ ईहो 'अपूर्णे पंचमेवर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम्' चरितार्थ करय लगलाह। पिता पाचमे वर्ष सँ हिनका संधि, समास, छन्द आदि विषय बुझब' लगलथिन। बाटो चलैत पुछैत जाथिन, 'कहह तँ ननकिरबू! आठो गण कोन-कोन होइन छै?' आ ई 'मन भय रस तज' ओ 'यमाताराजभानस-लगा' सूत्रक व्याख्या सुनाब' लगथिन। जन्मजात संस्कार रहबे करनि, पिताक प्रशिक्षण सँ ओहि पर आर तेज धार चढ़ि गेलनि। शीघ्रे ई अपनहु श्लोक बनाबय लगलाह।

पिता 'जनसीदन' जी स्वरचित रचना अवकाशक समय मे डेरा पर सुनबथिन। घर मे साहित्यालाप बरोबरि चलिते रहैत छलैक। एहि साहित्यिक वातावरण मे बालक केँ साहित्यक प्रति रुचि भेनाइ स्वभाविक छल आ उपयुक्त वातावरण पाबि ओ आरो पल्लवित-पुष्पित भ' उठल। पिताक देखा-देखी ईहो समस्यापूर्त्ति द्वारा बुद्धि-चातुर्य देखाबय लगलाह।

बालक हरिमोहन जतय जाथि अपन आशु कवित्व ओ काव्य चमत्कार सँ लोक केँ चकित-चमत्कृत क' देथि। सात वर्षक अवस्था मे पिता पहिल बेर श्रीनगरक दरबार मे ल' गेलथिन। ता राजा कमलानंद सिंहक देहावसान भ' गेल छलनि आ अनुज कुमार कालिकानन्द सिंह गद्दी पर आबि गेल रहथि। उपनयनक अवसर छलैक। बालक हरिमोहनक राजदरबार मे प्रवेशक ई पहिल अवसर छल। ओ अपन कवित्व-शक्तिक परिचय एक टा कविता मे देलथिन। राजा साहेब प्रसन्न भेलथिन, मुदा प्राय: परीक्षा लेबाक दृष्टिएँ तुरंत भेल गप्प पर कोनो वस्तु सुनब' कहलथिन। ई शीघ्र सानुप्रास बना क' सुनौने रहथिन-

'सरकार को दरकार है परकार मोटर कार का!'

आठ वर्षक अवस्था मे एक बेर अपन मायक संग बालक हरिमोहन मातृक (नदौर) गेल। नाना पं. नचारी झा रामचंद्रक बड़ भक्त रहथिन। ओ गाम मे राम मंदिर स्थापित कयने रहथि। हिनका कहलथिन, 'नेना, भगवान पर किछु बना क' दिय'।' ई तुरंत बनाक' देलथिन,

वन-वन फिरथि अयोध्यानाथ।

आगाँ रघुवर पाछाँ लछुमन बीच मे सीता साथ।

कीट मुकुट कुंडल तजि देलनि जटाजूट छनि माथ।

'हरिमोहन' आश्चर्य करै छथि, एना किए रघुनाथ॥

आठ वर्षक नातिक बनाओल एहि पद केँ प्रभातीक स्वर मे गाबि नाना गद्‌गद भ' जाइत छलाह।

ओही वर्ष अर्थात् 1916 ई. मे पहिले बेर गाम छोड़ि बालक हरिमोहन पिताक संग पचगछिया रहय आयल। दिन मे विद्यालय कक्षा मे बैसय आ राति मे डेरा पर साहित्य-चर्चा सुनय।'समस्यापूर्त्ति' नामक संस्कृत पत्रिका मे ईहो अपन समस्यापूर्त्ति पठाबय। एक श्लोक मे 'पितृपतिस्वसा' शब्दक प्रयोग ई यमुनाक अर्थ मे कयने रहय, से देखि पं. खुद्दी झा हिनक पिता कें कहने रहथिन, 'ई नेना एक दिन नाम करत।'

एक बेर पचगछिया मे रायबहादुर प्रियव्रत नारायण सिंह हिनका एक टा दोहा बनाबय कहलथिन। किंतु ई शर्त राखि देलथिन जे ओहि मे 'सरगम'क सातो अक्षरक अतिरिक्त आर कोनो अक्षर नहि आबय। ई हाथ मे कलम लेलनि आ तुरंत सभ कें सुना देलथिन,

राग रागिनी मधुर सुर, सुरसरि धार समान।
सुरगन मन धुनि सुनि मगन परम सरस रसगान।

एहि तरहें पिताक संग रहने बालक हरिमोहन कें ई लाभ भेलनि जे बहुत ठाम घुमलाह, कतेको पंडित गुणीक सरस वार्त्तालाप सुनलनि, राजा लोकनिक आमोद-प्रमोद देखलनि। देशाटन, पंडित-मित्रता एवं राजसभा-प्रवेश—एहि तीनूक पूर्ण अनुभव भेलनि।

1919 ई. मे जनसीदन जी *मिथिला मिहिर* क सम्पादक नियुक्त भ' दरभंगा आबि गेलाह, जतय ओ 1922 धरि रहलाह। 'जनसीदन' जीक संग बालक हरिमोहन सेहो प्रेस जाय लगलाह। ओत' *सरस्वती, सुधा, माधुरी* आदि रंग-बिरंगक पत्रिकाक फाइल मे डूबि जाथि। गाम पर दैया सँ खिस्सा-पिहानीक छूटल चस्का फेर सँ लागि गेलनि। शरच्चचंद्र, बंकिमचंद्र, रवींद्रनाथ सँ ल'क' जी.पी. श्रीवास्तव, देवकी नंदन खत्री धरिक जतेक जे पोथी आ पत्रिका सभ ओत' भेटलनि, तीन वर्ष मे—जा जनसीदन जी दरभंगा मे रहलाह—ओ सभ टा चाटि गेलाह। जी.पी. श्रीवास्तवक हास्य कथा सँ प्रभावित भ' ईहो एक टा विनोदपूर्ण गल्प लिखलनि—'अजीब बंदर' जे पं. जगदीश्वरी प्रसाद ओझा कें ततेक पसिन्न पड़लनि जे ओ ओकरा सुदर्शन प्रेस, दरभंगा सँ पोथी रूप मे छपवा देलथिन। बारहम वर्षक अवस्था मे लिखल ओ बाल रचना हिनक प्रथम मुद्रित कृति छल। कहबाक नहि काज जे ई आब अप्राप्य अछि।

छात्र-जीवन

पंद्रह वर्षक अवस्था धरि हिनक नाम कोनो स्कूल मे नहि लिखाओल गेल आ ई एहिना पिताक संग रहि ज्ञानार्जन आ साहित्यिक अवगाहन करैत रहलाह। दरभंगा सँ गाम अयला पर पिताक बाकस सँ नाना प्रकारक काव्य-ग्रंथ, सुभाषित रत्न भांडागार तथा शब्दकल्पद्रुम बहार क' उनटाबथि और स्वांत:सुखाय रसास्वादन करथि। एक दिन 'जनसीदन' जी अपन ममियौत भाइ श्री उपेंद्र नारायण कुमर, जे मुजफ्फरपुर जी.बी.बी. कॉलेजिएट स्कूल मे अध्यापक रहथि, संग शतरंज खेलाइत रहथि। हिनका स्वाध्याय मे लागल देखि गप्पक क्रम मे ओ जनसीदन जी सँ कहलथिन,''अपने जकाँ हिनको कविए बनयबनि की? हमरा चार्ज मे किए नहि द' दैत छियनि?'' आ ओ हिनका ल' जा क' अपना स्कूल मे नाम लिखा देलथिन। ई घटना 1923 ई.क थिक।

प्रधानाध्यापकक समक्ष जखन हिनका उपस्थित कयल गेल, तँ हुनका आगाँ ई समस्या ठाढ़ भेल जे हिनक नाम लिखल कोन कक्षा मे जाय। संस्कृत एवं हिंदीक शिक्षक कें हिनक लिखित परीक्षा लेबाक भार देल गेलनि। संस्कृतक हिनक उत्तर श्लोक मे देखि शिक्षक कें बड़ आश्चर्य भेलनि। ओ प्रधानाध्यापकक समक्ष एकरा प्रस्तुत कयलनि। प्रधानाध्यापक हिनका संस्कृत मे भाषण कर' कहलथिन। हिनक धाराप्रवाह संस्कृत मे वक्तृता सुनि प्रधानाध्यापक सँ ल'क' प्रत्येक शिक्षक धरि मुग्ध रहि गेलाह।

फलस्वरूप हिनक नाम सोझे मैट्रिक कक्षा मे अर्थात् 'टेंथ' मे लिखि लेल गेल। यद्यपि एहि रूपक नियम नहि छलैक, तथापि विशिष्ट प्रतिभाक कारणें एक विशेष नियमक अंतर्गत हिनक नामांकन कयल गेल। एहि तरहें 1923 ई. मे ई कुमरजीक चार्ज मे आबि गेलाह आ मुजफ्फरपुर मे पित्तीक अनुशासन मे रहि ई विधिवत् छात्रजीवन प्रारंभ कयलनि।

ताहि दिन छात्र जीवनक आदर्श रहै—'अध्ययनं तप:।' सादा जीवन ओ मितव्ययिताक पाठ पढ़ाओल जाइ। विद्यार्थी कें सुख सँ कोन प्रयोजन! राति मे एक टा विद्यार्थी कें मसहरी लगा क' सूतल देखि प्रात भेने गुरुजी तेहन धातुरूप पूछय लगथिन जे ओकर सिट्टी-पिट्टी गुम्म। विद्यार्थी कें अँचार आदि खयबाक अनुमति नहि छलैक। हिनक दरभंगाक बहसल जीह मुजफ्फरपुर मे सैंता गेलनि। पित्तीक डरें ब्राह्म मुहूर्त्ते मे उठि ई स्नान क' अरिथमेटिक-अलजेब्रा बनाबय बैसि जाथि। कुमर जी शुरूए मे चेतावनी द' देने रहथिन, 'देखो बच्चू। आज से कविता-फविता छोड़ो और हिसाब से नाता जोड़ो। नहीं तो देखते हो यह छड़ी!' हिनकर छंद बंद भ' गेलनि आ पोएट्रीक स्थान पर ई ज्योमेट्री बनाबय लगलाह। पढ़ैत-पढ़ैत बेसी राति भ' जाइन तँ पित्ती-अभिभावक आबि कय लालटेन मिझा देथिन। तेल महग रहै।

ई मैट्रिक मे रहथि तखने हिनक विवाह भ' गेलनि। सोलह वर्षक अवस्था मे विवाह ताहि समय सामान्य बात रहै। पत्नी तेरह वर्षक लोअर पास कन्या छलथिन जे अपन कक्षा मे फर्स्ट भेल रहथिन। पिता पंडित सोनेलाल झा मुजफ्फरपुर मे कालीबाड़ी मे पंडित रहथिन आ तीनू बहिन, जाहि मे, सुभद्रा सभ सँ छोट छलीह, पित्ती पं. सुंदरलाल झाक अभिभावकत्व मे अपन गाम लोमा मे रहै छलीह।

1924 ई. मे एहि तरहें बहुत किछु अकस्मात रूपें भ' गेल। विवाह सँ हिनक छात्र जीवन पर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि। 1925 ई. मे ई मैट्रिकक परीक्षा पटना विश्वविद्यालय सँ प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह ओ छात्रवृत्ति प्राप्त कयलनि। ओहि समय पटना विश्वविद्यालय मे बिहार तथा उड़ीसा दुनू राज्य सम्मिलित छल।

1923 ई. मे जनसीदन जी जीविकोपार्जन हेतु कलकत्ता चल गेलाह आ ओतय *इंदिरा, देवी चौधरानी, विष-वृक्ष, गोरा, नौका-डूबी* आदि कतेको बंगला उपन्यासक हिंदी मे अनुवाद कार्य कयलनि। साहित्य सेवा द्वारा द्रव्योपार्जन सँ परिवारक भरण-पोषण होइत छलनि, मुदा बालक हरिमोहनक उच्च शिक्षाक भार वहन करबाक पर्याप्त साधन हुनका नहि रहनि। एहना स्थिति मे मैट्रिकक बाद सरकारी छात्रवृत्ति जे भेटैत गेलनि, से बालक हरिमोहन कें आगाँक अध्ययन लेल बड़ सहायक भेलनि। मैट्रिकक बाद आइ.ए. मे पढ़बाक हेतु ई जी.बी.बी. कॉलेज (संप्रति लंगट सिंह कॉलेज) मुजफ्फरपुर मे भर्ती भेलाह आ ससुरक डेरा (काली बाड़ी) मे रहि पढ़' लगलाह। कालीबाड़ी रमनाक सुप्रसिद्ध रईस महेश्वर बाबूक प्राचीन मंदिर छलनि जकर प्रबंधकर्त्ता पंडिते जी छलथिन। माघो मंदिर मे सभ कर्मकांडिये छलाह। पूजा पाठ आ भोग-रागक भार पंडित जीक भागिन शीतल मिश्र पर छलनि, जे जारनियो धो क' चूल्हि मे लगबैत छलथिन। माघो मासक राति मे भोजन काल गंजी उतारय पड़नि। अन्हरोखे पंडित जी हिनका पढ़' लेल उठा दैत छलथिन आ देखैत रहैत छलथिन। जहाँ ई बाती उसकबैत छलथिन कि लगले ओ टोकि दैत छलथिन, 'ओझा, अंडीक तेल अशुद्ध होइत अछि। हाथ मटिया लेल जाओ।'

एक बेर पंडित जी शीतल जी पर सभ टा भार सौंपि गाम गेलथिन। एक दिन हिनक सहपाठी जगदीश अयलथिन। शीतल जी दुनू गोटा कें एक संग जलखइ करैत देखि लेलथिन। ओ पंडित जी कें ढड्डर लिखि पठौलथिन,

'ओझा भठि गेलाह। एक टा कायथक छौंड़ा संग एक्के दोना मे जिलेबी खयलनि अछि।' पंडित जी गाम सँ आबि हिनका सचैल स्नान कराय, यज्ञोपबीत बदलबाय, 108 गायत्री जपबाय शुद्ध कयलथिन।

आइ.ए. मे ई संस्कृत, तर्कशास्त्र ओ इतिहास विषय लेलनि आ सभ विषय मे तेहन तीक्ष्ण बुद्धिक परिचय देबय लगलाह जे समस्त अध्यापक वर्गक प्रिय पात्र बनि गेलाह। आइ.ए. परीक्षा मे संस्कृतक प्रत्येक प्रश्नक उत्तर ई श्लोक मे देने छलाह। बाद मे पटना कॉलेजक संस्कृत विभागाध्यक्ष पं. देवदत्त त्रिपाठी ट्यूटोरियल क्लास मे ओहि अद्‌भुत उत्तर पुस्तिकाक चर्च कयलनि, 'विगत आइ.ए. परीक्षा मे एक टा संस्कृतक कापी आयल छल। आदि सँ अंत धरि सभ प्रश्नक उत्तर अपने बनौल श्लोक मे देने छल। कतहु बिंदु-विसर्गक अशुद्धि नहि। एहन तँ कहियो कोनो उत्तरपुस्तिका नहि भेटल छल। पता नहि ओ विद्यार्थी के छल।' ई सुनि विद्यार्थी हरिमोहन मुस्कुराय लगलाह। ओ पुछलथिन, 'की, ओ विद्यार्थी अहीँ तँ ने छी?' आ संशय निवारणार्थ हिनका संस्कृत मे समस्यापूर्त्ति करबाक हेतु देलथिन, 'स एव छात्रो हरिमोहनोऽहम्।' ई तत्क्षण पाँच तरहेँ पूत्ति कय सुना देलथिन। पं. जी गद्‌गद भ' आशीर्वाद देलथिन, 'यशस्वी भव।'

मुजफ्फरपुर मे रमना मे बच्चाबाबू (उमाशंकर प्रसाद)क साहित्यिक गोष्ठी मे ई नियमित रूपेँ भाग लैत छलाह आ अपन समस्यापूर्त्ति सभ सँ लोक केँ चमत्कृत करैत छलाह। पंडित जी हिनका काव्य गोष्ठी, सभा आदि मे जाइत देखि आशंकित रहैत छलथिन जे ओझा पढ़ाइ मे पूरा समय नहि दैत छथि। मुदा 1927 ई. मे जखन आइ.ए. क परीक्षाफल बहरायल, तँ विद्यार्थी हरिमोहन संपूर्ण बिहार आ उड़ीसा मे सर्वप्रथम स्थान पौने छलाह। से देखि पंडित जी संतोषपूर्वक कहलथिन, 'ई भगवतीक कृपा थिकनि। हमरा यश देऔलनि।'

एहि सफलता सँ विद्यार्थी हरिमोहनक नाम और प्रसिद्ध भ' गेलनि। ओ पटना आबि पटना कॉलेज मे बी.ए. मे नाम लिखौलनि आ मिंटो होस्टल मे रहि पढ़य लगलाह। बी.ए. मे ई अंग्रेजी आनर्स रखलनि तथा दर्शन एवं संस्कृत अन्य विषय। ओहि समय पटना कॉलेजक प्रिंसिपल छलाह हार्न साहेब आ वार्डेन छलथिन आर्मर साहेब, जे अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष रहथि। मिंटो होस्टलक सुपरिंटेंडेंट रहथिन ए.पी. बनर्जी शास्त्री जे संस्कृतक प्रोफेसर होइतहु अंग्रेजी रंग मे रंगल छलथिन। होस्टल मे अनेक छात्र आत्मीय बंधु बनि गेलथिन, यथा सतीशचंद्र मिश्र (बाद मे मुख्य न्यायाधीश), विश्वम्भर चौधरी (कलक्टर), जयनारायण मल्लिक (मधेपुर स्कूलक प्रधानाध्यापक), रामचंद्र छत्रपति (मधेपुराक प्राचार्य), जगदीश कश्यप (बाद मे भिक्षु ओ नालंदा विद्यापीठक निदेशक), महेंद्र प्रसाद वर्मा (न्यायाधीश), जगदीश चंद्र सिन्हा (जिनका नाम पर जगदीश मेमोरियल कप चलाओल गेल) आदि।

आर्मर साहेब हिनक योग्यता सँ ततेक प्रभावित भेलथिन जे आल इंडिया चैलेंज कपक वाद-विवाद प्रतियोगिता मे पटना विश्व-विद्यालयक प्रतिनिधित्व कर' हिनका इलाहाबाद पठौलथिन। ओत' ई सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कयलनि आ तत्कालीन कुलपति डा. सर गंगानाथ झाक हाथेँ ट्राफी प्राप्त कयलनि।

पटना कालेज मे एक बेर ड्रामा भेल रहैक, जी.पी. श्रीवास्तवक प्रहसन 'नाक में दम'। ओहि मे ई मौलानाक पार्ट लेने रहथि आ सफल अभिनयक लेल पुरस्कार स्वरूप मेडल प्राप्त कयने रहथि।

अंग्रेजीक प्राध्यापक हिल साहेब एक टा एहन कथा लिखबाक लेल कहलथिन जाहि मे नायक कथाक समाप्ति मे आबय। हिनक कथा देखि ओ अत्यधिक प्रभावित भेलथिन ओ विशेष रूप सँ मानय लगलथिन।

साहित्यिक गतिविधि हिनक मुजफ्फरपुर जकाँ पटनो मे चलैत रहलनि। 1927 ई. मे मुजफ्फरपुर मे अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलनक कवि-सम्मेलन होइत रहै। आराक सरदार हरिहर सिंह ठेठ भोजपुरी मे अपन हास्य-रचना सुनाबए लगलाह,

अइली अइसन तिरहुत देस
मउगा अदमी उजबुक भेष
मन लायक भोजन न' पइली
चूड़ा दही सानके खइली...

मंच पर जनसीदन जी, शरण जी, बेनीपुरी, दिनकर, मनोरंजन, विकल जी आदि उपस्थित रहथि। ओ लोकनि हिनके उत्तर देबाक हेतु ठाढ़ क' देलथिन। ई सुनाब' लगलथिन,

भोजपुरिया सभ केहन कठोर
पुछथि तसलबा तोर कि मोर
सतुआ के मुठरा जे सान
चूड़ा-दहीक स्वाद की जान?...

थपड़ी जे पड़य लागल से रुकबाक नाम नहि लैत छल। अध्यक्ष हरिऔध जी गद्‌गद भ' अपन ग'रक माला उतारि पहिरा देलथिन। सार्वजनिक सभा मे ई हिनक कैशौर्य-जीवनक प्रथम कीर्त्ति छल। पटना कालेजक प्रो. अक्षयवट मिश्र ततेक प्रभावित भेलथिन जे 'श्रीकृष्ण' (औरंगाबादक मासिक पत्र) मे बालकवि शीर्षक सँ सचित्र परिचय प्रकाशित करौलथिन।

1929 मे ई बी.ए. क परीक्षा मे बैसलाह। अंग्रेजी साहित्यक गद्य, पद्य ओ नाटकक हिनका तेहन सुपुष्ट अध्ययन रहनि जे शेक्सपीयर पर लिखय लगलाह तँ उद्धरण दैत-दैत चारि कापी भरि देलथिन। घड़ी देखलनि तँ केवल एक्के घंटा शेष छलनि आ चारि टा प्रश्नक उत्तर बाँकिए छलनि। हिनका जतबा सामग्री छलनि ताहि हिसाबे सात-आठ घंटा और समय भेटितनि, तखन चारू उत्तर होइतनि। परंतु एत' तँ एके प्रश्नक उत्तर लिखैत-लिखैत घंटी बाजि गेलनि। छौओ दिन एहिना भेलनि। तथापि हिनका आनर्स भेटि गेलनि आ प्राय: द्वितीय स्थान भेटलनि। प्रथम स्थान नहि प्राप्त क' सकलाह तकर दुख रहि गेलनि।

जनसीदन जी 1927 मे कलकता सँ गाम घुरि आयल छलाह आ घरे पर रहि लेखन-कार्य कर' लागल छलाह। मुदा स्वास्थ्य हुनक आब नीक नहि रहै छलनि आ तेँ 'ननकिरबू'क बी.ए. क' गेला पर ओ निश्चिंत भ' क' आब गामे पर रहबाक निश्चय कयलनि। आयक कोनो निश्चित स्रोत नहि छलनि ता सभ सँ छोट बेटी सोनदाइक विवाहक हेतु द्रव्यक जोगाड़ करबाक छलनि। एहना स्थिति मे 'ननकिरबू'क आगाँ पढ़बाक प्रश्न पर सोचल नहि जा सकैत छल। तेँ 1929 मे बी.ए. कयलाक बाद एक वर्ष लेल हिनका अध्ययन स्थगित कर' पड़लनि।

मुदा जनसीदन जी 'ननकिरबू' केँ और आगाँ पढ़ब' चाहै छलाह, से महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 12 फरवरी, 1930 केँ जनसीदन जी केँ लिखल पत्र सँ सिद्ध होइत अछि। द्विवेदी जी लिखने रहथिन, 'यह जानकार अत्यानंद हुआ कि आप अच्छी तरह हैं और अपने आत्मजों को उच्च शिक्षा देने के विचार में हैं। बड़े बेटे को जरूर एम.ए. में दाखिल कराइए।' ओहि वर्ष अर्थात् 1930 ई. मे पुस्तक भंडारक शाखा पटना मे खुजल। पुस्तक भंडारक अधिष्ठाता आचार्य रामलोचन शरण सँ जनसीदनजी केँ ओहि समय सँ मित्रता छलनि जखन ओ दरभंगा मे *मिथिला मिहिर*मे छलाह। ई निश्चय भेल जे' 'ननकिरबू' पटना मे पुस्तक भंडार मे रहि एम.ए. क पढ़ाइ करताह। पटना कालेज मे हिनक नाम लिखाओल गेल। बी.ए. मे दर्शन-शास्त्र मे हिनका 'डिस्टिंक्शन' आयल रहनि, तेँ विभागाध्यक्ष श्री चारु चंद्र सिन्हाक प्रोत्साहन पर एम.ए. मे ई दर्शन अपन विषय रखलनि। हिनक गुरु रहथिन डा. धीरेंद्र मोहन दत्त, प्रो. गंगा नाथ भट्टाचार्य, प्रो. यमुना प्रसाद, प्रो. निर्मल राय घोष आदि। जनसीदन जी केँ जेना साहित्यिक सर्जनाक लेल श्रीनगर तथा बाद मे इंडियन प्रेस,

प्रयाग उपयुक्त क्षेत्र तथा वातावरण भेटि गेल रहनि, तहिना पुस्तक भंडार हिनक प्रतिभाक लेल अनुकूल भेलनि आ ओत' साहित्य-सत्संगक संग-संग ई अपन अध्ययनक क्रम जारी रखलनि। 1932 ई. मे एम.ए.क परीक्षा मे ई. पटना विश्वविद्यालय मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त क' स्वर्ण पदक सँ विभूषित भेलाह।

साहित्य-क्षेत्र मे प्रवेश

1929 ई. मे बी.ए. कयलाक बाद जखन हरिमोहन झा अध्ययन स्थगित क' गाम आबि गेलाह, तँ एक दिन आचार्य रामलोचन शरणक पत्र भेटलनि, 'छुट्टी मे घर पर व्यर्थ समय क्यों बिता रहे हो? कुछ दिनों के लिए यहाँ चले आओ।'

शरणजी सँ हिनक पहिल साक्षात्कार, जे दरभंगा मे प्राय: 1922 मे भेल रहनि, सेहो मनोरंजक अछि। एक दिन ई डेरा पर बैसल किछु लिखि रहल छलाह। जनसीदन जी कतहु बूल' गेल रहथि। हुनका तकैत एक टा सज्जन पहुँचलाह। हुनका अबिते अपन कविताक कापी पर हिसाबक बही राखि हाथ मे पेंसिल ल' लेने रहथि बालक हरिमोहन। मुदा आगंतुक सज्जनक तीक्ष्ण दृष्टि सँ हिनक चलाकी नुकायल नहि रहल। ओ पुछलथिन, 'क्यों जी, अभी क्या लिख रहे थे?' ई कहलथिन, 'नहि किछु, चक्रवर्ती अंकगणित सँ एक टा त्रैराशिक बना रहल छी।' ओ हँसि क' कहलथिन, 'उस कापी को क्यों छिपा रहो हो? लाओ तो देखें।' ओ कापी ल'क' हिनक बाल-रचना देख' लगलथिन। कहलथिन, 'क्यों जी, तुम तो अच्छा लिख लेते हो? कहीं से नकल तो नहीं की है; क्योंकि इसमें कहीं कुछ अशुद्धि नहीं है।' ई कहलथिन, 'व्याकरण चंद्रोदय'क नियम सभ हम खूब ध्यानपूर्वक बुझि लेने छी, ते ँ अशुद्धि नहि होइत अछि।' आगंतुक सज्जन मुस्कुराय लगलाह। बाद मे हिनका जनसीदन जी सँ ज्ञात भेलनि जे यैह सज्जन आचार्य रामलोचन शरण छलाह 'व्याकरण चंद्रोदय'क लेखक।

तकरा बाद शरणजी सँ कय बेर भेंट भेलनि। ओ हिनक प्रतिभा सँ बड़ प्रभावित रहथिन। तँ 1929 मे जखन हुनक आमंत्रण भेटलनि, तँ जनसीदन जी सहर्ष हिनका पुस्तक भंडार लहेरिया-सरायक लेल विदा क' देलथिन।

पुस्तक भंडार ओहि समय बिहारक प्रमुख साहित्यिक केंद्र छल आ मास्टर साहेब अर्थात आचार्य रामलोचन शरण वास्तविक अर्थ मे तत्कालीन साहित्यिक वर्गक गुरु छलाह। पुस्तक भंडार हरिमोहन झाक लेल शिक्षाक भंडार साबित भेल आ शरण जीक रूप मे हिनका आदर्श साहित्यिक गुरु भेटि गेलथिन। आचार्य



कोरा मे पोती रूपाक संग

रामलोचन शरण गुणग्राहक छलाह आ उदीयमान प्रतिभा केँ प्रोत्साहन-प्रश्रय दैत छलथिन। पुस्तक भंडार मे एक सँ एक सिद्धहस्त लेखक-कवि-कलाकार रहैत छलाह। *बालक* संपादक रामवृक्ष बेनीपुरीक ठहाका सँ भंडार गुंजैत रहैत छल। आचार्य शिवपूजन सहाय, उपेंद्र महारथी, अच्युतानंद दत्त, पं. कपिलेश्वर मिश्र, कमल नारायण झा 'कमलेश', जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, छविनाथ पांडेय, जटाधर शर्मा 'विकल', भोला लाल दास, पं. कुशेश्वर कुमर, परमानंद दत्त 'परमार्थी', दिनकर, वियोगी, प्रिंसिपल मनोरंजन, नेपाली, मुक्त, द्विज, आरसी, आदि सभ गोटे भंडार-परिवारक सदस्य छलाह। लहेरियासराय मे 'भंडार'क बीचो-बीच पानक आकारक मैदान रहैक, जकर हरियर दूभि पर नित्य संध्याकाल सरस साहित्य-चर्चा होइत छल। हरिमोहन झाक लेल ई वातावरण आ परिवेश अत्यंत अनुकूल ओ गुणकारी भेलनि आ ओ साहित्य क्षेत्र मे जमि क' प्रवेश कयलनि। यद्यपि साहित्य रचना ई नेने अवस्था सँ करैत आबि रहल छलाह आ एहि सँ पूर्व कतेको कवि-सम्मेलन आदि मे भाग ल' यश प्राप्त कयने छलाह, तथापि साहित्यक क्षेत्र मे विधिवत आ सम्यक प्रवेश हिनक 1929 ई. मे पुस्तक भंडार लहेरियासराय अयले पर भेलनि।

1930-32 मे दरभंगा गोशाला मे एक गो साहित्य सम्मेलनक अधिवेशन छल। ओहि मे समस्या छल—'समर में'। आन सभ कवि एकर पूर्ति वीर रस मे कयने रहथि, किंतु हिनक पूर्ति हास्य-रस मे छल जे सभ केँ खूब नीक लगलै। एक गोटे 51 टाकाक पुरस्कार आ दोसर गोटे स्वर्णपदक देबाक घोषणा कयलथिन।

मास्टर साहेब मिथिला-मैथिलीक अनन्य भक्त छलाह। अपन प्रेसक नाम विद्यापति प्रेस रखने छलाह। 'विद्यापति प्रेस'मे मिथिलाक्षरक प्रथम टाइप बनबा क' मँगौने छलाह। 'विद्यापति पंचाग' बहार करैत छलाह। 'विद्यापति पदावली' प्रकाशित कयने छलाह। ओही वर्ष अर्थात् 1929 ई. मे ओ *मिथिला* नाम सँ मैथिली मासिक पत्रक प्रकाशनक आरंभ कयलनि। संपादनक भार पं. कुशेश्वर कुमर तथा भोलालाल दास केँ देल गेलनि। हास्य-विनोद स्तंभक भार हरिमोहन झा केँ भेटलनि। *मिथिलाक* अंक सभ मे एकाधिक रचना—कविता, लेख आदि हिनक रहैत छलनि। मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास हिनक *कन्यादानक* श्रीगणेश एही पत्रिका सँ भेल। तकरो मनोरंजक इतिहास अछि। एक दिन भोलालाल दास आबि हिनक ठोंठ पर सवार भ' गेलथिन जे *मिथिलाक* अंतिम फर्मा अहीं क लेख वेत्रेक रुकल अछि, से जल्दी सँ किछु लिखि क'द' दिऔ। ओहि समय हिनक छोट बहिन (सोनदाइ)क कन्यादानक चर्चा चेलैत रहनि। हिनक माय गाम पर एहि प्रसंग अड़ोसिन-पड़ोसिन सँ जे वार्त्तालाप एक दिन करैत रहथि, से हिनका ततेक रुचिगर लगलनि जे ई तकरा चुपचाप नोट क' लेने रहथि। राति भरि मे ओही गप्प पर रंग पालिश चढ़ा ई *मिथिला*मे छप'क हेतु द' देलथिन आ सैह भेल *कन्यादानक* श्रीगणेश। पत्रिका तँ एक वर्षक बाद बंद भ' गेल, मुदा *कन्यादानक* हेतु पाठकक मन मे तेहन उत्सुकता छोड़ि गेल जे पाठकक तगेदा पर तगेदा आब' लागल आ लेखक केँ ओ उपन्यास तँ पूरा क'क' छपाबहि पड़लनि, ओकर दोसरो भाग *द्विरागमन* हुनका बाद मे लिख' पड़लनि।

ओहि समय अर्थात् 1929-30 मे हरिमोहन झाक प्रतिभा एकाधिक दिशा मे प्रवाहित भ' रहल छलनि। मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि ओ पत्रिकाक लेल तथा कवि-गोष्ठी आदिक हेतु कथा, कविता, लेख आदि लिखि क' कय रहल छलाह, संगहि हिन्दी ओ संस्कृत मे छात्रोपयोगी पोथी तैयार क' रहल छलाह। एहन पोथी मे हिनक 'तीस दिन मे संस्कृत', 'तीस दिन मे अंग्रेजी', 'संस्कृत रचना चन्द्रोदय', 'संस्कृत अनुवाद चन्द्रिका', 'रामकथा', 'कृष्णकथा' आदि बड़ प्रसिद्ध भेलनि। जटिल विषय केँ रोचक शैली मे सुबोध तथा रम्य बना एहि पोथि सभ मे तेना प्रस्तुत कयल गेल, जे छात्र केँ सुगमतापूर्वक हृदयङ्गम भ' जाइक। व्याकरण ओ रचना विषयक ई पोथी सभ सर्वथा मौलिक एक टा नवीन पद्धतिक आविष्कार कयलक। 'रामकथा' ओ 'कृष्णकथा' मे तहिना सरल आ सुगम संस्कृत मे राम ओ कृष्णक कथा बड़ रोचक शैली मे प्रस्तुत कयल गेल छल। 1929 सँ ल' क' 1932 धरि, जा हरिमोहन झा एम.ए. कयलनि, एहि प्रकारक पोथी ओ लिखैत रहलाह।

कार्यकाल

जुलाइ 1933 मे हरिमोहन झाक नियुक्ति बी.एन. कालेज मे दर्शन-शास्त्रक व्याख्याताक पद पर भ' गेलनि। एहि सँ पूर्व अर्थात् मइ 1933 मे *कन्यादान* उपन्यास पाठक लोकनिक तगेदा पर पुस्तकाकार बहरा गेल रहय। नौकरी मे अयलाक बाद कालेजक समीपे एक टा डेरा लेलनि आ गामपर सँ परिवार आनि रहय लगलाह। 1930 मे जखन ई एम.ए. मे पढ़ैत छलाह, हिनक प्रथम सन्तान कन्या (फूलदाइ)क जन्म भ' चुकल छलनि। पटना मे अयलाक बाद अपन छोट भाय इन्द्रमोहन केँ सेहो पटना आनि टी.के. घोष एकेडमी मे नाम लिखा देलथिन। पटना आ गामक दुनू बिन्दु पर जीवन सम गति सँ चलय लगलनि।

जाहि समय प्रो. हरिमोहन झा बी.एन. कालेज 'ज्वायन' कयलनि, ताहि समय कालेज मे आन यशस्वी विद्वान प्राध्यापक रहथि—अंग्रेजी मे प्रो. मोइनुल हक (जे बाद मे प्रिंसिपल भेलाह), हिन्दी मे डॉ. जनार्दन मिश्र (जे जर्मनी सँ डाक्टरेट ल' क' आयल छलाह), इतिहास मे प्रो. सतीश चन्द्र मिश्र (जे बाद मे मुख्य न्यायाधीश भेलाह) आदि। ओहि समय पटना मे राय बहादुर पं. जयानन्द कुमर, जे बिहारक पोस्टमास्टर जेनरल रहथि आ जनसीदन जीक छोट ममिऔत भाय छलथिन, रहैत छलाह। मैथिल समाज मे हुनकर ओहने आदरपूर्ण स्थान छलनि जेना भूमिहार समाज मे सर गणेश दत्तक अथवा कायस्थ-समाज मे डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हाक। संध्याकालीन गोष्ठी मे कय तरहक लोकक जुटान होइत छल आ व्यंग्य-विनोद वार्त्ता होइत छल। जावत ओ छलाह, हुनक वास स्थान प्रमुख सामाजिक केन्द्र बनल रहल, प्रो. झा नियमित रूप सँ प्रत्येक छुट्टीक दिन ओतय जाय लगलाह।

दर्शन शास्त्रक व्याख्याता भेलाक बाद प्रो. झाक बहुआयामी प्रतिभा दर्शनक ग्रन्थ प्रणयन दिस मुड़ल। ई आठ खंड मे 'भारतीय दर्शन परिचय' तैयार करबाक योजना बनौलनि-(1) न्यायदर्शन, (2) वैशेषिक दर्शन, (3) सांख्य दर्शन, (4) योग दर्शन, (5) मीमांसा दर्शन, (6) वेदान्त दर्शन, (7) नास्तिक दर्शन तथा (8) दर्शन समीक्षा। उपर्युक्त आठ खंड मे सँ मात्र दू खंड छपि सकल। प्रो. झा तातील मे गाम नहि जा लहेरियासराय चल जाइत छलाह आ ओत' भंडार मे पोथी लिखबाक काज करथि। एहि तरहेँ न्याय दर्शन 1940 मे आ वैशेषिक दर्शन 1943 मे छपल। पाठक आ मित्र लोकनिक आग्रह पर *द्विरागमनो* 1943 मे एहिना बहरायल। दर्शन सन क्लिष्ट आ जटिल विषय केँ ई अपन पोथी मे बड़ सरल आ सुबोध रीति सँ रखलनि अछि। ताहि समय मे हिन्दी मे दर्शन पर एहन पोथीक नितान्त अभाव रहैक। कहबाक काज नहि जे दर्शन केँ आ एहि सँ पूर्व संस्कृत, अंग्रेजी केँ सरल रूप मे प्रस्तुत करबाक एहि महत् कार्यक पाछाँ आचार्य रामलोचन शरणक प्रेरणा छलनि।

1934क भूकम्प मे गाम परक भीतक घर धराशायी भ' गेल छलनि। तकरा स्थान पर टटघर छलनि, जकरा पक्का मे परिणत होइत-होइत छओ वर्ष लागि गेल। 1940 मे 'शांतिकुंज' नामक पक्का बनिक' ठाढ़ भेल जे आइयो सड़क पर दने जाइत बटोहीक ध्यान आकर्षित करैत अछि। ई बात दोसर जे आइ उचित देखरेख आ मरम्मति बिना ओ पक्का ढहल जा रहल अछि।

गाम पर पक्का मकान बनयबाक ई काज जे भ' सकलनि तकर सभ टा श्रेय चनौरक बड़का बहिनोय जगदीश झा केँ छलनि। हुनक जेठ पुत्र 'चन्द्र' नाना जनसीदनजीक संरक्षण मे रहि ओतहि पढ़' लगलथिन। बाद मे तिथराक दोसर नाति 'सूर्य' सेहो बाजितेपुर आबि पढ़' लगलथिन। किछु दिन बाद सतलखाक तेसर नाति 'विष्णु' सेहो आबि गेलथिन। भूकम्पेक वर्ष अर्थात् अगस्त 1934 मे प्रो. झाक ज्येष्ठ बालक गोपालजीक जन्म भेलनि आ तकर दू वर्ष बाद 1936 मे दोसर पुत्र लखनजी जन्म लेलथिन। 1940 मे अर्थात् जाहि वर्ष मकान बनल, तेसर पुत्र रमनजीक जन्म भेलनि। जनसीदन जी नाती-पोता सभ सँ भरल-पुरल परिवार मध्य रहैत छलाह आ सभ केँ संरक्षण दैत छलाह।

प्रो. झा पटना-लहेरियासराय-गाम करैत दर्शनक संग-संग साहित्य-सेवा कर' लगलाह। एहि बीच ई कालेज होस्टलक सुपरेंटेंडेंट भ' गेलाह। छोट भाइ 'इन्द्र' मैट्रिक पास क' कॉलेज मे पढ़' लगलथिन। 1939 मे हुनक विवाहो भ' गेलनि—सबौरक पं. दुर्गादत्त झाक कन्या लक्ष्मी देवीक संग। बी.ए. कयलाक बाद जीविकाक हेतु ओ किछु दिन गाम सँ तीन माइल पर पातेपुर हाइ स्कूल मे मास्टरक काज कयलनि, पश्चात् कलकत्ता चलि गेलाह। जनसीदन जी केँ दमाक रोग रहनि। 1939 इ. मे ओ भीषण रूप सँ दुखित पड़लाह आ हुनका पटना आनल गेल। छओ मासक चिकित्सोपरान्त ओ आरोग्य लाभ क' गाम घुरलाह। ओहि समय प्रो. झा बी.एन. कालेजक सामने वला गली मे रहैत छलाह।

पारिवारिक एहि सभ दायित्वक बीच प्रो. झाक लेखनी सतत चलैत रहलनि। आ ओ समान रूप सँ दर्शन आ मैथिली साहित्यक सेवा करैत रहलाह। 1937 मे *भारतीक* प्रकाशन भेला पर ओहि मे ई नियमित रूपेँ लिख' लगलाह। 1940 मे *न्याय दर्शन* बहरयलनि। 1943 मे *द्विरागमन* आ *वैशेषिक दर्शन*। 1945 मे *प्रणम्य देवता*। 1948 मे *खट्टर ककाक तरंग*। 1949 मे *रंगशाला*। लगैत अछि ई '29सँ ल' क' '49 धरिक समय प्रो. हरिमोहन झाक लेखकक लेल सभ सँ बेसी ऊर्जात्मक रहल।

मुदा प्रो. झाक मूल प्रवृत्ति मैथिली साहित्य दिस रहनि से आगाँ जा क' एहि बात सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे आगाँक पूरा समय ओ एक तरह सँ मैथिलिए केँ देब' लगलाह आ *भारतीय दर्शन परिचयक* हुनक योजना दू खंडक बाद थस ल' लेलकनि।

1940 मे ई कदमकुआँ मे डेरा ल' क' रह' लगलाह। इन्द्र बाबू कलकत्ता सँ घुरि अयलाह आ संग रहि, *आर्यावर्तक* सह-सम्पादक रूप मे काज कर' लगलाह। 1946 मे कन्या फूलदाइक विवाह भेलनि—नेहराक वकील पं. हरीन्द्र झाक सुपत्र शैलेन्द्र मोहन झा सँ। 1947 मे कदमकुआँ बला डेरा मे दुनू पुत्र गोपालजी-लखनजीक उपनयन संस्कार भेलनि। जनसीदनजी पटना आयल छलाह आ जेष्ठ पौत्र गोपाल जीक आचार्य भेल छलाह। लखन जीक आचार्य भेलथिन नाना पं. सुन्दरलाल झा। एहि बीच परिवार मे टू टा भयंकर दुर्घटना भेलनि। 1947 मे इन्द्र बाबूक जेठ सन्तान बालक ललन जीक पाँच वर्षक अवस्था मे आकस्मिक मृत्यु भ' गेलनि आ तकर बाद स्वयं इन्द्र बाबू दुर्घटनाग्रस्त भ' अक्तूबर 1949 मे दिवंगत भ' गेलाह। ओहि समय इन्द्र बाबू मात्र 30 वर्षक रहथि। इन्द्र बाबू हँसमुख स्वभावक गीत-हारमोनियम-इसराज सँ ल' क' शतरंज ओ आन खेल मे रुचि लेनिहार एक टा सुदर्शन ओ सक्रिय युवक रहथि। परिवार मे ई दुनू एक-पर-एक वज्रपात वृद्ध जनसीदनजी केँ तेना तोड़ि देलकनि जे ओ बेसी दिन तकरा बाद जीवित नहि रहि सकलाह। 20 जून, 1951 केँ हुनक निधन भ' गेलनि।

उपनयनक बाद 1947 इ. मे गोपाल जी-लखन जीक नाम टी. के. घोष एकेडमी मे लिखा देल गेल रहनि। 1948 मे प्रो. हरिमोहन झाक नियुक्ति पटना कॉलेज मे भ' गेलनि जत' विभागाध्यक्ष गुरु डा. धीरेन्द्र मोहन दत्तक सम्पर्क आर घनिष्ठ भेलनि। ओ हिनक विद्वत्ताक प्रशंसक रहथिन आ *वैशेषिक दर्शनक* भूमिका लिखने रहथिन। पटना कालेज अयला पर प्रो. झाक कार्यकलाप आर विस्तार पयलकनि। एक दिस दर्शन सम्बन्धी व्यस्तता सभ बेसी रह' लगलनि,

दोसर दिस साहित्यसर्जन ई अबाध गति सँ करैत रहलाह। प्रायः मैथिली साहित्य केँ 1948 सँ 60 धरिक अवधि मध्य प्रो. हरिमोहन झाक पोथी सर्वाधिक भेटल अछि। 1952 मे *निगमन तर्कशास्त्र* तथा *भारतीय दर्शन* (अनुवाद), 1953 मे *तीर्थयात्रा* (पाकेट साइज), 1955 मे *खट्टर कका* (दोसर परिवर्द्धित संस्करण), आ 1960 मे *चर्चरी* छपलनि। लेखक हरिमोहन झा एहि अवधि मे सर्वाधिक उर्वर छलाह, से तत्कालीन पत्रिका *मिथिला-ज्योति, स्वदेश, मिथिला दर्शन*क फाइल देखला सँ बुझाइत अछि।

दोसर दिस दर्शनक क्षेत्र मे सेहो हिनक उपलब्धिक संख्या बढ़ैत गेलनि। 1953 मे डा. धीरेन्द्र मोहन दत्तक सेवा-निवृत्त भेला पर प्रो. हरिमोहन झा विभागाध्यक्ष पद पर अयलाह। बिहारक समस्त विश्वविद्यालयक अतिरिक्त आन कतेको विश्वविद्यालय सँ सम्पर्क भेलनि। *दार्शनिक* (जयपुर), *गवेषणा* (मुरादाबाद)क सम्पादक मंडलक सदस्य भेलाह। इंडियन फिलासफिकल कांग्रेस तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषदक सदस्य भेलाह। 1956 इ. मे रीडर भ' गेलाह आ 1959 इ. मे यूनिवर्सिटी प्रोफेसर। एहि बीच कतेक गोटे हिनक मार्गदर्शन मे डाक्टरेट कयलनि आ कतेक सभा सम्मेलन मे ई अध्यक्षता आ/अथवा भाषण कयलनि तकर बड़का टा सूची अछि। विभिन्न अवसर पर प्रो. झा द्वारा पठित लेख आ भाषण सभ महत्त्वपूर्ण छनि, जे कतहु एकत्र नहि अछि। 'दार्शनिक' त्रैमासिक मे हिनक 'परमार्थ दर्शन', 'परामनोविद्या', आदि कय टा निबन्ध हिंदी मे तथा अंग्रेजी मे, 'परमार्थ दर्शन' राधाकृष्णन सोवनियर मे तथा भारतीय नीतिशास्त्र मे अहिंसाक अवधारणा, अवच्छेदकता, फिलासफिकल क्वाटरली, दर्शन इंटरनेशनल आदि मे छपल छनि।

1952 इ. मे इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेसक सदस्य भेलाह आ तहिसा सँ प्रायः प्रत्येक अधिवेशन मे सम्मिलित होबय लगलाह। ओहि वर्ष वार्षिक अधिवेशन गुरुवर धीरेन्द्र मोहन दत्तक अध्यक्षता मे मैसूर मे भेल रहै। ताहि सँ हिनक दार्शनिक अभियान प्रारम्भ भेलनि।

1953 इ. मे बड़ोदा अधिवेशन तथा 1954 इ. मे लंका (पेरेडनिया) मे डेलीगेटक रूप मे गेलाह। 1955 इ. मे नागपुर अधिवेशन मे हिनक निबंध कांग्रेसक मुखपत्र मे प्रकाशित भेलनि। 1956 इ. मे चिदंबरम अधिवेशन मे पं. रामावतार शर्माक दर्शन पर भाषण कैलनि। 1957 इ. मे श्रीनगर अधिवेशन मे नीतिशास्त्र एवं समाज विज्ञानक अध्यक्षता कैलनि। 1958 इ. मे अहमदाबाद अधिवेशन मे वेदांत विषयक चर्चा मे भाग लेलनि। ओहि वर्ष अखिल भारतीय दर्शन परिषदक बीकानेर अधिवेशन मे तर्कशास्त्र एवं तत्व मीमांसा विभागक अध्यक्षता कैलनि। 1958 इ. मे कटक अधिवेशन मे 'कन्सेप्ट ऑफ निगेशन' पर अपन निबंध पढ़लनि।

1960 इ. मे भारत सरकारक अंतर्गत तकनीकी 'पारिभाषिक शब्द निर्माण'क हेतु दर्शन समितिक विशेषज्ञक रूप मे बिहार सँ आमंत्रित कयल गेलाह।

अपन कार्यकाल मे कतेक परीक्षण, परिशोधन, अंतर्वीक्षा, नियुक्ति आदि कार्यक हेतु ई विभिन्न विश्वविद्याल सँ संबद्ध रहलाह। एहि ल' क' कश्मीर सँ लंका धरि भ' अयलाह। भारतीय दर्शनक प्रसादात् संपूर्ण भारत दर्शन भ' गेलनि।

1949 इ. मे इंडियन फिलॉसौफिकल कांग्रेसक अधिवेशन पटना मे भेल रहैक। ओहि मे हिनका पंडित सभाक संयोजन करबाक भार भेटल रहनि।

1950 इ. मे बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलनक अधिवेशन गया मे भेलैक। ओहि मे ई दर्शन शाखाक अध्यक्षता कयलनि।

ओहि समय बिहार दर्शन परिषद्‌क स्थापना भेल। आचार्य दत्तक प्रेरणा और प्रो. रामजी सिंहक अदम्य उत्साह सँ ओकर प्रथम अधिवेशन बेगूसराय मे भेलैक। तदुत्तर पटना, मुजफ्फरपुर आदि विभिन्न स्थान मे ओकर अधिवेशन होइत रहलैक जाहि मे प्रो. झाक प्रमुख भूमिका रहैत छलनि। परिषद्‌क एक टा महत्त्वपूर्ण कृति ई भेलैक जे आचार्य दत्तक एक स्मारक ग्रंथ 'वर्ल्ड पर्सक्टिव इन फिलॉसौफी एंड रिलीजन' प्रस्तुत भेल जकर भूमिका प्रो. झा लिखने छलाह 'एट द फीट ऑफ द ग्रेट गुरु'। 1952 मे पटना विश्वविद्यालयक कुलपति श्री शार्ङ्गधर सिंहक आग्रह पर ई निगमन तर्कशास्त्र पर हिंदी मे मौलिक ग्रंथ लिखलनि जे विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित ओ पाठ्य ग्रंथ निर्धारित भेल। एहू पोथी मे प्रो. झा अपन रोचक ओ सरल शैली केँ अक्षुण्ण रखलनि।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित म.म. रामावतार शर्माक 'यूरोपीय दर्शन' मे हेगेल धरिक वर्णन छलैक। परिषद्‌क अनुरोध पर ई समकालीन दर्शनक परिचय लिखि ओहि मे जोड़लनि।

तत्कालीन राज्यपाल श्री आर.आर. दिवाकरक आदेश पर ई प्राचीन, मध्यकालीन और अर्वाचीन बिहारक दार्शनिक अवदान पर तीन अध्याय लिखिक' देलथिन जे ओ अपन संपादित ग्रंथ *बिहार थ्रू द एजेज* मे समाविष्ट कयलथिन।

आचार्यदत्त अपन सुप्रसिद्ध कृति *इंट्रोडक्शन टू इंडियन फिलॉसोफी*क हिंदी रूपांतर करबाक भार हिनका देलथिन जे ई अपन सहयोगी प्रो. नित्यानंद मिश्रक संग कैलनि। एहि पोथी मे प्रो. हरिमोहन झाक कुशल अनुवादक रूपक दर्शन कयल जा सकैछ। अनुवाद मूलक स्वाद दैछ।

समस्त राज्य आ देश मे प्रो. झाक शिष्य परंपरा पसरल अछि ओहि मे सँ कतेको व्यक्ति विश्वविद्यालय मे तथा अन्यत्र नीक-नीक पद पर कार्यरत छथि। ओहि बीच विभिन्न विश्वविद्यालयक अनेको शोधकर्त्ताक निर्देशन ओ परीक्षण कय ई डॉक्टरेट डिग्री देऔलनि। किछु प्रमुख नाम जछि –

प्रो. उमा गुप्ता (पटना विश्वविद्यालय) 'वेद मे भौतिकवाद', प्रो. मधुसूदन प्रसाद (पटना वि.वि.) 'राम मोहन राय'; मगध महिला कॉलेजक प्रो. इंदिराशरण 'भागवत में भक्ति दर्शन'; अरविंद महिला कॉलेजक प्रो. रमासेन 'गांधी दर्शन'; आंध्रक प्रो. चिरंजीविनी 'रामायण में समाज दर्शन'; नेपालक श्री वीरेन्द्र कुमार मिश्र 'महाभारत में नीति तत्त्व'; सुंदरवती महिला कॉलेजक रेवा ऐकट 'अहिंसा दर्शन'; मिथिला विश्वविद्यालयक प्रो. रघुवंश झा 'बृहदारण्यक उपनिषद्'; प्रो. अमर नाथ झा (मिथिला वि.वि.) 'चंदा झा'; कलकत्ता विश्वविद्यालयक प्रो. इलारानी सिंह 'मैथिली लोकगीत'; प्रो. रामाशीष प्रसाद (राँची विश्वविद्यालय) 'बुद्धि और अंर्तदृष्टि', प्रो. श्रीकृष्ण झा (संस्कृत वि.वि.) 'सांख्य दर्शन', प्रो. कृष्ण कुमार झा (बिहार वि.वि.) 'वैवाहिक संस्था'; प्रो. चंद्रमोहन झा (बिहार वि.वि.) 'असत् का प्रत्यय', प्रो. वशिष्ट नारायण तिवारी (इलाहाबाद वि.वि.) 'बंधन का विश्लेषण'; प्रो. अशोक कुमार लाल (जबलपुर वि.वि.) 'मोक्ष का प्रत्यय'; श्री रा.के. पांडेय 'भारतीय दर्शन मे प्रकृति का स्वरूप' तथा श्रीमती मीरा मालवीय (दुनू इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 'कांट दर्शन'; प्रो. सागर मल जैन 'जैन दर्शन'; श्री देवेन्द्र प्रसाद (गोरखपुर विश्वविद्यालय) 'अरविन्द दर्शन'; श्री राजेन्द्र झा (जबलपुर वि.वि.) 'हिंदू दर्शन पर बौद्ध धर्म का प्रभाव', उज्जैन वि.वि. क श्री शिवाजी 'इसाई और वैष्णव धर्म', 'प्रो. श्री सैमुएल' (जबलपुर विश्वविद्यालय) 'सेंट ऐक्टिनस का दर्शन' आदि।

जनसीदनजी गाम पर रहथिन तँ प्रो. झा गाम परक चिंता सँ बहुत किछु मुक्त रहै छलाह। जनसीदनजीक मृत्युपरांत पटनाक संग-संग गामोक आश्रमक संपूर्ण दायित्व हिनकहि माथ पर आबि गेलनि। 1948 मे पटना कॉलेज आबि गेला पर डेरा रानीघाट मठिया मे ल' गेल

रहथि। ओत्तहि चारिम पुत्र (भुवन जी)क जन्म 1949 मे भेलनि। पिताक मृत्यु भेला पर माय आ भाभहुक संग जेठकी भतीजी (रेणु) केँ गाम पर छोड़ि पत्नी-धिया-पुताक संग दुनू छोटकी भतीजी (रत्ना ओ रमा) केँ पटना ल' अनलथिन। रत्ना ओ रमा आर्य कन्या विद्यालय मे पढ़य लगलीह। रमनजी ओ भुवन जीक नाम सेहो स्कूल मे लिखाओल गेल। 1957 मे गोपाल जी मनोविज्ञान सँ एम.ए. कयलनि आ बाद मे नियोजन पदाधिकारी नियुक्त भेलाह। 1958 मे हुनक विवाह पं. रामभद्र झाक पौत्री ओ आनंद कुमार ओझाक पुत्री आशा झाक संग दिल्ली मे भेलनि। ओहि वर्ष लखनजी दर्शनशास्त्र सँ एम.ए. क' पहिने मधुबनी तथा बाद मे राँची विश्वविद्यालय मे व्याख्याता नियुक्त भेलाह। 1963 इ. मे रत्नाक विवाह स्व. विश्वम्भर चौधरीक सुपुत्र विनय चौधरी सँ तथा 1966 इ. मे रमाक विवाह श्री सीताराम झा आयकर कमिश्नरक अनुज दयानंद झाक संग भेलनि। ओहि सँ पूर्व गाम पर जेठकी भतीजी रेणुक विवाह मढ़ेयाक धनेश्वर झा सँ भ' चुकल रहनि। ओ विवाहक किछु वर्ष बाद दिवंगता भ' गेल छलीह।

गाम आ पटनाक एहि समस्या सभक अछैत जँ प्रो. हरिमोहन झा एहू अवधि मे मैथिली साहित्य आ दर्शन केँ पुष्ट रूप सँ समृद्ध करैत रहलाह तँ एकर श्रेय प्रो. हरिमोहन झाक धर्मपत्नी सुभद्रा झा केँ जाइत छनि। पत्नी पटनेक डेराक नहि, गामोक आश्रमक कोनो काज लेल हिनका कहियो चिंता नहि कर' देलथिन। ओ एसकरे सभ टा सम्भारने रहलीह आ हिनका लिखबा-पढ़बाक काज लेल स्वतंत्र क' देलथिन। ततबे नहि, ओ पैताबा खोजिक' देब' सँ ल' हिनका कंघी क' देबा धरि सभ हिनक काज अपना उपर लेने छलीह। प्रो. झा केँ अपना किछु नहि करबाक प्रयोजन छलनि। ई सुविधा प्रो. झा केँ हाल धरि छलनि, अगस्त' 82 धरि, जा सुभद्रा झा दिवंगता नहि भ' गेलीह।

सुभद्रा झा सही अर्थ मे हिनक सहधर्मिणी छलथिन कारण जे राज्य मे वा ओहि सँ बाहर जतय कतहु प्रो. झा गेलाह, संग मे सहधर्मिणी रहथिन। एहि सँ सुभद्रा झाक ई लाभ भेलनि जे हुनक सामाजिक-सांस्कृतिक रुचि जगलनि। श्री सुमन वात्स्यायनक प्रोत्साहन पर ओ रेडियो वार्ता देबय लगलीह। 1955 इ. मे केंद्रीय आकाशवाणीक अखिल भारतीय सांस्कृतिक समारोह मे मिथिलाक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु अपन टीम (जाहि मे देयादिनी, लक्ष्मी देवीक अतिरिक्त आन स्त्रीगण छलथिन)क संग दिल्ली गेल छलीह। 1958 मे चेतना समिति द्वारा 'मंडन मिश्र' नाटक खेलयबाक रहैक। ताहि समय मैथिलानी लोकनि सार्वजनिक मंच पर उतरबा मे घबराइत रहथि। भारतीक भूमिका मे सुभद्रा झा साहस क' आगाँ अयलीह ओ सफलतापूर्वक भूमिका निभौलनि। एक मैथिल गृहिणी द्वारा कयल ओ प्रथम अभिनय तहिया एक सामाजिक प्रगति छल।

थोड़बे दिन बाद प्रो. हरिमोहन झा रानीघाटक युनिवर्सिटी क्वार्टर मे आबि गेल छलाह। कय टा क्वार्टर बदललनि। मुदा हिनक क्वार्टर सदा एक टा साहित्यिक केंद्र जकाँ बनि क' रहल, जत' नित्य संध्याकाल क्यो ने क्यो साहित्यिक वा विद्वान अवश्य पहुँचि जाइत छलथिन आ काव्यशास्त्र विनोदक वातावरण बनि जाइत छल।

रमनजी मैट्रिक मे पढ़ाइ छोड़ि किछु दिन पटना मे आ फेर गाम जा क' रह' लगलाह। भुवनजी संग मे रहि कॉलेज मे पढ़ै छलथिन। भुवनो जी केँ माता-पिता संग कश्मीर, नेपाल आदि कय ठाम घुमबाक मौका भेलनि। रमन जीक 1969 मे विवाह दुर्गौली (मधुबनी) क श्रीकृष्णानंद झाक बहिन वीणादेवीक संग भ' गेलनि। आ ओ गामे पर स्थायी रूप सँ रह' लगलाह। रमनजी केँ पहिल संतान बालक (दमन जी) भेलथिन, जे दुइए वर्षक अवस्था सँ दादा-दादीक संग रह' लगलथिन। मुदा 1976 इ. मे छओ वर्षक अवस्था मे दमन जीक असामयिक मृत्यु भ' गेलनि। दादा-दादीक एक टा बड़ पैघ संबल छूटि गेलनि। तकरा बादे दादा प्रो. झा बड़ भयंकर रूप सँ दुखित पड़लाह। ओ क्रमशः आरोग्य लाभ कयलनि, मुदा तकरा बाद दादी जे दुखित पड़लीह से फेर उठि नहि सकलीह।

1960 सँ 1970 धरिक समय सेहो प्रो. झाक साहित्यिक आ दार्शनिक व्यस्तातादि सँ भरल रहलनि। *मिथिला मिहिर* आदि पत्रिका मे प्रायः नियमित रूपेँ ओ लिखैत रहलाह। तकरा अतिरिक्त कवि-सम्मेलनादिक लेल कविता सेहो लिखैत रहलाह। मैथिलीक कोनो कवि-सम्मेलन प्रो. हरिमोहन झाक हास्य कविताक बिना नहि जमैत छल। कविता पढ़बाक हिनक विशिष्ट भंगिमा ओ स्वर दर्शक-श्रोता केँ मंत्रमुग्ध जकाँ क' लैत छल। प्रो. झाक मुँह सँ हिनक कविता 'ढाला झा', 'टी पार्टी' आदि अथवा खट्टरककाक कोनो तरंग जे लोकनि सुनने होयताह, से जनैत छथि जे हिनकर रचना हिनका सँ सुनब एक टा विशिष्ट अनुभव होइत छल।

प्रो. झा मे पैरोडी बनयबाक अद्भुत क्षमता छलनि। किछुए शब्दक हेरफेर सँ ई अर्थ बदलि दैत छलथिन। एक बेर दिनकर जीक प्रसिद्ध 'हिमालय' कविता 'मेरे नगपति मेरे विशाल'मे किछु शब्दांतर क' वीर रसक संपूर्ण कविता केँ श्रृंगार रसक बना देलथिन। दिनकर जी हँसैत-हँसैत लोट-पोट भ' गेलाह।

तहिना एक बेर बच्चन जी केँ हुनक 'इस पार प्रिये तुम हो मधु है, उस पार न जाने क्या होगा'क पैरोडी बना क' सुनौलथिन – 'इस पार प्रिये गाड़ी चलती, उस पार न जाने क्या होगा?' ओहि समय उत्तर बिहार मे बाढ़िक कारणें रेल बंद रहैक। ओहि पैरोडीक ई पंक्ति, 'खाकर कुनैन तेरे सुनैन कितने दिन रहने पावेंगे' सुनि बच्चन जी हिनका अंक मे समेटि लेलथिन।

एहि समय मे काव्य-शास्त्र-विनोदक एक टा और अनुपम केंद्र छल अमरनाथ बाबूक आवास। ओत' कविता ओ हास्यक संग मधुर सेहो चलैत रहैत छल। ओहि गोष्ठी मे ई नव-नव रचना सुनबैत छलाह।

1963 इ. मे दिल्ली मे पं. जवाहरलाल नेहरूक अध्यक्षता मे मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी भेल रहै। ओहि मे हिनका सँ 'माछ' शीर्षक 'तरंग' सुनि नेहरू जी बहुत प्रसन्न भेल रहथिन आ बगल मे बैसल सत्यनारायण सिंह सँ जमीरी नेबोक अर्थ पूछ' लागल रहथिन।

प्रो. हरिमोहन झाक साहित्य सेवाक एक टा प्रमुख आयाम अछि—हास्य व्यंग्यपूर्ण कविता। 1935 इ. मे मिथिलांक मे 'मिथिलाक मिहिर' सँ शीर्षक कविता छपल। तकर बाद 'ढाला झा' 'बुचकुन बाबा', 'निरसन बाबा', 'पंडित ओ मेम', 'पंडित सँ' आदि-आदि कविताक एक नम्हर सूची अछि जे विभिन्न पत्र पत्रिका मे प्रकाशित, रेडियो सँ प्रसारित ओ मंच पर प्रशंसित भेल अछि। (आब संग्रह रूप सेहो उपलब्ध)

1948 इ. मे ओरिएंटल कॉन्फ्रेंसक दरभंगा अधिवेशन मे आयोजित पंडित सभा मे ई 'हे पंडित आबहु दया करू, जितिया पावनि लय नइँ झगड़ू' कविता सुनयबाक साहस कयने रहथि।

सहरसा मे एक बेर कवि सम्मेलन मे ई क्रम भ' गेल जे मधुप जी अपन करुण कविता सँ सभ केँ कना देथि तँ प्रो. हरिमोहन झा अपन हास्य कविता सँ सभ केँ हँसा देथि।

प्रो. झाक बहुगामी प्रतिभा खाली मैथिली कवि सम्मेलन धरि सीमित नहि छलनि, हिंदी काव्य-गोष्ठी वा उर्दूक मुशायरा मे सेहो ओ ततबे लोकप्रिय छलाह। हिनक 'पटना स्तोत्र', 'गुलाबी छींटे', 'शेरे अस्पताल', 'एक चोर और पाँच दार्शनिक' आदि बड़ प्रसिद्ध भेलनि। हिनक प्रायः तत्कालीन सभ टा हास्य-व्यंग्य हिंदी कविता वाचाल बाँकीपुरीक 'तिकड़म' मे

छपल छनि। ताहि दिन सभा-गोष्ठी आदिक रौनक दुइए गोटे बूझल जाइत छलाह—एक पटना लॉ कालेजक प्रिंसिपल भगवती बाबू आ दोसर प्रो. हरिमोहन झा, जिनका माइक धरैत देरी श्रोता हँस' लगैत छल आ थपड़ी पीट' लगैत छल। कॉलेजक पिकनिक हो, वा होस्टलक फाउंडेशन डे वा एहन कोनो साहित्यिक-सांस्कृतिक समारोह, प्रो. झा अपन महत्त्वपूर्ण भूमिका रखै छलाह। हिनक भाषाणो कविता सँ कम मनोरंजक नइँ होइत छलनि।

तहिना *नई धारा* मे छपल 'सरकारी हिंदी का नमूना' आ 'सरकंडावाद' तथा 'उत्तर बिहार' मे 'द्वादश निदान' आ 'क्या बिहार में जातीयता है?' आ 'भाषा' मे प्रकाशित 'हिंदी के अनेकार्थक वाक्य' सन कतेको हिनक रचनाक उद्धार पत्र-पत्रिकाक फाइल सँ कयल जा सकैत अछि।

एहि बीच साहित्यिक उपलब्धिक संग-संग प्रो. झा केँ दार्शनिक उपलब्धि सेहो कम नहि भेलनि। 1963 इ. मे अखिल भारतीय दर्शन परिषदक लखनउ अधिवेशन मे 'अर्थापत्ति' पर भाषण कयलनि। 1964 मे ई त्रिभुवन विश्वविद्यालय और 1965 मे विश्वभारती (शांतिनिकेतन)क आमंत्रण पर गेलाह। ओही वर्ष मद्रास मे फिलॉसफिकल कांग्रेसक अवसर पर आयोजित विवाद 'ट्रेडिशन एंड प्रोग्रेस' मे भाग लेलनि। 1965 इ. सँ 69 धरि शब्दावली निर्माण आयोगक बैसक मे मसूरी, चिदम्बरम, अहमदाबाद आदि स्थान मे गेलाह। 1969 इ. मे शांतिनिकेतनक आमंत्रण पर ओतय जा क्रिश्चन धर्म विषयक संगोष्ठीक अध्यक्षता कयलनि। 1968 इ. मे अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क दिल्ली अधिवेशनक अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह। बिहार सँ ई गौरव प्राप्त करयवला ई प्राय: पहिल व्यक्ति छलाह। ओही वर्ष इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेस पटना मे भेलै जकर ई स्थानीय सचिव रहथि। 1969 इ. मे फिलोसोफिकल कांग्रेसक धारवाड़ (कर्णाटक) अधिवेशन मे 'धर्मदर्शन' विभागक स्थानापन्न अध्यक्षक कार्य कैलनि। 1970 ई. मे मद्रास विश्वविद्यालयक उच्चतर दर्शन केंद्रक निर्माण पर ई गाँधीक 'अहिंसा दर्शन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी मे निबंध पाठ कैलनि (जे ओतुका स्मारिका मे प्रकाशित भेल)। 1971 इ. मे बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमीक तत्वावधान मे बोधगया मे संयोजित दार्शनिक सम्मेलन मे अध्यक्षता कैलनि और दर्शन पर भाषण देलनि जे बाद मे अकादमी सँ प्रकाशित 'दार्शनिक विवेचनाएँ' मे प्रकाशित भेल। 1972 ई. मे फिलोसोफिकल कांग्रेसक कानपुर अधिवेशन मे व्याख्यान देलनि। 1973 इ. मे केंद्रीय हिंदी निदेशालय (दिल्ली) मे अनुवाद समितिक अध्यक्षता कैलनि। 1974 इ. मे इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेस (इलाहाबाद) मे अध्यक्षता कैलनि तथा सर गंगानाथ झा इंस्टीच्यूट मे 'अवच्छेदकता' पर भाषण देलनि। 1975 इ. मे अखिल भारतीय दर्शन परिषदक राँची अधिवेशन मे ई विशिष्ट अतिथिक रूप मे आमंत्रित भ' नव्यन्यायक भाषा विश्लेषण पर भाषण कैलनि।

एवं प्रकारें ई अपन कार्यकालक अंतिम समय धरि निरंतर दार्शनिक कार्यकलाप मे संलग्न रहलाह तथा दर्शनक दुनू उच्चतम भारतीय संस्था (इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेस तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषद्) द्वारा उच्चतम सम्मान प्राप्त क' दार्शनिक जगत मे सुप्रतिष्ठित भेलाह।

बासठि वर्ष पुरला पर 18 सितंबर 1970 इ. मे ई अवकाश प्राप्त कैलनि। तदुपरांत विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक दिस सँ अवकाश प्राप्त शिक्षकक सेवा उपयोग (यूटिलाइजेशन ऑफ द सर्विसेज ऑफ रिटायर्ड टीचर्स) क योजनाक अंतर्गत पाँच वर्षक अवधि मे 'भारतीय दर्शन मे भाषा विश्लेषणक धारा' (ट्रेंड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनालिसिस इन इंडियन फिलॉसफी) पर मौलिक शोध प्रस्तुत कैलनि जे हाल मे, 1981 मे, ग्रंथक रूप मे चौखम्बा प्रकाशन सँ प्रकाशित भेल अछि।

एहि तरहें प्रो. झा अनवरत अंत धरि लिखैत रहलाह जे 'जीवनयात्रा'क संस्मरणात्मक आत्मकथा वा आत्मकथात्मक संस्मरण धरि चलैत रहल। साहित्यक ई साधक सभ टा झंझावात केँ सहैत अंत धरि कलम धयने रहलाह। कलमे तँ लेखकक पूँजी होइ छै!

1975 क बाद प्रो. झाक साहित्यिक कार्यकलापक गति मे किछु शिथिलता आयल जे अवस्था जन्य थकावटिक स्वाभाविक लक्षण छल। ओहि वर्ष अर्थात् 1975 इ. मे गाम पर माय 92 वर्षक अवस्था मे दिवंगता भेलथिन। जनसीदन जीक धर्मपत्नी ओ प्रो. हरिमोहन झाक माय जननी देवी एक टा धर्म परायण, सामाजिक विधि-व्यवहार, गीत-नाद, जनउ-टकुरी, पौती-मौनी, अरिपन ओरिआओन ओ वार्तालाप आदि मे कुशल स्नेही आ आवेशी महिला छलीह, जाहि कारणेँ अपन गाम मे ओ बड़ व्यापक रहथि। हुनक बुनल सीकीक काज देखि क' डैनबी साहेब ततेक प्रसन्न भ' गेलाह जे जनसीदन जी केँ घरक आगाँक कलमबाग लिखि देलथिन। नाती-पोता ओहि कलमबागक आम खाइत काल आइयो ई बात मोन रखै छनि।

सभ सँ छोट पुत्र भुवन जी 1972 मे एम.ए. क' किछु दिन गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज, पटना सिटी मे मनोविज्ञानक व्याख्याता रूप मे काज कयलनि। 1973 मे सी.एम. कॉलेज, दरभंगा मे हिनक नियुक्ति भ' गेलनि। 1978 इ. मे हुनक विवाह बनगाम (सहरसा) क श्री सदाशिव खाँक पुत्री पुष्पा सँ भेलनि।

पत्नी सुभद्रा झा पूर्ववत् पटना-बाजितपुर करैत दुनू ठामक प्रबंध करैत छलथिन।

प्रो. झा एहू बीच दत्तचित्त रूप सँ अपन काज मे सक्रिय रहलाह अछि। 1960 मे *चर्चरी* छपलाक बाद 1967 मे *खट्टर ककाक तरंग*क तेसर आ परिवर्द्धित संस्करण 'भारती भवन' सँ बहरयलनि। 1971 मे *खट्टर काका* हिंदी मे राजकमल प्रकाशन सँ बहरायल। *रेल की बात* हिंदी मे रामलोचन पाकेट बुक सिरीज मे निकलल जे आब *अंतिका प्रकाशन* सँ प्रकाशित भेल अछि। 'एकादशी' नाम सँ हिनक चुनल कथाक संग्रह ग्रंथालय दरभंगा सँ छपल। आ एहि बीच तमाम पत्रिका सभक लेल रचना लिखैत रहबाक अतिरिक्त आन पत्रिका केँ भाषांतर लेल अनुमति देब सेहो एक टा बड़का काज भ' गेल रहनि। से 1945 सँ *प्रणम्य देवता* छपलाक बाद जे शुरू भेलनि से अंत धरि रहलनि। *खट्टर ककाक तरंग*क बाद तँ एहि मे जेना बाढ़ि आबि गेल। *राष्ट्रभारती, धर्मयुग, सा. हिंदुस्तान, कहानी, सारिका, नई कहानियाँ*—कोन-कोन पत्रिका नहि खट्टर कका केँ छपलकनि आ कोन-कोन भाषा मे नहि ओ अनूदित भेलाह। एत' प्रो. झाक साहित्य पर विचार करबाक स्थान नहि अछि, मुदा हुनक लोकप्रियताक ई एक टा आयाम सहजहिं ध्यान घिचि लैत अछि जे साहित्य कोना भाषाक देबाल केँ ढाहैत अपन विस्तार पाबि लैत अछि। से गुण प्रो. झाक लेखनक आदिए सँ रहलनि अछि। *कन्यादान* आ *द्विरागमन* मैथिलीभाषी सँ भिन्नो लोक पढ़लक, पढ़बाक लेल सिखलक। अपन भाषा क्षेत्र सँ बहरा क' भाषा केँ विस्तार द' ओकरा बृहत्तर परिप्रेक्ष्य मे मर्यादा देअयबाक काज जे प्रो. झाक साहित्य कयलकनि, से फेर आन कोनो ने। *कन्यादान* जेना एक टा सामाजिक क्रांति अनलक, तहिना हिनक *खट्टर ककाक तरंग* वैचारिक क्रांति उत्पन्न कयलक। कन्यादाने सँ जे पंडित वर्ग रुष्ट छलनि, से *खट्टर ककाक तरंग* सँ क्रुद्ध भ' गेलनि। बरहगोड़िया सम्मेलन मे जखन प्रो. झा *खट्टर ककाक तरंग*'क 'रमायण' पढ़ लगलाह तँ पित्तै महावैयाकरण पं. दीनबंधु झा उठि क' बहरा गेल छलाह। *प्रणम्यय देवता* जँ प्रो. झा केँ 'हास्यरसाचार्य' बनौलकनि, तँ *खट्टर ककाक तरंग*, 'व्यंग्य सम्राट' बना देलकनि। 'लेखक' तँ हुनका कन्यादाने बना देलकनि,

जिनका देखबाक उत्सुकता जनीजाति पर्यन्त कें भ' गेलनि।

पंडितवर्ग प्रो. झा सँ हुनक रचनाक कारणेँ अप्रसन्न जे भेल होथुन, पंडित ओ नारी—प्रो. झाक लेखनक ई दू टा प्रमुख बिंदु रहलनि अछि। हिनक समस्त साहित्यिक ई दू टा ध्रुवीकरण कयल जा सकैत अछि। निरर्थक भ' गेल प्राचीन परंपरा पर प्रहार आ नवता, नवोन्मेषताक स्वागत हिनक स्वरक ई दू छोर रहलनि अछि। मुदा तकर अर्थ ई नहि जे प्रो. झा आँखि मुनि क' नवताक पक्षधर होथु। हुनक व्यंग्यक केंद्र समान रूप सँ पंडित ओ मेम दुनू भेल छथि। मौजे लाल झा आ चुल्हाइ झा जँ हुनक ध्यान पर पड़लथिन अछि तँ अंगरेजिया बाबू सेहो दृष्टि सँ नहि बाँचि सकलथिन अछि। प्रो. झा कें विद्रूप वा विरोधाभास जत' कतहु भेटलनि—से प्राचीन मे हो वा नवीन मे—हुनका व्यंग्यक मासाला भेटि गेलनि अछि। साहित्य मे हुनक दृष्टि कोनो पक्ष वा वाद सँ बन्हायल नहि रहि उन्मुक्त रहलनि अछि। साहित्य कें ओ कोनो वादक घेरा सँ उपर रखलनि अछि। हुनका साहित्य मे हुनकर ई समन्वयवादी व्यापक दृष्टि सभतरि भेटत।

1957 इ. मे लेखक सम्मेलन मे भाग लेब' ई कलकत्ता गेल रहथि तँ ओहिठामक मैथिल समाज गिरीश पार्क मे हिनक अभिनंदन कयने छलथिन। परंतु ई देखलनि जे ओ सभा समान उद्देश्य रखितहुँ दू दल मे विभक्त छल—एकक नेता छलथिन मिथिलेंदु जी (हरिश्चन्द्र झा) तथा दोसरक बाबू साहेब चौधरी। ई निर्णय कैलनि जे दुनू गोटा कें मिलाइए क' एहिठाम सँ जायब। लगातार कइ-एक दिनक अहर्निश प्रयत्न क' ई दुगोला कें दूर करबा मे सफल भेलाह। मिथिला संघ और मैथिली संघ कें एक होयब हिनके सद्प्रयत्नक परिणाम छल। यैह सौमनस्य आ सौहार्दक आकांक्षा हिनक साहित्यो मे प्रतिफलित भेल अछि।

एहि विशेषताक कारणेँ ई जत' कतहु गेलाह, हिनक स्वागत-अभिनंदन भेल। भागलपुरक प्रो. प्रेमशंकर सिंह हिनका पर अपन शोधग्रंथ लिखलनि। जीवित व्यक्ति पर लिखल मैथिलीक ई सर्वप्रथम शोध ग्रंथ छल।

प्रो. झाक कुशल लेखक एक टा सुयोग्य संपादक सेहो अछि, तकर बड़ उत्कृष्ट उदाहरण 1942 इ. मे पुस्तक भंडारक 'जयंती स्मारक ग्रंथ' अछि। आचार्य शिवपूजन सहाय तथा अच्युतानंद दत्तक संग प्रो. हरिमोहन झा एकर संपादक रहथि। ई ग्रंथ अपना ढंगक एकसर अछि आ बिहार संबंधी—विशेष क' मिथिला संबंधी—कोनो ज्ञानक लेल बड़का संदर्भ ग्रंथ अछि। मैट्रिक कक्षाक लेल तैयार कयल गेल 'प्रवेशिका मैथिली साहित्य' जकर संपादन प्रो. झा श्री गंगापति सिंहक संग कयल, हिनका संपादकीय क्षमताक दोसर नीक प्रमाण थिक। संपादक मंडल मे तँ ई 'दार्शनिक त्रैमासिक' आदि कय टा पत्रिकाक रहलाह। बिहार ग्रंथ आकादमी सँ प्रकाशित 'दार्शनिक विवेचनाएँ' हिनका द्वारा संपादित भेल। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, ग्रंथ अकादमी तथा अन्य संस्था सभ द्वारा कतेक ग्रंथक संपादन, पुनरीक्षण आदि कयलनि, तकर एक टा बृहत सूची होयत। हिंदी त्रैमासिक 'समीक्षा' मे कतेको हिंदी पोथीक हिनक समीक्षा निकलल छल जे हिनक समीक्षक आ आलोचकक रूप ठाढ़ करैत अछि। काव्य गोष्ठी मे समय-समय पर हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, मैथिली मे पढ़ल कविता सभक संग हिनक हिंदी, अंग्रेजी, मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छपल लेख, समीक्षा आदि कें संगृहीत करबाक काज समान रूप सँ महत्त्वपूर्ण अछि।

ठहराव नहि

1971 इ. मे हिनक प्रसिद्ध उपन्यास *कन्यादान* पर फिल्म बनल। अमरजी, फणीश्वर नाथ रेणु आ स्वयं प्रो. झाक संबद्ध रहितहुँ *कन्यादान* नीक नहि बनल। फिल्म सँ लेखक कें तहिना कोनो आर्थिक लाभ नहि भेलनि, जेना उपन्यास *कन्यादान* सँ नहि भेल रहनि। मुदा एहि लाभालाभ-जयाजय सँ प्रो. हरिमोहन झा दूर अपन साहित्य-साधना मे लागल रहलाह। साहित्य सदा हुनक सर्वोपरि रहलनि। कहल जा सकैए जे आन कोनो दिस हुनक ध्याने ने रहलनि। तँ 50 वर्ष सँ बेसी पटना मे रहितहुँ, नोकरी करितहुँ ओ कतहु एक टा अपन छोटे-छीन घर नहि बनवा सकलाह। अंतिम काल धरि ओ भिखना पहाड़ीक किरायाक ओहि पुरान मकानक कोठरी मे पलंग पर पड़ल छाती पर गेरुआ रखने कलम हाथ मे लेने किछु ने किछु लिखिते रहैत छलाह—आकाशवाणीक लेल वार्त्ता, आत्मकथाक अंश, कोनो स्मारिका वा पोथीक भूमिका, दू शब्द। पोथी सभक हिनका द्वारा लिखल भूमिका वा सम्मति जँ एकत्र कयल जाय, तँ ईहो एक टा कम सार्थक काज नहि होयत।

मुदा से सभ काज हमरा लोकनिक अछि। सत्य पूछी तँ एखन धरि हमरा लोकनि प्रो. झाक कृतित्व आ व्यक्तित्वक सम्यक आ उचित मूल्यांकनो कहाँ कयलियनि अछि?

पंडितक प्रो. झा ओना जतेक खिधांस करथुन, अपनो ओ पंडिते थिकाह। से पांडित्यक अर्थ मे तँ थिकाहे, आ जेना संस्कृतक पंडित व्यवहार मे अपटु होइत छलाह—एते धरि जे अपने सँ लालटेनो लेसल नहि होइनि—तहिना प्रो. झा व्यावहारिकता मे नितांत अपटु रहथि—रेडियो मे पटना कहियो ओ अपने सँ नहि लगा सकैत छलाह। हिनक विनोद-प्रियताक तँ अनेक कथा प्रचलित अछिए—जाहि मे झाजी ओ पाजीक अंतर कें हाथ सँ नापि क' देखयबाक खिस्सा सभ सँ बेसी प्रसिद्ध अछि—हिनक अव्यावहारिकताक सेहो कय टा किंवदंती प्रचलित छनि। लोक एते धरि खिस्सा बना देने छनि जे कहाँदन एक बेर सिनेमाक टिकट लेब' लेल ई रेलवे स्टेशनक लाइन मे जा क' ठाढ़ भ' गेल छलाह। दार्शनिक विद्वान तँ रहबे कयलाह, स्वभाव ओ मानसिकता सँ दार्शनिक सेहो प्रसिद्धे रहथि। एक बेर पटना कॉलेज मे नियुक्ति भ' गेलाक बाद क्लास लेब' बी.एन. कॉलेज पहुँचि गेल रहथि!

प्रो. झाक कार्यकलाप मे ठहराव अंत धरि नहि आयल छलनि। 'परमार्थ-दर्शन' पर हुनक पोथी राष्ट्रभाषा परिषद् पटना सँ अंते काल मे छपि रहल छलनि। मैथिली अकादमी सँ 'जीवन-यात्रा' मृत्युक बादे आबि सकलनि। माने कलम जीवने संग रुकलनि। ओ आपादमस्तक आ आरंभ सँ अंत धरि लेखक रहलाह—लेखक जे रुकबाक नाम नहि लैत अछि, चलैत रहैत अछि, चलैत रहैत अछि...आ से चलिते रहलाह 23 फरवरी 1984 धरि...जखन दरभंगा मे हुनक देहांत भेलनि...

संदर्भ-संकेत

ई आलेख निम्नांकित सामग्रीक आधार पर तैयार कयल गेल अछि :

1. पं. जनार्दन झा 'जनसीदन'क अपूर्ण आत्मकथाक पांडुलिपि
2. प्रो. हरिमोहन झाक तखन धरि अप्रकाशित 'जीवन यात्रा'क पांडुलिपि
3. जयंती स्मारक ग्रंथ, पुस्तक भंडार
4. स्व. पं. जनार्दन झा 'जनसीदन' शीर्षक प्रो. हरिमोहन झाक लेख - 'मिथिला भारती' वर्ष-1, अंक-1
5. प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक कथा विभागक प्रो. हरिमोहन झाक अध्यक्षीय भाषण
6. डॉ. प्रेम शंकर सिंहक शोध-प्रबंध—सामाजिक वातावरणक विशिष्ट संदर्भ मे श्री हरिमोहन झाक मैथिली कृतिक अनुशीलन।

(जीवनकाल मे अभिनंदन ग्रंथ मे छपल एहि लेख मे मात्र काल आ तथ्यगत मामूली संपादन कयल गेल अछि।—सं.)



खट्टर कका : बिंब-प्रतिबिंब

आरसी प्रसाद सिंह

हरिमोहन बाबूक मित्र-मंडली बड़ पैघ होयतनि। विश्वविद्यालयक प्राध्यापक वर्ग, देश विदेशक साहित्यिक एवं मनीषी लोकनि सतत हुनका सँ मिल' ले' साकांक्ष रहैत छथि मुदा, सागर मे अपार जलराशि रहितो क्यो ओतबे पानि ल' सकैत अछि, जतेक ओकर अपन पात्र मे अँटि सकै छै! कतेक महान् छथि ओ जे हमरो सन व्यक्ति केँ अपन मित्र-मंडली मे आनि क' धन्य करै छथि!

हरिमोहन बाबूक मित्र-मंडली मे सब सँ पहिल नाम, जे हमरा मोन पड़ैए से छलथिन्ह हुनक पत्नी, स्वर्गीया श्रीमती सुभद्रा देवी। ओ हरिमोहनबाबूक धर्मपत्नीक संगहि मित्रो छलथिन; आ मात्र मित्र नहि, कालिदासक शब्द मे हम यैह कहय चाहब जे, ओ छलथिन हरिमोहन बाबूक ''गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।'' दोसर चरण मे ओ कहै छथि- ''करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वाम् वद किं ने मे हृतम्।'' सेहो हरिमोहन बाबू पर पूर्णतया चरितार्थ होइत छनि।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्यायक प्रसंग सुनल अछि जे, जे कोनो साहित्यकार वा मनीषी हुनका सँ भेट कर' जाइत रहथिन, तनिका सँ ओ मात्र बाजारक भाव छोड़ि क' आन कोनो साहित्यिक वा राजनीतिक गप्प नहि करथिन! हरिमोहन बाबू केर संबंधो मे ई चरितार्थ छनि! ओहो अपन भेट-कर्त्ता लोकनि सँ बाजारे-भाव आ खान-पानक गप्प करै छथि। साहित्यिक गप्प क्वचित् कभार।

जखन-गप्प सभक एके टा विषय तँ कतेक नवीनता लाओल जाय! एके बात घुमा-फिरा क' ओ ततेक बेर ने पुछताह, जे जवाब दैत नहि बनि पड़य। एक बेर एहन विषम परिस्थिति उपस्थित भ' गैल अछि, जे सवाल पर सवाल क' रहल छथि—हम जवाब पर जवाब द' रहल छियनि, मोने मोन खौंझैत, सोचैत, जे हद्द भ' गेल, आब दोसर गप्प करू! ई प्रश्न फेर नहि करू—की, हमर ई मनोभाव हरिमोहन बाबू बूझथु वा नहि, सुभद्रा झा केँ तत्काल बोध भ' जाइनि, हरिमोहन बाबूक दिस ताकि क' कहथिन, ''कहलनि तँ, एक बेर, आब की बेर-बेर एके बात घोखि रहल छियै।'' ई सुनिते, जेना कोनो स्कूली चटिया छड़ीदार गुरुजीक डाँट सुनिते सकदम भ' जाइत छै तहिना हरिमोहन भ' बाबू जाथि। ई छलि श्रीमती सुभद्रा जीक प्रभाव!

सरिपौँ, हरिमोहन बाबूक लग मे पहुँचब जतबे आसान बूझल जाइत छै ताहि सँ बहुत कठिन अछि हुनका लग सँ मुक्त भ'क' घूरि आयब। एक टा कवि केँ हम हुनका फाटक पर असकरे ठाढ़ देखि क' पूछने छलियनि तँ यैह कहलनि, ''समय कम अछि! भेट करैत ड'र होइ-ए! तँ, बाहरे मे ठाढ़ छी!''

''आउ, आउ, आउ'' कहि क' ओ सभ केँ नीक जकाँ स्वागत करै छथिन, मुदा जाइत काल ''कनेक बैसू! एखन बेरे की भैले-ए!'' आदि कहि-कहि क' रोक' लगताह।

हरिमोहन बाबू प्रायः समस्त भारतवर्षक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नगरक यात्रा कयलनि! यात्रा मे पत्नी सुभद्रो जी रहल करथिन! सुभद्रा जी केँ प्रदेश-प्रदेशक भोजन बनैबाक लूरि सहजेँ प्राप्त भ' गेल छलनि! खैबाक सौख तँ हरिमोहन बाबू केँ स्वयं छनि जे हुनक प्रख्यात पोथी *खट्टर ककाक तरंग* सँ परिचित छथि, से जनैत होयताह, जे ओहि कृति मे कतोक प्रकार केर भोजनक वर्णन भेल अछि! दही, चूड़ा, चीनी सँ तँ पोथीक प्रारंभे भेल अछि! 'माछक महत्त्व' पर लगले एक टा पूर्ण रचना अछि। 'ब्राह्मण-भोजन' नामक निबंध मे सेहो भोजनेक वर्णन अछि। एकर अतिरिक्तो, प्रायः अधिकांश लेख मे भोजन द्रव्यक चर्च अछि! एहि सँ हरिमोहन बाबू केर भोजन-संबंधी विशिष्टता नीक जकाँ उजागर होइत छनि! ब्रह्मानंदक परिचय करबैत खट्टर कका की कहैत छथि, ''दधि मधुरं मधु मधुरं द्राक्षा मधुरा सितापि मधुरैव। तस्यतदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम्।''

अतएव, हमरा सँ यदि केओ पूछय जे जीवनक चरम आनंद की थिक? तँ हमर उत्तर अछि, रसो वै सः। अर्थात् रसगुल्ला। रसगुल्ला केँ हम साकार ब्रह्माक प्रतीक मानै छियै-

अखण्डमण्डलाकारं श्वेत-वर्ण-रसान्वितम्।
सर्वानंदकरं दिव्यं रसगोलं भजाम्यहम्॥

सब प्रकारक भोज्य-सामग्रीक रसास्वादन जहिना मौखिक रूपेँ हरिमोहन बाबू कराबथि, तहिना जीभक चरितार्थे सुभद्रा देवी!

हम असकरुआ लोक आ स्वयंपाकी—तँ भिनसर मे खिच्चड़ि बनायल करी आ राति मे रोटी! एहि बातक चर्च हमरा सँ बरोबरि तँ करिते रहथि, जे क्यो हमरा सोझा मे हुनका ओतय आबथि, तिनको कहल करथिन जे कोना आरसी जी सब दिन खिच्चड़ि खाइत छथि से जानि ने! मुदा, कहियो ईहो कहैत हुनका मुँह सँ सुनल जाइत छल जे ''हइ-औ! हमरो खिच्चड़ि खयबाक मोन होइत अछि!'' पता नहि, ई उद्‌गार व्यंग्य मे निकलै छलनि की सत्ये-सत्य! परंच, हम मोने-मोन कही जे, बड़ नीक! खाउ ने! रोकै-अइ के? एहि तरहेँ हुनक बहुत रास मोनक बात कल्पनो मे चलैत रहैत छलनि, जकरा मूर्त्त रूप देबाक कोनो योजना नहि रहनि!

एक बेरक गप्प मोन पड़ै-ए जे, चंद्रशेखर बाबू सँ, जे हुनक परम मित्र आ राज्य शिक्षा संस्थान मे नीक पदाधिकारी छथि, संबंधित अछि। चंद्रशेखर बाबू बड़ घुमंता लोक छथि। भारतक कोनो जोनक प्रसंग पूछि क' देखियौन, तखने अहाँ केँ ओ धड़ाधड़ि गाड़ीक नंबर, स्टेशन, टाइम सब टा कहि क' अहाँ केँ चकित क' देताह। हरिमोहन बाबू चंद्रशेखर बाबू सँ हरिद्वार सँ गंगोत्री धरिक मार्ग दर्शन पुछलथिन। चंद्रशेखरो बाबू तेना ने मनमोहक ढंग सँ प्रस्तावित यात्राक वर्णन कयलथिन, जे हरिमोनह बाबू गद्‌गद भ' गेलाह! बूझि पड़ल जे ओ उत्तराखण्डक यात्रा ले' बिल्कुल तैयारे बैसल छथि आ किछुए सप्ताह वा दिन मे विदा भ' जैताह! चोट्टे प्रस्ताव कयलनि जे आरसीजी, अहौं चलू! हमरो कल्पना मे बहुत दिन सँ ई बात घुरिआयल छल। मुदा, हम उपरका मोन सँ हरिमोहन बाबूक बात राखि लेलियैन आ कहि देलियनि, ''बेश'' परंच, मोन मे ईहो भय बैसि गेल रहय जे हरिमोहन बाबू केँ वचन तँ द' देलयनि-किंस्यात् ओ तैयार भ' जाथि, बहाना कैल जयतै कि चलल जयतै? तावत् चंद्रशेखर बाबू सँ किछुए दिनक उपरांत भेट भेल, तँ हुनका हम पुछलयनि जे कहू,

हरिमोहन बाबूक यात्रा-मुहूर्त्त कहियाक बनैत छनि! ओ कहलनि, ''हरिमोहन बाबू अइ बेर बदरी केदारक यात्रा करताह, से के कहौ।''

''तखन ई गाड़ीक समय-सारिणी आ यात्राक विवरणी?''

''ओ! ई बात तँ दस वर्ष सँ पूछि रहल छथि।'' ओ कहलनि।

''आ, अहाँ?''

''हँ! हम दस वर्ष सँ हुनका ओहिना समय-सारिणी आ खर्च-बर्चक सब टा ब्यौरा बता रहल छियनि, जेना पहिले बेर पूछि रहल होथि।''

हरिमोहन बाबूक मित्र-मण्डलीक उमाशंकर वर्मा, हरिमोहनक संग गप्प-शप्प मे प्राय: हमरा साथे रहथि! एक समय हम हरिमोहन बाबूक बासाक नजदीके मे मकान ल' क' रहैत छलहुँ! ओ दू-तीन वर्ष तेहन सत्संग मे बीतल, जे ओकर स्मृति सँ मोन पुलकित भ' जाइत अछि! मुदा, ''ते हि नो दिवसा गता:।''

हरिमोहन बाबू केँ तेना ने हमरा सँ स्नेह बढ़' लगलनि, गोटेक दिन जे भेंट नहि करियनि, तँ कैफियत देब' पड़य! हुनक परम प्रिय सेवक 'बहादुर' पहुँचि जाय,''साहब बुला रहे हैं!'' अपन पोती केँ पठौथिन, नाम जकर छै ''गुड्डी''! ''बाबा बजबै छथि'', ओ कहय आ हमर हाथ पकड़ि क' खींच' लागय! तेहन बाबाक हुकुम! हरिमोहन बाबू कहबो करथिन जे गुड्डी केँ वारण्ट एवं जब्ती-कुर्की केर आदेशक साथ पठबै छियै।

ओना तँ हम एसकरो हरिमोहन बाबू सँ मिल' ले' चलि जाइ आ, पर्याप्त गप्प-सप्पक बाजार गरम होए! मुदा, उमाशंकर वर्मा जखन संग मे रहथि तँ गुलशन मे वसंत-बहार आबि जाय! वर्माजी स्वयं माधुर्यक खानि आ ओम्हर हरिमोहन बाबू माधुर्यावतार! दुनू गोटे मे तेना ने पटरी बैसइ छनि जे आनंदक रेलगाड़ी धड़ाधड़ जेट विमानक स्पीड मे दौड़' लगइ छै!

से, ई स्नेहासक्ति तेहन प्रगाढ़ भेल गेल छलय, जँ वर्माजी, असकर जाथि, तँ हरिमोहन बाबू पुछथिन, ''ऐँ औ, आरसीजी नहि अबइ छथि? कतहु बाहर तँ नहि गेल छथि?''

फेर तहिना जखन हम असकर हुनका लग मे जाइ, तँ प्रश्नक झड़ी लागि जाय! ''वर्माजी किऐ ने अयलाह?''

से, ई प्रबल स्नेहासक्ति वर्मेजी धरि रहैत होनि, से नहि बूझल जाय! हुनक परिचय परिवेश मे अयनिहार कतेको व्यक्ति केँ ई अनुभव प्रत्यक्ष-गोचर होइत होयतनि! कोनो दिन ओ पूछि बैसथि, जे कोम्हर जायब? आ जँ हम कहियनि, राजकमल प्रकाशन दिस, तँ चट्टे ओ फरमा देथि जे ''ओही ठाम सुमनो सरीन केर घर छै! राजकमलक बगले मे! कनेक ओकरो सँ भेंट क' लेबै! बहुत दिन सँ ओकर हाल-चाल नहि मालूम भेल-ऐ!'' हमरा मोन मे बड़ तामस होए जे देखू ने! हम ओकरा ओहि ठाम बिना बजाओल किऐ जयबै? ओ की बुझतै? किंतु, हरिमोहन बाबू केँ तँ सुमन सरीनक प्रति स्नेहक भावना छलनि!

हमर एक कन्या चौधरी टोला मे रहैत छथि आ रामकुमार चौधरी, महेंद्रू प्रशिक्षण महा विद्यालयक प्राध्यापक, जिनकर धर्मपत्नी हरिमोहन बाबूक गामक थिकीह, ओही महल्लाक निवासी छथिन! आब ई बात जखन हरिमोहन बाबू केँ मालूम भेलनि, चौधरीजीक चर्च भूत जकाँ हमरा संग लागि गेल! ''चौधरी टोला जाइ तँ कनेक रामकुमार चौधरी सँ भेंट क' लेबनि! ओ बहुत दिन सँ भेंट नहि देला-ए! कहबनि, भेंट कर' ले'! आ हुनक पत्नीओक कुशल बुझने आयब! ओ हमरे गामक बेटी थिकी!''

आ, हम जे कैक बेर प्रयास कैल, चौधरी जी ओत' गेलहुँ, हुनका समाद पठाओल, मुदा, ओ टस-मस नहि भेलाह! हरिमोहन बाबू सँ भेंट कर' ले' नहिए अयलाह! आ, हम ऊधोजीक अभिनय करैत माधोजीक सनेस गोकुल मे पहुँचा-पहुँचा क' थाकि गेलहुँ, तखन हमरा पिण्ड छोड़बयबा ले' कह' पड़ल जे, ''हम नहि जायब चौधरीजीक ओहि ठाम! ओ नहि औताह! नहि औताह! तँ एते खुशामदि किऐ?''

आ, हुनक मुसुकी फेर गजब छल, ''औ! की करू? मोन ने मानै-ऐ! अच्छा, एकबेर फेर कहबनि-कतौ रस्तो मे की नहि भेटताह?''

एक टा पोता, पाँचे छ: वर्षक आयु मे, स्वर्गीय भ' गेलनि, तँ कैक मास धरि देखलियनि, हुनका किछु नीक नहि लगनि! बराबरि ओही सोच मे डूबल रहथि! हमरो सभ सँ वैह गप्प, गोष्ठियो मे ओकरे कथा! ई मातम बहुत दिन धरि मनाओल गेल, तखन हुनक चित्त-वृत्ति शांत भेल। फेर तहिना, पत्नीओक देहांत भेला पर भड़भड़ायल आवाज, डबडबायल आँखिक कोर, उदास चेहरा; सभ केँ जीवन भरि हँसबैत रह'वला आइ अंत मे स्वयं कान' लागल छथि! यैह थिक विधि विडंबना! की सँ की भ' जाइत छै! तँ तँ नहि की ओ आब नियतिवादी भेल जाइत छथि? कहियो हुनका मुँह सँ ईश्वर वा राम-कृष्णक नाम सुनबा मे नहि आयल छल, से एम्हर, विशेष रूप सँ जहिया सँ ओ अशक्त भेल जाइत छथि, आ अस्पताल मे मरणासन्न स्थिति मे रहि क' बुझू जे पुनर्जन्म पाबि क' अयला, तहिये सँ ओ कहय लगलाह जे ''आब हम नियतिवादी भेल जाइ छी! जे करइ छै से नियति करइ छै!'' ई हुनक उक्ति छनि! आत्मा; परमात्मा; शैव-शक्त; जैन-बौद्ध; वेद-उपनिषद जानि ने कतेक शास्त्र केँ ओ मथंन कयने होयताह; घोंटि क' पीबि गेल होयताह; प्रवचन देने होयताह; पुस्तक लिखने होयताह; छात्र-प्रछात्र लोकनि केँ पढ़ौने होयताह; मुदा, ओना गप्प-शप्प मे वा घरेलू वातावरण मे क्यो ने कहियो हुनका मुँह सँ देव-पितरक चर्च सुनने होयताह! हुनका ले' ओ शास्त्रीय खण्डन-मण्डन आ तर्क-वितर्क जीविके उपार्जनक साधन बनल रहि गेलनि। गंभीर रूपें कहियो तेहन समस्या बनि क' जिनगी मे नहि उभरलनि; मुदा, आचार्य शंकर जेना कहने छथि, ''अंगं गलितं, पलितं मुण्डं दशन-विहीनं...'' आदि-आदि, से परिस्थिति जखन मनुक्ख केँ पूर्णतया ग्रसित क' लैत छै, तखन ''नहि नहि रक्षित डुकृञ्! करणे सेहो वैह कहने छथि; तेँ, बड़-बड़ पुरुषार्थवादी लोकनि केँ जखन सब विद्या-बुद्धि आ कला कौशल समेत संबर्द्धित पुरुषार्थ जवाब द' दइ छै तखन ओहो जँ भाग्यवादी बनि क' ''नियति''क शरणापन्न भ' जाथि तँ एहि मे आश्चर्य नहि करबाक चाही! एकरो प्रबल पुरुषार्थेक परिणति बुझबाक चाही।

एहि विवाद-ग्रस्त भूमिकाक संग हुनक व्यक्तित्व मे नहि जा क' हुनक पोथी *खट्टर ककाक तरंग* देखबाक चाही! हमरा जनिते ''खट्टर कका'' सनक उनचास हाथक अद्भुत-अलौकिक मनुक्खक सृष्टिए ताही लेल भेल अछि, जे हरिमोहन बाबूक सब टा शास्त्रीय विचार अपना माध्यम सँ जनताक समक्ष प्रकट क' सकय! एहि लेल प्रश्न उठैत अछि, जे की हरिमोहन बाबूक आगाँ मे कोनो सोझ रस्ता नहि छलनि? की राधाकृष्णन, दासगुप्ता आदि पारंपरिक दार्शनिक अध्येता-जकाँ दर्शन-विषय पर स्वतंत्र रूप सँ विचार करैत कोनो पैघ ग्रंथक निर्माण नहि क' सकैत छलाह? यदि कहल जाय, कि निश्चय क' सकैत छलाह; तखन फेर प्रश्न वैह उठैत अछि जे *खट्टर ककाक तरंग*क रचनाक की उद्देश्य रहल होयतनि?

हमरा जनिते हरिमोहन बाबू दर्शन-शास्त्र पर पारंपरिक रूप सँ ग्रंथ लिखबा मे समर्थ छथि! एक दर्शन-विषयक ग्रंथ लिखि क' प्रकाशितो करौने छथि! मुदा, पारंपरिक ग्रंथ लिखबा मे विचार-स्वातंत्र्य तँ रहिते नहि छै! बनल-बनाओल लीखपर पुरान बैलगाड़ीओ कहुना लड़खड़ाइत चलिये जाइत छै, जँ बहलमान सुतलो होए! तेँ ओकर क्षेत्र संकुचित होइत छै! अपन बात कहबाक गुँजाइश तँ नहिए जकाँ रहैत छै! तखन, हरिमोहन बाबू सनक स्वतंत्र विचारक कोनो बनल-बनाओल साँचा मे कोना घुसिया सकैत

अछि? सरिपहुँ, ओकरा कोनो दोसर रस्ता अख्तियार कर' पड़तय, जाहि मे ओकर पूर्ण स्वाधीनता बनल रहय! आ, से आबि क' घटित भेल *खट्टर ककाक तरंग* मे।

खट्टर कका एवं हरिमोहन बाबू मे यद्यपि चचा-भतीजा वादक सुगंधि भेटइ अछि; आ, ई संबंध ग्रंथक समर्पण-पृष्ठो द्वारा अभिव्यक्ति होइत अछि! ग्रंथो ''खट्टरे कका'' केँ पितृव्य कहि क' अर्पित कैल गेल अछि! यदि थोड़ेक काल लेल ई बात मानि लेल जाय, जे लेखके-जकाँ ''खट्टरो कका'' क भौतिक अस्तित्व एहि पृथ्वी पर छनि; तथापि, एहि मे संदेह नहि जे हुनक बौद्धिक चेतना हरिमोहन बाबू द्वारा हुनका मे प्रक्षेपित छनि! ओ मात्र एक टा एहन प्रोजेक्टर यंत्र छथि, जिनका माध्यम सँ प्रकाश बहरा क' पर्दा पर फिल्म केँ देखबइ अछि! मुदा, ओ प्रकाश आओर फिल्म दुनू स्वयं हरिमोहने बाबू छथि!

'खट्टर कका' खण्डनाचार्य छथि! ओ सिर्फ खंडने-खंडन करैत चलि जाइत छथि! धोखो सँ, किरियो खाइ ले', कतहु कोनो बातक मण्डन नहि कयने छथि! भोजन, भोज आ भाँग, यैह तीन टा ओ जनैत छथि; एकरे समर्थन करैत छथि! बाँकी सब टा चूल्हि मे झोंकने चलि जाइत छथि! बाथरूमक टब मे नहाइत बच्चाक संदर्भ मे, जेना क्यो अलेल टबक पानि फेकबा काल ओकरे संग बच्चो केँ भसा दै छै, तहिना *खट्टर ककाक तरंग* मे की नीक, की बेजाय? किछु ने बूझि पड़इ-ए! हुनका आगाँ जे किछु पड़ल , दू-टूक भ' गेल! रामायण, चण्डी, ज्योतिष-महाभारत, देवता, ब्रह्म, गीता, मोक्ष, भगवान, धर्म, काव्य, पुराण, दर्शन, वेद, आयुर्वेद, सत्यदेव, पंडित, प्राचीन सभ्यता; यैह तँ हमर संस्कृति, समाज, दर्शन अध्यात्म, जीवन, सबहक आधार-शिला रहल अछि। वैदिक काल सँ ल' क' आइ धरि भारतीय समाजक जे किछु विकास भेल अछि, ताहि सँ यदि उपरका किछु स्तंभ केँ खसा देल जाय, तँ पूरा महल भड़भड़ाक' धराशायी भ' जायत! मुदा खट्टर कका तँ सब टा खम्भा केँ उखाड़ि क' फेंक' ले' सन्नद्ध छथि! ताल ठोकि क' मैदान मे जुटल छथि! अपन तर्कक तीक्ष्ण प्रहार सँ सब विचार केँ धज्जी-धज्जी उड़ा दैत छथि! आब कनेक ज्ञानझाक योग द' क' विचार कैल जाय, जे खट्टर कका केर मस्तिष्क-रूपी तरकश सँ विषधर साँप जकाँ फनफनाइत एक पर एक भयंकर तीर सभ छूटइ अछि, से ककर? निस्संदेह, सब क्यो सहमत होयताह, जे एकमात्र हरिमोहन बाबूए केर, जे एहि पोथीक स्वनामधन्य लेखक छथि आ, ''खट्टर कका'' रूपी महा-चरित्र केँ धृष्टद्युम्न जकाँ ठाढ़ क', स्वयं सव्यसाची बनि, पाछाँ सँ सम्पूर्ण शास्त्र शृंखला केर भीष्म पर प्रहार कयने छथि। आ, अपना जनिते, ओ एक तरहें पिमामह केँ मारिये देने छथि। भले, पितामहे केँ इच्छा मृत्युक वरदान भेटल होइनि आ ओ उत्तरायणक प्रतीक्षा मे शर-शय्या पर पड़ल होथि!

कहबाक प्रयोजन नहि, देखबाक योग्य अछि, जे *खट्टर ककाक तरंग* मे लेखक स्वयं अपने केँ दू भाग मे बाँटि लेने छथि! एक पक्ष मे तँ हुनक प्रकांड पांडित्य, अपराजेय तर्क सँ प्रतिष्ठित अपना आसन पर बिराजमान छनि! आ, दोसर पक्ष मे वैह एक टा निरीह सरल निष्कपट बालकक अभिनय क' रहल छथि, जकर काज मात्र एतबे छै, जे ओ खट्टर ककाक आगाँ मे कोनो तेहन बात राखि क' चुप भ' जाय, जाहि सँ ककाक चोख कतरनी ओकरा कतरै लागय! कुट्टी काट' वला मशीन देखने हयबै, तँ मोन पड़त, जे किसान एक तरफ सँ मशीनक दाँत मे घास घुसिया दैत छै आ दोसर दिस सँ कट-कट कटैत कुट्टी खसल जाइत छै! वैह दृश्य एहि ठाम हरिमोहन बाबू *खट्टर ककाक तरंग* मे उपस्थित करैत छथि! प्रश्न कर्त्ताक जन्मे एही लेल भेल छनि जे ओ भतीजा बनि क' अपन कका ले' विचार क्षेत्रक विराट बोन-बाध सँ सब तरहक घास लाबि क' हुनका मुँह मे गौं सँ राखि देथिन, जेकरा ओ थुर्री-थुर्री उड़ा क' थुकरि दैथि! ई जे प्रलयंकर प्रतिभाक दिग्दर्शन खट्टर कका मे देखल जाइत अछि, से प्रच्छन्न रूप मे की स्वयं हरिमोहन बाबू नहि क' सकैत छथि?

कुरीति, कुप्रथा, अंधविश्वास आदि असामाजिक तत्व पर खाहे क्यो अनपढ़-पढ़ल प्रहार क' सकइ अछि! कोनो रोक-टोक, लाँछन-अभियोगक प्रश्न नहि उठैत अछि! मुदा दर्शन, संप्रदाय, वेद, शास्त्र आदि शिष्ट-गंभीर विषयो पर खंडन-मंडन खूब भेल अछि—प्रच्छन्न रूप सँ नहि, एकदम खोलि क'! कतहु अपन मतक ''खंडन-खंडखाद्य'' लिख' पड़लनि; स्वामी दयानंद केँ सत्यार्थ प्रकाशन करय पड़लनि! आ कतहु, अपना दिस सँ कोनो मतामतक प्रतिष्ठापन ले' किछु नहि रहितहु एहन दुर्घट-दुघर्ष विद्वान होइ छथि, जे सिर्फ सब मत-संप्रदाय केर खंडने मे अपन प्रतिभा निःशेष क' दैत छथि—जेना, एक टा सुप्रसिद्ध उदाहरण लेल जाय—बौद्ध महायान केर प्रकांड पंडित नागार्जुनक! जे, ओ शिकारी छथि, जकरा मांसाहारी नहि कहि सकइ छिए—मुदा, तइयो ओ बंदूक लैने जंगले-जंगल शिकार कैने फिरइ-ए! ओकरा एही मे आनंद भेटइ छै, तँ क्यो की क' सकइ छै? हमरा बुझि पड़इ-ए, खट्टर कका अपर नागार्जुने छथि! जेना शंकराचार्य प्रच्छन्न बौद्ध कहल जाइत छथि! खट्टर ककाक अपन की सिद्धांत छनि, से ओ कतहु प्रकट नहि करइ छथि! मुदा आनक नीक सँ नीक सिद्धांतो केँ तेना ने काटि-कूटि क' फेंकि देताह, जे लेखकेक भाषा मे कह' पड़त—''(1) खट्टर कका, अहाँक बात लुतिए सन होइत अछि! (2) खट्टर कका, एना बजबै, तँ लोक नास्तिक कहत,(3) खट्टर कका, अहाँक तँ सभ बाते अद्भुत होइत अछि, (4) खट्टर कका, अहाँ वेदक बात कहि रहल छी कि वाममार्गक?, (5) शांतं पापम्! ई त वाममार्गो सँ टपि गेल, (6) खट्टर कका, एखन अहाँ तरंग मे छी, (7) खट्टर कका, अहाँ केँ नशा चढ़ल अछि!, (8) खट्टर कका, अहाँ भाँगक तरंग मे ई नहि बाजि रहल छियै? हँ सरिपहुँ, हमरो बूझि पड़इ-ए जे खट्टर कका भाँगेक तरंग मे सब टा बात कयने छथि!

ककाक विचित्र तर्क-तरंग मे उभ-चुभ करैत भतीजाक जे टिप्पणी होइत छै, ताहि मे सँ किछु बानगी रूपें ई प्रस्तुत कैल गेल अछि! ओना, एहि तरहक उक्ति सँ, जे भतीजाक मुँह सँ अकबका क' बहार भ' जाइत छै, सम्पूर्ण पोथी भरल अछि! एहि सँ की व्यक्त होइत छै कहू तँ? पाठकवर्ग पर एहि प्रकारक टीका-टिप्पणी, जे प्रश्नकर्त्ता एवं एकमात्र श्रोता द्वारा कैल गेल छै, खट्टर ककाक चरित्र पर, से की कहि रहल अछि? की एहि सँ पाठक केँ संदेह नहि भ' सकइ छनि, जे खट्टर कका वाममार्गी, अधार्मिक एवं नास्तिक छथि! चार्वाकक कलियुगी अवतारो जँ कहियनि, तँ अत्युक्ति ने? ई मंतव्य हमरे नहि, स्वयं लेखको अपन निवेदन मे स्पष्ट रूप सँ कहि देने छथि, ''खट्टर कका केँ लोक अभिनव चार्वाक कहै छनि। कारण जे हुनको सिद्धांत छनि—यावत् जीवेत सुखं जीवेत्। (ऋण कृत्वा घृतं पिबेत?) आब पुनः विचार कैल जाओ, जे पोथीक विद्वान लेखक की अपन कृतित्व सँ अवगत नहि होयताह? ईहो टीका-टिप्पणी तँ एक प्रकारें हुनके लेखनी सँ बहार भेल होयतनि? तखन की कखनो हुनका अपन खट्टर ककाक ई खट्टरत्व किंवा चार्वाकता खटकैत नहि होयतनि! आखिर, विचार सँ यदि किछु मतभेदो स्वीकार कैल जाय, तँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिएँ तँ ओ एही माटि-देशक उपज छथि! अपन तर्क-वितर्कक कर्कश प्रहार सँ ओ जेकरा पौलनि, जे आगाँ मे पड़लनि, सनकल साँढ़ जकाँ उठा क' ठामहि चित्त क' देलनि, पेट मे सींघो घुसिया क' हुरपेटि देलनि, मुदा, अंतरात्मा तँ रहल होयतनि साहित्यकारे-कलाकारक ने? तैं, ओ खट्टर ककाक हाथ मे भङ्घोटना द' क' सदति काल भाँगेक निसा मे बुत्त देखौने छथि? आब, जखन ओ अपन होस मे नहि छथि, तँ हुनक बात केँ क्यो गंभीरता-पूर्वक नहि लियै, साँचे नहि मानि लियै, ई बात डँकाक चोट पर

ललकारि क' कहि रहल छथि! अदालतो मे हुनका पर कोनो केस नहि चलि सकइ अछि! हुनका ले' एकदम सात खून माफ! ओना, ओ भाँगक तरंग मे आबि साते किऐ, सात सय खून क' चुकल होयताह!

ओना तँ, व्यंग्य-विनोद अपनहि तेहन निरामिष साहित्यिक विधा छैक, जेकर अढ़ ल' क' हास्य-व्यंग्यकार लेखक लोकनि अपन निरंकुशता, आक्रोश, विचार स्वातंत्र्य आदि विषय ल' क' राजनीति वा लोकनीति पर तीक्ष्ण प्रहार करैत रहलाह अछि। आ, अपन कथा-नायक पर कोनो तरहक दुर्बलताक आरोप नहि कर' पड़लनि! से तखनहि संभव भ' सकइ अछि, जखन कथा-नायक यथार्थक सीमा टपि क' असीम मे पयर नहि धरय! हास्यो-व्यंग्यक एक निश्चित सीमा होइत छै! आ, एक सीमे धरि ओ लोकप्रिय एवं सर्व-सहिष्णु होइत छै! परंच, वैह जखन दुनू कातक बान्ह तोड़ि क' नग्न-उन्मत्त नृत्य कर' लगै छै, तखन ओकर तर्क मे खाहे अकाट्य बल होए, खाहे, ओकर प्रतिपादनशैली मे विशिष्ट कला होए, ओ जखन विदग्धक मर्म स्पर्श करैत छै, तँ तिलमिलाइए नहि दै छै, दग्धो क'क' छोड़इ छै! एक ठाम स्वयं खट्टर कका अपन परिचय मे कहि रहल छथि...हौ, हम छी मुँहफट्ट! लाइ-लपटाइ जनबे नहि करइ छी। तेँ ठाइ-पठाइ बात लोक केँ कहि दै छियैक। संभव जे किछु गोटा केँ बेस तीख-चोख लगेन्ह, परंतु किछु गोटा केँ तेहन झँसिगर लगतैन्ह जे आँखि-नाक सँ पानि बहय लगतैन्ह... जेना लौंगिया मरचाइक बुकनी। हास्य तँ ओकरा कहब, जे हँसा दियै! विनोदो एकरे दोसर नाम छै! व्यंग्यो द्वारा गुदगुदी लगायल जाइत छै! किंतु, खट्टर ककाक तरंग मे तँ कतहु तेहन ने विष भरल रहैत छनि जे ककरो कोनो दिन प्राणो ल' सकैत छै! एहि अपराध सँ बचयबे खातिर, बूझि पड़इ-ए, जे खट्टर कका केर हाथ मे भँगघोटना द' देल गेलनि! नहि तँ, पाठकक आक्रोश सँ ओ कोना बाँचि क' जा सकितथि? भाँगक निसा हुनका बचैबा ले' ब्रह्मास्त्र बनि क' आबि जाइ छनि!

आब खट्टर कका प्रत्यक्ष मे जे होथि, हमरा एहि सँ कोनो विवाद नहि। मुदा, परोक्ष मे ओ लेखक महोदय हरिमोहन झा स्वयं अपन अन्य प्रतिमूर्त्ति मे प्रकट भेल छथि। जिनका एहि कथन पर विश्वास नहि जमनि, से एक बेर पोथीक समर्पण-पृष्ठ देखि जाथु! पुस्तक समर्पित स्वयं खट्टर कका केँ! समर्पण-वाक्य छै जे भंगक तरंग मे काव्य-शास्त्र धारा बहा दैत छथि।

'जनिक प्रवाह मे थोड़े कालक हेतु वेदपुराण, (थोड़े कालक हेतु' पर ध्यान देबै) धर्मशास्त्र, सभ टा भसिया जाइत अछि!

जे बात-बात मे अद्‌भुत रस ओ चमत्कारक चाशनी घोरि दैत छथि।

जे मर्मस्पर्शी व्यंग्य द्वारा लोकक अंतस्तल मे पहुँचि गुदगुदी (मात्र गुदगुदिये—की बिठुओ काटि लैत छथि?) लगा दैत छथि।

तेहन चिर-आनंदमूर्त्ति, परिहास-प्रिय खट्टर कका केँ।'

की आबहु खट्टर कका केँ चीन्हबा मे कोनो भाङठ अछि? खट्टर कका पर आरोपित ई सब टा विशेषण ककरा पर जाइत छै?

हास्य-व्यंग्यक संगमे ई अद्‌भुत रस कोन ठाम चोट करइ छै? कनेक बिचारल तँ जाय, अद्‌भुत रस केकरा कहइ छै? बालक कृष्ण जखन माटि खा लेने छलाह, तखन यशोदा केँ मुँह खोलि क' जे दृश्य देखौने रहथिन से कोन रस छलैक? गीता मे वैह कृष्ण जखन अर्जुन केँ अपन विराट रूप देखौलथिन, तखन कोन रसक सृष्टि भेलैक? साहित्यक नवो रस जखन फराक-फराक रहैत छैक, तखन एक बात भेल। मुदा, जखन अनेक वा सभ रसक एके ठाम परिपाक होइत छैक, तखन कहबै छैक अद्‌भुत रस! खट्टरो कका मे तहिना एके रस नहि, रसक पूर्ण संहार पाओल जाइत अछि! आ तहिना, की स्वयं हरिमोहन बाबूओ मे विभिन्न रसक समाहार नहि देखल जाइत छनि? की साहित्य, दर्शन, कविता, हास्य, व्यंग्य, विनोद, सभ टा हुनका मे एके संग ओत-प्रोत नहि छनि? कवि जयदेवक जे गर्वोक्ति ओ खट्टर ककाक संदर्भ मे, पोथीक निवेदन मे, उद्धित कयने छथि—

येषां कोमल काव्य कौशलकला लीलावतीभारती
तेषां कर्कश तर्क वक्र वचनोदगारेऽपि किं हीयते।
यै : कांताकुच मंडले कररुहा: सानंद मारोपिता:
तै: किं मत्त करींद्र कुंभशिखरे नारोपणीया: शरा:॥

मुदा, खट्टर ककाक निर्मम प्रहार सँ क्यो नहि बाँचल, ई मानैत हम एक टा बात कहब जे, एकठाम निश्चित रूप सँ खट्टर कका चूकि गेलाह! सभ पर हुनक तीर तुक्का चलल, परंच वर्तमान राजनीति अनदेखे रहि गेल! बूझि पड़इ-ए, एहि मामिला मे खट्टर कका बरोबरि होस मे रहैत छलाह! भाँगोक तरंग मे बहैत, जखन ओ दनादनि सभपर लाठी भाँजैत चलि जाइत छथि, आधुनिक व्यवस्था पर एको हाथ नहि चलबैत छथि! एहि ठाम जा क' हुनक सभ टा 'मुँहफटता' गायब भ' जाइ छनि! की हुनका ई बात बूझल तँ नहि छनि, जे 'को जाने केहि वेश मे सी.आई.डी. मिलि जाहि!' फेर तँ कतहु भँगघोटनो पर सरकारक नजरि नहि पड़ि जाय! तँ, नीक अछि जे, लोकेक खेत खाइ—सरकारी बगीचा सँ जतेक फराक रही, कल्याणमस्तु। के आन्हर बिर्नीक खोता मे हाथ दिअ'? धर्म समाज, वेद, शास्त्र सभ टा मुइल व्यवस्था! मोसम्मात! क्यो बाज' आओत? की किछु कहत? भगवान केँ आइ धरि एते ने गारि पढ़ल गेल छनि, जे जँ ओ कतहु होयताह तँ गत्तर-गत्तर मे भूर भ' गेल होयतनि! मुदा, आइ धरि ककरा पर ओ कोन थाना-पुलिस मे खबरि कर' गेलाह? से, जे किछु हो...

एक बात मे हम खट्टर ककाक अत्यंत आभारी छियनि, जे ओ एक महा-पंडितक सभ टा शास्त्रीय भड़ाँस केँ अपन व्यक्तित्व पर ओढ़िक' साहित्य गंगा मे प्रवाहित क' देलनि! नहि तँ, के जानैय-ए, जँ प्रो. हरिमोहन झाक एहि तर्क वितर्क केँ समुचित निकास नहि भेटैत, तँ कोन-ने-कोन गजब भ' जयतै? हुनक 'खंडन खंड-खाद्य'क अद्‌भुत रसास्वादन ओहि मित्र-मंडलीएँ केँ भोग' पड़तय, जे हुनक घनिष्ठता प्राप्त करितय! आ, तखन फेर क्यो किए कहितै, जे हरिमोहन बाबूक मुँह सँ कखनो ज्ञान-विज्ञानक गप्प नहि सुनइ छी? हौ बाबू, सुनब कोनाक? ओ गप्प तँ सब बटोरिक' खट्टर कका ल' गेलनि! आब जँ ई कथा-वार्त्ता सुनबाक मोन होए, तँ चल जाउ लग! आ, ओ जेना अहीं सनक सुधी-सरस श्रोताक प्रतीक्षा मे भँगघोटना लेने बैसल छथि! ओ अहाँ केँ तेहन ने लौंगी मरचाइक धुक्कनि देताह कि अहाँक सब सर्दी-बोखार तत्काले पड़ा जायत! आ, अहाँ फुक्कल-फाकल भ' जायब! मुदा, एक बात सँ सावधान रहब! *खट्टर ककाक तरंग* मे भसिया क' अहाँ घोर नास्तिक ने बनि जाइ! जेकर संभावना सदैव बनल रहइ छै! तँ हुनक विनोद केँ विनोदार्थे सुनब आ, घर घुरिक' अबैत काल, ''यच्छुत्रं तच्छु गुरुवे नम:।'' कहि प्रणाम क' लेबनि!

धार्मिक कृत्य कीर्तन-भजन, यज्ञ-जाप, पूजा-पाठ आदि विषयक संबंध मे हरिमोहन बाबू केँ कोनो विचार-विमर्श नहि करैत देखि क' लोक केँ ईहो बुझना जाइत छै, ओ कतौ नास्तिक तँ नहि छथि! मुदा, शास्त्र मे नास्तिक ककरा कहल जाइत छै, ई कतहु ककरो स्पष्ट भ'क' विदित नहि छै—तँ ककरो सोझे नास्तिक मानि लेब अपने बुद्धिक देवालियापन सिद्ध होयत। ओना सरस साहित्यिक व्यक्ति कखनो नास्तिक नहि भ' सकै अछि—कोनो अर्थ मे नहि! तखन ई भ' सकैत अछि जे ओकर आस्तिकता ततेक गंभीर होए, जे 'आधा-मात्र गगरी' जकाँ ओहिना राह-बाट मे निरर्थक छलकैत नहि रहैत होए! एहि संदर्भ मे एक टा महिला छथिन, 'अहल्या'—ओ आनंद-मार्गी छथिन। बाबा मे पूर्ण श्रद्धा रखैत छथिन! बाबाक प्रति भक्ति प्रकट करय-बला आत्म निवेदन-

परक स्वर मे गाबि क' सुनबैत छथिन—ओ 'अहल्या' जी सँ भक्ति परक गीत सुनि आनंद मे मगन भ' क' झूमि उठैत रहथिन! जखन आनंदमार्गी 'बाबा' क स्तुति गान सँ हुनका एतेक प्रेम भ' सकइ छनि, तँ आन धार्मिक विषय-वस्तु सँ उपराग किऐ होयतनि! ओना, अंधविश्वास, रूढ़ि, धार्मिक मदांधता, जादू-टोना चमत्कार, तंत्र-मंत्र आदि केँ ओ कोनो खास महत्त्व नहि दै छथिन, आ सब केँ एके लाठी सँ हाँकि क' खेत सँ निकाल-बाहर क' दै छथिन, तँ यदि हुनका नास्तिक मानल जाय, तँ सर्व-साधारणक दृष्टिएँ उचिते थिक! कारण जे ओकर पहुँचब ताही ठाम धरि अछि!

समाज-सुधारो सँ हुनका दिलचस्पी रहैत छनि, आ मौका भेटनि तँ (लेखनी द्वारा जे कयने छथि, से सर्व-विदिते छै) प्रत्यक्षो किछु करबा ले' तत्पर भ' जाइत छथि! एक बेर तेहने संयोग लागि गेलनि तँ स्वयं अगुवा बनि दू-टा कायस्थ परिवारक लड़िका-लड़िकी केँ दोसर परिवारक तेहने योग्य लड़िका-लड़िकीक संग, गोलट विवाह करा देलथिन—नाम मात्रेक खर्च मे, जाहि सँ दुनू परिवार मे खुशीक लहरि उठि गेल! कतौ कोनो युवक-युवतीक विवाह जँ बिना दहेजक होइत सुनैत छथिन, तँ बहुत प्रसन्न भ' आशीर्वादक मंगल-वर्षा करय लगइ छथिन!

हुनका संग मे हमर बहुत रास खेल भेल अछि! गुल्ली-डंडा आ चित्त-कबड्डी सँ ल' क' फुटबाल-क्रिकेट धरि! यद्यपि ई सभ खेल मनोराज्य मे भेल अछि, मुदा, शतरंज तँ वास्तविक रूप ध' लेने छलय! शतरंजक अपूर्व महिमा छैक! शतरंजक, माने सय प्रकारक रंज, अर्थात् ठेठ भाषा मे, क्रोध, आवेश, रूसा-फूली! से सब तँ भेले छै, शतरंजक खेलो भेल छै! एक दिन हुनका ओहि ठाम शतरंजक गोटी देखलयनि आ हमर नजरि पड़िते पूछि देलनि—अहाँ शतरंज खेलाइ छी?

बस, ओहि दिन जे शतरंज पसरि गेल, से संध्या काल प्रायः रोज चलय लागल। जाड़क राति मे नौ-दस बजे ठिठुरल घर जाइत रही! ओम्हर सँ उमाशंकर वर्मा सेहो आबि जायल करथि। सब सँ बढ़ि क' मजा तँ तखन आबय, जखन शतरंजक चैंपियन एक टा पंडित जी महाराज कतहु सँ घूमैत-फिरैत पटना आबि जाथि आ हरिमोहन बाबूक अतिथि बनथि!

बहुत दिन धरि ई खेल चलैत रहल। कखनो हम हारि जाइ, तँ तखनो हुनको हार' पड़नि। तावत धरि खेल चालू रहय, जावत धरि ओ हारि ने जाथि! जीत पर हुनका उत्साह बढ़ल जाइनि। हारले पर कहथि, ''आब छोड़ि दिअ'!''

एहि बीच मे एक दिन पटना मे आयोजित शतरंजक एक टा चैंपियनशिप प्रतियोगिता देखलहुँ, जे इंजीनियरिंग कॉलेजक हाल मे भेल छलय! प्रतियोगिता मे महाराष्ट्र सँ आयलि 'रोहिणी' नामक एक टा महिला खिलाड़ी आ ओकर छोट बहिन बहुत दिन धरि हमर सभक गोष्ठी मे चर्चक विषय बनलि रहलि। हरिमोहन बाबू बड़े मनोयोगपूर्वक ओहि दुनू बहीनक खेल देखलनि आ बहुत दिन धरि ओ स्मरण कैल गेलि!

ई हुनका मे विशेष गुण छनि, जे कोनो प्रतिभाशाली, गुणज्ञ, होनहार कलाकार होथि आ हुनकर संपर्क मे आबि जाथि, तँ हुनका आसमान पर चढ़यबा मे कनेको विलंब नहि करथिन! एहने एक टा कलाकार रहथिन, समस्तीपुरवाली शारदा सिन्हा।

हम शतरंजक गप्प कहैत छलहुँ। एकदिन हरिमोहन बाबू हमरा आगू शतरंज पसारि देने रहथि, ''डॉक्टर कहलक अछि जे कहुना मोन केँ खेल मे रमौने रहू जे चिंता-फिकिर फराक रहय!'' तहिना एकदिन स्वयं कहै छथि, ''डॉक्टर मना करय-ए जे शतरंज नहि खेलू। दिमाग पर जोर पड़इ छै!'' आ हठात् उसरि गेल शतरंजक खेल!

ओना शतरंज सँ हमर विरक्ति प्रारंभे सँ छल! किंतु, हरिमोहन बाबूक रोच राखइ लै शतरंज खेल' लगलौं, तँ मुइल गाछ जेना पनकि गेल! एक बेर, फेर ओहि सँ पुराने आसक्ति पैदा भ' गेल आ जमैत-जमैत जमि गेल, तँ साँझ होइते मोन कछमछ कर' लागय जे कौखन हरिमोहन बाबूक ओहि ठाम पहुँची आ शतरंजक बाजी शुरू होए! तँ एकाएक हरिमोहन बाबू जे खेल उसारि देलनि, ताहि सँ साँचे-साँच कहू, बड़ मोन केनादन भ' गेल! सोच मे पड़ि गेलहुँ, जे देखू! गाछ पर चढ़ा क' खसायब एकरे तँ नहि कहै छै, जे आइ हरिमोहन बाबू कयलनि-ए!

मुदा, हरिमोहन बाबू स्वयं जखन गाँज घर कयलनि, तखन कपार ठोकि क' हमहूँ बैसि रहलहुँ।

हँ, कहियो-कहियो किछु साहित्यिको गप्प चलैत रहय। ताहि मे, पुरान साहित्यकार तँ कम्मे होइत रहथि! जँ चर्च मे आबैत रहथि तँ दू-चारि स्तुति-परक वाक्य अथवा संस्मृति-संस्मरण सँ विदा क' देल जाइत रहथि! बेर-बेर आबथि तँ नवीन मुक्तबोधी साहित्यकार आ कवि जिनका प्रति हरिमोहन बाबूक नितांत प्रतिपक्षी विचार रहैत छनि। नव कविताक रचनाकार कवि लोकनि भेलाह स्वयंसिद्ध, स्वनामधन्य, सर्वतंत्र, स्वतंत्र, स्वच्छंद; छंद, रस, अलंकार सभक टाँग तोड़'बला—हरिमोहन केँ से एकदम पसिन्न ने!

''एँ-औ? ओ कवि-लोकनि की लिखैत छथि, अहाँ केँ अर्थ लगइ-ए? बूझइ छी?'' हरिमोहन बाबू विकट सवाल करइ छथि! हम मुश्किल मे पड़ि जाइ छी!

मुदा ओ दिन आ ओ वृंदावन कोना बिसरल जा सकैत अछि, जाहि ठाम जानि ने कतेक रास-लीला भेल छलय! विद्यापतिक समस्त पदावलीक सभ टा भाव-भंगी जेना रूपायित भ' क' साकार-सदेह ठाढ़ भ' गेल होए। नोंक-झोंक, मान-दान, रूसब-मनायब। कुंज-बिहार। हम कतेक बेर बिगड़ि क' चलि आबी, जे आब फेर ओहिठाम पयर नहि धरब। मुदा, बिहाने भ' क' पुनः ओहिठाम अपने आप पयर पहुँचि जाय—कोना, से ने जानि। ओ कहथि, ''हमरा सँ खिसिया गेल छलियै?''

भला, अहुना कतहु होइ छै? हमरा चाह पीब'क नहि मोन होइत अछि। अहाँ बलजोरी कहैत छियै, ''एक घोंट पीबि लिअ'! लाओ जी बहादुर! जल्दी लाओ!'' हमरा खैबाक मोन नहि अछि, अहाँ आगू मे की ने की राखि दै छियै। हमरा कतौ जयबाक नहि मोन होइ-ए, अहाँ अपना गर्जे कहै छी ''चलू, घूम' ले! —हे असकर हमरा साहस नहि होइ-ए! अहाँ संग मे रहब, तँ सहारा भेटत! जानि ने, कत' खसि पड़ी!'' मुदा, हमरा की बुझइ—छियै? हम साधारण लोक—आ, अहाँ महा-पुरुष! कहाँ-कहाँ हम अहाँ केँ सम्हारने फिरब? ''हे कनेक फलाँठाम हमर ई समाद लेने जाउ! जाइते छी ओम्हर, तँ हुनका कहि देबनि!'' हौ जी, हम की कोनो समदिया छी! कोनो आन केँ पठा नहि होइ-ए! एकबेर, जखन, शतरंज खेल ओ अपनहि ई कहि क' उसारि देलनि, जे डॉक्टर मना कयने अछि, हमरा मोन मे परम विरक्तिक भावना भरि देलनि! मोन मसोसि क' रहि गेल छलहुँ ओहि दिन। आ, तकरो छ मासक बाद फेर कोना ने कोना कहैत छथि, शतरंज खेलू! हमरा बिसरल नहि ओहि उसरल दिनक बात। कहलियनि, जोर द' क' कएक बेर कहलयनि, नहि, नहि! हम नहि खेलायब! नहि नहि...

आ, ओ अपन जिद्द मे शतरंज लाब' ले' कमराक अंदर गेलाह। पहिने बाहरे बरामदा मे बैसल छलहुँ कि हम आँखि मूनि क' पड़यलहुँ ओत' सँ, यैह ले, वैह ले!... ओ शतरंज ल' क' बाहर आयल होयताह, तखन हमरा नहि देखि क' मोन मे हमरा प्रति केहन भावना कयने होयताह, से तँ वैह जानथि, की भगवाने। मुदा, दोसर दिन फेर ओहिठाम पहुँचइ छी, तँ वैह ''मधुर गीतम्'' क रेकार्ड बाजि रहल अछि। वैह चाह, वैह जलपान! वैह गाओल गीत फेर गाओल जा रहल अछि।



आखर सात

अमरनाथ

''हे लिअ घोड़ा...आऽऽब... आब की करब?''

''देखि क' नहि चलैत छिऐक।...प्यादा सँ घोड़ा कटि गेल। अच्छा तँ किश्ती चलैत छी।...''

''अरे, पहिने शह छोड़ाउ। प्यादा सँ घोड़ा कटल आ शह लागि गेल।''

''एँ, शह लागि गेल!'' हरिमोहन बाबू चौंकलाह, ''अरे हम बुझलिऐक नहि!'' फर्जी उठौलनि, बादशाह दिस नजर दौड़ोलनि, फर्जी रखलनि आ बजलाह, ''आब कोन उपाय?''

''उपाय की? ईहो बाजी हारि गेलहुँ।'' हाँजीपुर सँ एक गोटे आयल रहथिन तनिके संगे साँझ मे हरिमोहन बाबू शतरंज खेलाइत रहथि। हुनका बिसात समटैत देखिक' कहलथिन, ''हाँ, हाँ, ई की करैत छी?'' फेर हमरा दिस इंगित करैत कहलथिन, ''ईहो छथि! हिनको शतरंज मे रस भेटैत छनि।...एक बाजी और भ' जाय।''

मुदा ओ थम्हलाह नहि। बजलाह, ''जाइ छी आब भौजी लग। देखबनि जे की सभ भोजन मे बना रहल छथि। ई किश्ती, फर्जी सँ थोड़े पेट भरैत छैक।'' बैसल छलाह से उठलाह आ भीतर चलि गेलाह। हरिमोहन बाबू कहलकनि, ''किछु सपना एहन होइत छैक जे देखू की घटित भ' जायत। परसू देखलिऐक जे गाम सँ एक टा पाहुन आयल छथि आ साँझ होइत-होइत ई झोड़ा-झपटा लेने पहुँचि गेलाह।'' ई कहैत-कहैत चुप भ' गेलाह। जेना किछु मोन पड़लनि। बजलाह, ''आइ कने काल पहिने ई की कहलनि से बुझलिऐक।''

हम उत्सुक होइत पुछलियनि, ''की कहलनि?''

अरे हमरा की कहता? हमर पत्नी केँ कहलथिन, ''भौजी एहि सुक्खा-सुक्खी भोजन सँ काज नहि चलत। दूध, दही, घी खुआउ। अरे, पुट्ठा मजबूत होयत तखने ने हिनका उठाक' गुल्ली घाट (शमशान घाट) द' अयबनि।''

ई कहैत-कहैत हरिमोहन बाबू गुम्म भ' गेलाह। किंचित रुकिक' बजलाह, 'विकट पाहुन' लिखलाक उपरान्त होइत छल जे एहि सँ अधिक आब की होयत। मुदा हिनकर मनोरथ ने देखू!'' एतबे मे बहादुर दू कप चाह द' गेल। चाह पीबैत हरिमोहन बाबू बजलाह, ''मुदा कहलनि यथार्थ।'' आब मृत्युक घण्टा टनाक्... टनाक् सुना पड़ैत अछि। ''मृत्युमेवाऽपवर्गम... मृत्युए तँ मोक्ष थिक!'' हम टुकुर-टुकुर ताकए लगलहुँ। प्रायः हमर आँखि मे संशयक रेखा देखलनि। पुछलनि, ''तँ की अहाँ कर्म फल मानैत छी? ...से मानैत होयब तँ पुनर्जन्म सेहो मानब आ पुनर्जन्म मानव तँ बन्धन-मोक्षक खिस्सा-पिहानी ल'क' बैसि जायब...पुनर्जन्म न विद्यते!'' एहि बीच मे सुमन सरीन अयलीह आ हमर बगल मे बैसि रहलीह। पटना विश्वविद्यालय सँ एम.ए. (दर्शनशास्त्र) मे परीक्षा देने रहथि आ कविता बनबैत रहथि। हम एम.ए. (दर्शन) मे प्रवेश लेने रही। सुमन सरीन सुनरि रहथि। बेस नमहरि-छरहरि। तहिया कोनो युवती केँ देखिक' सकुचा जाइत रही। कुर्सी पर कोचिआय लगलहुँ। हठात् हरिमोहन बाबू पुछलनि, ''अहाँ कोन दर्शन सँ प्रभावित भेल छी?''

हम, ''अद्वैत वेदान्त! शंकराचार्यक अद्वैत वेदान्त!''

हरिमोहन बाबू, ''से किएक?''

''असल मे शंकराचार्यक दर्शन मे संसारक रहस्य पर सँ परदा उठि जाइत छैक।...''

''सुमन, तुम कहो पर्दा उठता है?''

सुमन केँ कविताक चस्का लागल रहैक। कविताक एक टा डायरी हाथ मे रखने छलि। चुप रहलि। हरिमोहन बाबू पुछलनि, ''की परदा उठैत छैक?''

हम कहलियनि, ''ब्रह्म सत्यम् जगन्नमिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।''

असल मे एक मात्र ब्रह्म सत्य अछि, ई संसार मिथ्या थिक। जीव आ ब्रह्म मे कोनो भेद नहि छैक। अविद्याक कारण नानात्मक संसार परिलक्षित होइत छैक। यथार्थ ज्ञान प्राप्त भेला पर ज्ञानी मे अभेद दृष्टि उत्पन्न होइत छैक, ''ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।...''

हरिमोहन बाबू किछु क्षण लेल गुम्म भ' गेलाह। फेर बजलाह, ''शंकराचार्य मनुष्य छलाह कि अलौकिक पुरुष?''

हम, ''केरल प्रान्तक कलमादी मे जन्म भेल छलनि। छलाह तँ मनुष्ये मुदा साधना सँ ब्रह्मज्ञानी भ' गेल रहथि।''

एहि गप्प पर हरिमोहन बाबू हँस' लगलाह। कहलनि, ''ओ संसारे केँ नहि मिथ्या कहैत छलाह, अपने सेहो मिथ्या बजैत छलाह। मनुष्य कतहु संसारक रहस्यक वर्णन करय। ओ तँ स्वयं अपूर्ण होइत अछि। हमरा जनैत सम्पूर्ण भारतीय दर्शन मे एक मात्र दार्शनिक सत्य बजैत छथि।...''

''कोन दार्शनिक?...''

''चार्वाक! चार्वाक सत्यवादी छथि!...''

''एँ चार्वाक! ओ तँ भौतिकतावादी छथि। भोगवाद केँ प्रश्रय दैत छथि।''

''से कोना?'' हरिमोहन बाबू पुछलनि।

हम, ''देखल जाओ—

'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पीबेत्।

भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः?

हरिमोहन बाबू, ''तँ एहि मे गड़बड़ कत' छैक? चार्वाक थोड़बे कहैत छथि जे बलंकृत्वा घृतं पीबेत् आ कि छलं कृत्वा घृतं पीबेत्। ओ कहैत छथि, ऋणं कृत्वा घृतं पीबेत्। ई तँ अर्थशास्त्रक नियम छैक। बड़का-बड़का उद्योगपति ऋण ल'क' व्यवसाय करैत छथि आ लक्ष्मीवंत होइत छथि। वास्तव मे चार्वाक जे करैत छथि से बजैत छथि। जे फील करैत छथि से बजैत छथि।''

''आ तँ सत्यवादी छथि।...तुम्हारा क्या विचार है सुमन?''

सुमन डायरीक पन्ना फड़फड़बैत रहय। कविता सुनाबय लेल उताहुल भ' रहल छलि। बाजलि, ''जरा, मेरी कुछ कविताएँ सुन लीजिए।''

हरिमोहन बाबू कहलथिन, ''सुनेंगे, कविता भी सुनेंगे...'' फेर हमरा दिस उन्मुख होइत कहलनि, ''तखन, सुनू हमर एक टा अनुभव।

काशी मे एक टा अत्यन्त सुन्दरी श्वेतवसना साध्वी प्रवचन दैत रहथि। वयस रहल होयतनि पच्चीस-छब्बीस। उत्सुकतावश प्रवचन सुनबा लेल हमहूँ गेलहुँ। लगभग आधा घण्टा प्रवचन देलाक उपरान्त ओ साध्वी ध्यानस्थ भ' गेलीह। दस-पंद्रह मिनटक पश्चात् साध्वीक ध्यान भंग भेलनि। श्रोता लोकनि दिस नजरि घुमौलनि आ तखन पुछलथिन, ''जब मैं ध्यानस्थ थीं, उस समय आप लोग क्या सोच रहे थे?''

एक टा श्रोता कहलथिन, ''मैं ईश्वर के विषय में सोच रहा था।''

दोसर बजलाह, ''मैं ब्रह्म-चिन्तन में लीन हो गया था।''

तेसर बजलाह, ''मैं सोच रहा था कि ज्ञान श्रेष्ठ है या भक्ति?''

हम पुछलियनि, ''अपने की कहलियनि?''

हरिमोहन बाबू कहलनि हमर जखन बारी आयल तँ कहलियनि, ''मैं तो आपका उन्नत उरोज ही देख रहा था।...''

श्रोता लोकनि मे हमर उत्तर सूनिक' खलबली मचि गेलैक। सभ हमरा दिस आग्नेय नेत्र सँ ताकए लागल। मुदा साध्वी शान्त स्वर मे बजलीह, ''आप सत्यवादी हैं।''

कने रुकिक' हरिमोहन बाबू बजलाह, ''तँ हम कहैत छी जे चार्वाक सत्य बजैत छथि।'' सुमन सरीन अपन उरोज दिस देखलक। हमहूँ देखिलिऐक उन्नत रहैक।''

सुमन बाजलि, ''तो क्या चार्वाक के भोगवाद को स्वीकार कर लिया जाय? क्या काम को ही जीवन का लक्ष्य घोषित कर दिया जाय? क्या काम और अर्थ ही पुरुषार्थ है? अर्थकामो पुरुषार्थः?''

''यह तुम क्या कहती हो सुमन?'' हरिमोहन बाबू बुझबैत कहलथिन, ''पलायनवादी को छोड़कर हर मनुष्य अर्थ और काम से परिचालित हो रहा है। यही बात क्रमशः मार्क्स और फ्रायड कहते हैं तो क्रान्तिकारी कहते हैं और सैकड़ों वर्ष पूर्व चार्वाक कहते हैं तो उसे नास्तिक कहकर भर्त्सना करते हैं।''

सुमन केँ दरभंगा हाउसक बरामदा पर ठाढ़ि भ'क' गंगाक जलधारा पर दृष्टिपात करैत गम्भीर तर्क-वितर्क करैत देखने रहियैक। बाजलि, ''परन्तु मनुष्य पशु तो नहीं है। काम ही यदि लक्ष्य हो जाय तो अराजकता फैल जाएगी।''

हरिमोहन बाबू कहलथिन, ''देखो सुमन, किंवदन्ति पर चार्वाक का मूल्यांकन नहीं करो। वृहस्पति सूत्र और वात्स्यायन का कामसूत्र पढ़ो। ये ऋषिगण प्रबुद्ध चार्वाक माने जाते हैं। वात्स्यायन अर्थ और काम के साथ-साथ धर्म



को भी पुरुषार्थ मानते हैं। ''परन्तु धर्म का तात्पर्य क्या है?...''

हम आ सुमन चुप रहलहुँ। हमरा दिस उन्मुख होइत कहलनि, ''धर्मक तात्पर्य नियम सँ छैक, कर्मकाण्ड जन्य मिथ्या आडम्बर सँ नहि।''

सुमन बाजलि, ''आप ठीक कहते हैं सर, नियम से परिचालित होने पर अराजकता नहीं फैलेगी।''

हरिमोहन बाबू आनन्दित होइत सुमन केँ कहलथिन,''हाँ ठीक है, अब सुनाओ कविता...''

सुमन उत्साहित होइत कविता पढ़य लगलीह। कविता ओ विलक्षण लिखैत छलीह, मन्त्रमुग्ध भ' जाइत छलहुँ, मुदा कखनो क' जेना लगैत छल जे कतहु-ने-कतहु आहत भेल छथि, कोनो दंश कोनो चुभन कविता मे प्रतिध्वनित होइत रहैत छनि! बीच-बीच मे किछु आनो कविक पाँती सभ प्रसंगवश पढ़ैत छलीह। ओहि साँझ मे छिड़िआयल किछु शब्द सभ कखनो क' गुँजि उठैत अछि—

मूर्त्ति की पूजा इसलिए नहीं करते
कि वह ईश्वर है।
हम पूजा करते हैं,
क्योंकि उसने तरासे जाने का दर्द सहा है।

ओहि साँझ कविताक धारा तेहन चलल जे पता नहि लागल जे कखन रातुक नौ बाजि गेल। हठात् सुमन सरीन घड़ी देखलनि आ उठलीह। हरिमोहन बाबू कहलनि, ''अमरनाथ, कने अहाँ हिनका डेरा धरि पहुँचा दियौनि। ...असल मे बाट मे किछु छौंड़ा सभ हिनका देखिक' गाना गाब' लगैत छनि।...''

टिकिया टोलीक गली सँ बहराक' सड़क पर अयलहुँ आ सुमन सरीनक डेरा दिस विदा भेलहुँ।

(दू)

ओहि दिन हरिमोहन बाबू केँ आकाशवाणी मे कविता पढ़बाक रहनि। कुर्त्ताक एक जेबी मे आकाशवाणी सँ आयल पत्र रखलनि आ दोसर जेबी मे कविता। जेबी सँ कविता बहार कयलनि। उलटा-पुलटा क' देखलथिन। स्वगत बजलाह, ''हँ, ठीक अछि।...यैह कविता पढ़बैक।'' फेर हमरा दिस उन्मुख होइत कहलनि, ''सन्देह भ' गेल छल। भेल जे कदाचित दोसर कविता ने जेबी मे राखि लेने होइ। आकाशवाणी पहुँचब आ तखन पता चलत जे दोसर कविता अछि तँ तखन कोन परिमार्जन।'' हम पुछलियनि ''कोना चलबैक? रिक्सा क' लैत छी।...''

''हँ, हँ, रिक्सा क' लिय'।''

एक टा रिक्सावला लग गेलहुँ। कहलियनि, ''कहैत अछि जे गांधी मैदाने धरि जायब।''

''ओह, रेल मे बदली होइत छैक। ई रिक्सो पर बदली क'क' जायब।... दोसर केँ पुछियौक।...''

दोसर केँ पुछलियैक। सबा टका माँगलक। कहलियनि, ''सवा टाका मँगैत अछि।''

''ठीके छैक। चलू। कोन बेजाय! सवा टाका दक्षिणा तँ प्रशस्ते छैक!''

रिक्सा पर चढ़िक' आकाशवाणी दिस विदा भेलहुँ। रवि रहैक। मैथिली कार्यक्रम भारती मे काव्य पाठ करबाक रहनि। कविता पाठ कय डेरा पर सुनौने रहथि। कविता लय मे पढ़थि। कखनो-कखनो गीत सेहो गाबथि। हरिमोहन बाबूक मनोमुग्धकारी स्वर, संगीतात्मक लय, सहज बोधगम्य शब्द आ व्यंग्य श्रोता पर जादूक असर करैत छलैक। रिक्सा पर बैसल-बैसल कहलनि, ''कविता अथवा कथा पाठ मे उच्चारणक बड़ महत्त्व होइत छैक। उच्चारण मात्र सँ शब्दक अर्थ बदलि जाइत छैक। जेना-हँ, एकर मात्र उच्चारण भेद सँ अनेक अर्थक निष्पत्ति होइत छैक। हँ-स्वस्ति सूचक, हँऽऽऽ अच्छा एहन बात! हँ, हँ, खूब जनैत छी आदि। तहिना लोक केँ कथा पढ़िक' सुनयबा काल उच्चारण पर तँ ध्यान देबहि पड़ैत छैक, अभिनयक सेहो प्रयोजन होइत छैक। जखन जेहन भाव तेहन शब्दक उच्चारण आ तहिना

चेहराक भंगिमा सेहो होयबाक चाही।...''

''की भेलैक? कथीक आवाज भेलैक?''

रिक्सावला सीट पर सँ उतरैत बाजल, ''रिक्सा पंचर हो गया।''

रिक्सा पर सँ पहिने हम कुदलहुँ आ तखन हरिमोहन बाबू उतरलाह। पुछलनि, ''कतेक दिऐक?'' हम कहलियनि, ''ई तँ बिस्कोमान भवने लग थस ल' लेलक।'' फेर रिक्सावला दिस तकलिऐक कहलक, ''एक टाका।'' हरिमोन बाबू एक टाका देलथिन आ ओत' सँ विदा भेलहुँ। हरिमोहन बाबू कहलनि, ''अहाँ डेरा पर कहैत छलहुँ जे व्यर्थ हड़बड़ाइत छी। एखन बहुत समय अछि। मुदा आब देखियौक जे की भेल?'' पुन: हमरा बुझबैत कहलनि, ''कतहु समय पर पहुँचबाक रहय तँ किछु समय हाथ मे राखिक' चलबाक चाही।...'' आकाशवाणीक द्वारि लग पहुँचलहुँ। मन मे होइत रहय जे छत्रानन्द जी गेट पर होयताह। मुदा केओ नहि। भीतर गेलहुँ तँ अंग्रेजी मे क्रिकेट कमेंट्रीक आवाज अबैत रहैक। आकाशवाणीक अधिकांश कर्मचारी लोकनि कमेन्ट्री सुनबा मे मशगुल रहथि। एक गोटे सँ पुछलिऐक, ''छत्रानन्द जी...।''

एतबे मे जोर सँ उछलल ''सिक्स सिक्स...नो...नो...फोर...फोर...।'

''छत्रानन्द जी कत' छथि?...''

''चऽऽऽ...चऽऽऽ...क्या हुआ कैच... आउट...ओह...''

''छत्रानन्द जी...?''

''क्या रट लगा रखी है छत्रानन्द, छत्रानन्द... आज शाम तक कोइ शिड्यूल नहीं होगा। कामेन्ट्री बस क्रिकेट कमेन्ट्री...समझे...'' हम चिन्तित होइत कहलियैक, ''तो फिर 'भारती'?... मैथिली कार्यक्रम भारती का क्या होगा?''

ओ लोहछैत बाजल, ''आज भारती का कार्यक्रम शाम साढ़े पाँच बजे चला गया है।''

ई गप्प सूनिक' हरिमोहन बाबू बेचैन भ' उठलाह। पैघ अधिकारीक कक्ष मे प्रवेश कयलनि। हमहुँ संग लागल गेलहुँ। एक टा वरिष्ठ अधिकारी बैसल रहथि। हरिमोहन बाबू कहलथिन, ''अभी दो बजे से भारती कार्यक्रम मे मेरा काव्य-पाठ है। यह देखिये पत्र! तिथि और समय अंकित है।''

ओ अधिकारी बिना पत्र देखने कहलकनि, ''वह सब ठीक है। आप अभी घर चले जाइये और शाम को पाँच बजे पुन: चले आइएगा। आज भारती का कार्यक्रम शिफ्ट कर गया है। अब उसका प्रसारण शाम साढ़े पाँच बजे निर्धारित है। उसी समय सीधा प्रसारण होगा। चेक भी ले लीजिएगा...।''

हरिमोहन बाबूक चेहराक रंग बदल' लगलनि। माथक शिरा तनाय लगलनि आ जोर-जोर सँ ओहि अधिकारी केँ अंगरेजी मे डाँट' लगलथिन जकर तात्पर्य रहैकजे अहाँ केँ एतबो शिष्टाचार नहि अछि जे एक टा सत्तरि वर्ष सँ अधिक वयसक लेखक संगे कोना व्यवहार करी। अहाँक हम कलाकार छी, नोकर नहि छी जे आदेश पर आदेश देने चल जा रहल छी।...''

आकाशवाणी परिसर मे हरिमोहन बाबूक गर्जन सूनिक' हरबिड़रो मचि गेलैक। पाँच-दस गोटे दौगल अयलाह। एक गोटे अनुनयक स्वर मे कहलथिन, ''अच्छा, तँ डेरा नहि जाउ। पाँच बजे धरि एही कक्ष मे आराम कयल जाओ। साढ़े पाँच बजे सीधा प्रसारण भ' जायत।'' एहि गप्प पर हरिमोहन बाबू केँ आरो क्रोध चढ़ि गेलनि। पुन: अंग्रेजी मे डाँटय लगलथिन जकर आशय रहैक जे अहाँक 'प्रोग्राम' 'शिफ्ट' कयलक तँ तकर पूर्व सूचना हमरा भेटबाक चाहै छल आ से सूचना नहि देलहुँ तँ एखने कोनो व्यवस्था कर' पड़त।...''

एहि गप्प पर ओ सभ चुप्प भ' गेलाह। ई देखिक' हरिमोहन बाबू अतिशय क्रुद्ध होइत हमरा कहलनि, ''हमरा ओतेक फाजिल समय नहि अछि जे हिनकर कक्ष मे आराम करब! अमरनाथ, चलू डेरा...।''

हम धड़फड़ाक' विदा भेलहुँ मुदा एतबे मे एक गोटे हरिमोहन बाबू केँ रोकलथिन मुदा ताहि पर ओ गरजैत कहलथिन, ''ई की हमरा कहल गेल जे साँझ मे चेको भेटि जायत। 'एक टा बूझि लिय' जे हमरा लेल लेखकक प्रतिष्ठा सर्वोपरि अछि।...''

आगाँ बढ़िक' एक टा अधिकारी कहलथिन, ''क्षमा कयल जाओ। हमरा लोकनि सँ गलती भेल अछि। एखने रेकार्डिंगक व्यवस्था करबैत छी।'' हरिमोहन बाबू क्रोध आ आवेग मे ठाढ़ रहथि से कुर्सी पर बैसलाह। एम्हर हम उठलहुँ आ एक टा चपरासी केँ जल अनबाक लेल कहलिएक। किछु कालक उपरान्त चपरासी दू ग्लास जल रखलकैक। हरिमोहन बाबू एक ग्लास जल पीलनि। एहि बीच मे दू कप चाह आबि गेल। चाह पीबय लगलहुँ। चाह पीयल भ' गेल तखन रेकार्डिंग रूम दिस विदा भेलहुँ। हरिमोहन बाबू कविताक पन्ना रखने बैसल रहथि आ हम दोसर दिस सँ देखैत रहियनि। किछु कालक उपरान्त आकाशवाणीक रेकार्डिंग रूम सँ स्वर लहरी गुँज' लगलैक—

जे छक्का पंजा जनै-ए से सत्ता पबै-ए
से सत्ता पबै-ए, हे...हे...सत्ता पबै-ए
सोझमतिया सभ बैसिक'
झाम गुड़ै-ए, हे...हे, झाम गुड़ै-ए
हे...हे...झाम गुड़ै-ए!



तीन

ओहि दिन सांध्य भ्रमण लेल चलल रहथि। अधिककाल घुमबा काल हरिमोहन बाबू संग क' लेथि। कखनो गोविन्द मित्र रोड दिस चलथि। किछु काल पुस्तक भण्डार मे मास्टर साहेब (रामलोचन शरण)क बेटा सभ सँ गप्प करथि, अमला सभ सँ ओकर घर-परिवारक हाल-चाल पुछथिन आ डेरा वापस भ' जाथि। तहिना कहियो डॉ. उमा गुप्ता तँ कहियो वर्मा जीक डेरा पर जाथि। मुदा अधिककाल पटना इंजीनियरिंग कॉलेजक मैदान मे घूमथि आ

किछु क्षण गांधी घाट पर बैसिक' गंगा कैँ निहारथि। ओहि दिन गांधी घाट दिस चलल रहथि मुदा पोस्ट ऑफिस मे एक टा लिफाफ खसेबाक रहनि। कने काल महेन्द्रू पोस्ट ऑफिस मे रुकलहुँ। ढोल मे लिफाफ खसौलनि आ तखन ओत' सँ विदा भेलहुँ। बाद मे कहलनि जे महेन्द्रू पोस्ट ऑफिस मे एक बेर विचित्र घटना घटि गेल। एक टा लिफाफ ढोल मे खसेबाक रहय। संयोग सँ जे कुर्ता पहिरने रही ताहि मे जेबी नहि रहय। एक हाथ मे लिफाफ रखने रही आ एक हाथ मे पर्स, मन मे गुनधुन होबय लागल। कदाचित् लिफाफक बदला पर्से ने खसि पड़य ढोल मे। अहूँ तँ बूझिते छिऐक दर्शनशास्त्र पढ़निहारक मनोदशा! ई कहैत-कहैत हँस' लगलाह। कहलनि नित्से खूब कहने छथिन, ''What i understand by philospher; a terrible axplosive in the presence of which everything is in danger. (अर्थात् दार्शनिक भयानक विस्फोटक थिक, जकर उपस्थिति मे सभ वस्तु खतरा मे रहैत अछि।...) एक टा बात कहू।... ओ अनका लेल खतरा उत्पन्न करओ अथवा नहि मुदा अपना लेल डेग-डेग पर खतरा उत्पन्न करैत रहैत अछि। से भेल जे एक हाथ मे पर्स अछि आ एक हाथ मे लिफाफ से कोनो खतरा ने उत्पन्न भ' जाय। पर्स दिस देखलहुँ तँ ओ दहिना हाथ मे छल आ लिफाफ वामा हाथ मे। भेल जे ढोल मे खसेबा काल तँ साधारणतः दहिने हाथ सक्रिय होइत छैक। तत्काले बदलि लेलहुँ। अर्थात् दहिना हाथ मे लिफाफ रखलहुँ आ वामा हाथ मे पर्स। मुदा फेर भेल जे पहिने तँ टिकट खरीदबाक अछि। पहिने तँ पर्सेक काज पड़त। आब फेर पर्स दहिना हाथ मे लेलहुँ आ लिफाफ वामा हाथ मे। एहिना वामा सँ दहिना आ दहिना सँ वामा करैत पर्स ढोल मे खसा देलियैक।'' अरे ई की कयना गेल। धड़फड़ायल पोस्टमास्टर लग गेलहुँ। ओ कहलनि जे चारि बजे पोस्ट ऑफिसक भैन (बड़का गाड़ी) आओत आ तखने ढोल खूजत। बजैत रहैत तीन। अगत्या ओतहि छाहरि मे ढोल कैँ ओगड़ने बैंच पर बैसि रहलहुँ। मन कने स्थिर भेल तँ हाथ मे झूलैत लिफाफ ढोल मे खसा अयलहुँ। चारि बजे ठीक समय पर गाड़ी अयलैक। ओहि मे सँ एक आदमी कुंजी लेने उतरल आ ढोल खोललकैक। कहलियैक, ''हम लिफाफक बदला मे पर्स खसा देलिऐक। से हमर पर्स द' दिय'।...''

एहि गप्प पर चश्माक तर सँ देखलक आ चिट्ठी सभ कैँ बटोर' लागल। बीच मे पर्स देखिक' कहलिऐक, ''हँ, यैह रहल हमर पर्स। प्लास्टिकक नीचाँ मे लिखल अछि, हरिमोहन झा। ओ मुदा, कहलक, ''आब अहाँ कैँ ई पर्स लिखा-पढ़ी भेलाक पश्चात मुख्यालय मे भेटत। हँ, हम एतबे क' सकैत छी जे अहाँ कैँ एहि गाड़ी पर बैसा क' ल' चलब। शहरक ढोल सभ सँ चिट्ठी लोढ़ैत एक-दू घंटा मे मुख्यालय पहुँचब।

हरिमोहन बाबू कहलनि जे ओ तँ सोचने रहथि जे ढोल खुजतैक आ हुनका उग्रास भेटि जयतनि मुदा ई तँ अवग्रह मे पड़ि गेलाह। आन कोनो उपाय नहि देखि गाड़ी पर बैसिक' विदा भ' गेलाह। संयोग सँ हरिमोहन बाबूक एक टा परिचित व्यक्ति डाक तार विभाग मे उच्च अधिकारी रहथिन। हुनकर सहयोग सँ मुख्य डाकघर मे पर्स भेटि गेलनि आ ओ गाड़ी सँ डेरा पर सेहो पहुँचबा देलथिन। गप्प करैत हमरा लोकनि इंजीनियरिंग कॉलेजक मोड़ लग पहुँचि गेल रही। हठात् हरिमोहन बाबू कहलनि, ''चलू पोस्ट ऑफिस। ...बिना टिकट सटनहि आइ लिफाफ ढोल मे खसा देलिऐक। ...चलू पोस्ट ऑफिस! ढोल खुजबाक समय भ' रहल छैक। टिकट साटि देबैक!...कहू तँ बेरंग भ' गेलैक। बेचारा कैँ अदंडक दण्ड देबय पड़तैक। हमरा पर फुफकार छोड़त से अलग।...''

हम कहलियनि, ''मुदा चिट्ठी सभ ढोल सँ बहार करैवला टिकट साट' देत? अपनेक लिफाफ थिक कि दोसरक लिफाफ थिक से मुख्य डाके घर मे तय होयत।...''

''हँ, से भ' सकैत अछि। फेर ने मुख्य डाकघर जाय पड़य। आब तँ ओत' परिचितो नहि छथि।...''

''की करबैक?'' हम कहलियनि, ''लिखतिमपि ललाटः प्रोज्झलम् कः समर्थः?''

ताहि पर हरिमोहन बाबू कहलनि, ''ककर ललाट? हुनकर ललाट मे दण्ड आ कि हमर ललाट मे फज्झति!''

एहि बीच सरोज कुमार मिश्र सहटिक' चल अयलाह। सरोज जी ओहि समय गायकक रूप मे प्रसिद्ध भ' गेल रहथि। विद्यापतिक गीत हुनका सँ सुनबा लेल लोक व्यग्र रहैत छल। विद्यापति पर्वक अवसर पर गीत गबैत छलाह तँ लड़की सभ आटोग्राफ लेबा ले' नुड़िआय लगैत छलै। रानीघाट होस्टल मे हमर रूम मे दस बजे राति मे जखन ओ विद्यापतिक गीत अथवा कोनो गजल गाब' लगैत छलाह, तँ विद्यार्थीक धरोहि लागि जाइत छल। हरिमोहन बाबू कैँ परिचय देलियनि तँ अत्यन्त आनन्दित भेलाह। उत्साहित होइत कहलनि, ''वाह, तखन गाँधी घाट पर बैसिक' सरोज जी सँ विद्यापतिक गीत सूनब।...''

हमरा लोकनि गांधी घाट दिस बढ़' लगलहुँ। गांधी घाटक समीप पहुँचलहुँ कि जहाजक सीटी सुनबा मे आयल। गांधी घाट पर बैसैत गेलहुँ। सामने गंगाक कल-कल करैत निर्मल जल धारा, अस्तंगत सूर्यक क्रमिक मद्धिम पड़ैत लाल चक्का, दूर-बहुत दूर गंगा मे पाल तनने नाविक नाह कैँ खेबैत, अपन-अपन खोंता मे जयबा लेल व्यग्र चिड़ै चुनमुनीक उड़ैत दल, मन्द-मन्द हवा सिहकैत, कजरायल जाइत साँझ आ चुपचाप मुग्ध भेल बैसल हरिमोहन बाबू। हठात् हमर ध्यान भंग भेल। सरोज जी कान मे फुसफुसाक' पुछैत रहथि, ''भक्तिवला गीत आकि शृंगारवला, केहन गीत गाउ?'' हम धीरे सँ कहलियनि शृंगारवला।'' सरोज जी विद्यापतिक गीत गाब' लगलाह—

कुसमित कानन कुंजे बसी। नयनक काजर घोरि मसी॥

नख सँ लिखल नलिनि दल पात। लीखि पठाओल आखर सात॥

प्रथमहि लिखलनि पहिल बसंत। दोसरे लिखलनि तेसरक अन्त।

लिखि नहि सकलीह अनुज बसंत। पहिलहि पद अछि जीवक अंत॥

भनइ विद्यापति आखर लेख। बुध-जन होथि से कहत बिसेख॥

हरिमोहन बाबू सरोज जीक प्रशंसा कयलथिन आ तखन हमरा दिस उन्मुख होइत कहलनि, ''औजी, विद्यापतिक एहि गीत सँ एक टा गप्प मन पड़ि गेल अछि। ...एक बेर हमरा बिहार लोक सेवा आयोग मैथिली प्राध्यापकक इन्टरव्यू मे विशेषज्ञक रूप मे आमन्त्रित कयलक। जेना होइत छैक। लोक सभ अपन-अपन पैरबी ल'क' दौग' लगलाह। हम सभ कैँ एके टा बात कहलियनि, '''क्वेश्चन' आउट अछि। विद्यापतिक गीत 'नख सँ लिखल नलिनि दल पात। लीखि पठाओल आखर सात' से ई आखर सात मे कोन-कोन आखर छल?''

हम पुछलियनि, ''केओ जवाब देलनि?''

हरिमोहन बाबू कहलनि, ''एखन धरि जवाब नहि भेटल अछि।''

से जखन-जखन ई दृश्य मोन पड़ैत अछि तँ मन मे घुरिआय लगैत अछि 'आखर सात' आ गुनगुनाब' लगैत छी—

कुसुमित कानन कुंजे बसी। नयनक काजर घोरि मसी॥



संपर्क : मैथिली रचना मंच
शुभंकर पुर, दरभंगा-846 006
मोबाइल : 09430996736

कन्यादान-द्विरागमनक विचार-पक्ष

राज मोहन झा

मैथिली साहित्य मे *कन्यादान* तथा *द्विरागमन* उपन्यास की स्थान रखैत अछि, कहबाक प्रयोजन नहि। जँ मैथिलीक सर्वाधिक चर्चित आ प्रसिद्ध उपन्यासक नाम पूछल जाय तँ एही उपन्यासक नाम लेल जायत, जे वस्तुत: दू नहि एके उपन्यास अछि अथवा एके उपन्यासक दू भाग अछि।

मुदा एकर चर्चित आ प्रसिद्ध होयबाक जत' कतहु जे कारण कहल गेल होय, विचार पक्षक कतहु चर्च नहि कयल गेल अछि; जखनकि एकर यैह पक्ष, हमरा जनैत, सभ सँ बेसी ध्यान देबा योग्य छैक। एहि बात केँ, जकरा देखले नहि गेल अछि, कने लग सँ देखल जयबाक चाही।

बेकरक ई मत बहुत प्रसिद्ध अछि जे उपन्यास ओहि युग मे पल्लवित-पुष्पित होइत अछि जखन लोकक बुद्धि आ तर्कशक्ति सभ सँ अधिक सक्रिय रहैत अछि; कल्पना-शक्ति प्रसुप्तो रहओ, मुदा आलोचना-शक्ति खूबे जाग्रत। बेकरक एहि कथन केँ मैथिली साहित्यक इतिहास मे डा. जयकान्त मिश्र द्वारा हरिमोहन झाक विषय मे व्यक्त कयल गेल एहि कथन संग जोड़िक' देखल जाय, ''ई उपन्यास लेखन केँ एक लाभकर व्यवसाय बनौलनि और एकरा कलात्मकताक ओहि ऊँचाइ पर पहुँचओलनि जतए मैथिली मे कोनो कृति ताधरि नहि पहुँचल छल। हरिमोहन झा मैथिलीक उपन्यास केँ, अपन आरम्भिक अवस्थाहि मे, ओही साहित्यक धरातल पर लय गेलाह जतए विद्यापति गीतिकाव्य केँ आओर उमापति दृश्य काव्य केँ पहुँचओने छलाह।'' (पृ. 230)

एहि सँ की ई तथ्य स्पष्ट नहि होइत अछि जे जाहि युग मे हरिमोहन झा ई उपन्यास लिखलनि से युग बौद्धिकता, तार्किकता तथा सक्रिय आलोचनाक युग छल? आ जँ छल, तँ वैचारिकताक उन्मेष एहि उपन्यास मे होयब सर्वथा स्वाभाविक छल। से कोना आ कत'-कत' भेल अछि ताहि दिस आश्चर्य जे आलोचक लोकनिक ध्यान नहि गेलनि अछि। सत्य पूछी तँ जाहि वस्तु ल'क' *कन्यादान-द्विरागमनक* महत्त्व सर्वाधिक प्रतिपादित होयबाक चाही, से यैह विचार-तत्व अछि। यैह वैचारिकता मैथिली मे उपन्यास-विधा केँ विकसित कयलक, जकरा आरम्भहि मे उत्कर्ष पर ल' गेल *कन्यादान,* जेना कि डा. जयकान्त मिश्र कहने छथि।

कन्यादानक प्राकथ्थन मे लेखक कहैत छथि, ''हम पुस्तकक विषय मे की कहू? पुस्तक स्वयं अपन विषय मे कहत।'' पुस्तक अवश्य अपना विषय मे स्वयं कहैत अछि, मुदा अफसोस एहि बातक जे पुस्तक जे कहैत अछि तकरा मैथिली आलोचक तथा इतिहासकार लोकनि एखन धरि सुनलनि नहि अछि अथवा जे सुनलनि अछि से बहुत सही नहि सुनलनि अछि। असल मे उपन्यास जेना लोकक बौद्धिक विकास संगे घनिष्ठ रूपेँ जुड़ल रहल अछि, तेना दुर्भाग्यवश मैथिली मे आलोचना बौद्धिक विकासक संग नहि जुड़ि सकल। कोनो पश्चिमी लेखकक ई कथन छनि जे लेखक सँ एहि बातक आशा कयल जाइत छैक जे ओ जाहि वस्तुक विषय मे लिखैत अछि, तकरा नीक जकाँ जनैत होय। मुदा की एहने अपेक्षा आलोचक सँ नहि कयल जयबाक चाही? प्रसिद्ध आलोचक लीविसक शब्द मे सत्य धरि अथवा सही निर्णय धरि पहुँचबाक सम्मिलित खोज होयबाक चाही, नहि की सत्यक मार्गक सम्मिलित बाधा अथवा धाँधली। मैथिली आलोचना एहन धाँधली सँ भरल रहल अछि। मैथिलीक दुर्भाग्य!

उपन्यासक बारे मे कहल गेल अछि जे ओ रुचिक संस्कार करैत अछि। मुदा कोना करैत अछि? स्पष्ट जे अपन वैचारिकता सँ। जँ *कन्यादानक* लोक-मानस पर प्रभाव पड़लै—आ पड़लै से निर्विवाद रूपेँ सभक समक्ष अछि—तँ एकर वैचारिक पक्ष केँ कोना बिसरा द' सकैत छिऐ? पी.एच.न्यूबी कहैत छथि, ''कोनो कथा-साहित्यक कृतिक गुणवत्ता ओहि समयक विचारक गुणवत्ता पर निर्भर करैत अछि, जाहि समय मे ओ लिखल जाइत अछि।'' एहि आधार पर ई निस्सन्देह मानल जा सकैत अछि जे *कन्यादान-द्विरागमन* मे जे वैचारिकता अछि, से ओहि समयक वैचारिकताक स्वर अछि। ओहि वैचारिकताक गुणवत्ता आलोचक आ इतिहासकार लोकनि भनहि नहि बुझने होथु, मुदा लोक बुझलक आ तकर प्रमाण *कन्यादान-द्विरागमन* सँ भेल सामाजिक क्रान्ति वा परिवर्तन अछि। कतेको नवयुवक छथि जिनका *कन्यादान* बिना काटरक पढ़लि-लिखलि स्त्री सँ विवाह करबाक प्रेरणा देलकनि आ लोक स्त्री-शिक्षाक महत्त्व केँ बुझय लगलाह। साहित्य क्रान्ति नहि करैछ, ओ लोकक मानस केँ परिवर्तित करैत अछि आ ओकरा क्रान्तिक आवश्यकताक प्रति जागरूक बनबैत अछि। यदि साहित्य वा कोनो कलाकृतिक कोनो मूल्य अछि, तँ ई जे ओ मनुष्यक बोध केँ जगबैत अछि, खाली ओकर अनुभूति केँ नहि। हरिमोहन झाक संपूर्ण साहित्य सप्रयोजन लेखन अछि। ओ आरम्भ सँ अंत धरि परिवर्तनक पक्ष मे यथास्थितिवादक विरूद्ध लड़ाइ लड़ैत अछि। ओ ओहि संस्कार आ रूढ़ि सभ पर जमिक' प्रहार करैत छथि जे वर्तमानक तिरस्कार क'क' लोक केँ जीवन आ वास्तविकता सँ पलायन करबा लेल विवश करैत छैक। हुनक सम्पूर्ण साहित्य ओहि वैचारिकता केँ प्रकट करबाक माध्यम अछि, हुनक उपन्यास आ कथा हुनक बौद्धिक चेतनाक संवाहिका अछि, आ यदि ओहि मे कथा-साहित्यक सहज रोचकता तथा आकर्षण एवं व्यंग्य-विनोद-हास्यक पुट भेटैत रहैत अछि तँ ई हुनक व्यक्तित्व मे सन्निहित विचारक तथा सहज कलाकार आ हास्य-व्यंग्यकारक विलक्षण पारस्परिक सन्तुलनक एक टा अद्भुत संयोगहि बूझक चाही। सामाजिक परिवर्तनक प्रक्रियाक प्रति अपन जागरूकताक प्रमाण ओ बरोबरि दैत चलैत छथि। परिवर्तनक ई प्रक्रिया त्वरित नहि होइछ आ सोझे नहि होइछ, से सर्वविदित अछि। ई कालक्रमें होइत अछि आ लोक-मानस केँ क्रमशः प्रभावित करैत रहैत अछि, से बात जानल अछि।

उपन्यासक विषय मे एरा बोलफोर्टक कथन छनि जे ओ मानवक जिबैत जिनगीक भाषा मे विचारक गद्यात्मक अनुवाद थिक। हँ, ई अनुवाद एतेक विशुद्धताक संग होयबाक चाही जे पाठक केँ अपना जीवनक ज्ञान केँ बढ़बयवला होइनि। हृदय आ मस्तिष्क—ई दू टा वस्तु थिक जे सर्जनाक क्षण मे सक्रिय रहैत अछि। एहि दुनूक संयुक्त आ संतुलित उपयोग एक टा महान रचनाक सृष्टि करैत अछि। बुद्धि स्वभावतः तर्क आ विचार दिस आकर्षित होइत अछि आ हृदय

कल्पना तथा संवेदना दिस दौड़ैत अछि। बुद्धिक अतिरेक सँ व्यक्तिगत वैचारिक अराजकता कँे प्रोत्साहन भेटैत छैक आ हृदयक भावप्रवणता भावुकता विलगित क्षेत्र मे जयबा लेल उद्यत बुझाइत अछि। हरिमोहन झा एहि दुनू अतिक प्रति साकांक्ष छथि आ हुनक उपन्यास अथवा कोनो रचना एहि दुनू तत्वक बीच सुन्दर समन्वय तथा संतुलन स्थापित करैत अछि।

विचार-तत्वक बारे मे बी.जी. बेलिस्कीक कहब छनि, ''विचार तत्व आब कलातत्व धरि मे प्रविष्ट भ' गेल अछि। यदि कोनो कलाकृति मात्र चित्रणहिक लेल जीवनक चित्रण करैत अछि, यदि ओहि मे ओ आत्मगत शक्तिशाली प्रेरणा नहि अछि जे युग मे व्याप्त भावना सँ नि:सृत होइत अछि, यदि ओ कोनो प्रश्न अथवा कोनो उत्तर नहि दैत अछि, तँ ओ निर्जीव अछि।'' एहि दृष्टिक समर्थन एन.ए.दोब्रोल्युबोय करैत छथि जखन ओ कहैत छथि, ''कला और दर्शनक सम्पूर्ण सार्थकता जनताक सुषुप्त शक्ति केँ जाग्रत करबा मे छैक। कलाक उद्देश्य जनता केँ शिक्षित करब छैक, ओकरा लेल जीवनक पाठ्य-पुस्तक बनब छैक, समग्र समाजक आँखि-कान बनब छैक।''

कन्यादान-द्विरागमन समाजक लेल आँखि-कान बनबाक भूमिकाक कतेक सफलतापूर्वक निर्वाह कयल अछि से प्रत्यक्षे अछि। ओना तँ *कन्यादान* समग्र रूप मे अपन कथानक, चरित्र वातावरण आ स्थिति सभ मे हास्य-विनोदक संग-संग वैचारिकताक समावेश यथास्थान सहज रूप सँ करैत गेल अछि, मुदा मिस्टर सी.सी.मिश्रा शीर्षक परिच्छेद मे सोनपुरक रेस्टौरैन्ट मे अपन भावी पत्नीक संबंध मे जे विचार सी.सी. मिश्र रेवती रमणक संग वार्त्तालापक क्रम मे रखैत छथि, ताहि मे पढ़ल-लिखल युवकक युगीन आकांक्षा झलकि उठल अछि। तहिना 'जटिल समस्या' मे रेवतीरमण द्वारा सी.सी. मिश्रक पृष्ठभूमि तथा बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटीक बोर्डिंगक वातावरण आ ताहि सँ जनमल तत्कालीन शिक्षित नवयुवकक वैचारिकता केँ सहज रूपेँ रेखांकित कयल गेल अछि। फेर 'कौतुक' शीर्षक परिच्छेद मे बड़कागामवाली परिहास-परिहास मे जेना मनोरंजक ढंगेँ पुरुष-नारी सम्बन्ध मे सी.सी. मिश्र केँ जे सभ कहैत छथिन, ओतहु वैचारिकताक दिग्दर्शन भेल अछि। मुदा सभ सँ प्रखर रूप मे वैचारिकताक दर्शन होइछ 'कन्यादान' शीर्षक परिच्छेद मे, जत' वैवाहिक सम्बन्धक व्याख्या भेल अछि। एत' उपन्यास मे लोक केँ निबन्धक आभास भ' सकैत छै। परन्तु एहि सम्बन्ध मे तीन टा बात केँ ध्यान मे राखक चाही। एक तँ ई जे जाहि युगक ई कृति अछि, से मैथिली उपन्यासक प्रारम्भिके अवस्था छल, जेना डॉ. जयकान्त मिश्र कहने छथि, ''आ तखन ई उपन्यास विधा केँ ओहि उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित कयलक। दोसर, जे आधुनिक काल मे एखन आबि क' कथा, उपन्यास, कविता आदि सभ सर्जनात्मक विधा अपन सीमा केँ तोड़ैत बेसी व्यापकता दिस अग्रसर भ' रहल अछि। कथा मे कविता आ रिपोर्ताज, उपन्यास मे संस्मरण आ निबन्ध और कविता मे गद्यक प्रवेश आब कोनो नव वस्तु नहि रहलैक अछि। विधा सभक बीच दूरी आ अलगाओ आब कम भेल जा रहल छै। तेहन स्थिति मे उपन्यास मे निबन्धात्मक आभास यत्र-तत्र भेटब कोनो दोष नहि मानल जा सकैत अछि। तेसर, जे 'कन्यादान' परिच्छेद मे आयल ई विवेचना कतहुँ सँ थोपल वा जबर्दस्ती ठूसल नहि लागि प्रसंगानुकूल आ कथानकक आवश्यक अंग भ'क' आयल अछि, जाहि मे वैवाहिक मंत्रक महत्त्व, साम्प्रतिक स्थिति और नारी-मनोविज्ञानक रहस्यक कुशल विवेचना करैत भविष्यक लेल दिशा-निर्देश देबाक प्रयास कयल गेल अछि। उपन्यास मे वैचारिकताक एत' बहुत सटीक आ सार्थक समावेश भेल अछि। ओहि पावन प्रतिज्ञाक अर्थ सँ वर-कन्या केँ ततबहि सम्पर्क रहैत छनि जतेक आधुनिक ग्रैजुएट लोकनि केँ मिथिलाक्षर सँ।'' एहि वाक्य मे जे वास्तविक यथार्थ, संस्कृतिक प्रति अपनत्व आ आधुनिकताक प्रति व्यंग्यात्मक संकेतक भाव भरल अछि, ताहि दिस सँ आलोचक लोकनि स्वाभाविके आँखि मुनने छथि। साहित्य आ कला केँ बुझबाक लेल आँखि-कान होयबाक प्रयोजनक गप्प पूर्व मे कहल जा चुकल अछि। सी.सी.मिश्रक रेवतीरमणक नाम लिखल चिट्ठी मे सेहो उपन्यासक विचार-पक्ष मूर्त्त भेल अछि। 'प्रश्नवाचक चिह्न' शीर्षक अन्तिम अध्यायक अन्तिम वाक्य ''एकर उत्तरदायी के?'' उपन्यासक अंत वैचारिकतेक बिन्दु पर आबिक' करैत अछि आ पाठक केँ ई प्रश्नवाचक चिह्न उपन्यास समाप्त कयलो पर दूर धरि सोचैत रहबाक लेल छोड़ि दैत अछि।

तहिना *द्विरागमन* मे मिस बिजलीक भाषण मे वाद-विवादक पूर्व-पक्ष आ उत्तर-पक्ष दुनू अंश मे विचारपक्षक तार्किकता, बौद्धिकता आ युक्तिसंगतिकता अकाट्य रूप सँ द्रष्टव्य अछि आ मननशील पाठकक लेल यथेष्ट चिन्तनक सामग्री प्रदान करैत अछि। हास्य-व्यंग्यक उत्थर सतह पर बहैत चल जायवला सामान्य बुद्धिवला पाठकोक लेल एहि प्रकरण मे ठाम-ठाम अंतर्निहित व्यंग्योक्ति पर ध्यान नहि देब सर्वथा संभव नहि छैक। हँ, आलोचक लोकनिक गप्प नहि होय—जनिका विचार पक्ष पर विचार करबाक अवगति एखनहुँ नहि भेलनि अछि। 'रोमांसक अंत' शीर्षक अध्याय मे पुरुष-मनोविज्ञानक मिस बिजली जे सारगर्भित व्याख्या सी.सी. मिश्र केँ सुनबैत छथिन से वैचारिकताक सुन्दर व सरस उदाहरण अछि। सभ सँ पैघ बात जे ई वैचारिकता औपन्यासिक कथा-वस्तु सँ तेना अविच्छिन्न रूपेँ घुलल अछि जे कतहु पाठक केँ ई भान नहि होइत छैक जे विचार ओकरा पर लादल जा रहल छै। कथा-प्रवाह मे विचार स्वत: बहैत आबि रहल छै। अन्तिम अध्याय 'समदाउनि' मे महात्माजीक उपदेश आ सी.सी.मिश्रक चिन्तन विचार-पक्षक फेर अवसर अनैत अछि जत' पाठक प्राच्य आ पाश्चात्य विचार-धाराक द्वन्द्वात्मक स्थिति पर सोचबा लेल विवश होइत अछि। ई बात नहि छैक जे पाठकक ध्यान एहि सभ वैचारिक स्थल पर नहि विलमल होइक, कारण जे तखन जे समग्र वैचारिक प्रभाव पाठक-समुदाय पर *कन्यादान-द्विरागमन*क पड़लैक, जे कि निर्विवाद अछि, से नहि पड़ितैक। मुदा दुर्भाग्यक बात मात्र ई जे मैथिलीक पारम्परिक आलोचक एहि दिस सँ आँखि मुनने रहलाह। मुनताह की, आँखि रहितनि तखन ने?

प्राय: सर्वसम्मति सँ आलोचक लोकनि ई मानि लेलनि अछि जे *द्विरागमन कन्यादान*क अपेक्षा कम सफल उपन्यास सिद्ध भेल अछि। एहि भ्रान्त धारणाक, हमरा जनैत, तीन टा कारण रहल अछि। एक तँ प्रथम अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन मे कथा-विभागक अध्यक्षीय भाषण मे लेखकक अपन वक्तव्य जे, ''*द्विरागमन* फरमाइशी छल आ ई हमर मनोनुकूल नहि भेल।'' लेखकक ई कथन निश्चय तत्कालीन कतिपय निर्बुद्धि आलोचनाक प्रतिफल छल, जकरा बादक आलोचक लोकनि लेखकक विनम्रताक रूप मे नहि ल' आप्त वाक्यक रूप मे ग्रहण करब सुविधाजनक बुझलनि। दोसर जे बिनु सम्यक परीक्षण कयने ओ लोकनि ई मानि लेलनि जे *द्विरागमन* मे हास्य-व्यंग्यक स्थिति *कन्यादान*क अपेक्षा कम छैक। ई धारणा कतेक निर्मूल अछि से दुनू उपन्यासक तद्‌विषयक स्थल सभक मिलान क'क' देखल जा सकैत अछि, जेना अन्यत्र देखाओलो गेल अछि। तेसर ई जे ईहो भ्रान्त धारणा बना लेल गेल अछि जे *द्विरागमन* मे *कन्यादान*क अपेक्षा विचार-पक्ष बेसी प्रबल अछि। एहू भ्रान्त धारणाक खण्डन ओही लेख मे क' देल गेल अछि। ई एक टा अंतर *कन्यादान* आ *द्विरागमन* मे अवश्य भेल अछि जे जत' *कन्यादान* मे आरंभिक किछु परिच्छेद हास्य-व्यंग्य प्रधान रहलाक बाद मिस्टर सी.सी.मिश्राक, 'जटिल समस्या', 'कन्यादान' आ प्रश्नवाचक परिच्छेद मे विचार-पक्ष आयल अछि। तत' *द्विरागमन* मे

'मिस बिजलीक भाषण' आ 'समदाउनि' मे विचार पक्ष सँ हास्य व्यंग्य प्रधान प्रकरण केँ संपुट कयल गेल अछि। मुदा ताही आधार पर जँ *द्विरागमन* केँ *कन्यादानक* अपेक्षा असफल घोषित क' देल जाय, तँ एकरा आलोचक लोकनिक बुद्धिक बलिहारी छोड़ि आर की कहल जा सकैत अछि? किछु गोटा केँ *द्विरागमनक* मिस बिजलीक भाषण आ 'समदाउनि' मे महात्माजीक प्रवचन मे निबन्धक आभास भेटैत छनि, मुदा आश्चर्य जे *कन्यादान* मे 'कन्यादानक' शीर्षक मे हुनका लोकनि केँ से आभास नहि भेटैत छनि, जखनकि *कन्यादानक* ओ प्रकरण ततबे दीर्घ आ प्रायः ओहू सँ बेसी निबन्धात्मक अछि जतेक *द्विरागमनक* ई दुनू प्रकरण। वास्तव मे देखल जाय तँ *कन्यादान* आ *द्विरागमन* दुनूक ई प्रकरण सभ सप्रयोजन लेखन थिक। ओ आरंभ सँ अंत धरि परिवर्तनक पक्ष मे यथास्थितिवादक विरूद्ध संघर्ष थिक। ओ ओहि संस्कार तथा रूढ़ि पर जमिक' चोट करैत अछि जे वर्तमानक तिरस्कार क' मनुष्य केँ अपन जीवन आ वास्तविकता सँ पलायन कर' लेल बाध्य करैत छैक। हरिमोहन झाक लेखन ओहि वैचारिकता केँ प्रकट करबाक माध्यम बनैत अछि जे हुनक बौद्धिक चेतनाक संवाहक अछि। आ जँ ओहि मे कथा-साहित्यक सहज रोचकता आ विलक्षण आकर्षण अछि, हास्य-व्यंग्यक अद्‌भुत समावेश अछि; तँ ओकरा हरिमोहन झाक चुम्बकीय लेखन मे सन्निहित विचारपक्ष तथा सहज कलात्मकताक पारस्परिक संतुलनक अनुपम संयोग मानबाक चाही। अपन कलात्मताक प्रति सचेष्ट रहैत ओ सामाजिक परिवर्तनक प्रति अपन जागरूकताक प्रमाण सदैव अपन उपन्यास मे दैत चललाह अछि। तेँ वैचारिकता कतहु सँ हुनक उपन्यास मे थोपल नहि लगैत अछि, सदैव ओ उपन्यासक आन्तरिक संरचना संग सहज स्वाभाविक रूपेँ जुड़ल आयल अछि। ई बात *कन्यादान* आ *द्विरागमन* दुनू मे समान रूप सँ विद्यमान अछि।

रचना मे विचारधाराक संबंध केँ ल'क' एक टा और बात महत्त्वपूर्ण अछि, जे विचारधारा केँ सोझे-सोझ आरोपित कयला सँ रचनाक स्वरूप भँगठि जाइत छै, ओकर कलात्मकता खंडित भ' जाइत छैक। ओकर संवेदना सेहो क्षतिग्रस्त भ' जाइत छैक। रचना नाराबाजी भ' जाइत अछि। *कन्यादान- द्विरागमन* जँ वैचारिकताक अछैत से नहि भेल अछि—आ के कहत जे से भेल अछि—तँ तकर कारण जे वैचारिकता एत' जीवन-दृष्टिक रूप मे उभरि क' आयल अछि, जाहि सँ रचनाक स्वरूप निखरैत छैक, ओकरा और अधिक सशक्त और जीवन्त बनबैत छैक।

द्विरागमन पर एक टा आक्षेप ईहो बहुधा भेल अछि जे ओहि मे जे समाधान देखाओल गेल अछि से वैयक्तिक थिक, सार्वजनीन वा सामाजिक नहि। एहि सम्बन्ध मे दू टा बात विचारणीय अछि। एक तँ ई जे वैयक्तिके स्तर पर जँ सभ केओ समस्याक समाधान करबाक प्रयास करय, तँ वैह समाधान सार्वजनीन आ सामाजिक बनि जाइत छैक, जेना बहुत-किछु भेबो कयलै। व्यक्तिए सँ आखिर समाजो बनैत छैक। दोसर जे कने काल लेल जँ मानि लेल जाय, जे सी.सी.मिश्र बुच्ची दाइक शिक्षाक प्रोग्राम नहि बना गाम-गाम मे कन्या-पाठशाला खोल' लगितथि वा स्त्री-शिक्षा पर घुरि-घुमिक' भाषण देब' लगितथि, तँ की ओ समाधान पाठक केँ बेसी ग्राह्य होइतैक? तखन की यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासक स्थान पर द्विरागमन नाराबाजी आ प्रचारात्मक साहित्य नहि बनि जाइत जाहि दिस संकेत पूर्व मे कयल गेल अछि? आ तखन की यैह आलोचक लोकनि जे एखन असंतुष्ट छथि, ओहि अवस्था मे बेसी संतुष्ट होइतथि? सत्य पूछी तँ सर्जनात्मक साहित्यकार केँ आलोचक लोकनिक संतुष्टि-असंतुष्टिक परवाहि करबोक ने चाही। से कयने साहित्यक कोनो उपकार नहि भ' सकैत छै, अपकार भनहि भ' जाउक।

अन्य साहित्यिक विधाक अपेक्षा उपन्यास एहि मामला मे अवश्य उदार होइत अछि जे एहि मे लेखक केँ अपन बात सोझ-सोझ कहबा मे सुविधा रहैत छैक। तेँ विचार-पक्ष केँ जाहि सरलता आ सहजता सँ उपन्यास मे समाविष्ट कयल जा सकैत अछि, से आन विधा मे संभव नहि होइत छैक। *कन्यादान- द्विरागमन* मे एहि सुविधाक लेखक भरपूर उपयोग कयलनि अछि आ नीक जकाँ कौशलपूर्वक उपयोग कयलनि अछि। एहि वैचारिकता सँ उपन्यासक कथात्मकता मे कतहु सँ कोनो व्यतिक्रम वा व्यवधान नहि आयल अछि, अपितु जत' कतहु एकर समावेश भेल अछि से कथानक केँ सबल आ सुपुष्ट करहिक लेल भेल अछि। तेँ कतहु-कतहु वैचारिकतावला प्रकरण दीर्घ होइतो नीरस वा उबाउ कतहु नहि भेल अछि। ई बात दोसर जे ओहन-ओहन प्रकरण केँ उपन्यास सँ फराक क'क' ओकरा स्वतंत्र निबन्धोक रूप देल जा सकैत अछि, जेना एक-आध ठाम कयलो गेल अछि। मुदा एकरा उपन्यासक दोष रूप मे नहि ल' गुणेक रूप मे लेल जयबाक चाही। कथा-प्रवाह मे जा वैचारिकता बाधक बनिक' नहि आबय, ता ओकरा दोष किन्नहु नहि कहल जा सकैत अछि आ *कन्यादान- द्विरागमन* मे वैचारिकता कथा-प्रवाह मे कतहु बाधक भेल अछि, से एकर कोनो विरोधी हमरा जनैत एखन धरि नहि बाजल छथि।

हँ, डॉ. अमरेश पाठक एक ठाम ई बात तँ नहि दोसर तरहक बात बाजल छथि आ जेना अधिककाल बजैत काल ओ हास्यास्पद भ' जाइत छथि, तहिना एहू ठाम भ' गेलाह अछि। *मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन* शीर्षक अपन ग्रन्थक पृष्ठ 46 पर ओ कहैत छथि, ''उपन्यास मे कथा कहैत काल बीच-बीच मे जतय लेख स्वयं किछु कहय लगैत छथि ओतए कथानकक प्रवाह मे अवरोध आबि जाइछ। *द्विरागमनक* प्रारम्भ मे मिस बिजलीक भाषण कथावस्तुक प्रवाह केँ अवरूद्ध करैत अछि।'' एत' पहिल बात तँ डॉ. पाठक केँ ई बुझबाक आवश्यकता छनि जे मिस बिजलीक भाषण मे जे किछु कहैत छथि से मिस बिजली कहैत छथि, लेखक नहि कहैत छथि। जँ हुनक तात्पर्य छनि जे मिस बिजलीक मुँह सँ लेखक स्वयं अपन बात कहलनि अछि, तँ पूर्ववक्ता महोदयक मुँह सँ जे बात सभ कहाओल गेल अछि सेहो लेखकेक बात छनि। ततबे किऐ, लालकका, झारखण्डी नाथ, रेवतीरमण, बटुक जी, सी.सी. मिश्र आदि जतेक जे पात्र बजै छथि से सभ लेखकेक बात छनि। असल मे कत' लेखक स्वयं किछु कहैत छथि आ कत' अन्य पात्रक द्वारा अपन बात कहैत छथि, तकर अंतर करबाक स्थूल अवगति डॉ. पाठक केँ नहि भ' सकलनि अछि आ एहि दयनीय स्थितिक दिग्दर्शन बड़ अकुण्ठ रूपेँ ओ एहि वाक्य मे क' बैसलाह अछि।

कन्यादान- द्विरागमन मे कय ठाम बीच-बीच मे लेखक स्वयं आबि जाइत छथि आ पाठक सँ अपन सोझ सम्वाद स्थापित करैत छथि। कने ओहि स्थलसभक निरीक्षण कयल जाय। *कन्यादानक* सभागाछीक दृश्य मे घूटर झाक प्रवेश लेखक एना करैत छथि, ''पाठकवृन्द! एक मन सूझय-वन्दा बूझय। कतहु पर घूटर झा तँ देखा दिय'। वैह देखियौन हाथ मे नसिदानी नेने हँसि-हँसि कय घटकराज टुन्नी झा सँ गप्प कय रहल छथि।'' डॉ. अमरेश पाठक अपन पोथी मे एहि प्रकरणक उल्लेख कयने छथि मुदा ओ लेखक द्वारा पाठक सँ स्वयं गप्प कर' लगबाक उदाहरणस्वरूप एकरा उद्धृत कयलनि अछि आ पाठक केँ सम्बोधित कय लेखक द्वारा किछु कहबाक शैलीक उदाहरण मे एकरा गनौलनि अछि। हुनक ध्यान एहि सूक्ष्मता पर नहि गेलनि अछि जे कोना घनिष्ठ आत्मीयतापूर्वक लेखक पाठक केँ अपन संग कथानक मे पैसा लैत छथि आ विलक्षण कौशलक संग घूटर झाक प्रवेश कथानक मे करबैत छथि। घटकराज टुन्नी झाक प्रथम परिचय सेहो एही प्रकारेँ होइत अछि। 'कन्यादान' शीर्षक परिच्छेद मे वैवाहिक मंत्रक

महत्त्व आ साम्प्रतिक स्थिति पर लेखक अपन बात कहबाक अवसर नीक जकाँ निकाललनि अछि, मुदा ताहि पर डॉ. पाठकक ध्यान नहि गेलनि अछि। किए नहि गेलनि अछि, तकर कारण छैक जे आगाँ जाक' कहब। एत' हम ध्यान फेर लेखक-पाठकक मध्य आत्मीयताक सम्बन्ध दिस ल' जाय चाहब जाहि प्रति लेखक पहिनहि जकाँ साकांक्ष छथि जखन ओ कहैत छथि, ''पाठक-पाठिकागण! हमरा लोकनि प्रस्तुत घटना सँ बहुत दूर बहकि ऐलहुँ। आब देखू, लाबा छिड़िऐबाक बेरि पहुँचि गेल।'' सी.सी. मिश्र केँ कोबर घर मे पहुँचयलाक बाद एही परिच्छेद मे लेखक कहैत छथि, ''एहना स्थिति मे हमरा लोकनि आब एहि ठामक दृश्य नुका कय देखी से उचित नहि। ता चलू, देखू जे बड़का गामवाली की क' रहल छथि। प्राय: ओ दोसरा घर मे ककरो संग किछु एकान्ती कय रहल छथि। यदि कोनटा लगबा मे कोनो विशेष अधर्म नहि होइत होइ तँ सुनू जे की सभ गप्प-शप्प भय रहल अछि।'' तदन्तर रेवतीरमण आ बड़कागामवालीक बीच वार्त्तालाप होइत अछि। अंत मे एही परिच्छेद मे फेर लेखक कहैत छथि, ''ई सरस प्रश्नोत्तर शनै-शनै: मृदुल हास्य ओ नुपूरक झंकार मे परिणत होबय लागल। एहि रसिक दम्पत्तिक एकान्त विहार मे आब हमरा लोकनि केँ बाधा देब उचित नहि। अतएव आब एहू ठाम सँ हटबाक चाही।''

उपर्युक्त प्रकरण सभ सँ ई ज्ञात होइत अछि जे *कन्यादान* मे बीचक बहुत रास अनावश्यक वा गैर-जरूरी 'डिटेल्स' वा विवरण छोड़ल गेल अछि आ तकरा बड़ कौशल सँ आगाँक बात सँ मिलाओल गेल अछि। आ प्राय: एही कारणेँ, जेना आलोचक सभ कहलनि अछि, ''*कन्यादान*क कथानक छोट भ' गेलैक अछि आ तँ कथानकक गति सेहो मन्द भ' गेल छैक। परन्तु जँ से भेलैक अछि तँ हमरा जनैत से नीके बात भेलैक अछि, कारण जे एही द्वारे कथानक वा घटनाक्रम मे बेसी रचाब व कसाब आबि गेल छैक। शरतचंद्र सँ एक टा नवोदित लेखक जखन पुछलथिन जे सफल उपन्यास लिखबाक रहस्य की छैक, तँ ओ कहलथिन जे नीक लेखक लेल जतेक ई जानब जरूरी छैक जे उपन्यास मे की लिखल जयबाक चाही ताहि सँ बेसी ई जानब जरूरी छैक जे उपन्यास मे की नहि लिखल जयबाक चाही।'' हमरा जनैत हरिमोहन झा ई बात नीक जकाँ जनैत छलाह जे उपन्यास मे की नहि लिखल जयबाक चाही। यैह बात विमल मित्र सेहो कहैत छथि जखन ओ कहै छथि जे ग्रहण करबाक आ वर्जन करबाक, पकड़बाक आ छोड़बाक सम्मन्वये सम्पूर्ण शिल्प-कौशल थिक। कोन वस्तु कतेक आ कखन मुँह खोलि क' कहबाक अछि आ कोन कतेक मात्रा मे कहबाक अछि, चुप साधि लेबाक अछि, यैह कौशल कहबाक आ नहि कहबाक वजन जँ ठीक-ठाक रहय, तँ ओ वस्तु पाठक केँ अन्तिम क्षण धरि पकड़ि क' राखि सकैत छै। *कन्यादान*क एहि विशेषताक पाछाँ आ ओकर कथानक छोट आ तँ गति मन्द होयबाक पाछाँ सेहो—हमरा जनैत यैह कारण अछि।

तहिना *द्विरागमन* मे सेहो ई देखब जरूरी अछि जे लेखक कत' आ कोना पाठक सँ आबि सोझे संपर्क कयलनि अछि। सर्वप्रथम मिस बिजलीक भाषणक अंत मे लेखक कहैत छथि, ''सभ सँ अधिक प्रभावित भेलाह एक नवयुवक जे एकाग्र चित्त सँ तन्मय भेल बिजलीक एक-एक छटा केँ नेत्र-पथ सँ अपना हृदय मे उतारने जाइत छलाह। ई छलाह पाठक लोकनिक सुपरिचित सी.सी.मिश्र।'' एकरा अतिरिक्त *द्विरागमन* मे एहन कोनो स्थल नहि अछि जत' लेखक स्वयं बीच मे कतहु आबि पाठक सँ सोझे संवाद स्थापित कयने होथि, ओहिठाम तँ नहिए जत' डॉ. पाठकक दिव्य दृष्टि पहुँचि गेलनि अछि।

ई बात अवश्य छैक जे जेना-जेना-उपन्यास कलाक क्रमिक विकास होइत गेल छै, उपन्यास उपन्यासकारक छाया सँ फराक होइत गेल अछि आ विधाक रूप मे अपन स्वायत्ता कायम करैत गेल अछि। ई अंतर *कन्यादान* आ *द्विरागमन*क बीच सेहो देखल जा सकैत अछि। एहि सम्बन्ध मे मुदा हम तीन टा बात दिस ध्यान आकृष्ट कर' चाहब। प्रथम तँ ई जे लेखकक पहिल अथवा आरंभिक रचना होइतो जाहि प्रौढ़ताक शिखर धरि ई पहुँचल, तकरा ध्यान मे रखैत ईहो बिसरबाक वस्तु नहि थिक जे उपन्यास-यात्राक कोन चरणक ई रचना थिक। दोसर, ईहो ध्यान देबा योग्य बात थिक जे ओहि युग मे जखन आब हम पाठक केँ एत' सँ उठा ओत' ल' चलैत छी—सन शैलीक प्रचलन छल, *कन्यादान* मे केहन चमत्कारपूर्ण कौशल आ आत्मीयतापूर्ण सहृयताक संग एहि शैलीक प्रयोग कयल गेल अछि, जे कथा-वस्तु मे कतहु लेखकक प्रवेश अवरोधक नहि बनैत छैक अपितु कथा-वस्तु केँ भ'र आ सहारा दैत चलैत छैक, ओकर सहायक भ'क' अबैत छैक। दोष आ गुणक निर्णय कोनो परिभाषा वा शास्त्रीय मापदण्डक आधार पर नहि भ' सकैत छैक, ओकर निर्णय व्यावहारिक प्रतिफलन सँ होइत छैक। तेसर बात ई जे आइ जकरा दोष बुझल जाइ छै, काल्हि ओ गुण भ' जा सकैत छै। अजुका पुरना वस्तु काल्हि नव भ' जाइत छै। जेना जीवनक प्राय: सभ क्षेत्र मे—मनुष्यता आ नैतिकताक मूल अवधारणा केँ छोड़िक'—सभ ठाम भेल छै। कथा-विधा मे तँ कथाकारक सोझ-सोझ प्रवेश आब बहुत ठाम प्रचलित भ' गेल छै आ एहि पुरना बात केँ लोक आब नव बात बुझ' लगलैक अछि। तहिना जँ उपन्यासो मे आब फेर सँ होब' लगै, तँ कोन आश्चर्यक बात? तँ जेना कहलहुँ, अन्तिम निर्णायक 'फलेन परिचीयते' होइत छैक, माने कृति वा रचना स्वयं निर्णय करैत छैक, कोनो शास्त्रीय कसौटी नहि, कोनो आप्त-वाक्य नहि, कोनो परिभाषा नहि, कोनो लक्षण नहि, कोनो आलोचकीय मापदण्ड नहि।

डॉ. अमरेश पाठकक वाक्यक उत्तरार्ध हम बिसरल नहि छी जाहि मे कहने छथि जे, ''*द्विरागमन*क प्रारम्भ मे मिस बिजलीक भाषण कथावस्तुक प्रवाह केँ अवरूद्ध करैत अछि।'' सोचबाक बात थिक जे डॉ. पाठक वा हुनका-सन और बहुतो गोटे केँ से किए लगैत छनि। एही अध्याय मे पूर्ववक्ता पुरुषक भाषण जे नारीक प्रति प्राच्य दृष्टिकोण रखैत अछि, ओहि मे तँ हुनका सभ केँ एना नहि लगैत छनि। आ ने महात्माजीक प्रवचन, जाहि आगाँ सी.सी.मिश्र चुप भ' जाइत छथि, मे एना लगैत छनि। आ ने वैवाहिक प्रकरण मे लेखकक ओतेक पैघ वक्तव्य मे तेना लगैत छनि। वैचारिकता तँ अहू सभ ठाम आयल छैक।

असल मे एहि प्रश्नक उत्तर *द्विरागमन*क 'रोमांसक उदय' शीर्षक परिच्छेद मे मिस बिजली स्वयं द' देने छथि जत' ओ सी.सी.मिश्र केँ कहैत छथिन, ''ओहि मे कतेक तँ हमरा गरियैबो करतीह, स्त्रीक बात जाय दिय', देहाती पंडितो अग्निश्च वायुश्च भ' जयताह। जवाब नहि फुरतनि तँ लगताह हमरा गारि पढ़य। किएक जे प्राचीन विचारक पंडित जँ नवीन विचारक पुरुष वा स्त्री सँ परास्त भ' जाथु, तँ खिसियाक' ओहि पुरुष केँ नास्तिक आ स्त्री केँ कुलटा कह' लगै छथिन।''

असल बात से छैक। विचार सँ हुनका सभ केँ कोनो मतलब नहि छनि। से जँ रहितनि तँ *कन्यादान-द्विरागमन*क एतेक रास-विचार-पक्ष पर एको टा आलोचकक ध्यान नहि जइतनि? असल मे हुनका लोकनि केँ मतलब छनि एहि बात सँ जे विचार के द' रहल अछि। स्त्री? शूद्र? शान्तं पापं! कहू तँ भला! मौगी भ'क' ई सधोरि? तँ मिस बिजलीक विचार पर हुनका एतेक आपत्ति छनि। नहि तँ विचार पर विचार करबाक मैथिली आलोचक केँ किए विचार होयतनि? जत' विचार महत्त्वपूर्ण नहि भ'क' ई बात महत्त्वपूर्ण होअय जे विचार के द' रहल अछि, तत' विचारक की मूल्य?



कन्यादान-द्विरागमन आ प्रासंगिकताक प्रश्न

राज मोहन झा

प्रासंगिकताक प्रश्न एम्हर आबिक' एक टा फैशनक अंतर्गत उठाओल जाय लागल अछि। एहि बलधिंगरो मे ककरो लेहाज नहि कयल गेल अछि। विद्यापति पर्यन्त केँ नहि बकसल गेल छनि! तखन अपर विद्यापति एहि सँ कोना बाँचल रहि सकैत छथि?

रहरहाँ सुन' मे आओत जे युग बदलि गेलै, ने आब ओ बुच्ची दाइ कतहु भेटतीह ने ओ सी.सी.मिश्रा भेटताह। माने, *कन्यादान-द्विरागमन* अपन उपयोगिता समाप्त क' चुकल। पोथीक रूप मे ओकर ऐतिहासिक महत्त्व जे रहौक, ओना आब ओकर कोनो मोल नहि।

मैथिलीक मान्यता-प्राप्त समालोचक प्रो. श्रीकृष्ण मिश्र तँ घोषित कैयो चुकल छथि, ''*कन्यादान-द्विरागमन* मे जाहि समाजक चित्रण अछि ओ समाज आब नहि अछि! *कन्यादान*क समस्या आब समाज मे एक नव भीषण रूप मे उपस्थित अछि। आजुक सी.सी.मिश्रा ए.बी.सी.डी. मात्रक ज्ञान रखैत, अवैध रूप सँ बी.ए.क डिग्री प्राप्त कय कतेक निरपराध सुशिक्षित, बुच्चीदाइक जीवन नष्ट करैत छथिन केवल एहि लेल जे हुनक ससुर अपन सम्पत्ति बेचि, जान सँ ऊपर कर्ज मे पड़ि अपन समस्त परिवारक भविष्योन्नतिक डाँड़ तोड़ैत हुनक पिता केँ काटरक रुपैया देला उत्तर हुनक फरमाइशी विदाइ नहि द' सकलथिन। अत: *कन्यादान-द्विरागमन* सामयिक उपन्यास अछि, स्थायी महत्त्वक नहि। सामाजिक परिस्थितिक बदलि गेला सँ ओकर महत्त्व घटि गेल।'' (प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ—पृ.165)

उपर्युक्त उद्धरण मे संयोजक शब्द अंतक बाद जे निष्कर्ष निकालल गेल अछि ताहि सँ ई ध्वनित होइत अछि जे उपयुक्त सभ टा दुरवस्थाक लेल दोषी *कन्येदान-द्विरागमन* होय! मुदा से आलोचकीय भाषाक कारणेँ। जहाँ धरि आलोचकक मन्तव्यक प्रश्न अछि, तँ से एक टा भयंकर निष्पत्ति दिस ल' जाइत अछि। युग बदलैत रहैत छैक। आ युगक संग समाजो बदलैत रहैत छैक। काल-प्रवाह केँ केओ रोकि दय आ परिवर्तनक गति केँ केओ बान्हि राखय, से सामर्थ्य ककरा छैक? आ युग बदलला सँ सामाजिक स्थिति मे परिवर्त्तन भेला जँ साहित्य सामयिक भ' जाइत होय, तखन तँ प्रत्येक युगक साहित्य सामयिक साहित्य कहाओत, ओकर उपयोगिता वा प्रासंगिकता ओही युग धरि सीमित रहत, सामाजिक परिस्थितिक बदलि गेला सँ प्रत्येक युगक साहित्यक महत्त्व अगिला युग मे आबिक' घटि जायत। एहि सिद्धान्तक अनुसार तँ भारतवर्षक लेल तुलसीदास, इंग्लैंडक लेल शेक्सपीयर आ सोवियत रूसक लेल टाल्सटाय—सभक साहित्य सामयिक भ' जायत, सभक महत्त्व घटि जायत, कारण जे जाहि स्थिति आ समस्या सभक अभिव्यक्ति हिनका लोकनिक साहित्य मे भेटैत अछि, तकरा सँ ओहि देश सभक समाज केँ एखन कोनो सम्बन्ध नहि छैक। अपन अबोधपना मे आलोचक कतेक भयंकर बात कहि गेलाह अछि, तकर कनेको आभास हुनका नहि छनि।

आलोचकक उपर्युक्त कथन मे, स्थायी महत्त्व शब्द आयल अछि। स्थायी महत्त्व सँ हुनक तात्पर्य प्राय: शाश्वत प्रकृति सँ छनि। सत्य पूछी तँ कला-साहित्य मे शाश्वत किछु नहि होइत अछि। अन्तिम सम्पूर्णता नामक कोनो वस्तु कला-साहित्य मे भैए नहि सकैत अछि। कारण जे कला-साहित्य एक टा निरंतर खोजक नाम थिक, एक टा अनवरत जिज्ञासा आ आकांक्षाक नाम थिक। कला-साहित्य मे जँ कोनो वस्तु शाश्वत अछि, स्थायी महत्त्वक अछि, तँ ओ कोनो सत्य नहि अछि जकरा प्राप्त क' अहाँ कालातीत भ' जा सकैत छी। ओ शाश्वत वस्तु वा स्थायी महत्त्वक बात यैह अहाँक आकांक्षा अछि जे कला-साहित्यक माध्यम सँ अभिव्यक्त होइत रहैत अछि। ईहो एक टा भ्रान्त धारणा अछि जे कोनो कृतिक शाश्वत प्रकृतिए ओकरा सभ समय आ युगक लेल प्रासंगिक बना दैत छैक। यदि कोनो कलाकृति अपन ऐतिहासिक समयक अतिक्रमण क' लैत अछि तँ एकर ई अर्थ नहि जे ओ समयक चिरन्तनता केँ कोनो शाश्वत सत्य केँ उपलब्ध क' लैत अछि। एकर अर्थ एतबे छैक जे देश और कालक सीमाक उल्लंघन करैत हम अपना केँ एक टा एहन संसार मे पबैत छी जे अपना मे पूर्ण आत्मलीन अछि, स्वायत्त अछि। आ हमरा उद्वेलित करैत अछि, किन्तु हमर कोनो पूर्वाग्रह सँ अनुशासित नहि होइत अछि। कला साहित्यक यैह विलक्षण विडंबना छैक जे विशिष्ट सामाजिक सन्दर्भ मे उत्पन्न भैयो क' ओ मनुष्य द्वारा सृजित भेलो पर ओ मानवीय स्थितिक गुलाम वा ऐतिहासिक सीमा मे आबद्ध भ' क' नहि रहैत अछि। कोनो साहित्य वा कलाक कृति जँ अपना मे एतेक शक्ति, सामर्थ्य, सम्पन्नता रखैत अछि जे अपन समयक विशिष्ट परिस्थिति सँ ऊपर उठिक' छलाँग लगाक' हमरा समय लग पहुँचि जाइत अछि आ हमरा आनन्दित क' दैत अछि, तँ यैह ओकर चरम सार्थकता छैक, यैह प्रासंगिकता छैक। महान साहित्य वा कला-कृति पढ़ैत-देखैत बिसरि जाइत छी जे कोन सामाजिक परिस्थिति मे आ कोन ऐतिहासिक क्षण मे ओकर सृजन भेल छलैक। ओ बात हमरा लेल महत्त्वपूर्ण नहि होइत अछि, महत्त्वपूर्ण होइत अछि हमरा पर ओकर तात्कालिक प्रभाव, से चाहे हम कतबो दिन बाद ओकरा पढ़ी, देखी।

एतेक तँ स्पष्ट अछि जे विद्वान आलोचक प्रो. श्रीकृष्ण मिश्र सामयिक आ सनातन दू टा भिन्न आ प्राय: परस्पर विरोधी अवधारणा मानिक' चलल छथि। ऊपरे ऊपर देखिक' एना लगितहु छैक। परन्तु अमृत रायक शब्द मे, ''सामयिक और सनातन दो काल-कोठरियाँ नहीं, काल की एकही अनादि-अनन्त धारा हैं। जिसे हम सामयिक कहकर जानते-पहचानते हैं, वह सनातन काल का ही अंश है, एक बूँद काल-महासागर की।'' आगाँ अमृत राय कहैत छथि, ''तथ्य का आत्मा का सत्य बनना ही सामयिक का सनातन बनना भी है। और उस आत्मा के सत्य का तदाकार-तदनुरूप साहित्य के सत्य मे ढल जाना ही अमर साहित्य की सृष्टि है।'' फेर ओ कहैत छथि, ''हर समय हम तथ्यों से घिरे हैं। जब जिस समय उन असंख्य तत्वों में से कोई एक तथ्य हमरी आत्मा का सत्य बन जाता है, तब उस क्षण वह सामयिकता या क्षणिकता के घेरे को तोड़कर आपातत: हमारे लिए एक सनातन सत्य बन जाता

है। और हमारे पास अगर कला की वह संपदा है जो हमारे मन के सत्य को दूसरे या दूसरों के मन में ज्यों की त्यों उतार सके तो उस दूसरे या उन दूसरों के लिए भी वह एक सनातन सत्य बन जाता और किसी रूप में नहीं तो कला के एक अपूर्व, अविस्मरणीय आस्वाद के रूप में। यही साहित्य की वह कीमियागरी है जो ठंडे लोहे को सोना बना देती है। मिट्टी में जान डाल देती है, मृण्मय को चिन्मय बना देती है। उसी की महिमा है कि हम जाने-माने काल्पनिक पात्रों के साथ खिलखिला कर हँसते।'' जेना *कन्यादान-द्विरागमन* मे हमसभ हँसैत छी। अंत मे निष्कर्ष रूप मे अमृत राय कहैत छथि, ''श्रेष्ठ साहित्य वह है जो एक साथ ही सामयिक भी होता है और सनातन भी। वह रूप देता है, वाणी देता है, सामयिक और सनातन के संगम के उस पुलकित क्षण को जब सामयिक को सनातन की आत्मा और सनातन को सामयिक की देह मिल जाती है, या दूसरे शब्दों में, सामयिक और सनातन की लय और सनातन को सामयिक के स्वर मिल जाते हैं या और भी दूसरे शब्दों में, सामयिक को सनातन का परिप्रेक्ष्य और सनातन को सामयिक की रेखाएँ और रंग मिल जाते हैं।''

सामयिक और सनातन पर एतेक स्थान लेब एहि लेल जरूरी भ' गेल जे प्रो. मिश्र सामयिक कहि *कन्यादान-द्विरागमन* केँ एकदम सँ खारिज क' देलथिन अछि। आब प्रासंगिकताक प्रश्न पर आबी। अहुना *कन्यादान-द्विरागमन* केँ सामयिक कहबाक अर्थ हुनक एकरा अप्रासंगिके कहब थिक। प्रासंगिकताक सोझ-सोझ अर्थ थिक उपादेयता। उपादेयता शब्द सँ कने प्राचीनता आ शास्त्रीयताक गन्ध अबैत अछि, तँ एकरा स्थान पर सार्थकता वा प्रासंगिकता सन नव शब्द चलि पड़ल अछि। ककरो प्रासंगिकता पर प्रश्न उठयबाक अर्थ अछि ई पूछब-जानब जे ओ हमरा लेल, आबक बदलल संदर्भ मे, कतेक उपयोगी रहि गेल अछि।

जहाँ धरि हरिमोहन झा आ हुनक साहित्यक उपयोगिताक प्रश्न अछि, एकर उत्तर कोनो आलोचक नहि, ओ विशाल पाठक वर्ग देत, जकरा कतहु भीतर धरि जाक' हरिमोहन झा स्पर्श कयने छथिन। आ ओ ओकरा स्पर्श क' सकलथिन, सैह हमरासभ लेल बुझबा, सोचबा-विचारबाक वस्तु थिक। एखनहु जत' कतहु विद्यापति पर्व वा एहन कोनो अवसर पर मैथिली-पोथीक विक्रयक अस्थायी प्रबन्ध होइत अछि (स्थायी प्रबन्ध तँ कतहु अछिए नहि) तँ सभ सँ बेसी वा कहु जे एक मात्र जे माँग होइत अछि, से अछि *कन्यादान-द्विरागमन* समेत हरिमोहन झाक पोथीक। जत' कतहु सभ सँ बेसी जाहि पोथीक एखनहु बिक्री होइत अछि, से थिक *कन्यादान-द्विरागमन* समेत हरिमोहन झाक पोथीक। मिथिला वा ओहि सँ बाहरोक सामान्य जनक संग जे लेखक सभ सँ अधिक जुड़ि सकल आ एखनो धरि जुड़ल अछि, से थिकाह हरिमोहन झा। सामान्य जनक संग एहन योगायोग कतेक लेखक स्थापित करैत छथि—आनो-आन भाषा केँ मिलाक'? एतेक जनप्रिय (लोकप्रिय शब्दक प्रयोग जानि-बूझि क' नहि क' रहल छी कारण जे रेलवे-बुक स्टॉल पर आ आब तँ गोटेक प्रतिष्ठित विक्रय-केन्द्र केँ छोड़ि आन सभ बुक-स्टॉल पर सस्तौआ साहित्य भेटि रहल अछि जकरा लोकप्रिय साहित्य कहल जाइत छै।) लेखक ओ एतेक प्रानप्रिय साहित्य आनो-आन भाषा केँ मिला क' कतेक भेल अछि? आ हुनक जन-प्रियता घटबाक बदला दिनानुदिन बढ़ले जाइत अछि, जकर एक टा प्रमाण ई बात अछि जे नहि केवल हुनक पोथीक माँग दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि, अपितु हुनक पोथी द' जकरा पुछबै से कहत, जे औजी, छल तँ हमरा पास अवश्य, मुदा पता नहि के ल' गेल। माने हुनक पोथी ककरो पास टिकैत नहि छै जँ ओ अतिरिक्त रूप सँ एहि मामला मे सतर्क नहि रहय। ई बात कोना छै? की पोथीक बिनु प्रासंगिके भेने?

और एक-टा बात लिय'। जे केओ जहिया-जखन जैयम बेर ई पोथी हाथ मे लैत अछि, बिनु फेर सँ पढ़ने रहैत नहि अछि आ पढ़िक' हँसने बिना रहैत नहि अछि। ओना पढ़बाक गप्प जाय दिय', प्रूफ देखैत काल (*हरिमोहन झा रचनवालीक* प्रथम भाग छपि रहल छल, जाहि मे ई दुनू उपन्यास अछि) कय बेर कय टा स्थल आयल अछि, जत' 'हँसने बिना कल्याण नहि' क स्थिति भ' गेल अछि। हम जनैत छी जे एहन बात नहि अछि, जे खाली हमरे संग भेल हो। से किए छै जे जय बेर ई पोथी पढ़ब, तय बेर हँसब? की पोथीक प्रासंगिकता बिना?

ओना तँ साहित्यिक उपयोगिता समाज लेल आ मनुष्य लेल ता धरि रहत जा धरि, समाज जीवित अछि, मनुष्यता आ सामाजिकता जीवित अछि। मुदा एहि दुनू पोथीक उपयोगिता तँ सद्य: सोझा मे अछि। प्रासंगिकताक प्रश्न एहि दुनू पोथीक प्रसंग मे कतेक निरर्थक भ' जाइत अछि, सेहो साक्षाते अछि।

लोकप्रिय साहित्यक खाता मे *कन्यादान-द्विरागमन* केँ खतिया देला सँ सेहो काज नहि चलत। कारण जे रेल मे आ बस मे पढ़'वला लोकप्रिय साहित्य ई नहि अछि। साहित्यक समझ आ परख रखनिहार साहित्यानुरागी बुद्धिजीवि लोकनिक ई साहित्य अछि। एहि ठाम साहित्यिक मूल्यवत्ता आ लोकप्रियता आबि दू फराक-फराक वस्तु नहि रहल अछि, दुनू मिलिक' एकाकार भ' गेल अछि। प्रासंगिकताक प्रश्न उठओनिहार लोकनि लेल ई एक टा समस्या उत्पन्न कर'वला बात भ' जाइ छनि। सत्य पूछी तँ प्रासंगिकताक प्रश्न उठयबाक अपन एकान्त कक्ष मे बैसिक' सोचनिहार (अथवा सोचबाक नाटक कयनिहार?) आलोचक लोकनि केँ अधिकार होइतो नहि छनि। ई अधिकार पाठकक छै। आ से पाठक एखन पढ़' मे लागल अछि। ओकरा लेल प्रासंगिकताक प्रश्न निरर्थक छै, जा धरि ओ पढ़' चाहै अछि, पढ़ि रहल अछि।

ई वैह पाठक अछि जकर निर्माण यैह दुनू पोथी कयने अछि। एहिठाम पाठक शब्द केँ कने व्यापक अर्थ मे लेबाक अछि। लोक जनैत अछि जे *कन्यादान-द्विरागमनक* पाठक मे बहुत निरक्षरो लोक अबैत छल, प्राय: आबो अबैत होय। एक टा साक्षर व्यक्ति पढ़य, आ बहुत रास निरक्षर लोक आनन्द लय। स्त्रिगणो मे तहिना होय। तेँ वस्तुत: पाठक शब्द एत' जनता शब्दक पर्यायवाची भ' गेल अछि। स्त्री हो वा पुरुष, जे *कन्यादान-द्विरागमन* नहियो पढ़लक, नहि पढ़ि सकैत रहय—सेहो पोथीक रस आ आनन्द वा संदेश वा अर्थ वा उपादेयता जे किछु कहियौ तकर सहभोक्ता भेल, सहचर भेल, सहयोगी भेल, सहयात्री भेल—जे किछु कहियौ। सार्त्र कतहु लिखने छनि, ''वी हैव रीडर्स, बट नो पब्लिक।'' से हरिमोहन झाक पाठक जनता छनि। तहिना जेना तुलसीदासक पाठक जनता भेलनि, कबीरक पाठक जनता छलनि (शाब्दिक अर्थ मे तँ हुनक पाठक रहबे नहि करनि) , विद्यापतिक पाठक जनता भ' गेलनि। शरतचन्द्र आ प्रेमचन्दक पाठक जनता छनि। जाहि साहित्यक पाठक जनता भ' जाइ, से कतहु अप्रासंगिक होय?

कहल जा सकैत अछि जे एहि सभ साहित्यक जनप्रियताक आधार एकर क्लासिक भ' गेनाइ छैक। *कन्यादान-द्विरागमन* सेहो मैथिली मे क्लासिकक दर्जा पाबि गेल अछि आ तेँ जन-प्रिय अछि। मुदा क्लासिक तँ मृत सेहो होइत अछि, जेना संस्कृतक। हमसभ ओहिसभ क्लासिक केँ श्रद्धाक दृष्टि सँ देखैत छी, बहुतोक पूजो करैत छी, शोधार्थी ओहि पर शोध करैत छथि, मुदा जनता ओकरा ओना पढ़ैत नहि अछि जेना हरिमोहन झा केँ अथवा प्रेमचन्द केँ वा शरतचन्द्र केँ। तुलसी, कबीर, वा विद्यापतिक पाछाँ तँ धार्मिको कारण भ' सकैत अछि। मुदा शरतचन्द्र केँ आ प्रेमचन्द केँ आ हरिमोहन झा

केँ एखनो लोक किए पढ़ैत अछि? एहि द्वारे जे जीवन्ते क्लासिक जनसाधारणक बीच लगातार पढ़ल जाइत अछि।

एक टा दोसर दृष्टि सँ सेहो हमसभ *कन्यादान-द्विरागमनक* प्रासंगिकता देखी। मानि लेलहुँ जे बुच्ची दाइ आब बुच्ची दाइ नहि रहलीह, सी.सी.मिश्र आब सी.सी.मिश्र नहि रहलाह। मुदा मिथिलाक समाज जे *कन्यादान-द्विरागमन* मे मूलत: अछि, से की एखनो ओहने नहि अछि? कन्याक विवाह की एखनो ओहने अथवा ओहू सँ बेसी दुष्कर नहि अछि? की विवाह मे एखनो छल-प्रपंच सँ काज नहि लेल जाइत अछि? की वरक फरमाइस मे सकब एखनो ओतबे वा ओहू सँ बेसी कठिन नहि अछि? घर परिवार वा गामक लोक मे अंतर्निहित राग-स्याख वा ईर्ष्या-द्वेष एखनहु ओहिना नहि अछि?

कन्यादान-द्विरागमनक किछु प्रसंग-विशेष पर ध्यान द'क' देखब एत' लाभकर होयत। *कन्यादानक* 'सभागाछीक दृश्य' शीर्षक परिच्छेद मे 'मिथिला सुधारिणी' नामक एक टा मासिक पत्रक चर्च भेल अछि। ताहि प्रसंग टुन्नी झाक मन्तव्य छनि, ''एही मास सँ एक टा मासिक पत्र चललैक अछि, मानि लिय' जे 'मिथिला सुधारिणी।' तकरे विज्ञापन थिकैक। हमरा पचाशेक बाँटक हेतु देने छल। हम देखल जे मानि लिय' एक पीठ खालिए छैक। उतेढ़ि लिखबाक योग्य तँ भ' गेल। यैह कहाँक थोड़? आगि लगन्ते झोपड़ा जे निकशै शे लाभ। एक टा अहूँ ल' लिय'। मानि लिय' जे पाग मे धर' योग्य तँ होयत?'' ताहि पर घूटर झा की कहैत छथिन से सुनू—''हँ-हँ। हमरो मधुबनी स्टेशन पर एगोटा भेटल रहय। जैखन गाड़ी सँ उतरलहुँ कि दिक करय लागल जे अपनहुँ ग्राहक बनि जाउ। हम पुछलियेक जे औ बाबू! मँगनी देबैक कि किछु नगदो नारायण लेबैक? ताहि पर कहलक जे तीन टाका साल मे लागत। हम कहलियेक जे एहि पत्र सँ हमरा एको साँझक खर्चा चलत? ओ कहलक, ''से तँ नहि होयत।'' हम कहलिऐक, ''बेस, चुपचाप अपन बाट धरू। सभ सँ बाढ़ि बुढ़ि-ढहलेल अहाँ केँ हमही बूझि पड़लौंह? तीन टाका मे हमरा दू सालक नोन चलत। एकबार ल'क' की चाटब? फेरि एहन कथा बजबैक तँ लोक उकठि करय लागत।'' तत: पर टुन्नी झा कहैत छथिन हमर नाम तँ मानि लिय' जे जबर्दस्ती ग्राहक मे लिखि लेलक। तँ की अहाँ केँ बुझि पड़ैत अछि जे हम एकोटा कैंचा देबैक?''

मैथिली मे पत्रिकाक सम्बन्ध मे आइ सँ पैंसठि वर्ष पूर्व जे लोकक मानसिकता रहैक,



ताहि मे कोनो परिवर्तन भेलैक अछि? हम किछु साहित्यानुरागी व्यक्तिक बारे मे नहि कहि रहल छी। से ओहू जमाना मे रहल होयताह।

एही अध्याय मे एही प्रसंग मे टुन्नी झा कहैत छथि, ''ई शुधार की करत? मानि लिय' अपनहि जातिक निन्दा करैत अछि। ई परम अनर्गल थिक। जौं अपनहि घरक दोख अपने देखार कर' लागब, तखन तँ दोसर जाति मानि लिय' जे धूसि क' छोड़ि देत।''

की एखनो 'टिपिकल' मैथिल-मानसिकता यैह नहि थिक? कत' परिवर्तन भेल अछि?

कन्यादानक 'कन्यादान' शीर्षक परिच्छेद मे लेखक कहैत छथि, ''ओहि पावन प्रतिज्ञाक अर्थ सँ वर-कन्या केँ ततबहि सम्पर्क रहैत छनि जतेक आधुनिक ग्रैजुएट लोकनि केँ मिथिलाक्षर सँ। पुरोहित महाराजक आँखि रहैत छनि पद्धति पर, मन रहैत छनि 'रजतम चन्द्रदैवत्‌म' पर। यजमान चाहैत छथि जे कोनहुना झट द' छुतका छोड़ाक' पाक भ' जाइ। रहि गेलाह वर-कन्या। से वरक मन मे रहै छनि जे कखन विधि-बाधक बखेड़ा सँ पिंड छूटय और फालतू लोकसभ घसकय जे कोबरक आनन्द लूटी। और बेचारी कन्या बलिदानक छाग जकाँ बैसलि भीतरहि भीतर औनाइत रहैत अछि।'' की एहि स्थिति मे मिसियो भरि परिवर्तन भेल अछि? वर-कन्या तथा पुरोहित-यजमानक जाहि मानसिकताक वर्णन भेल अछि, से की एखनो ओहिना नहि अछि? आ की आगुओ एहिना नहि रहत? वैवाहिक मन्त्रक उपमा मिथिलाक्षर सँ देब एखनहु ओतबे वा ओहि सँ बेसी सटीक नहि अछि? वर-कन्याक मनोविज्ञान, जकर एत' चित्रण अछि, से की बदलि गेल छै? आगाँ लेखक एही ठाम कहैत छथि, ''समाज केँ सरोकार छनि दहनहीक अँकुरी सँ, भारक बायन सँ, चतुर्थीक भोज सँ और घसकट्टीक सुपारी सँ। समाजक ई स्थिति, सम्बन्ध वा सरोकार की बदलि गेल अछि? की बदलल अछि?''

द्विरागमन मे रोमांसक उदय शीर्षक परिच्छेद मे जखन सी.सी.मिश्र मिस बिजलीक भाषण द' कहै छथिन जे ओहि भाषण केँ तँ छपा क' अशिक्षित समाज मे वितरण करक चाही। अहाँ देश-विदेश घूमने छी, तँ एहन व्यापक दृष्टिकोण अछि। किन्तु 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' मानयवाली देहातक स्त्री वर्ग केँ तँ ई सभ 'आइडिया' नबे बुझि पड़तनि। ताहि पर बिजली कहै छथिन, ''ओहि मे कतेक तँ हमरा गरियैबो करतीह। स्त्रीक बात जाय दिय', देहाती पंडितो अग्निश्च वायुश्च भ' जयताह। जवाब नहि फुरतनि तँ लगताह हमरा गारि पढ़' किएक जे प्राचीन विचारक पंडित जी नवीन विचारक पुरुष वा स्त्री सँ परास्त भ' जाथु तँ खिसियाक' ओहि पुरुष केँ नास्तिक और स्त्री केँ कुलटा कह' लगै छथिन।'' हरिमोहन झा केँ अपना समय मे तँ सद्य: अनुभव भेलनि, मुदा की आइयो मैथिल लोकनि ओही संस्कार मे नहि जीबि रहल छथि? पुरुष मनोविज्ञानक जे उदाहरण सभ मिस बिजली सी.सी. मिश्र केँ रोमांसक अंत शीर्षक परिच्छेद मे दैत छथिन, से की शत-प्रतिशत एखनो सही नहि अछि? आ कि आगाँ आब'वला समय मे नहि रहत? 'तीर्थयात्रा' हो वा 'ग्रहण-स्नान', दुनूक यथार्थ की आइयो ओतबे यथार्थ नहि अछि? गाम मे पतिया, दुगोला, रूसा-फुल्ली आ भोज-भात की आइयो ओहिना नहि अछि जेना *द्विरागमन* मे भेल अछि? की बदलि गेल अछि?

आ मानि लिय' कनेकाल लेल जे सभ किछु बदलि गेल अछि, एकदम आदर्श स्थिति भ' गेल अछि। तँ तँ की *कन्यादान-द्विरागमन* अप्रासंगिक भ' जायत? जेना गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर कहने छथि, मात्र सामाजिक स्थिति बदलि गेला सँ लेखकक प्रासंगिकता खतम नहि भ' जाइत छैक। वस्तुत: पैघ सँ पैघ लेखकक पहिचान यैह होइत छै जे ओ काल केँ अवक्रमित करैत अछि। तत्कालीन अन्याय और शोषणक विरुद्ध संघर्ष करब तँ ओकर धर्मे होइत छैक। जेना प्रेमचन्द पहिल प्रगतिशील लेखक संघ मे अपन भाषण मे कहने छथि जे अपन अनुभूतिक तीक्ष्णताक कारण ओकर सौंदर्य-बोध मे एतेक तीव्रता आबि जाइत छैक जे कि किछु असुन्दर छैक, अभद्र छैक, मनुष्यता सँ रहित अछि, ओ ओकरा लेल असह्य भ' जाइत छैक, ओहि पर ओ शब्द और भाषाक समस्त शक्ति सँ आक्रमण करैत अछि। मुदा तकरा अतिरिक्त ओकर भाषा आ शिल्प मे बहुत किछु एहन रहैत छै जे स्थायी बनल रहैत छै। एतबे नहि, मानव-स्वभावक रहस्यमयताक संग-संग ओ प्राकृतिक सौंदर्य तथा चराचर जगत सँ अपन जुड़ाव केँ अपन कृति मे एहि तरहेँ गुम्फित कएने रहैत अछि जे स्थिति बदलियो गेला पर ओहि सँ पाठकक लगाव बनल रहैत छैक।

जकरा समकालीनता कहल जाइत छैक, से वस्तुत: कालजीविताक दोसर नाम अछि। ई समयक अनुभव नहि थिक, समकालीनता केवल समय मे होयब नहि थिक, अत्युत समय केँ

गढ़बाक व्याकुल प्रचेष्टा सेहो अछि। ई अतीतक जीवित आलोचना, वर्तमानक सूचना और भविष्यक प्रति निर्देश अछि। ई संभावित समाज कें उचित समाज मे ढारबाक यथार्थ सामाजिक कलापरक चिन्ता अछि। *कन्यादान-द्विरागमन* कें एहि कोण सँ देखल जयबाक चाही।

सत्य पूछी तँ प्रासंगिकताक जे अवधारणा सामान्यत: हमसभ आगा मे राखि ओहि पर विचार करैत छी, से साहित्यक लेल एक टा निरर्थक वस्तु अछि। प्रासंगिकता शब्दे सँ समयक बोध होइत अछि। मुदा समयक तात्पर्य ओहि समयक सामाजिक परिस्थिति सँ नहि होयबाक चाही। एकर तात्पर्य समयक प्रवहमान निरंतर आ अनंत धारा सँ होयबाक चाही। साहित्यक सामाजिक उपादेयताक अर्थ कोनो साहित्य कें ओहि समयक तात्कालिक सामाजिक आवश्यकता वा अपेक्षाक खुट्टा सँ बान्हि क' देखब नहि थिक। एहि तरहेँ साहित्य कें समय आ समाजक फराक-फराक कोला मे बाँटिक' नहि देखल जा सकैत अछि। तँ निर्मल वर्मा कहैत छथि जे प्रासंगिकताक अर्थ एहि प्रश्नक उत्तर देब होयत जे कोनो कृति नितान्त विभिन्न सामाजिक व्यवस्था, फराक-फराक युगक प्रतिकूल नैतिकता, मूल्य आ विश्वासक अछैत ओकर बीच अपन प्रासंगिकता कायम राखि सकैत अछि कि नहि। ओ कहैत छथि—समय जे आइ अछि, आइ जे हम छी, हम जे आइ छी, अहाँ जे किछु कहि ली, कोनो कलाकृति, चाहे ओ कतबो पुरान किए नहि हो, समयक अनन्त धारा मे एहि क्षण अटकल हमरा कतेक आलोकित क' पबैत अछि, ओकर प्रासंगिकता एहि कसौटी पर आँकल जाइत छै।

''एक महान उपन्यास बहैत समय कें अपन पन्नासभ पर रोकि लैत अछि आ जखन पचास-साठि वर्ष बाद हम ओहि उपन्यास कें पढ़ैत छी तँ रुकल समय फेर बह' लगैत अछि'', फाकनरक एहि कथन कें उद्धृत करैत निर्मल वर्मा कहैत छथि जे एक कलाकृति अपना मे आत्मलीन, स्वायत्त एकाइ भैयो क' कोनो स्थिर वा रुकल सत्ता नहि थिक—समयक खाना मे बाँटल-बन्हायल नहि अछि। ओ प्रत्येक पीढ़ीक दृष्टि मे, एते धरि जे एकहि पीढ़ीक भिन्न-भिन्न व्यक्तिक लेल अपन अर्थ बदलैत रहैत अछि। हम कोनो कलाकृति मे की आ कतेक-किछु पबैत छी, से ओहि कलाकृतिक सर्वांगीन अर्थवत्ता पर तँ निर्भर करितहि अछि, किन्तु एहू बात पर निर्भर करैत अछि जे प्रत्येक पीढ़ीक मनुष्य कतेक आ केहन अनुभव ल'क' ओहि कलाकृति लग जाइत अछि।

किछु एहने बात अज्ञेय एहि तरहेँ कहैत छथि, ''प्रासंगिकता के काल-सापेक्ष रहते हुए भी हम प्रश्न और उत्तर के ऐसे निरुपण तक पहुँच जाते हैं जो एक तरह से काल-सापेक्षता के बन्धन से मुक्त हो जाता है—काल-सापेक्षता को ही ऐसे चौखटे मे रख देता है जो कालातीत माना जा सकता है।''

तँ जखन *कन्यादान-द्विरागमन*क सन्दर्भ मे प्रासंगिकताक प्रश्न उठैत अछि तँ हमरा लगैत अछि स्वयं प्रासंगिकताक प्रश्न एत' आबि हास्यास्पद भ' जाइत अछि। प्रत्येक युग मे एहन किछु पोथी लिखल जाइत अछि जे कलाकृति होइछ। ओहि पोथी कें हम कोनो विशेष अभिप्राय सँ शिक्षा ग्रहण करबा लेल वा अपन मानसिक विकास लेल नहि पढ़ैत छी। ओ हम तहिना पढ़ैत छी जेना कोनो संगीतक कार्यक्रम सुनै छी अथवा कोनो कला-दीर्घा मे जाइ छी, किए जे ओ पोथी पढ़ब स्वयं अपना मे एक संतुष्टिदायक अनुभव होइत अछि। *कन्यादान-द्विरागमन* ताही कोटीक पोथी अछि। चाहे जतेक बेर एकरा पढ़ू ओ अहाँ कें नव-सन लागत। *कन्यादान-द्विरागमन* पूरा मैथिल जातिक पोथी कहल जा सकैत अछि। एक व्यक्ति परिवारक कथा ई अछियो नहि, पूरा मैथिल जातिक कथा अछि। आ तँ हरिमोहन झा एतेक पाठक धरि पहुँचबो कयलाह! महाश्वेता देवी कहनहु छथि जे एक खास व्यक्ति वा परिवार पर नहि लिखि पूरा जातिक बारे मे लिखिनिहार व्यक्ति अधिकतम पाठक धरि आसानी सँ पहुँचि सकैत अछि। *कन्यादान-द्विरागमन* मे एक टा आन्तरिक मैथिलत्व छैक, जे मैथिल-मन पर बड़ घनीभूत प्रभाव छोड़ैत छैक।

लेखन सँ जुड़ल कोनो व्यक्तिक एहि सँ पैघ सार्थकता की भ' सकैत छै जे ओकर रचना साहित्यक पन्ना धरि सीमित नहि रहि जीवनक दृष्टान्त बनि जाय? से *कन्यादान-द्विरागमन* बहुतोक लेल दृष्टान्त बनल अछि आ बहुत गोटे एकर दृष्टान्त बनलाह अछि। उपन्यास मे आयल कतेको प्रसंग दैनन्दिन जीवनक सम्भाषण मे घुलि-मिलि क' प्रचलित भ' गेल अछि, जेना किनको पानि ल'क' लघुशंका दिस जाय कहबनि तँ बाजि उठताह, ''से की हमरा आगि बहराइत अछि?''

*द्विरागमन*क निवेदन मे लेखक लिखैत छथि, ''व्यंग्य-विनोदक पुट दैत एहन-एहन दृश्यक फोटो उतारल गेल अछि, जाहि सँ यथेष्ट हँसि चुकलाक अनन्तर मननशील पाठकक ध्यान गंभीर सामाजिक प्रश्नक दिस आकर्षित होइत जैतनि।'' एहि कथनक पूर्वार्द्ध तँ शत-प्रतिशत सत्य सिद्ध भेल, लोक यथेष्ट हँसलक, मुदा मननशील पाठक संभव जे लेखक कें तत्काल नहि भेटल होथिन। मुदा जेना जेना समय बीति रहल छैक, लेखकक अपेक्षाक अनुरूप मननशील पाठकक संख्या मे वृद्धि भेल छैक आ आगाँ प्राय: और होयतैक। एहन गतिशील लेखक जकर पाठकक संख्याक वृद्धिक संग-संग प्रकारो मे भिन्नता होइत जाइ आ ओ कालक अनन्त विस्तार मे दूर-दूर धरि टिकल रहि जाय, तकर प्रासंगिकताक प्रश्न कतेक निरर्थक सन वस्तु भ' जाइत छै?

*लोलिता*क प्रसिद्ध लेखक नोबोकोबक कहब छनि जे तीन दृष्टिकोण सँ कोनो लेखक कें जाँचल जा सकैत अछि, कथावाचक, शिक्षक तथा जादूगर। कोनो पैघ लेखक मे ई तीनू तत्व रहैत छै, किन्तु जादूक तत्व जे छैक सैह ओकरा महान बनबैत छैक। कलाक जादू सँ स्नात होयबाक लेल एक टा बुद्धिमान पाठक केवल हृदय सँ नहि, केवल मस्तिष्क सँ नहि, अपितु अपन रीढ़ सँ छुबैत अछि, किएक तँ कलाक आनन्द एत्तहि स्पन्दित होइ छै।

हरिमोहन झाक लेखन मे ई जादू तत्व सर्वोपरि छनि, ताहि मे सन्देह नहि। तकर साक्षी छथि पाठक, जे एखनो हुनक पोथी तकने फिरै छथि। *कन्यादान-द्विरागमन* सम्बन्धी जतेक जे आपत्ति आलोचक लोकनिक रहलनि अछि वा छनि, से अकादमिक प्रश्न बनिक' आलोचक लोकनिक पोथिए मे बन्द रहि गेलनि। पाठक ओहि सभ आपत्ति कें साफे नकारि देलकनि। लेखकक स्वाभाविक प्रवृत्ति उपन्यास लेखन लेल अनुकूल नहि छनि, अपन सभ्यता-संस्कृति पर कुठाराघात करैत छथि, पाश्चात्य-सभ्यताक पोषक आ पक्षधर छथि, अपन समाजक दोष देखार करै छथि, *कन्यादान*क कथानक बड़ छोट आ गति बड़ मन्द अछि, *द्विरागमन*क समाधान कृत्रिम व अस्वाभाविक अछि, *द्विरागमन* असफल भेल, *कन्यादान* मे जीवनक विविध पक्ष नहि आयल, चारित्रिक विकास नहि देखाओल गेल, *द्विरागमन* मे हास्य-व्यंग्यक प्रसंग कम अछि, सी.सी.मिश्रक पूरा चरित्र नहि आयल अछि। एहि सभ पर पाठक कोनो कान-बात नहि देलकनि, ने कनडेरियो आँखिए तकलकनि। आलोचक लोकनिक एहि बतकुटनी सँ मिसियो भरि ने पोथी प्रभावित भेल, ने पाठक। अज्ञेयक कथन, ''महान रचना का यथार्थ वह है जो वह रचना करती है, वह नहीं जो आप समझते हैं।'' चरितार्थ भेल, आब आलोचक लोकनि एकर प्रासंगिकता ल'क' अपस्याँत होइत रहथु!



संपर्क : **सावित्री कुटीर, घग्घाघाट रोड**
महेन्द्रू, पटना-6 मो. : 9430891689

'पाँच पत्र' केँ पढ़ैत

कुलानंद मिश्र

मैथिली कथा अपना अवस्था मे अखनो बड़ छोट अछि। ई कथा भिन्न जे संस्कृत-परंपराक आख्यान, उपदेशात्मक आ सुधारात्मक कथा सँ प्रगति क' मैथिली कथाक साम्प्रतिक बोध समकालीन कथा-बोधक सहगामी भ' गेल अछि। मैथिली कथा जखन अपन भाषा, वस्तु-बोध, शिल्प आ समन्वित अभिव्यक्ति लेल कोनो पथ बनौनिहार आ पथ देखौनिहार कृती रचनाकारक प्रतीक्षा मे रहय, प्रो. हरिमोनह झा अपन क्रांतिकारी भाषा-दृष्टि आ धीपल युगबोधक संग, मैथिली कथाक अव्यवस्थित क्षेत्र मे प्रवेश कयलनि। हुनक युगांतकारी कृति *कन्यादान* (उपन्यास) सँ मैथिली कथा-विधा केँ व्यवस्थित आ समर्थ बहैत भाषा आ सशक्त अभिव्यंजना-शैली भेटलै। प्रो. झा मैथिली कथा-विधाक प्रथम समर्थ उन्नायके टा नहि, बहुतो अर्थ मे एकर स्वर आ भंगिमाक निर्धारको छथि। प्रो. झाक रचना-दृष्टिक पष्ठभूमि मे निश्चित रूप सँ मैथिली कथाक विकास तीव्रतर भेलै। मैथिली-कथाक ई अवधूत व्यक्तित्व बहुतो दूर धरिक यात्रा जल्दीये पार लगा देलनि। ओ मैथिली कथाक भाषा आ दृष्टिक विकासक संग-संग एक टा पाठक तैयार कयलनि आ ओहि पाठक-वर्ग केँ नव-रसज्ञताक अवगति सेहो प्रदान कयलनि।

मैथिल-समाज अखनो धरि मुख्यत: सामंती संस्कारक जकड़न मे अछि। मैथिली कथा-क्षेत्र मे प्रो. झाक पदार्पणक समय ई समाज आर भीषण रूप सँ एकर प्रभाव मे रहय। स्वतंत्रता-पूर्वक जागरण-संस्कार आ अंग्रेजी शिक्षाक पश्चिमी प्रभाव सँ परंपराक सड़ल-गलल अंगक प्रति विरोध-भाव अलबत्त आरंभ भ'गेल रहय। हास्य आ व्यंग्यक अनुपान संग प्रतिगामी संस्कार आ जीवन-शैलीक प्रति तीव्र आ कटु आलोचना-दृष्टि लेने प्रो. झा मैथिली कथा मे तखने अपन योगदान-हेतु प्रस्तुत भेलाह। हुनक योगदान निश्चित रूप सँ प्रभावशाली छनि—मैथिली कथा-जगतक कोनो कथाकार सँ प्राय: अधिक महत्त्वपूर्ण।

प्रो. झाक प्राय: सभ कथा मे, खाहे ओकर वर्ण्यविषय किछु हो, हास्य आ व्यंग्यक (अनेक स्तर पर) अंतर्भाव भेटत। अधिकांश कथाक शिल्प विषय सँ बहुत दूर धरि नियंत्रित रहितहुँ एक टा खास अव्यवस्था मे पड़ल भेटैछ—मैथिल संस्कारक बहुत ध्यान नहि देब'बला मन:स्थिति मे गढ़ल। देखार रूप सँ फराक पड़ि जाइछ 'पाँच पत्र'—अपन शिल्प, भाषाक गतिमयता, अभिव्यक्तिक आर्द्रता आ स्पंदन, सूक्ष्मता आ संक्षिप्तता एवं कोमल मानवीय विषयवस्तु ल'क' 'पाँच पत्र' प्रो. झाक प्राय: सर्वोत्तम कथा-रचना कहा सकैछ। पति-पत्नीक पारस्परिक जीवनक राग-वृत्ति आ समय-चक्र सँ तकरा पाछु धरैत जीवनक करुण बोध एक टा अद्भुत विरोधाभास आ दुखद एवं क्षोभजनक मन:स्थिति केँ जन्म दैछ। 'पाँच पत्र'क तीव्र बोध प्रो. झाक कथाकारक नव आ फराक मूल्यांकन आ विश्लेषणक आवश्यकता केँ रेखांकित करैछ।

'पाँच पत्र'क कथा-वस्तु प्रो. झाक कथा-भूमि मे नव क्षितिज जोड़ैत अछि। एकर कथा-वस्तु ओना छैक बड़ कम—कथा कहबा लेल मात्र बोध केँ फरीछ करबा लेल। मात्र पाँच छोटे-छोट पत्रक माध्यम सँ व्यक्त होइत एक टा मध्यवर्गीय मैथिल पत्नीक प्रति कालक्रम सँ बदलैत मैथिल पतिक मन: स्थितिक फरीछ चित्र एहि मे देखल जा सकैछ। एहि कथा मे तीव्र यथार्थ-बोध छैक, सत्यक करुण स्वीकार छैक आ एहि सभ केँ बन्हैत एक टा आत्मीय संगीत छैक। एहि मे सामाजिक यथार्थक उपस्थिति एक टा फराक सँ पैघ बात अछि। एकर वस्तु कम होइतहुँ, प्रभावात्मकता मे महाकाव्यीय विस्तार, गरिमा आ शालीनता सँ मंडित अछि।

आब संक्षेप मे कथावस्तुक रेखा-चित्र पर कने ध्यान देब संगत होयत—'पाँच पत्र' मे पाँच पत्रक माध्यम सँ विवाहित जीवनक रागवृत्ति आ त्रासदीक संग-संग पारिवारिकता केँ बड़ सूक्ष्म ढंग सँ चित्रित कयल गेल अछि। एहि पाँचो पत्र मे आरंभ सँ चारि पत्र एक पति (देवकृष्ण) द्वारा पत्नी केँ संबोधित अछि आ पाँचम पत्र पिता (देवकृष्ण) द्वारा पुत्र केँ संबोधित अछि। विशेष बात ई जे ई पाँचो पत्र दस-दस वर्षक अंतर पर लिखल गेल अछि आ पति-पत्नीक संबंध मे बोधक स्तर पर प्राय: दशकीय अंतर दिस संकेत करैछ। एहि कालमान सँ कथाकार केँ की अभीष्ट छनि से खूब स्पष्ट नहि, तखन अवस्था-वृद्धिक संग संबंध-बोध मे अंतर वा तकर रूपांतरण तँ होइतहि छैक।

पहिल पत्र मे एक टा नवविवाहित पतिक पत्नीक प्रति मांसल प्रेम-भाव केँ अभिव्यक्ति भेटलैक अछि। कोनो विद्यालय वा महाविद्यालये मे पढ़ैत पति बड़ स्नेह-विगलित स्वर मे अपन विरह-व्यथाक करुण-गान करैछ। मिलनक लेल आतुरता सँ भरल ओ पति पत्नीक बाप-पित्ती पर खौंझ प्रकट करैछ जे ओकारा दू मासक बाद अयबाक बात लिखने छथिन। ओ भेंटक लेल पत्नी केँ उचित मंत्रणा दैछ, चंद्रहारक प्रलोभन दैछ। प्रो. झाक विनोदी स्वर पतिक प्रत्येक अभिव्यक्ति मे तँ स्पष्ट अछि, मुदा अंतत: तकर रूपांतरण एक टा बड़ मधुर बिंब आ संवेदना मे होइछ।

दोसर पत्र शहरवासी अध्यापक पति द्वारा ग्रामवासिनी पत्नी केँ संबोधित अछि। ई वैह छात्र देवकृष्ण छथि जे आब अध्यापक देवकृष्ण भ' गेल छथि। देवकृष्ण एक टा सामान्य संस्कृत विद्यालयक अध्यापक छथि। कम-सँ-कम एक टा छँटगरि ननकिरबी आ एक टा ननकिरबाक बाप भ'गेल छथि। नव अवस्थाक उन्माद समाप्त भ' गेल छनि। पारिवारिक ओझरा मे पड़ल जा रहल छथि। ननकिरबीक तुसारी पुजबाक बात, बेटा (बंगट)क स्कूल जयबाक प्रति जिज्ञासा, पत्नीक स्वास्थ्यक प्रति चिंता आ पत्नीक प्रति राग-बोधक संग-संग परिस्थिति-शासित व्यावहारिकताक चित्र एहि पत्र मे भेटैछ। पतिक काम-भाव आब अनुशासित भ' गेल छैक, आतुरता मे लगाम लागि गेल छैक आ गार्हस्थ्यक विवेक देखार होमय लागल छैक।

तेसर पत्र एक टा प्रौढ़ निम्न-मध्यवर्गीय प्रवासी आ गृहस्थ पतिक पत्नीक नाम संबोधित पत्र अछि। स्पष्टे ई पत्रो देवकृष्ण द्वारा पत्नी केँ लिखल गेल अछि। गामक अकाल सँ नोकरिहा पतिक गड़बड़ होइत अर्थव्यवस्था आ तकरा पृष्ठभूमि मे बेटाक परीक्षा-फीस, अपन हथ-पैंच, खेतक मालगुजारी, चिल्हकाउर बेटीक सासुर सँ गाम अयबाक प्रस्ताव, तेसर संतानक (दोसर बेटीक) विवाहक चिंता आदिक बात एहि पत्र मे वर्णित अछि। पतिक अवस्था बढ़ि रहल छैक आ ओकर मोन मे जीवनक समस्या सभक समक्ष असहायता-बोध बढ़ल जाइत छैक। एहि ठाम अबैत-अबैत पत्नीक प्रति कोनो राग रहियो गेलैक अछि तँ ओ महिसक विसुखब सन छोट बातक अ'ढ़मे नुका जाइत छैक। निम्न-मध्य-वर्गक प्रौढ़ पतिक समस्या-संकुल जीवन मे पत्नीक प्रति राग-वृत्तिक एना क्रमश: सुखा—जायब बड़ स्वाभाविक बात होइत छैक।

चारिमो पत्र अही वय-दुर्बल पति देवकृष्ण द्वारा पत्नी केँ संबोधित अछि। आब ई पति जीवन सँ आर हारि गेल लगैछ। बेटाक व्यवहार सँ खौंझायल, पुतहुक व्यवहार सँ असंतुष्ट, बेटा द्वारा पुतहु केँ अपना काजक जगह पर ल' जयबाक बात सँ अप्रसन्न, पत्र द्वारा अपना कमाई सँ कोनो सहयोग नहि करबाक प्रवृत्ति सँ निराश देवकृष्णक संघर्ष-शक्ति चूकैत सन लगैछ। ओ तथापि बेटाक सुमत्तिक हेतु शुभकामना करैत छथि आ पत्नीक प्रबोधन करैत छथि जे माय कुमाता कहियो नहि होथि। देवकृष्णक पत्नीक प्रति पति-रूप मे आब सभ राग-चेतना शिथिल भ' गेल छनि। आब मात्र संबंधक संचेतना आ कर्त्तव्य-बोध सँ व्यवहार नियंत्रित होइत छनि, कोनो भौतिक आधार लग नहि रहि गेल छनि।

पाँचम पत्र काशीवासी वृद्ध आ अशक्त देवकृष्ण द्वारा अपन बेटा केँ संबोधित अछि। एहि वृद्ध देवकृष्ण केँ अपन शेष जीवनक सामान्य सुविधा आ पत्नीक जेहन-तेहन गतिओक लेल कुपुत्र पुत्र आ कुलच्छनि पुतहुक करुण भाव सँ अभ्यर्थना करब आवश्यक लगैत छनि।

एहि पत्र मे पहिने देवकृष्ण अपन कष्ट आ दीन अवस्थाक वर्णन कय बेटाक हृदय मे अपना प्रति दया उत्पन्न करैत छथि। बूढ़ि ग्रामवासिनी पत्नीक लेल किछु जिज्ञासा अवश्य छनि, मुदा ताहि लेल अपने यात्रोक कष्ट उठायब आवश्यक नहि बुझैत छथि। हुनका (देवकृष्णक) सेवा जोगर जखन ओ नहि छथिन तँ फेर विशेष बाते कोन। कहुना गति भ' जाइन सैह एक लाख। फेर पत्र मे पुतहुक प्रशंसा आ पत्नीक कुचेष्टा सेहो बूढ़ देवकृष्ण केँ लिखब आवश्यक लगैत छनि। बेटा केँ प्रसन्न करबाक ई करुण आ अमोघ मंत्र एहि वर्गक प्राय: सभ बूढ़ पढ़ैत अछि जे वृद्धावस्थाक असहायावस्था मे आर्थिक रूप सँ बेटा पर अवलंबित होइछ।

एहि पत्रक अंत मे बूढ़ देवकृष्ण प्रचलित 'कुपुत्रो' जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति'क पैरोडी 'कुमाता जायते क्वचिदपि कुपुत्रो न भवति' अपना बेटाक अतिरिक्त खुशामद मे लिखैत छथि। ई कने कान आ मोन मे खटकैत अछि, मुदा बूढ़ बापक असहाय मोनक थरथरी अहू मे देखल जा सकैछ।

एहि पाँचो पत्रक माध्यमे एक टा निम्न-मध्यमवर्गीय पति-पत्नीक संबंधक ई शोक-गीत यथार्थक स्वर तँ रखिते अछि, अपन प्रभाव मे अतिशय द्रावक सेहो अछि। प्रो. झा स्वयं एक टा सामान्य मध्य-वर्गीय जीवन सँ आयल लोक छथि। कथाक स्वर, विषय-वस्तु, प्रस्तुति, प्रभान्विति—सभ ओहि जीवन केँ अनेक स्तर पर उद्घाटित करैत अछि। एहि जीवन मे पति-पत्नीक रागात्मक संबंधक करुण परिणति बड़ तथ्य-सम्मत आ स्वाभाविक थिक। एहि पाँचो पत्रक माध्यमे मात्र सामान्य मध्यवर्गीय मैथिल पति-पत्नीक कालक्रम सँ बदलैत संबंधे टाक करुण उद्घाटन नहि होइछ, तत्कालीन संस्कृत मध्यवर्गीय मैथिल समाजक फरीछ चित्र सेहो उपलब्ध होइछ।

छठम दशक मे मिथिला मे जमींदारी प्रथा समाप्त भ' गेल छल। स्वतंत्रता आ पश्चिमी जागरणक प्रभाव सँ सुगबुगाइत मिथिला मे परंपरा सँ लड़ाइ तँ नहि, मुदा परंपराक गलित अंगक प्रति तीव्र विरोध अवश्य देखबा मे आबय लागल रहै। लग-पासक वा दूरोक साहित्य सँ आयल बोध आ चेतना मैथिली कथा-कविता केँ नव संस्कार देमय लागल रहै। एहि काल मे कविता मे मधुप, सुमन, यात्रीक बाद राजकमलक प्रवेश भेल रहनि आ कथा-क्षेत्र मे प्रो. झा, उपेंद्र नाथ झा 'व्यास' आ मनमोहन झाक बाद ललित, राजकमल आ प्रो. मायानंद मिश्र अवतरित भेलाह। प्रो. झा प्राचीनता सँ अनुशासित नवताक प्रतिनिधि कथाकारक रूप मे मैथिली कथाक श्रीवृद्धि कयलनि। ओ मैथिली कथाक भीष्म पितामह छथि, अपन अनुशासन सँ आबद्ध। एहि कथाकारक प्रौढ़ि आ दृष्टि-संपन्नताक अन्यतम उदाहरणक रूप मे वर्ष 1959 मे प्रकाशित 'पाँच पत्र' छठम दशकक मैथिली कथाक प्राय: प्रतिनिधि कथा सेहो कहल जा सकैछ।

प्रो. झा अपन भाषा मे सहजता तथा अपन ग्रामीण क्षेत्रक विशेष बान्ह आ सुगंधि ल'क' सहजहि चिन्हार होइत छथि। एहि पाँचो पत्र मे चारि पत्र एक सामान्य संस्कृत-शिक्षित पति द्वारा सामान्य शिक्षिता पत्नी केँ संबोधित अछि। संबोधनक विशेष भंगिमा सँ पतिक संस्कृत मन:स्थितिक परिचय भेटैछ। एकर भाषा मध्यवर्गीय मैथिल संस्कृत-समाजक भाषा थिक जाहि मे संस्कृत भाषाक भंगिमा छैक, आलंकारिक छटा सेहो छैक, सहजता छैक, लोक-सम्मत प्रयोग छैक आ विषयक प्रति आत्मीय अनुभूतिक सुगंधि छैक। किछु पाँती रसानुभूति लेल प्रस्तुत अछि।

(1) अहाँक लिखल चारि पाँती चारि सय बेर पढ़लहुँ।

(2) परंतु हमरा ओ अहाँक बीच मे भारी भदवा छथि अहाँक बाप-पित्ती जे दू मासक बाद फगुआ मे हमरा आबक हेतु लिखैत छथि। 60 वर्षक बूढ़ केँ की बूझि पड़तनि जे 60 दिनक विरह केहन होइ छैक।

(3) से आइ काल्हिक बेटा-पुतहु जेहन नालायक होइ छैक से तँ जनले अछि। हम हुनका खातिर की-की ने कयल। कोन तरहे बी.ए. पास करौलियनि से हमहीं जनैत छी। तकर आब प्रतिफल द' रहल छथि। हम तँ ओहि दिन हुनक आस छोड़ल जहिया ओ हमरा जिबितेँ मोंछ कटाब' लगलाह।

(4) जे हमरा (पति-पत्नी) लोकनि 30 वर्ष मे नहि कयलहुँ से ई (बेटा-पुतहु) लोकनि तीन मास मे क' देखौलनि।

(5) आब काशी विश्वनाथ कहिया उठबैत छथि से नहि जानि। संग्रहणी सेहो नहि छुटैत अछि। आब हमरा लोकनिक दबाइए की? औषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरि:।

(6) चि. पुतहु केँ हमर शुभ आशीर्वाद कहि देबनि। ओ गृह-लक्ष्मी थिकीह। अहाँक माय जे हुनका सँ झगड़ा करैत छथिन से परम अनर्गल करै छथि। परंतु अहाँ केँ तँ बूढ़ीक स्वभाव जनले अछि। ओ भरि जन्म हमरा दु:खे दैत रहलीह।

एहि पाँती सभ मे मैथिल संस्कार आ विशेष-विशेष संवेदना केँ बड़ सूक्ष्मता आ सहजता सँ पकड़बाक प्रयास भेटत। बोधक स्तर पर आतुरतो मे अनुशासन छैक तँ भाषाक स्तरपर तीव्र अभिव्यक्तियो मे अनुशासनक छाप फरीछ छैक। एहि कथाक भाषा पर तथा एहि भाषाक भंगिमा पर संस्कृतेतर कोनो भाषाक दूरस्थो प्रभाव नहि छैक। ई एक टा सुखद तथ्य जकाँ लागत।

ई कथा पाँच पत्रक माध्यमे अपन आकार आ अभिव्यक्ति पबैछ। एहि पाँचो पत्रक विषय अपना मे सेहो पूर्ण अछि आ सभ मिलिक' एक टा पूर्ण बोध फराक सेहो बनबैछ। शरीरक भिन्न-भिन्न अंगक क्लोजप आ फेर तखन संपूर्ण शरीरक संपूर्ण चित्र—एक-एक पत्र मे पूर्ण होइत खाश-खाश बोध, ओहि बोध सभ सँ स्पष्ट होइत एक टा खाश जीवन-बोध जे अंतिम परिणति जहाँ वस्तु-निष्ठ थिक।

एहि कथाक शिल्प मैथिली कथा लेल तहिया एकदम नवीन जकाँ छल। कथाक वस्तु-बोध व्यापक आ गंभीर होइतहुँ संश्लिष्ट नहि छैक आ तँ एकर शिल्पो मे एक टा सहज सौंदर्य छैक—किछु संक्षिप्त, मुदा तरासल, किछु ठोस, मुदा मधुर।

'पाँच पत्र' मैथिलीक किछु आँगुर पर गनबा जोगर कथा मे अबैत अछि। प्रकाशन-काल सँ आइ धरि एकर मूल्यांकन धनात्मके होइत अयलैक अछि। 'पाँच पत्र' अखनो धरि एक टा कोमल आ धड़कैत आ मधुर चेतना तथा करुणा आ उदास नियति-बोधक कथाक रूप मे मैथिलीक अन्यतम सफल कथा थिक। एकर अंतिम पत्रक अंत मे 'पुनश्च:' कहिक' जोड़ल पाँती जे (देवकृष्ण पत्नी केँ इंगित कय बेटा केँ लिखने छथि) अद्‌भुत करुणा आ व्यंग्यक बोध मोन मे उत्पन्न करैछ, ''यदि कोनो दिन बूढ़ी केँ किछु भ' जाइन तँ अहाँ लोकनिक बदौलति सद्‌गति होयबे करतनि। जाहि दिन ई सौभाग्य होइन ताहि दिन एक काठी हमरो दिस सँ ध' देबनि।''

कथा केँ समाप्त करैत ई दुनू पाँती पाठक केँ एक बेर पति-पत्नीक टिमटिमाइत राग-संबंधक बात मोन पाड़ैछ आ नियतिक करुणा आ तकर अनुभूति संग, मोन केँ उदास आनंद सँ भरि दैछ।



'पाँच-पत्र'क औपन्यासिक पसार

मन मोहन झा

सुनल अछि जे एक बेर सहरसा कवि सम्मेलन मे प्रो. हरिमोहन झा अपन कविता सँ श्रोता लोकनि केँ हँसबैत लोट-पोट क' देने रहथिन तँ 'मधुप' जी अपन कविता सँ ओही श्रोता लोकनि केँ दहो-बहो नोर बहयबा लय बाध्य क' देने रहथिन। फेर प्रो. झा हँसा देथिन तँ मधुप जी कना देथिन। लोक एक बेर हँसय तँ दोसर बेर कानय। ई 'दंगल' कहाँदन राति भरि चललै। कहबाक तात्पर्य जे ओ लोकनि वर्गीकृत भ' गेलाह आ हुनकर सीमा निर्धारित क' देल गेल रहनि। हरिमोहन बाबू हास्य-व्यंग्य लिखताह आ से छोड़ि आर किछु नइँ लिखताह, तँ मधुप जी मर्मस्पर्शी कारुणिक रचने टा करताह। हुनका लोकनि पर एक टा 'लेबुल' लगा देल गेलनि आ लोक हुनका सँ ओही तरहक (हिट) रचनाक माँग आ अपेक्षा करय लागल छल। माने ओ 'टाइप्ड' भ' गेलाह।

मधुप जी मूलत:शृंगार ओ भक्ति रसक कवि रहितहुँ करुण-रसावतारक ठप्पा हुनका पर लगा देल गेल। तहिना हरिमोहन बाबूक एक टा तेहन 'हास्य-व्यंग्य सम्राट' बला इमेज बनि गेलनि जे आन कोनो तरहक रचना कतिआयल जाइते रहि गेल। एहि लेल कते हद धरि समीक्षक दोषी आ कतेक लेखक से भिन्न गप्प! मुदा एहि सँ नोकसान लेखके केँ भेल। हुनक समुचित आ समग्रता मे मूल्यांकन नहि भ' सकल। कुलानंद मिश्र उचिते लिखने छथि, ''पाँच पत्र'क तीव्र बोध, प्रो. झाक कथाकारक नव आ फराक मूल्यांकन आ विश्लेषणक आवश्यकता केँ रेखांकित करैछ।'

हमरा तँ लगैत अछि जे प्रो. झा 'टाइप्ड' हैबा सँ बचबाक लेल, इमेजक जाल सँ बहराबहि लेल जेना ओ 'पाँच पत्र' लिखलनि...ओहि समय मे जखन कि लेखक प्रतिष्ठित भ' गेल छलाह आ हुनकर नाम घर-घर पसरि चुकल छल। 'पाँच पत्र' सन विशिष्ट रचनाक बहुत आवश्यकता नइँ छल। परंतु लगभग तीस सालक प्रसिद्धिक बाद श्रेष्ठतम रचना देब असाधारण लेखकीय क्षमताक परिचय दैछ जकर उदाहरण तकले पर भेटि सकैछ।



राज मोहन झा, प्रो. झाक समस्त कथा केँ चारि कोटि मे बाँटिक' देखलनि अछि। पहिल कोटि मे हास्य-व्यंग्यक चाशनीबला, दोसर मे व्यंग्य-प्रधान कथा-सभ, तेसर मे विशुद्ध हास्य मूलक आ चारिम कोटि मे करुणाक संवेदना बला कथा-सभ रखलनि अछि। हमरा दृष्टि मे प्रो.झा सभ तरहक रचनाक बानगी देलनि अछि आ सेहो 'एक्सट्रीम'बला। सामाजिक विसंगति वा चारित्रिक दौर्बल्य पर हँसैत प्रहार करयबला रचना मे ओ आशातीत सफलता प्राप्त कैलनि। दोसर तरहक रचना मे लेखकक बौद्धिक विन्यास 'विट'क चरमोत्कर्ष रूप मे भेटैछ। आ एही 'एंटीईमेज'क रूप मे तेसर कोटिक रचना जकर सर्वश्रेष्ठ नमूना अछि 'पाँच पत्र'।

'पाँच पत्र'क संबंध मे राज मोहन झाक कहब छनि, ''पाँच पत्र' मे पाँच टा छोट-छोट पत्रक शिल्प मे चालिस वर्षक सम्पूर्ण जीवन जाहि तरहेँ कलात्मक ढंगे समेटि लेल गेल अछि से एहि कथा केँ औपन्यासिक आयाम दैत छैक। दाम्पत्य जीवनक आरंभिक रस कोना समयक प्रभाव सँ क्रमश: पतराइत अंतत: शुष्कता मे परिवर्तित भ' जाइछ आ जीवनक विभिन्न पड़ाव पर यथार्थ सँ संघर्ष करैत लोकक संबंध कोना स्वाभाविक रूपेँ शनै: शनै: उष्माविहीन भ' सेरा जाइछ, एहि शाश्वत सत्य केँ कथा बड़ प्रभावकारी ढंग सँ प्रस्तुत करैत अछि।'

तहिना कुलानन्द मिश्र एहि प्रसंगे लिखैत छथि, ''मात्र पाँच छोट-छोट पत्रक माध्यम सँ व्यक्त होइत एक टा मध्वर्गीय मैथिल पत्नीक प्रति, कालक्रम सँ बदलैत मैथिल पतिक मन:स्थितिक फरीछ चित्र एहि मे देखल जा सकैछ। एहि कथा मे तीव्र यथार्थ-बोध छैक, सत्यक करुण स्वीकार छैक आ एहि सभ केँ बन्हैत एक टा आत्मीय संगीत छैक। एहि मे सामाजिक यथार्थक उपस्थिति एक टा फराक सँ पैघ बात अछि।'' ...हमरा जनैत फराक सँ बनैत पैघ बाते 'पाँच पत्र' केँ उपन्यासक विस्तार दैत छै। सामाजिक यथार्थ ने केवल अविच्छिन्न रूप सँ सम्बद्ध रहैत छैक अपितु कथा-साहित्यक ओ मुख्य उपजीव्य सेहो होइछ। प्रो. झा अपन

समयक सामाजिक यथार्थ केँ समस्या ओ पात्रक माध्यम सँ चित्रित कैलनि अछि जे कोनो समय मे अप्रासंगिक नइँ होयत। जेना जीवन चिरंतन अछि तहिना सामान्य जनक विवशता आ संघर्ष सेहो चिरंतन अछि। निम्न-मध्य वर्गक संघर्ष ओकरा आर्थिके पक्ष टा पर नइँ तोड़ैत अछि, संबंध मे सेहो जड़ताक जन्म दैत अछि, जतय व्यक्ति बहुत चाहितो किछु नइँ क' पैबा लेल विवश अछि। मानव व्यवहारक जटिलता संबंधं केँ एक रूप मे नइँ रहय दैत अछि। निरंतर बदलैत सामाजिक-आर्थिक दबावक संग समझौता करबाक क्रम मे व्यक्तिक सोच आ कार्यप्रणाली मे लगातार परिवर्तन अबैत रहैत छै। ई ओकर व्यवहार केँ सेहो प्रभावित करैछ आ संबंधहु मे चिप्पी लगा ओकरा लेल नव धरातल आ नव-संवेदनाक खोज करैत अछि।

प्रो. अमरेश पाठकक कहब अछि जे 'पाँच पत्र' शिल्प आ कथ्य दुनू दृष्टिएँ मैथिलीक सर्वोत्तम कथा मे सँ अछि। पाँच टा छोट-छोट पत्रक कलेवर मे चालीस वर्षक संपूर्ण जीवन जाहि तरहेँ समेटि लेल गेल अछि से लेखकीय सामर्थ्यक द्योतक तँ अछिए, जीवनक विभिन्न पड़ाव पर संबंधक जतेक पर्त कथा मे उघरैत अछि से मोन केँ भीतर धरि छूबि जाइत छैक।

'पाँच पत्र' मे सभ पत्रक बीच एक-एक दशकक अंतराल छैक आ काल परिवर्तन तेना सहज ओ स्वाभाविक ढंगे उकेरल गेल अछि जे पाठक ओहि मे सन्हिआइत जाइत अछि। चालिस वर्षक व्यथा पाठक केँ अवसाद सँ भरि दैत छै।

पहिल पत्रक स्थान अछि दड़िभंगा जे कि मिथिलांचलक एक मात्र शिक्षण-केन्द्र छल जतय कथानायक आचार्यक परीक्षाक तैयारी मे लागल रहथि, मुदा ध्यान नवविवाहिता पत्नी पर टाँगल रहनि। दोसर, तेसर आ चारिम पत्र 'हथुआ संस्कृत विद्यालय' सँ (जतय ओ शिक्षक छलाह आ आर्थिक संकट ओ बूढ़ि मायक परिचर्या दुआरे गृहिणी केँ गाम पर रखबा लेल बाध्य छलाह) पत्नी केँ लिखल गेल अछि। अपन सुख केँ कर्तव्यक बलिवेदी पर चढ़ायब ओहि समयक माँग रहै... लचारी रहै। अंतिम पत्र काशी सँ गंगा-लाभेच्छु देवकृष्ण अपन पुत्र केँ संबोधित करैत लिखलनि अछि।

एहिठाम कने बिलमि हम हुनकर 'विट'क अपूर्व बानगी 'दरोगा जीक मोंछ' सँ 'पाँच पत्र'क तुलना करय चाहब। 'दरोगा जीक मोंछ' मे पत्रक एक अंश (टुकड़ी) अर्थक अनर्थ क' दैत छै आ सम्पूर्णता मे ओ दोसरे बात कहैत छै। किंतु 'पाँच पत्र'क कोनो अंश—खाहे ओ संबोधन हो अथवा अंत आकि पुनश्च मे जोड़ल वाक्य—ओ संपूर्ण कथा कहि जाइत छै। गजल जकाँ एकर एक-एक अंश (पत्र) अपना आप मे सेहो पूर्ण अछि, आ सभ मीलिक' एक टा सम्पूर्ण प्रभाव फराक सँ बनबैत अछि। कुलानंद मिश्रक शब्द मे, ''शरीरक भिन्न-भिन्न अंगक क्लोजप आ फेर तखन सम्पूर्ण शरीरक सम्पूर्ण चित्र, एक-एक पत्र मे पूर्ण होइत खाश-खाश बोध, ओहि बोध सभ सँ स्पष्ट होइत एक टा खाश जीवन-बोध जे अंतिम परिणति जकाँ वस्तु-निष्ठ थिक।''

पहिल पत्रक संबोधन 'प्रियतमे' अछि। 'सभ सँ प्रिय' सँ कम ओहि गदहपचीसी अवस्था मे की होइतै! दस साल बाद प्रेमक ज्वार कम भ' 'प्रिये' रहि जाइत छै। कहबी छै 'सेवेन इयर्स इच', साते सालक बाद उतार आबय लगैत छै आ दस साल बाद आटा-दालिक भाव बुझा पड़ब स्वाभाविके। तेसर पत्र मे कर्तव्य-बोध करबैत 'शुभाशीर्वाद' देल जाइत छै तँ चारिम मे 'शुभ' सेहो हटि जाइत छै आ सोझे 'आशीर्वाद' पर उतरि जाइत छै। तहिना पहिल पत्र मे 'अहींक कृष्ण' सँ अंत होइत छै। 'अहाँक कृष्ण' वा 'अहूँक कृष्ण' नहि, 'अहींक कृष्ण'। अपन बापोक कृष्ण नइँ, 'अहींक कृष्ण' आ सेहो राधाक कृष्ण। दस साल बाद संबंध औपचारिक भ' जाइत छै आ अंत 'अहाँक देवकृष्ण' सँ होइत छै। तेसर पत्र मे 'शुभाभिलाषी देवकृष्ण' लिखल गेल छैक तँ चारिम मे सोझे 'देवकृष्ण'। अंतिम पत्र मे अवस्थानुकूल अंत कैल गेल छै, 'इति देवकृष्णस्य'। संबोधन आ अंत मात्र सँ पत्रक मजमून बुझा जाइत छै।

आब पत्र-सभक प्रारंभिक पाँति देखल जाय। पहिल पत्र प्रेम-रस सँ पगायल अछि जाहि मे मिलनक आतुरता छै। वैवाहिक जीवनक प्रारंभ मे प्रेम छोड़ि आर कथू मे मन नइँ लगैत छै, आ तैयो तृप्ति नइँ होइत छै। एहि मनस्थितिक अभिव्यक्ति पहिले पाँती सँ होइछ, 'अहाँक लिखल चारि पाँति चारि सय बेर पढ़लहुँ।' दोसर पत्रक प्रथम पंक्ति अछि, 'बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि आनन्द भेल।' दस वर्षक बाद प्रेमक वेग कम भ' गेल अछि आ आब पत्र बेसी दिन पर आबय लगलैक अछि... तथापि ओ आनन्द दिअबैत छै। प्रेमोन्माद यथार्थक धरातल पर आबि परिस्थिति-नियंत्रित भ' गेल अछि। दस वर्षक बाद तेसर पत्रक प्रारंभ भेल अछि, 'अहाँक चिट्ठी पाबि हम अथाह चिंता मे पड़ि गेलहुँ।' रागात्मक संबंध जीवनक समस्या-सभक बीच दबा-पिचा दम तोड़य लगैत छै। चारिम पत्रक आरंभ होइछ, 'हम दू मास सँ बड्ड जोर दु:खित छलहुँ। तँ चिट्ठी नइँ द' सकलहुँ।' ई अपन विलगित संबंधक युक्तिकरण (rationalisation) बुझाइत अछि। आ पाँचम पत्र बूढ़ पिता पारंपरिक ढंगे पुत्र केँ लिखैत छथिन, 'स्वस्ति श्री बंगट बाबू केँ हमर शुभाशिष: सन्तु।'

सभ पत्र मे छोट-सरल वाक्य छै जकर संख्या सेहो लगभग समाने छै। पहिल पत्र सत्ताइस वाक्यक अछि आ तीन वाक्य पुनश्च मे जोड़ल अछि। दोसर पत्रक वाक्य संख्या छब्बीस अछि तँ तेसरक चौबीस आ पुनश्च लगा क' सत्ताइस। चारिम पत्र मे सेहो सत्ताइस वाक्य अछि आ पुनश्च मे दू टा वाक्य जोड़ल गेल अछि। पाँचम पत्र तैंतीस वाक्यक अछि आ दू टा पुनश्च मे जोड़ल अछि। पहिल पत्र मे पुनश्च मे जोड़ल छै, ''चिट्ठी दोसरा केँ छोड़क हेतु नइँ देबैक। अपने हाथ सँ लगायब। रतिगरे आँचर मे नुकौने जायब और जखन केओ नइँ रहैक तँ लेटरबक्स मे खसा देबैक।'' उधियाइत प्रेम पर सामाजिकताक बन्हन नइँ रहै तँ ओ सभ बान्ह तोड़ि भासि जेतै। तँ नायक-नायिका नुका-चोरा ई खेल खेलाइत अछि आ साकांक्ष रहैछ। तेसर पत्रक पुनश्च अछि, ''जारन निघटि गेल अछि तँ उतरबरिया हत्ताक सीसो पँगबा लेब। हम किछु दिनक हेतु गाम अबितहुँ। किंतु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबिक' की करब'?'' गृहस्थीक झंझटि मे प्रेमक पन्हायब एकदमे बन्न भ' गेलै। चारिम पत्रक पुनश्च मे कहल गेल छै, ''जौं खर्चक तकलीफ हो तँ छौ कट्ठा डीह जे अहाँक नाम पर अछि से भरना ध'क' काज चलायब। अहाँक चन्द्रहार जे बंधक पड़ल अछि से जहिया भगवानक कृपा हैतनि तहिया छुटबे करत।'' आर्थिक विवशताक भेंट चढ़ल प्रेमक निशानी केँ भगवान भरोसे छोड़ि डीह तक भरना दय काज चलयबाक गप्प कैल गेल अछि। पाँचम पत्रक पुनश्च तँ संपूर्ण कथे कहैछ, ''यदि कोनो दिन बूढ़ी केँ किछु भ' जाइनि तँ अहाँ लोकनिक बदौलति सद्गति हैबे करतनि। जाहि दिन ई सौभाग्य होइनि ताहि दिन एक काठी हमरो दिस सँ ध' देबनि।''

आत्मसमर्पणक हद धरि पहुँचल विवशता, अपन चिल्हकाउर संतानक अयबाक गप्प सँ हर्षक साँती ओकरा चिंताक सागर मे डुमा दैत छैक। संबंध फोंक भ' जाइत छै, जीवन-रस सुखा जाइत छै...आ चरम बिंदु तँ भेटैछ जखन चारिम पत्र मे 'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति' लिखयवला केँ पाँचम पत्र मे लिखय पड़ैत छनि, 'कुमाता जायते क्वचिदपि कुपुत्रो न भवति।' एहि ठाम अबैत-अबैत जीवनक यथार्थ ततेक व्यापक भ' जाइछ जे ओ मानवीय सत्यक

सीमा छूमय लगैत अछि आ वेदनाक घनत्व उपस्थित करैछ। यथार्थक एहन आर-पार-दर्शी रचना विरले अछि।

'पाँच पत्र' मे दू स्तर पर विवशता उद्घाटित भेल अछि। एक तँ उदात्त रूप सँ आर्थिक विवशता जे सामान्यत: सभ पत्र मे आ विशेषक' तेसर पत्र मे भरल भेटैछ। दोसर तरहक विवशता देखार रूप मे नहि अछि मुदा बेसी गंभीर, चिन्त्य आ द्रावक अछि... सही केँ सही नहि कहि पयबाक विवशता...नहि चाहितो गलतक संग भ' जयबाक विवशता। एहि रूपक विवशता समस्त हिंदू पिताक विवशता छै जे कुपुत्रो केँ मोक्षक साधनक रूप मे देखैत अछि आ देखैत रहत। मन की नारी को कहे तन की नाड़ी संग न जाय! तनक नाड़ीक बचयबाक ब्योंत मे ओ मनक नारी केँ त्यागि दैत छथि, जे कहियो हुनक प्रियतमे राधा-रानी रहथिन। एहि लेल ओ पत्नी सँ विमुखता देखबैत छथि...ओकरा 'डिसओन' करैत छथि। फूसि बजैत छथि जे ओ भरि जन्म हमरा दु:खे दैत रहलीह। आ कुपुत्र सँ मोहभंग होइतहुँ ओकरे दिस भ' जाइत छथि। कथाक अंतिम पाँति तँ साफे गोहार करैछ कर्त्ता-पुत्र केँ बूढ़ा-बूढ़ी दुनू केँ पार-घाट लगयबाक।

कथा-नायकक अयबाक गप्प करीब-करीब सभ पत्र मे आयल अछि, अलग भाव-बोधक संग। पहिल पत्र मे दू मास बाद फगुआ तक रुकबाक धैर्य नहि छैक आ सिमरिया मे गुप्त रूप सँ फोटो घिचयबाक गप्प कैल गेल छै। प्रतीक्षा मे आतुर नायक केँ एक-एक क्षण पहाड़ सन बीति रहल छै। दस वर्ष बादक दोसर पत्र मे फगुआ मे गाम अयबाक यत्न करबाक गप्प आ नहि तँ मनीऑर्डर पठा देबाक गप्प कैल गेल छै। पहिलुका उष्णता सेरा-बसिया गेलैक अछि। तेसर पत्र मे कहल गेल छै, ''किछु दिनक हेतु गाम अबितहुँ, किंतु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबिक' की करब?'' माने गामक आकर्षण पत्नी नहि महीस भ' गेल अछि। चारिम पत्र मे ऐबाक गप्प के कहय, दु:खित रहबाक कारणेँ चिट्ठियो नहि लीखि सकबाक गप्प कहल गेल अछि। आ पाँचम पत्र मे तँ बूढ़ीक अवस्थोक गप्प सूनि नहि ऐबाक लाथ लगाओल गेल अछि—'हम आबिक' देखितियनि, परंच ऐबा-जेबा मे 30-40 टाका व्यर्थ खर्च भ' जायत। दोसर जे आब हमरो यात्रा मे परम क्लेश होइ अछि। अहाँ लिखै छी जे ओहो काशीवास करय चाहैत छथि। परंतु एहिठाम बूढ़ी केँ बड्ड तकलीफ हैतनि। अप्पन परिचर्या करबा योग्य तँ छथिए नहि, हमर सेवा की करतीह?' माने बूढ़ी जपाल भ' गेलथिन अछि जिनका संगो राखब हुनका स्वीकार्य नहि छनि। उमेरक एहि पड़ाव पर लोक सहजहि आत्मकेन्द्रित ओ स्वार्थी भ' जाइत अछि।

एतेक 'कन्डेंस्ड' रूप मे एतेक पैघ बात कहब नावकक तीर जकाँ गंभीर घाव जँ करैत अछि तँ ई लेखकक अतिरिक्त सजगता ओ परिश्रमक नमूना अछि। प्रो. झा पर अतिरंजनाक आरोप लगाओल जाइत छनि किंतु ई कथा कनेको 'लाउड' नहि भेल अछि। 'अंडरटोन' सेहो नहि भेल अछि किएक तँ कथा खुजिक' बजैत अछि। लेखकीय कौशल सँ सभ दृष्टिएँ, चाहे ओ संबोधन हो कि अंत, पत्रक प्रारंभ हो अथवा पुनश्च मे जोड़ल वाक्य, चुनि-चुनिक' तेहन समरूपता ओ समन्वयता राखल गेल अछि जे ओ अयनाक चित्र बनि गेल अछि। एक-एक शब्दक चयन क' सावधानीपूर्वक कुशल 'कम्पोजिंग' जकाँ कैल गेल अछि। पत्र मे भाषा तक अवस्थानुकूल राखल गेल अछि। पहिल पत्र मे युवा-प्रेमी-मन विकल भ' बजैत अछि, ''राधारानी! मन होइत अछि जे अहाँक गाम वृन्दावन बनि जाइत जाहि मे केवल अहाँ ओ हम राधा-कृष्ण जकाँ अनन्तकाल धरि विहार करैत रहितहुँ।'' दोसर पत्र मे कर्तव्यनिष्ठ पति बजैत अछि, ''हम किछु दिनक हेतु अहाँ केँ एहीठाम मँगा लितहुँ। परंतु एहिठाम डेराक बड्ड असोकर्य। दोसर जे विद्यालय सँ कुल मिलाक' साठि टाका मात्र भेटैत अछि। ताहि मे एहिठाम पाँच गोटाक निर्वाह हैब कठिन। तेसर ई जे फेर बूढ़ी लग के रहतनि। यैह सभ विचारि क' रहि जाइ छी।'' तेसर पत्र मे गृहस्थीक नाना जंजाल मे पिसायल लोकक आर्त्तनाद सुना पड़ैछ तँ चारिम पत्र मे थाकल मनक ठेही व्यक्त होइत छै। पाँचम पत्रक भाषा पारंपरिक संस्कृतनिष्ठ राखल गेल छै जाहि मे अवस्थाजन्य टुटैत स्वरक कंपन अछि।

'पाँच पत्र' जीवनक विभिन्न अवस्था... चारू आश्रमक कथा अछि। पहिल पत्र ब्रह्मचर्य अवस्थाक प्रतिनिधित्व करैछ, एहि अर्थ मे जे कथानायक नवविवाहिता सँ अलग भ' शहर मे विद्याध्ययन क' रहल अछि। ब्रह्मचर्य केँ विद्याध्ययन-प्रारंभक अवस्था मानल गेल अछि। दोसर आ तेसर पत्र गार्हस्थ जीवनक कथा कहैत अछि। जुआनीक जोशोन्माद पर पारिवारिक दायित्वक जुआ लदा गेलैक अछि। चारिम पत्र वाणप्रस्थ अवस्था केँ इंगित करैत अछि। बेटा सँ मोहभंग भ' जाइत छनि। व्यथित मने पत्नी केँ (आ अपनहुँ केँ) भरोस दैत छथिन, ''जे हमरा लोकनि तीस वर्ष मे नहि कैल से ई लोकनि द्विरागमन सँ तीन मासक भीतर क' देखौलनि। अस्तु। की करब?'' पाँचम पत्र सन्यासक सूचक अछि। वृद्ध देवकृष्ण घर छोड़ि काशीवास करय लगलाह आ अंतिम गतिक प्रतीक्षा क' रहलाह अछि। जीवन सँ हारल-झमारल ओ स्थित-प्रज्ञ भ' गेलाह अछि।

'पाँच पत्र' मे भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक कुशल फ्यूजन अछि। देवकृष्ण जीवनक ओहि तेराहा पर ठाढ़ छथि जतय सँ ओ आगाँ, पाछाँ आ सोझाँ तकैत छथि। भूत मे ओ बाप सँ नुकाक' चन्द्रहार दैत छथिन से बड़ बढ़िया आ वर्तमान मे वैह काज बेटा गोरलग्गीक पाइ नुकाक' करैत अछि तँ अखरैत छनि...ओकर दुर्बुद्धि मानैत छथि। भविष्यक गति लेल तैयो ओ ओही कुपुत्र पर आश्रित छथि। इतिहास अपना आप केँ दोहरबैत अछि आ 'ई जेनरेशन गैप' आगूओ एहिना चलैत रहतै। एहि शाश्वत सत्य केँ लेखक बड़ स्वाभाविक ढंगे रखलनि अछि।

लेखकक सूक्ष्म यथार्थक सजीव चित्रण, जाहि लेल प्रो. झा विख्यात छथि, 'पाँच पत्र' मे सेहो ठाम-ठाम भेटैछ। किछु उदाहरण दष्टव्य अछि—

—साठि वर्षक बूढ़ केँ की बूझि पड़तनि जे साठि दिनक विरह केहन होइ छैक।

—हमरा बाप केँ (चन्द्रहार दिअ) पता लगतनि तँ खर्चे बन्द क' देताह।

—बड़की ननकिरबी किछु और छेटगर भ' जाय तँ ओकरा बूढ़ीक परिचर्या मे राखि किछु दिनक हेतु अहाँ एतय आबि सकैत छी।

—किंतु जखन महिसिए बिसुकि गेल अछि तखन आबिक' की करब?

—हम तँ ओही दिन हुनक आस छोड़ल जहिया ओ हमरा जिबिते मोंछ छटाबय लगलाह।

—आब हमरा लोकनिक दबाइए की? आदि-आदि।

प्रो. हरिमोहन झा एहन एकसर आ बेजोड़ उदाहरण छथि जे एक हाथक लेखनी सँ हास्य-व्यंग्य केँ चोटी पर ल' जयबाक क्षमता रखैत छथि। तँ दोसर हाथक लेखनी सँ करुण-रस केँ तहिना शीर्षत्व प्रदान क' सकैत छथि। ई अद्भुत लेखन सामर्थ्य आ गँहीर पकड़क गप्प छै। 'पाँच पत्र'क कैक टा स्थल एहन लेखकीय बूता आ अवसादक उत्कर्ष देखबैत अछि। पहिल पत्र मे चुपेचाप जाहि चन्द्रहार केँ भेट देबाक गप्प भेल छै, चारिम पत्र मे बंधक पड़ल वैह चन्द्रहार केँ नहि छोड़ा पयबाक विवशताक उल्लेख भेल छै।

दोसर पत्र मे जे ननकिरबी तुसारी पूजैत अछि, जाहि लेल अठहत्थी नूआ पठयबाक उल्लेख भेल छैक सैह ननकिरबी दस वर्षक बाद चिल्हकाउर अछि आ दू टा नेना केँ ल'

सासुर सँ दू मास लेल आबि घर डेबबाक संकट उत्पन्न करैत अछि।

एक पत्र मे पत्नी केँ दुर्बल देखि पति जीरकादि पाक बनाक' सेवन करबाक, पाव भरि दूध नित्य पीबाक सलाह दैत छथिन तँ अंत मे आबि वैह सहधर्मिणी ततेक दूर भ' जाइत छथिन जे हुनक मृत्युओ विचलित नहि क' सौभाग्यसूचक लगैत छनि। ई निरपेक्षता वा तटस्थता नहि, बेइमानी अछि...लाचार विवशता अछि, बूढ़ बापक असहाय प्रार्थना अछि। कुलानंद मिश्रक अनुसार, ''एहि वृद्ध देवकृष्ण केँ अपन शेष जीवनक सामान्य सुविधा आ पत्नीक जेहन-तेहन गतिओक लेल कुपुत्र पुत्र आ कुलच्छनि पुतहुक करुण भाव सँ अभ्यर्थना करब आवश्यक लगैत छनि।... बेटा केँ प्रसन्न करबाक ई करुण आ अमोघ मंत्र एहि वर्गक प्रायः सभ बूढ़ पढ़ैत अछि जे वृद्धावस्थाक असहयावस्था मे आर्थिक रूप सँ बेटा पर अवलम्बित होइछ।'' हमरा जनैत ई एहि सँ आगुओक कथा कहैछ। बेटा सँ प्रतिफलक उमेद तँ वृद्धक लचारी अछिए, संगहि कर्त्ता-पुत्र सँ पितृ-ऋण चुकयबाक अभ्यर्थना सेहो रहैछ। ई महज च्यवनप्राशक जोगारक स्वार्थे टा नहि अछि, सद्‌गति प्राप्त करयबाक गोहार सेहो अछि, जाहि लेल ओ अपन पत्नीक संग छोड़ि बेटा-पुतहु दिस भ' जयबा लेल विवश अछि।

बंगट स्कूल जाय लागल अछि आ पिताक जिज्ञासा छनि जे ओ बदमाशी तँ नहि करैत अछि। (माने पढ़ैत अछि कि नहि?) दस वर्षक बादक चिंता छनि, ''दू मास मे बंगटक इम्तिहान हैतनि। करीब पचासो टाका फीस लगतनि। जौं कदाचित् पास क' गेलाह तँ पुस्तको मे पचास टाका लागिए जेतनि। हम ताही चिंता मे पड़ल छी।'' ई चिंता हरेक निम्न-मध्यवर्गीय पिताक चिंता छै, जे अपन इच्छित स्वप्न बेटा मे देखैत अछि। मुदा, दस वर्षक बादे! ''अहाँ लिखै छी जे बंगट बहु केँ ल'क' कलकत्ता गेलाह। से आइ-काल्हिक बेटा-पुतोहु जेहन नालायक होइ छैक से तँ जनले अछि। हम हुनका खातिर की-की ने कैल। कोन तरहेँ बी.ए. पास करौलियनि से हमहीं जानैत छी। तकर आव प्रतिफल दए रहल छथि।'' ई त्रासदी कोनो नव नहि छैक। हरेक बूढ़ जाइत-जाइत ई पीढ़ीक अंतर भोगैत अछि। 'क्लाइमेक्स' तँ दसे वर्ष बाद ओही बेटाक नामे पत्र मे अबैत छैक जाहि मे पिता लिखैत छथिन—अहाँक माय जे हुनका सँ (पुतहु सँ) झगड़ा करै छथिन से परम अनर्गल करै छथि। परंतु अहाँ केँ तँ बूढ़ीक स्वभाव जनले अछि। ओ भरि जन्म हमरा दुःखे दैत रहलीह। आ पुनश्च ओ लिखैत छथिन, ''यदि कोनो दिन बूढ़ी केँ किछु भ' जाइनि तँ अहाँ लोकनिक बदौलति सद्‌गति हैबे करतनि। जाहि दिन ई सौभाग्य होइनि ताहि दिन एक काठी हमरो दिस सँ ध' देबनि।'' विवश-व्यथाक ई 'हाइट' प्रो. झा केँ प्रेमचन्दक समीप ल' जाइत छनि।

प्रेमचन्द युग-युगान्तरक इतिहासक एक टा विषम विषय एवं मानवीय रूप समक्ष राखि देलनि 'कफन' मे। शोषणक एहन वीभत्स बानगी जाहि मे रैअत केँ मरय देल जाइत छैक किएक तँ ओकर अस्तित्व पैघक पैघत्व कायम रखबा लेल जरूरी छै। ताहू मे एक टा निफिकिर अलमस्तता छै किएक तँ ओ बुझैत अछि जे जीवित मे भनहि देह पर वस्त्र नहि भेटैक मुदा मुइला पर कफन भेटबे करतै... जाबे हिंदुत्व रहतै ताबे बेर-बेर भेटतै। तहिना 'पाँच पत्र'क विषय सेहो सार्वभौम अछि जे कोनो भाषा, देश वा कालक रचना नहि अपितु एहन रचना अछि जाहि मे संपूर्ण मानवता केँ शाब्दिक अभिव्यक्ति देल गेल छैक।

आब कने 'पाँच पत्र'क औपन्यासिक पसार पर *कन्यादान*क संदर्भ मे विचार कयल जाय। शाब्दिक अर्थ मे उप+न्यासक अभिप्राय निकट राखब अछि। *कन्यादान* सँठबाक वस्तु बनल, आ 'पाँच पत्र' एक न एक दिन मैथिली साहित्यक धरोहर बनि उपन्यासक अर्थ केँ सार्थक करत से बहुतोक विश्वास अछि।

कन्यादान मे सामाजिक परिवर्तनक उद्देश्य सँ विशेष बात राखल गेल छै। 'पाँच पत्र' मे तेहन कोनो विशेष बात नहि कहल गेल छै... आम बात राखल गेल छै, जकर व्यापक दायरा मे संपूर्ण जीवन आबि जाइत छै।

*कन्यादान*क लोकप्रियताक प्रसंगे राज मोहन झाक कहब छनि, ''सभ वर्गक लोकक हेतु समान रूप सँ रोचक होयबाक कारणहि *कन्यादान* बच्चा सँ ल'क' बूढ़ धरि, निरक्षर सँ ल' क' विद्वान धरि आ पुरना विचार बला सँ ल'क अंग्रेजी पढ़ल-लिखल लोक धरि पसरि सकल।'' *कन्यादान* मे मनोरंजनक आकर्षण, आ तकर जे लाभ भेटल होउक, 'पाँच पत्र'क तिक्ख यथार्थ तिक्त होइतहुँ मानसिक रूप सँ उद्वेलित करैत छै। अपन 'सैडटोन' सँ ओ ततबे व्यापक प्रभाव छोड़ैत अछि।

कन्यादाने जकाँ पाँच पत्रोक कथानक छोट अछि मुदा बोधक स्तर पर एकर ऊँचाइ आकास छूबैत अछि। कुलानंद मिश्रक अनुसार, ''एकर वस्तु कम होइतहुँ, प्रभावात्मकता मे महाकाव्यीय विस्तार, गरिमा आ शालीनता सँ मंडित अछि।''

'पाँच पत्र' मे *कन्यादान* जकाँ टिपिकल चरित्र-सभ तँ नहि अछि, मुदा जे चरित्र अछि से मिथिला-मैथिल सँ बाइली नहि... तेहन जे पाठक लगले ओकरा सँ 'आइडेंटीफाइ' क' लय... अपना केँ देवकृष्ण सँ अलग नहि बूझय। कोनो विशिष्ट व्यक्ति नहि, सामान्य जन, जे ओहू समय मे, एखनहुँ, आ आगूओ, ओही स्थिति मे रहबा लेल अभिशप्त अछि।

प्रो. झाक विषय मे रमानाथ बाबू एक ठाम लिखने छथि, ''हिनक रचना मे ठाम-ठाम अतिरंजन रहैत अछि, ठाम-ठाम उपहास रहैत अछि। ठाम-ठाम अश्लीलता सेहो चलि अबैत अछि। प्रो. झाक बहुतो रचना अतिरिक्त रूप सँ सजाओल लगैत अछि... जेना रचना कैलाक बाद ओहि पर चमत्कारी कौशल सँ चमकाओल गेल हो। किंतु 'पाँच पत्र' मे लेखकक कोनो कमजोरी नहि आयल अछि। नवीन शिल्प ओ शैली मे लिखल ई कथा हमरा जनतबे दोसर ढंगे लिखले नहि जा सकैत छल, एतेक प्रभावी ढंगे। जाहि तरहेँ पश्चिमी कथा-साहित्य मे चेखव कथा-शिल्प मे एक नव मोड़ अनलनि तहिना मैथिली मे 'पाँच पत्र' एक टा अभिनव प्रयोग अछि। कथा ततेक 'कम्पैक्ट' जे एक-एक शब्द जेना 'फ्रेम' मे कसल होइक। एक्कहु शब्द हटा देने वा बदलि देने रेफ्फू जकाँ लगतैक।''

'पाँच पत्र' कालजयी रचना अछि। घटना सभक कुशल संयोजन मात्र कोनो कथा केँ प्रभावशाली नहि बनबैछ आ ने ओकरा स्थायित्व प्रदान करैत अछि। कथा मे एहि तरहक विशिष्टता आनय मे कथाकारक संवेदनशीलता ओ मानवीय अनुभव केँ सम्प्रेष्य बनयबाक क्षमता महत्त्वपूर्ण होइछ। तखने लेखकक सामान्यीकरण पाठकक हृदय मे सोझे-सोझ उतरि जाइत छैक आ दुनूक 'ट्यूनिंग' एक भ' जाइत छै। एहन कालजयी रचनाक प्रासंगिकता कहियो समाप्त नहि होइछ, ओकरा बेर-बेर पढ़ला सँ नव-नव स्वाद भेटैछ।

किछु गोटेक मानब छनि जे लेखक जँ खाली *कन्यादान* लिखने रहितथि, तैयो ओ साहित्य मे अमर भ' जैतथि। यैह बात किछु गोटे *खट्टर ककाक तरंग*क विषय मे सेहो कहैत छथि। आ हमर मानब अछि जे मात्र 'पाँच पत्र' हिनका गुलेरीक स्थान दिअयबा लेल पर्याप्त छल। प्रो. झा जाहि विधा मे रचना कैलनि से 'सुपरलेटिभ' डिग्री वला। चारिम डिग्री जँ रहितै तँ निस्संदेह 'पाँच पत्र' केँ ओहि मे राखल जा सकैत छल।



संपर्क : **11-टीचर्स क्वार्टर, किला घाट,**
शुभंकर पुर, दरभंगा-846004
फोन : 9801016929

अभिजन मैथिल समाज आ संस्कारक अध्येता कथाकार

सुकान्त सोम

कथा शिल्पी प्रो. हरिमोहन झाक मैथिली मे प्रादुर्भाव झंझावात जकाँ भेल। शांत—जड़ कही तँ अतिश्योक्ति नहि—मैथिली जगत कैँ ओ अबितहि उनटि-पुनटि देलनि। तहिया मैथिली गद्य—कथा साहित्य—मैथिल प्रकृति जकाँ घोर अव्यवस्थित और शास्त्रीय संस्कृत भावना सँ दबल बहुत हद तक उबाऊ जकाँ रहै जकरा अपन समकालीन भारतीय साहित्य सँ दूर-दूर धरि कोनो लाग-लगाव नहि रहै। एहन गुमकी भरल वातावरण मे *कन्यादानक* प्रकाशन बिहाड़ि-सदृश छल जे मैथिली कथा साहित्यक सम्पूर्ण दिशे बदलि देलक। *कन्यादानक* अंतरंग तँ नहि, परंच बहिरंग निश्चित रूप सँ अगिला दू दशक धरि मैथिली कथा साहित्यक मोटामोटी मूलाधार बनल रहल। एतबहि नहि, प्रो. हरिमोहन झाक आनो कृति (*प्रणम्य देवता* किंवा *रंगशाला* किंवा आन किछु कृति)एक ढब विशेषक लेखकक हेंज तैयार कयलक। एहि हेंजक लेखन हुनक रचना शिल्पक बहिरंगक अनुकृति तँ छल, मुदा ओकर अंतरंग फोंक रहै आ कालक मारि सहबाक क्षमता जैँ कि ओकरा मे नहि रहै आ समाज मे ओकर कोनो भूमिका तय नहि हेबाक रहै तैँ ओ स्वत: समाप्त भ' गेल। हमरा लगै-ए एहि स्थितिक अनुभूति प्रो. हरिमोहन झा कैँ सेहो गंभीरता पूर्वक भेल हेतनि। *कन्यादानक* प्रकाशनक बाद 1950 ई. कैँ लागति हुनक लेखन मे फेर एक टा विशिष्ट तेवर जन्म लइए जे सोझा-सोझी *कन्यादान* सँ जुड़ैत अछि। आ तैँ, *चर्चरीक* कथा साहित्य अपन मूल मे *प्रणम्य देवता* किंवा *रंगशालाक* अपेक्षा बेसी दमगर, बेसी तिक्ख अछि आ एहि मे हुनक समाज सचेतनता बेसी फरीछ ओ अकृत्रिम एवं अकुंठ अछि।

प्रो. हरिमोहन झाक समस्त कथा कृति (आनो लेखन कैँ मानि सकैत छी) मिथिलाक सामाजिक समस्याक भित्ति पर ठाढ़ अछि। भने, ई समस्या अभिजन मैथिल समाज आ संस्कारेक किऐ ने होउक। ओना, समाज विकासक सिद्धान्तो तँ सैह कहैत अछि जे जागरण-नवजागरणक बसातक पहिल सिहकी ओही वर्ग-वर्ण कैँ लगैत छै, जे अभिजन किंवा प्रभु वर्ग होइत अछि, विचार कैँ आत्मसात करबाक शिक्षा सँ प्राप्त जाग्रत चेतना बोध एहि वर्गक जिम्मा सब सँ पैघ उपकरणक रूप मे उपलब्ध रहैत छै। हरिमोहन बाबूक कथा पात्र ओ कथा भूमि मिथिलाक सभ सँ उन्नत सामाजिक वर्ग अछि। ई वर्ग थिक एहि विशाल भूखंडक नेतृत्वकारी सामाजिक समूह—ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ। बाबू (ब्राह्मण) भैया (कायस्थ)क यैह समाज हरिमोहन बाबूक कथा पात्र अछि, कथा भूमि अछि। आ एही समाजक ढोंग-पाखंड किंवा हास-परिहास किंवा सुख-दुख एक्के ठाम कही तँ एहि समुदायक सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार हुनक लेखकक मूल आधार थिक। सनगर चासनी मे उब-डूब करैत हुनक कथाकृति मिथिलाक एही अभिजन ओ प्रभु वर्गक ढोंग ओ आडम्बर कैँ तार-तार करै-ए। से 'ग्रेजुएट पुतहु'क संग पारंपरिक आ घोर रूढ़िग्रस्त पंडित वर्गक व्यवहार हो किंवा 'तीर्थयात्रा'क कथा नायक संग ओकर कथित शिक्षित गोआँ-घरुआक। दुनू पात्र एकहि मानसिकताक डाँग सँ मारल अछि। आ प्रो. हरिमोहन झाक कथा साहित्य मे एहन डाँग खायबला आ मार'वलाक संख्या प्रचुर अछि।

चर्चरी मे प्रो. हरिमोहन झाक तेरह गोट कथा संकलित अछि। 'महारानीक रहस्य' आ 'अलंकार शिक्षा' सन कथा कैँ जैँ अपवाद मानि ली तँ कहल जा सकैत अछि, ई कथा सभ हुनक समाज सचेतन भाव-बोधक किछु बानगी थिक। एहि मे 'ग्रेजुएट पुतहु', 'मर्यादाक भंग', 'ग्राम सेविका', 'तिरहुताम' आदि कथाक संग-संग 'पाँच पत्र' सन कालजयी कथा सेहो अछि जकरा कतोक आलोचक हुनक सर्वोत्तम कथा माननलनि अछि। फेर, एही मे 'परिवर्तन', 'युगक धर्म', 'ब्रह्माक शाप', आ 'सातरंग देवी' सन कथा सेहो अछि। एही संग्रह मे 'नौ लाखक गप्प', 'महारानीक रहस्य' आ 'अलंकार शिक्षा' सन कथा सेहो अछि जे सोझे *रंगशाला* किंवा *प्रणम्य देवताक* बेसी निकट जाइए। 'पाँच पत्र' एक टा अनुपम कृति थिक। पाँच गोट पत्रक माध्यमे एक टा सामान्य व्यक्तिक पारंपरिक रागवृत्ति आ कालचक्रक दबाव सँ ओकर भटरंग होइत जयबाक प्रक्रिया सूक्ष्मता सँ सहज आ कोमल भावें व्यक्त कयल गेल-ए। कथाक अंत तँ अद्भुत करुणराग मे होइत अछि जे अंतत: रागवृत्ति कैँ छूबैत अछि। पचास वर्षक कालखंड मे लिखल पाँच गोट पत्रक माध्यमे कथाकार नवविवाहित नवयुवक सँ ल'क' नौकरीपेशा आ गृहस्थ पति-पिता-पति आ फेर मृत्युक अपेक्षा मे काशीवास करैत पिताक पारंपरिक मानस कैँ तह-दर-तह मे उद्घाटित करै-ए। आ सभ सँ पैघ बात जे एहने अवस्था मे, जहन ओ पुत्र सँ अतिरिक्त सदाशयताक कामना रखैत अछि आ ताहि लेल अपन पत्नी कैँ कुमाता धरिक संज्ञा दैत अछि। अपन विवाहिताक प्रति अनुरागक भाव तँ छन्हिए। ई कथा वस्तुत: संस्कृत शिक्षित (मिथिला मे संस्कृत जहिया जीविकाक माध्यम रहै) मध्यवर्गीय अभिजन मैथिल समाजक पारिवारिक सम्बन्ध गाथाक शोकगीत थिक आ पुरुष मानस कैँ बड़े कौशल सँ अभिव्यक्त करै-ए। ई पुरुष मानस नारीक प्रति घोर उपयोगितावादी दृष्टिकोण सँ परिचालित होइए। मुदा से होइतहुँ, निरन्तर जीवन-संघर्ष मे संग-संग चलैत रहला सँ उष्म हार्दिकता तँ जन्म लैत छै। आ तैँ देवकृष्ण अपन अंतिम पत्र मे पुत्र सँ अनुरोध करैत छथि, ''यदि कोनो दिन बूढ़ी कैँ किछु भ' जाइनि तँ अहाँ लोकनिक बदौलति सद्गति हेबे करतनि। जाहि दिन ई सौभाग्य होइनि ताहि दिन एक काठी हमरो दिस सँ ध' देबनि।'' ध्यान देबाक थिक जे ई अनुरोध पत्र समाप्त भेलाक बाद पुनश्च मे कयल गेल अछि। ई सभ किछु प्रतिकूल होइतहुँ रागवृत्तिक बाँचल रहबाक प्रमाण थिक जे बड़े करुण भावें व्यक्त भेलए।

मिथिला सामन्ती संस्कार सँ एखनो गंभीर रूप सँ पीड़ित अछि। ओना तँ सामन्त-श्रीमन्त लोकनिक संख्या कम छल। जमींदारी उन्मूलन अधिनियम लागू होयबाक बाद आरो कम होइत गेल। आब तँ सामन्त-श्रीमन्त लोकनिक संख्या आँगुर पर गनल जा सकैए। मुदा, कट्टर धार्मिक रूढ़ि सँ परिवेष्ठित मैथिल समाज एखनो

शताब्दीक अन्तिम वर्षहुँ मे, सामन्ती संस्कारक गादि सँ भरल भूखंडक अनुपम उदाहरण अछि। बाबू भैया लोकनिक, जे जन्मा बाबू-भैया छथि, संकेते पर एहिठाम सामाजिक कार्य व्यापार चलैत अछि। मोटा मोटी यैह वर्ग एहि भूखंडक भाग्य विधाता छथि। एहि भूखंडक एहि मैथिल समाज मे सामन्ती संस्कार एखनो एतेक बद्धमूल किऐ अछि, से फराक सँ चर्चाक विषय थिक। मुदा सामन्तवादक मूल अवधारणा लोको कें 'वस्तु' मानब सँ जुड़ल अछि आ तेँ एहि मैथिल समाज मे नारीक स्वतंत्र अस्तित्व एखनो बहसक विषय अछि। प्रो. हरिमोहन झाक साहित्य अपन सम्पूर्ण ऊर्जाक संग एही मानसिकता सँ संघर्ष करै-ए। हुनक ई संघर्ष *कन्यादान* सँ आरंभ भेल रहनि आ *चर्चरी* किंवा तकरा बादहुँ चलैत रहलनि। *चर्चरीक* अधिकांश कथा एही सामन्ती मानस सँ संघर्ष करै-ए। 'ग्रेजुएट पुतोहु'क कनिया होथि किंवा 'तीर्थ यात्रा'क फुच्चन माय किंवा ढढ़ियावाली किंवा जगदम्बा—सभक नियति लेख पुरुष मानसक दबाव तर पिसायब मात्र छनि। हरिमोहन बाबू अपन कथा सभक माध्यमे एही नियति लेख कें बदलबाक प्रयास मे लागल छथि। अपस्यौँत छथि। 'ग्रेजुएट पुतहु'क नवीनता पारंपरिक पंडित कका कें कनियो पसिन्न नहि छनि, तेँ मात्र एहि लेल जे ओ श्रीकान्तक संग हुनक अंग बनि जीवन कें भोग' चाहैत छथि। अपन संसार मे अपनो एक टा स्वतंत्र सत्ता बनब' चाहैत छथि। अपन निजताक प्रति कनियाक ई लालसा रूढ़िग्रस्त मैथिल पंडित समाज कें कोना अरघतै? एहि समाज लेल तेँ एहन 'स्त्री गरक घेघ' मानल जाइत अछि जकर 'टरि' गेने लोक आफियत सँ साँस लैत अछि। ई पंडित समाज कर्णपुरवाली सन सभ सँ बेसी सम्मत कें झनकाहि मानि लैत अछि आ विमला देवी सन आधुनिक विचार संपन्न ग्राम सेविका कें ग्राम शोधिकाक संज्ञा सँ अभिहित करैत अछि।



प्रो. हरिमोहन झाक एहि संग्रहक (*चर्चरीक*) कथा सभ एक टा विशेष उत्कर्ष बिन्दु दिस अनवरत बढ़ैत रहैत अछि। मैथिल वातावरण मे मैथिल मानसक खोंइचा छोड़बैत कथा स्वत: ओहि बिन्दु पर पहुँचि जाइत अछि। 'ग्रेजुएट पुतहु' मे कथा आरंभ कनियाक स्वागतक तैयारी सँ होइत अछि। कनिया अबैत छथि। हुनक स्वागत होइत अछि। कनियाक मादे गामक माइ-धीक प्रतिक्रिया कथाकार प्रस्तुत करैत छथि। तकरा बाद कथा कनियाक दिनचर्या आ पंडित जीक प्रतिक्रिया रेखांकित करै-ए। आ कनियाक साँप कटला सँ अकाल मृत्यु और पंडितजी ओ पंडिताइनक प्रतिक्रियाक संग कथाक अंत होइए—एक टा विडम्बनापूर्ण टिप्पणीक संग। ''ओ फुलकुम्मरि एहि घरक योग्य नहि छलि। मडुआक खेत मे कतहुँ केसर लगलैक अछि? भगवानो कें अनकच्छल लगलनि तेँ उठा लेलथिन।'' पुतहुक मृत्युक उपरान्त पंडित जीक टिप्पणी पर पंडिताइनक उक्त प्रतिक्रिया सम्पूर्ण कथा कें वर्गीय बोधक नवीन ऊर्जा सँ भरि दैत अछि। एहिना 'मर्यादाक भंग' मे कर्णपुरवालीक व्यवहार सँ क्षुब्ध पंडित जी कें चौधरी जीक प्रतिक्रिया विचारक नव धरातल पर पटकि दैत अछि। चौधरी जीक विचार हुनका विस्मय संसार मे ल' जयबा लेल पर्याप्त अछि। पंडितजीक परिवारक पाहुन चौधरी जी कें भोजन कराब' मे कर्णपुरवाली कनियाक अनौपचारिक व्यवहार कें जत' पंडितजी अपमानक पराकाष्ठा ओ नाक कटाब' वला मानैत छथि ओतहि चौधरीक प्रतिक्रिया छनि, ''हमरा तेँ एहि घर मे सभ सँ बेसी सम्मत वैह बूझि पड़ैत छथि। बूझि पड़ल जेना हमर अपने कन्या होथि। यैह चाही। आइ हमरो आँखि फूजि गेल। यदि प्रत्येक घर मे एहने तेजस्विनी बेटी-पुतोहु बहराथि तेँ फेर मिथिला कें शिथिला के कहि सकैत अछि।'' एहि प्रतिक्रिया पर पंडित जीक मुँह बायब आ अवाक् होयब स्वाभाविक। ई उक्ति सामन्ती पुरुष संस्कार पर समधानल चोट थिकै आ सेहो पुरुषे दिस सँ। सोच मे ई अग्रगामी दिशा 'परिवर्तन' कथा मे आरो बेसी फरीछ होइत अछि। कथानायक पंडित जीक अपन पत्नी कें मात्र एहि अपराध मे घर सँ निकलि जयबाक आदेश दैत छथि जे ओ आन कोनो स्त्रीगण संगे अपन टिकट कटाक' सिनेमा किए चलि गेलीह। पंडित जी कें अपन विचार कें पछुआयल होयबाक आभास तखन होइत छनि जखन हुनकहि मित्र पंडिताइन कें उदाहरण मानि अपन पत्नी कें असकरे सिनेमा नहि जयबाक कारणेँ हुथै छथि आ पंडित जीक

भाग्य पर ईर्ष्या करैत छथि। 'ग्राम सेविका', तँ आरो आगूक कथा थिक। कथा नायिका विमला देवी नारी जागरणक प्रतीक बनि गेल छथि। सरकारी नौकरीक क्रम मे ओ गाम अबैत छथि आ सामान्य आचार-व्यवहार ओ दैनन्दिन जीवन शैलीक पाठ पढ़बैत मैथिल ललना मे जागृति आनबाक प्रयास करैत छथि। नव बसात लेल आकुल नारी समाज हुनक अनुगमन करैए। विमला देवीक प्रयासेँ सामान्य जीवन संचालन ओ शिक्षा, स्वास्थ्य आ सामान्य सामाजिक सामंजस्य मे महिला समाजक भूमिका निर्दिष्ट होइए। मुदा, तिरहुता मे फँसल मैथिल समाज केँ सम्मत बनायब एतेक सहज नहि छै। से जँ रहितै तँ 'तीर्थयात्रा'क नायक केँ परदेस मे अपने गौआँ-घरुआ मात्र एहि लेल प्रताड़ित नहि करितथिन जे ओ स्त्री-पुरुष मे भेद बिनु कयने सहभोजक आयोजन किए कयलनि। मिथ्या आडम्बर मे फँसल कटिहारक ओ चौधरी जी छथि जिनकर अति आतिथ्य सँ 'तिरहुताम'क नायक मानसिक ओ शारीरिक रूपेँ अति प्रताड़ित अनुभव करैत छथि आ एहि अतिआतिथ्यक कारणेँ दुनू गोटाक सम्बन्ध सूत्र छहोछित्त भ' जाइत छनि। *चर्चरीक* (आ आनो संग्रह सभक) ई आ एहने कथा सभ प्रो. हरिमोहन झाक कथाकार केँ एक टा विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कयलकनि। जे व्यक्तित्व मिथिलाक माटि-पानि सँ गढ़ल अछि। मिथिलाक विशिष्ट संस्कृतिक परंपरा जकरा रंग-टीप देलकै आ नव शिक्षा पद्धति ओ ज्ञान-विज्ञानक नव क्षितिजक प्रति हुनक जिज्ञासा एवं भारतीय नव जागरणक समझदारी हुनक व्यक्तित्व केँ बेसी सँ बेसी निस्सन बनौलक। 'धीपल युगबोध' आ परंपराक गंभीर जानकारी हुनक कथा व्यक्तित्व केँ एक टा विशिष्ट ऊर्जा सँ भरि देलकनि आ तेँ बहिरंग फार्मूला सन लगितो हुनक कथा साहित्य अपन अंतरंग मे बड़ विविध ओ व्यापक अछि। अभिजन मैथिल समाज आ संस्कारक मादे एतेक गंभीर जानकारीवला हरिमोहन बाबू एहि शताब्दीक पहिल आ अंतिम कथाकार छथि—ई पूजी हुनक कथा मे सदैव संवेदनाक नव-नव द्वार खोलैत अछि।

प्रो. हरिमोहन झाक मिथिला अभिजन मैथिलक होइतहुँ अभिजात्य मिथिला नहि थिक आ तेँ हुनक साहित्य सेहो प्रभु वर्गक नहि, सामान्य मैथिलक थिक। हरिमोहन बाबूक मिथिला 'बाबू भैया'क ओहि वर्गक मिथिला थिक जे मजूरक सीमा धरि पहुँचल सामान्य लोकक संज्ञा सँ अभिहित होयबाक सभ टा शर्त तँ पूरा करैए, मुदा से कहाब' नहि चाहैत अछि। आ ताहि लेल रूढ़िक अंतिम छोर धरि पहुँचल मरणशील संस्कार केँ अपन 'सामाजिक वैशिष्ट्य आ उज्ज्वल सांस्कृतिक परंपराक सर्वोत्कृष्ट अंग' मानैए। तेँ पुतहुक शिक्षाक लालसा आ आर्थिक स्तर पर आत्मनिर्भर बनि पतिक वास्तविक जीवन संगिनी बनबाक आकांक्षा हो (ग्रेजुएट पुतहु) किंवा आँगन मे अनायास बजा लेल चौधरी जीक समक्ष बेटीक भूमिका मे आबि जयबाक तत्परता हो (मर्यादाक भंग) किंवा नव सामाजिक जीवन शैलीक अनुपम उपकरण सहभोजक आयोजन मे स्त्री समाजक सक्रिय भागीदारीक लालसा हो (तीर्थयात्रा) किंवा स्वयं टिकट कटा सिनेमा देखबाक जोखिम मोल लेबाक साहस हो (परिवर्तन) एहि समाज केँ अरघबे नहि करैत छै। बौद्धिक वाग्विलास सँ पसारल भ्रम जाल केँ तोड़'वला कोनो उपकरण आ अभिजन मैथिल समाजक सब सँ दलित वर्ग नारी समूहक कोनो टा प्रगतिकामी डेग एहि पंडित समाज केँ स्वीकारक बात तँ दूर सह्य सेहो नहि होइत छै। मिथ्या अभिमान आ आडम्बरक अथाह सागर मे उब-डूब करैत एहि समाजक नव चेतनशील प्राणीक विडम्बना आ त्रासदीक व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति *चर्चरीक* कथा सभ थिक। *चर्चरी* क आ बादक अनेक कथा सभ (जे किछु संकलित अछि आ किछु असंकलित) अभिजन मैथिल समाजक त्रासदी आ विडम्बना केँ रेखांकित करै-ए। एहि कथा सभ मे जीवनक सामान्य स्थिति केँ ओकर सहज रूप मे स्वीकार करबाक बाट केँ सामन्तवादी मानस डेगे-डेगे रोकै-ए। ई सामन्तवादी मानस—जकर खोल सेहो आब जर्जर भ' गेल छै—मानवीय विकासक समस्त मार्ग केँ बंद करबाक अभियान मे अपन संपूर्ण बौद्धिक ऊर्जाक क्षय क' रहल अछि। ई कथा सभ क्षयशील मानस सँ लबालब भरल समाजक अधोपतनक गाथा थिक जकरा पढ़ि दयाक भाव टा आबि सकै-ए, जकरा पर मात्र कानल जा सकै-ए, हँसल नहि। आ तेँ, ई कथा सभ *प्रणम्य देवता* किंवा *रंगशाला* सँ फराक अछि आ सोझ *कन्यादान*क परम्परा सँ जुड़ैत अछि जाहि मे हास्य मात्र उपकरण बनिक' आयल अछि आ अभिजन मैथिल समाजक आ संस्कारक त्रासद जीवनशैली एवं विडंबनापूर्ण जीवन सृष्टि जकर मूल कथ्य अछि, हरिमोहन बाबूक व्यंग्यवाण सँ विद्ध।

प्रो. हरिमोहन झा खाँटी मैथिल कथाकार छथि। अभिजन मैथिल समाज आ संस्कारक एहि सँ पैघ अध्येता हुनका सँ पहिने मैथिली मे नहि भेल। ओ एहू अर्थ मे मैथिल कथाकार छथि जे हुनक कथा संस्कृत साहित्य धारा किंवा पाश्चात्य कथा धारा सँ अपना केँ फराक रखैत मैथिल जगतक सृष्टि करै-ए—अपन खाँटी स्वरूप मे मिथिला, मैथिली आ मैथिल अछि। हुनक कथा वस्तु, कथा पात्र, कथा भूमि, कथा शिल्प सभ टा देशज मैथिलीक अछि। हुनक कथाक आम पात्र 'पंडित जी' होइत छथि। ई पंडित जी के थिकाह, पंडित जीक अन्वेषण आ विश्लेषण हरिमोहन बाबूक कथा चिन्ता केँ रेखांकित करबाक हैत। आ एहि प्रयास मे अनिवार्य रूप सँ कतहु पंडिताइनक तँ कतहु चौधरी जीक, कतहु कविराजक तँ कतहु ढढ़ियावाली किंवा जगदम्बाक, कतहु विमला देवीक तँ कतहु देवकृष्णक सहयोग अनिवार्य रूप सँ लेबहि पड़त, किऐ तँ यैह सभ आ एहने पात्र सभ मिलिक' हरिमोहन बाबूक कथा संसारक सृजन करैत अछि।

ई एक टा विशिष्ट संयोग छै जे जाहि काल खंड मे मैथिली साहित्य मे प्रो. हरिमोहन झाक प्रादुर्भाव भेलनि, सैह कालखंड मैथिल जागरणक सेहो रहै। मैथिल समाज मे मातृभाषाक प्रति नव ढंगे अनुराग जनमैबाक अभियान चलाओल जाइत रहै, नव चेतनाक प्रसार आ जागृतिक नव बसात बहबाक गीत गाओल जाइत रहै, सामाजिक कुरीती सँ मुक्तिक अभियान चलाओल जाइत रहै, धार्मिक रूढ़ि आ अंधविश्वासक विरोध मे लेख लिखल आ प्रकाशित कयल जाइत रहै। मोटामोटी नव चेतनाक सभ उपकरणक उपयोग विभिन्न स्तर पर विभिन्न श्रेणी सँ भ' रहल रहै। ई नव जागरणक प्रयास कतेक सफल भेल आ समाज ओकरा कोन सीमा धरि अपन दैनंदिन जीवन मे आत्मसात कयलक, से फराक सँ चर्चा आ व्याख्याक विषय थिकै। मुदा, एही दौर मे प्रो. हरिमोहन झा अपना स्तर पर, अपन संपूर्ण सामाजिक आ वैयक्तिक जीवनगत सीमा केँ स्वीकार करैत जे प्रयास आरंभ कयने छलाह तकरे परिणति थिक जे हुनक लेखकक एकमात्र चिन्ता मैथिल समाज रहलनि आ ओहू मे कखनो धर्म, कखनो अर्थ, कखनो काम आ कखनो ठामक नाम पर एहि भूखण्डक सभ सँ जीवन्त आबादी मैथिल नारीक मानसिक आ सामाजिक शोषण, आ एहि स्तर पर देखल जाय तँ मिथिला मे एखनो जागरणक बसात बहब तँ बाकिए छै। आ जा ई बेगरता रहतै प्रो. हरिमोहन झाक कथा साहित्य, हुनक पंडित जी, हुनक विमला देवी, हुनक कर्णपुर वाली आ पंडितजीक पुतोहु, पंडिताइन केँ बारंबार ताकल जायत।



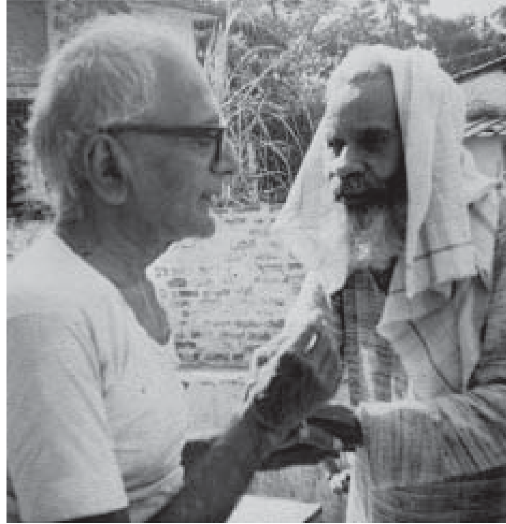
संपर्क : संपादक 'हिंदुस्तान'
सरैयागंज, मुजफ्फरपुर-842001 (बिहार)
मो. : 9431015053

करुणा सँ उपजल व्यंग्य

अरुण प्रकाश

क्लासिक साहित्यक परिभाषा कतेको विद्वान कयने छथि, मुदा ओ सभ गरिष्ठ अछि। जे वस्तु अथवा विचार गरिष्ठ होइत अछि ओकरा विश्वविद्यालयक विद्वान लोकनि लपकि लैत छथि। ओ विचार विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे बिला जाइत अछि। एहन विद्वानक विचार मे सर्वश्रेष्ठ एवं क्लासिक साहित्य वैह होइत अछि जे विद्यार्थी मजबूरी मे पढ़य तथा शेष जनता ओकरा बिसरि जाय।

क्लासिकक एक टा परिभाषा आरो छै जे रचना एहन विषय पर लिखल जाय जे प्राचीन, सड़ल-गलल व्यवस्था, परंपरा, अंधविश्वास, अंधआस्था केँ कनेको हानि नहि पहुँचाबय। वो फिजिकल अर्थात भौतिक नहि होअय। मेटाफिजिकल अर्थात पराभौतिक होअय। एक टा उदाहरण लिय'। पहिने वर्षाक देवता इन्द्र छलाह। वेदकालीन समाज मे हुनक खूब प्रतिष्ठा छलनि। ओहि काल मे मनुष्य केँ जकरा सँ बेसी भय लगैत छल ओकरा ओ प्रकृति देवता मानि लैत छल। वेदकालीन समाज जतय बसल छल ओत' (आजुक पाकिस्तान भारतक पंजाब-हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर) प्रदेश अति वृष्टिक स्थिति कहियो नहि रहल। अनावृष्टि, अकाल बेर-बेर, आक्रमण करैत छल। एहि लेल वर्षाक भारी महत्त्व। एहि वर्षाक महत्त्व भेल, तँ ओकर देवता इंद्रोक महत्त्व भेल। अनावृष्टि आ अकाल सँ तंग आबिक' हरियरी खोजैत ओ सब आबि गेलाह गंगाक नदी-घाटी मे। एत' चारू दिस हरियरी भेटलनि। अनावृष्टिक स्थान पर अतिवृष्टि सँ भेट भेलनि। स्वाभाविक रूपेँ इंद्रक महत्त्व कम भ' गेल। इंद्रक लोभ, लालच, ईर्ष्या, द्वेष, वासनाक कथा एहि उपनिषद्काल मे लिखल गेल। समय बितलाक संग-संग इंद्रक स्मरण तखने होबय लागल जखन वर्षाक अभाव मनुष्य केँ भेल। खेत मे जाक' नेना-भुटका गबैत छल, ''हालि-हालि बरसू इन्नर देवता।'' पंपिंग सेट आबि गेल तँ लोक 'इन्नर देवता' केँ एकदम्मे बिसरि गेल। इंद्र पहिनहुँ मेटाफिजिकल छलाह,



मुदा मनुष्यक आवश्यकतावश ओ संकट-निवारणक देवताक रूप मे लोक-स्मृति और उपासना-परंपरा मे छलाह। पंपिंग सेट हुनका ओतहु सँ अपदस्थ क' देलकनि। आ ओ अप्रासंगिक भ' गेलाह। ई सभ पुरान बात लिखबाक तात्पर्य ई अछि जे एहि समय मे केओ इन्द्र सन मेटाफिजिकल विषय पर रचना करय तँ ओकरा के पढ़त? ओ पाठ्यक्रमक अनुरूप क्लासिकल कहा सकैए, मुदा ओकरा असली क्लासिकल कहनाइ अनुचित हैत।

एक टा पुरान उपमा एखनो प्रचलित अछि, ''साहित्य समाजक दर्पण अछि।'' दर्पण मे की देखा पड़ैत अछि? खाली फोटो। ई अर्थक अनर्थ छै। साहित्य मे समाजक विचार, वैज्ञानिक सोच, तार्किकता, विकासक प्रयत्न आ बाधा सब किछु देखाइ देबाक चाही। समाजक ऊर्जा आ विडंबना सेहो आबाक चाही। समाजक मुँह टेढ़ अछि, तँ सेहो देखाइ पड़बाक चाही।

हरिमोहन बाबूक सब टा कृति मे साहित्यक पुरना उपमाक आधुनिक विस्तार देखल जा सकैत अछि। जिनका दर्पणक पुरान उपमा सँ संतोष भेटैत अछि, ओ निर्जीव फोटो देखिक' संतुष्ट भ' सकैत छथि। जिनका पुरान उपमाक आधुनिक विस्तार नीक लगैत अछि, हुनको लेल कलात्मक संतुष्टिक पूर्ण व्यवस्था अछि। कोनो कृति कालातीत तखने भ' सकैछ अछि जखन ओकरा मे अतीत, वर्तमान आ भविष्य—तीनूक तत्व विद्यमान रहै।

कतेक लेखक विगतवादी छथि। हुनका लेखेँ जे अतीतक गर्वक वस्तु (झार-झंखार समेत)अछि, सैह सत्य थिक। वर्तमान केँ ओ ओहि अतीतक परिप्रेक्ष्य मे देखैत छथि। जखन कि होयबाक चाही उनटा। जे समाज अतीत केँ वर्तमान संदर्भ मे नहि देखत, ओ अतीतक पिछड़ल अवस्था मे पहुँचि जायत। कतेक लेखक वर्तमान सँ बाहर झाँक'क प्रयत्न बेकार बुझैत छथि। हुनका लेल वर्तमान सभ दिन बुझौबल बनल रहत। किछु एहनो छथि (जेना उत्तर-आधुनिकतावादी) जे अतीत वर्तमान मटियाक' भविष्य मे रहैत छथि।

हरिमोहन बाबूक रचना मे अतीतक पुनरीक्षण वर्तमानक संदर्भ मे भेटत। वर्तमान तँ अछिये। संगहि-संग आगत अछि। आगत आ भविष्य मे अंतर करबाक चाही। भविष्य दूरस्थ होइत अछि तँ आगत-आसन्न निकट। दोसर तरहेँ कहल जायत तँ वर्तमान सँ एके डेग आगू। ई जे आगतवला तत्व छै, ई नहि केवल रचनाक काल विस्तार मे सहायक होइत अछि बल्कि रचना केँ सम्पूर्ण बनबैत अछि। रचना कलात्मक बनैत अछि। अखनो हुनक रचनाक लोकप्रियता आ सम्मान एकर प्रमाण थिक।

मिथिलाक टेढ़-बाँकुर मुख देखबाक अछि तँ हरिमोहन बाबू सँ बेसी नीक आ पैघ दर्पण नहि भेटत। हुनक साहित्य केँ हास्य तक सीमित कयनाइ पैघ अन्याय हैत। हरिमोहन बाबू गोनू झा नहि छलाह। ओ विदूषक नहि छलाह! हुनका लेल सटीक विशेषण हैबाक चाही—अप्रतिम व्यंग्यकार। व्यंग्यक लेल ओ कथा, लेख, नाटक आदि विधाक सहारा लेने छलाह। मुदा व्यंग्य सँ कखनो हुनक दृष्टि नहि हटलनि।

इतिहास मे सूक्ष्म आ वृहद् (माइक्रो आ मैक्रो) दुनू पक्ष होइत अछि। एम्हर सूक्ष्मता दिस

ध्यान देनाइ शुरू भेल अछि। समाजशास्त्र सेहो सूक्ष्मता पर जोर द' रहल अछि। ओ तँ साहित्यक स्रोत सामग्रीवला मान्यता सेहो द' देने अछि। किएक जे जीवनक सूक्ष्मताक साहित्य सँ बेसी नीक चित्रण कतहुँ नहि भेटैत अछि। एहि परिप्रेक्ष्य मे देखला सँ हरिमोहन बाबूक महत्ता अप्रतिम लागत।

मिथिलाक जनजीवनक ओहन खाँटी चित्रण यात्रीजीक अतिरिक्त किछु राजकमल चौधरीक कथा साहित्य मे भेटैत अछि। मुदा जे कलात्मक सहजता हरिमोहन बाबू मे अछि, ओ तँ दुर्लभे अछि। हुनक *प्रणम्य देवता* मे एक टा कथा छै, 'भदेशक नमूना'। एकर पाठालोचन समाजक संदर्भ मे कयल जाय। टेक्स्टक विश्लेषण लेल कनटेक्स्ट अनिवार्य होइत अछि। पाठ संदर्भक बिना अधूरे रहत। शीर्षक छै, 'भदेशक नमूना'। मिथिलाक संदर्भ मे भदेशक सामाजिक अर्थ भेल पंचकोसी सँ बाहरक समाज। एकर नायिका 'सरस्वती' पंचकोसीक छथि। पंचकोसी भेल मिथिलाक ब्राह्मण समाजक गर्व-शिखर। पंचकोसी सँ बाहरक ब्राह्मण 'दछिनाहा' भ' गेलाह। दछिनाहा सामाजिक-सांस्कृतिक-हीनताक अर्थ मे प्रयुक्त होइत अछि। श्रेष्ठक गर्व हीन देखिक' जागि उठैत अछि। सरस्वतीक विवाह मौजेलाल झा 'दछिनाहा' सँ भ' गेलनि। दछिनाहाक भाषा शुद्ध मैथिली नहि अछि। ओकरा मे मागधी सेहो छै, पुरान अवहट्टक झलक सेहो भेटत। ओना ओकर बज्जिका नाम देब'वला विद्वान सेहो छथि। भाषा तँ आदान-प्रदान, संचार तत्व एवं संवादक माध्यम छै। आदान-प्रदान भेला सँ भाषा मे परिवर्तन आबिये सकैत अछि। मुदा भाषाक श्रेष्ठता आ सांस्कृतिक श्रेष्ठताक दंभ जँ बनल रहत तँ मैथिली पंचकोसी तक सीमित मानि लेबाक चाही। हरिमोहन बाबू एहि दुराग्रहक क्षुद्रताक उपहास कयने छथि। सरस्वती दाइ अपन पति मौजेलाल झा केँ 'कदुआ'क स्थान पर 'साजमैनि' बजबाक अभ्यास करा रहल छथि। हुनक दृष्टि मे मौजेलाल झा 'निपट्ट गमार', 'वज्र बनिहार', 'प्रचंड पठियार', 'निठट्ठ महिषबार', उपाधि सँ विभूषित छथि। ओ अखनो अपन नैहरक श्रेष्ठता मे डूबल छथि। जखन कि नैहर तँ छुटि गेलनि। वास्तविकता की छियै? विवाह मौजेलाल झा सन 'असंस्कृत' सँ भेलनि, तखनि रहहु ओतहि पड़तनि। क्रोध मे आबिक' 'ब्रह्मचारिणी' बनि गेलीह। पति खाट पर ओर ओ कुश चटाइ पर। जखन सामाजिक आदान-प्रदान रुकत तँ नुकसान ककर होयत? जे समाज आदान-प्रदान रोकतै ओकरे होयतै। मिथिला कोनो शिवजीक त्रिशूल पर बसल काशी नगरी नहि अछि। सांस्कृतिक व्याप्ति केँ छोड़िक' कूपमड़ूकता मे डूबल रहनाइ कोन बुद्धिमता थिक? 'दछिनाहा' आइयो एक तरह सँ सामाजिक अछूते अछि। हरिमोहन बाबूक पहिने दछिनाहा सन मुद्दा पर साहित्य मे चर्चा तक विरल छल। एहन प्रश्न केँ उठाक' ओ समाज सँ पुछैत छथि। ई असत्य गौरव कतेक दिन रहत?

हुनक मानस प्रश्नाकुल छल। जेम्हर-जेम्हर दृष्टि गेलनि आ जत' कतहु विडम्बना भेटलनि ओकरा ओ नहि क्षमा कयलनि। मिथिला मे न्याय (प्राचीन संस्कृत मे एकर अर्थ तर्क छल) शास्त्रक पठन-पाठनक सुदीर्घ परम्परा छल। तर्क कोम्हर सँ उपजैत अछि? प्रश्नक भूमि सँ। हरिमोहन बाबू आधुनिक तर्कशास्त्री, शास्त्रार्थ निपुण छलाह। जँ अतिशयोक्ति नहि मानल जाय तँ कहू जे ओ 'पक्षधर मिश्र' जकाँ धुरंधर, अपराजेय तर्कशास्त्री छलाह। जीवन ओ साहित्यक तर्कशास्त्री। मुदा नैयायिक जकाँ निष्क्रिय नहि, सक्रिय। टेढ़-बाँकुड़ जत' देखलनि ओत' हथौड़ा चला देलनि।

'विकट पाहुन'क पाहुन विदा नइँ हैबाक बहाना की बनबैत छथि तँ बृहस्पति दिन दक्षिण मुँह जयबा सँ दिशाशूल होइत अछि। ज्योतिष शास्त्र नहि अछि। ओकरा अर्द्ध-शास्त्र कहनाइ सेहो अनुचित हैत। ओ अनुमान थिक। दिशाशूलक वैज्ञानिकता पर कतेक ज्योतिष शास्त्रियो केँ संदेह छनि। विकट पाहुन बनबाक कुसंस्कार दरिद्रताक उप-उत्पाद अछि। दरिद्रता जखन संस्कृति केँ ढाल बनबैत अछि, अंधविश्वासक खोल मे मुँह नुकबैत अछि। दछिनाहा समाज मे 'तिरहुतिया पाहुन' शब्द-युग्म उपहासक अर्थ मे प्रयुक्त होइत अछि। हरिमोहन बाबूक दृष्टि सँ ई ओझल नहि रहल।

हुनक दृष्टि व्यापक छल। ओ मिथिला केँ मिथिलाक दृष्टि सँ नहि देखैत छलाह। विश्व-दृष्टि सँ मिथिला केँ देखैत छलाह। पंचकोसी सँ बाहर बिहारक व्यापक मैथिल समाज सँ हुनक परिचय छल। आ ओ समाज आधुनिकताक आग्रही रहल अछि। एहि लेल हुनक रचना मे संकीर्णता, कूपमड़ूकता, असत्य गौरव, सांस्कृतिक दंभ पर प्रहार लक्षित होइत अछि।

'आदर्श कुटुम्ब'क ससुर जमाय केँ नव कपड़ा सियाबय लहेरियासराय जाइत अछि। कुप्रथा की छै से जमाय कपड़ा पसंद करथिन। कपड़ा तँ उपहारे भेल। उपहार तँ देब'वलाक इच्छानुसार हैबाक चाही। मुदा कुप्रथा छै जे जमाय उपहार पसंद करताह। जमाय ढीठ छल आ ससुर एक-एक पाइ खर्च क' दैत अछि। ओ बेचारा ससुर बीच बाजार मे बेइज्जत भ' जाइत अछि। अंत मे हरिमोहन बाबू एक टा श्लोक लिखैत छथि—

असाध्य: छुद्र जामाता असाध्य: श्वसुर: शठ:।
उभयोर्यदि संयोग: दर्शकानां पराभव:॥

हुनक रचनाक एक टा पैघ विशेषता थिक विश्वसनीयता। ई लोकप्रियताक रहस्यो थिक। पाठक जाहि वस्तु पर विश्वास नहि करैत अछि, ओकरा पसंदो नहि करैत अछि। ओ रचना लोकप्रिय सेहो नहि भ' सकैत अछि। 'ज्योतिषाचार्य' केँ पढ़ला सँ ई बात स्पष्ट भ' जाइत अछि। एहि मे 'ज्योतिषशास्त्र'क ततेक उदाहरण आ श्लोक भरल अछि जे एतबा उद्धरण देबा मे ज्योतिषियो मात भ' जायत। एतबे नहि, ''ज्योतिष शास्त्रक एक सँ एक कुतर्कक उद्घाटन एहि मे भेटैत अछि।''

मिथिलाक समाज मे धर्मशास्त्राचार्य, घटक, घरजमाय, ज्योतिष, पंडित सन चरित्र आम छै। कुरीति आ कूपमंडूकता केँ स्थायित्व प्रदान कर' मे हिनके सभक सब सँ पैघ हाथ छनि। शास्त्रक अजीर्ण सँ मिथिलाक समाज पीड़ित रहल अछि। शास्त्र-अजीर्णताक दर्शन 'धर्मशास्त्राचार्य' कथा मे अद्भुत रूप सँ भेल अछि। पूड़ी-जिलेबी शूद्र बनौने अछि कोना खायब। मनुस्मृतिक व्यवस्था। शूद्रक चूड़ाक विरोध ब्रह्मवैवर्त्त पुराण मे छै। महिषक दूध-दही ब्राह्मणक लेल ब्रह्मवैवर्तपुराणक अनुसार त्याज्य। तुरहिन केराक दाम कहैत काल कहलकै, ''पैसा मे अढ़ाइ गो।'' 'गो' कहला सँ वाग्दुष्ट भ' गेल। निषेधक भंग आ व्यवस्था ततेक छै जे धर्मशास्त्राचार्य सिमरिया घाट मे भूखले सुतैत छथि।

अपन आत्मकथा मे प्रसिद्ध कलाकार चार्ली चैप्लिन लिखने छथि जे श्रेष्ठ व्यंग्य गहींर करुणा सँ उपजैत अछि। हरिमोहन बाबूक प्रत्यक्ष व्यंग्यक निशाना ब्राह्मण विरुद्ध अछि। मुदा ई व्यंग्य गहींर करुणा सँ निकलल अछि। एहि कारणेँ हुनक रचनाक लोकप्रियता ब्राह्मण समाज मे सेहो अछि। परोक्ष सहानुभूति गैर ब्राह्मण केँ ओ दैत छथि। प्रगतिशीलता तार्किक विचारक परिप्रेक्ष्य मे ओ रखैत छथि।

जे अल्पकालिक रचना होइये ओकरा एकहि बेर परीक्षा देब' पड़ैत छैक, मुदा क्लासिक रचना केँ तँ प्रत्येक युग मे परीक्षा मे उत्तीर्ण होब' पड़ैत छै। हरिमोहन बाबूक रचना-संसार कतेक पीढ़ीक समक्ष परीक्षा मे उत्तीर्ण भेल अछि और भविष्य मे सेहो उत्तीर्ण हैत। जावत धरि मिथिला समाज मे विडम्बना रहत, हुनक सर्जित चरित्र आ कथा उदाहरण, उपमा आ सूक्तिक रूप मे सभ सँ पहिने स्मरण कयल जायत।



संपर्क : **IInd फ्लोर, एक्स.-42,**
ग्रीन पार्क मैन, नई दिल्ली-16
मो. : 9910753903

गप्प-साहित्यक आचार्य हरिमोहन बाबू

सुधांशु 'शेखर' चौधरी

हरिमोहन बाबू साहित्य-जगत मे जाहि वस्तु ल' क', जीवित छथि आ चिरकालक हेतु अमर रहताह से थिक हुनक गप्प-साहित्य। आइ सँ करीब 28-30 वर्ष पूर्व, प्राय: सन् 52-55क बीच मे, *वैदेही*क कथा-अंक मे जे मैथिलीक पत्र-पत्रिका-जगत मे प्राय: पहिल प्रयास छल, हम एहि सत्य-तथ्यक चर्च कयने रही, मुदा ओ चर्च मात्रे छल आ आइयो धरि एहि गप्प पर चर्चे मात्र होइत आयल अछि, कोनो विशद विश्लेषण प्रस्तुत नहि कयल जा सकल अछि। मैथिलीक आलोचक लोकनि बरमहल हुनका व्यंग्य-सम्राट अथवा उपन्यास-सम्राट घोषित करैत आयल छथि, आ बेसी तँ एहि बातक चर्वित-चर्वण करैत अयलाह अछि जे ओ प्रथम कोटिक व्यंग्यकार छथि, ओ लोक केँ हँसबैत हँसबैत सामाजिक रूढ़ि सँ ग्रस्त लोक पर तेहन प्रहार क' दैत छथि जे प्रहारक चोट बनि व्यक्ति अक्समात् कछमछा उठैत अछि, छटपटा उठैत अछि आ आक्रोशक आवेग मे चोटक शिकार व्यक्ति तामसे हुनका नास्तिक कहि बैसैत अछि। एहि तरहक सीमित समालोचना हुनक प्रतिभाक विशिष्ट मूल्यवत्ताक अंकन करबा मे नितांत असफल रहल अछि। तेँ हमर आग्रह अछि वर्तमान पीढ़ीक जाग्रत आ निष्ठावान समालोचक सँ, जे निश्चित रूप सँ पूर्वक आलोचकक अपेक्षा गंभीर अध्येता छथि, हरिमोहन बाबूक गप्प-साहित्यक सही मूल्यांकन करथि आ ई प्रकाश मे आनथि जे हरिमोहन बाबू गप्प-साहित्य मे कत' छथि, हुनक गप्प-साहित्य की थिक अथवा हुनक गप्प-साहित्य नितांत गप्पे टा थिक, निरुद्देश्ये टा थिक।

हरिमोहन बाबूक गप्प-साहित्यक चरमोत्कर्ष थिक *खट्टर ककाक तरंग* जाहि मे गप्पक शैली ओ प्रकारताक निदर्शन भेटत। मुदा हमरा पोथीक अंतरंग आवरण-पृष्ठ किछु भ्रम मे द' देलक अछि। हमरा पहिने हुनक 'तरंग'क प्रथम संस्करण परि लागल छल आ तखने हम उद्घोषित कयने रही जे ओ गप्प-साहित्य मे बेजोड़ छथि, ओ अपन उदाहरण अपने टा छथि, हुनक जोड़ नहि अछि। मुदा दोसर संस्करण मे जे अंतरंग आवरण



छापल गेल अछि ताहि मे व्यंग्य-सम्राट खट्टर ककाक विनोद-वार्ता उल्लिखित अछि। निश्चित रूप सँ एहि ठाम 'वार्ता' शब्दक प्रयोग रेडियोक वार्ता (आलेख)क अर्थ मे नहि कयल गेल अछि। लगैत अछि, एहिठाम वार्ताक अर्थ गप्पे थिक आ एहिठाम विनोद अर्थ मैथिलीक थिक जकर अभिप्राय होइत अछि हास्य वा हँसीठट्ठा। मुदा ठामहि तकर नीचाँ छपल अछि-'काव्य-शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्'। की एहि नीति-श्लोकक चरण मैथिलीक विनोदक अर्थ मे थिक? काव्य-शास्त्र सँ जे विनोद होइत अछि से व्यापक अर्थ थिक आ काव्य-शास्त्रक सीमा हास्ये रस धरि मे सीमित नहि अछि, काव्य-शास्त्र सँ विनोद उठयबा लेल वा आनंद पयबा लेल नवो रसक अपेक्षा होइत अछि। शास्त्रक हिसाबेँ करुणा केँ महिमान्वित कयल गेल अछि। करुण एव रस:। तखन एहि ठाम नीति-श्लोकक उद्धरण छपबाक कोन नीतिमत्ता? जे-से, अंतरंग आवरण सँ जे हम भ्रम मे पड़ल होइ, मुदा ताहि सँ हमर गप्प-साहित्यक कल्पना तकर स्थापना मे कोनो अंतर नहि पड़ल अछि। अपितु दोसर संस्करण मे जे परिशिष्ट छापल गेल अछि आ जे पहिल संस्करणक भूमिका मे छापल गेल छल सैह स्पष्ट क' दैत अछि जे गप्प-साहित्य मैथिलीक एक विधा थिक ओ ओहि विधाक जन्मदाता हरिमोहने बाबू थिकाह। खट्टर कका बजैत छथि, 'हमरा ओहि ठाम केओ काज सँ नहि अबैत अछि। हँ, गप्प करबाक हो तँ आबह।' अर्थात् ओ गप्पे टाक आचार्य छथि, दोसर कोनो काज सँ हुनका कोनो प्रयोजन नहि रहैत छनि।

गप्प करब एक कला थिक आ गप्प गढ़ब महान कला। निरुद्देश्य गप्प गढ़ब समय केँ नष्टे टा नहि करब थिक, अपितु अपन व्यक्तित्वक फूहड़पनीक प्रदर्शन थिक। निरुद्देश्य गप्प कयनिहार व्यक्ति केँ लोक मे अधलाह बूझल जाइत अछि आ कलात्मक गप्प मे शिल्पक प्रयोग कयल जाय तँ ओ वस्तु साहित्य भ' जाइत अछि। हरिमोहन बाबूक गप्प मे तर्क थिक, दर्शन थिक, आ संग लागल दुनू शास्त्र-शुष्कता केँ हुनक विनोद तेहन सरस क' दैत अछि जे ओ उच्चकोटिक साहित्य भ' जाइत अछि आ जे अनका सँ प्राय: कोनो भाषा मे नैयायिक वा दार्शनिक सँ संभव नहि भ' सकल अछि, तेँ हम कहैत छी, गप्प-साहित्यक जहिना ओ जन्मदाता थिकाह तहिना ओ एहि विधाक आविष्कारको थिकाह। जतेक हमरा देखल आ पढ़ल अछि, हम कहि सकैत छी जे भारतीय साहित्य मे ओ एकसर छथि। हमर अपन विश्वास अछि जे जा धरि खट्टर कका जीवित रहताह, हमरा लोकनिक हरिमोहन बाबू मरि नहि सकैत छथि।

हरिमोहन बाबू दार्शनिक होयबाक कारण व्यक्तिगत जीवन मे अलौकिक भ' उठैत छथि कौखन-कौखन, जेना आप्त सँ आप्त लोक केँ चिन्हबे नहि कयलहुँ आ परिचय दैत बाँहि मे समेटि लेलहुँ आ कौखन अनायासे ओहि व्यक्ति केँ खेहाड़िक' धयलहुँ आ आपकताक संग गप्प कर' लगलहुँ। जेना मुगले आजमक टिकट कटयबा लेल जहाज घाटक काउंटर पर सिनेमाक टिकट माङि बैसलहुँ। एहन-एहन अनेको घटना हुनक जीवन मे घटित भ' चुकल अछि। मुदा खट्टर ककाक स्वरूप मे जखन ओ गप्पक मुद्रा मे उतरि अबैत छथि तँ विनोदक गप्प मे हुनक तार्किकता अत्यंत सजग भ' उठैत छनि। बिना कार्य-कारणक संबंध धयने हुनक खट्टर कका गप्प केँ ने लाड़ैत छथि, ने आगाँ बढ़बैत छथि। हुनक यैह विशिष्टता हुनक हास्य-व्यंग्यक प्राण बनल अछि।

अंतरंग आवरण मे खट्टर कका केँ व्यंग्य सम्राट् कहल गेल अछि। हरिमोहन बाबूक व्यक्तिगत जीवन भलेँ दोसर प्रकारक चरित्र

रखैत होइनि, जखन ओ खट्टर कका बनिक' मानस-मंच पर उतरैत छथि तँ ओ स्वयं व्यंग्य-सम्राट भ' उठैत छथि। हुनक विनोदपूर्ण तार्किकता लोक केँ हँसबैत-हँसबैत लोट-पोट क' दैत अछि। एहि मे संदेह नहि जे विशेष चरित्र बला खट्टर कका ओ स्वयं होइत छथि आ हुनक गप्प सुननिहारक प्रतिनिधित्व कर'बला भातिज सेहो वैह होइत छथि। कारण जे गप्पक क्रम मे ओ केवल हूँ-हूँ नहि करैत अछि, ओहो तर्कक संग गप्प करैत अछि। ई प्रक्रिया बड़ विलक्षणता रखैत अछि जाहि मे गप्पक फुलझड़ी छुटैत रहैत अछि। आ गप्प साहित्यक निर्माण होइत रहैत अछि। एहि प्रकारक साहित्य निश्चित रूप सँ एक विधाक जन्म देलक अछि जे भारतक अन्य भाषा मे एखन धरि संभव नहि भेल अछि।

हरिमोहन बाबूक गप्प-साहित्य कोनो जाति, वर्ग वा समाज पर आक्षेप करबाक लक्ष्य सँ नहि निर्मित भेल अछि। ई जे बड़े जोर-शोर सँ आलोचक लोकनि द्वारा कहल जाइत अछि जे ओ व्यंग्य सँ रूढ़ि पर प्रहार कयने छथि, ताहू मे पूर्ण सत्यता नहि अछि। ओ अपन व्यंग्य द्वारा विनोद तँ उपस्थित करिते छथि, संगहि ई सोचबा लेल बाध्य करैत छथि जे एहि वैज्ञानिक युग मे 'इसरगत' बान्हि लेब तँ ताहि सँ वास्तव मे साँप सँ कतेक दूर धरि रक्षा भ' सकत? खट्टर कका यदि प्रश्न उठाबथि तँ तकर अर्थ ई कोना भ' जाइत अछि जे हरिमोहन बाबू नास्तिक छथि? हम व्यक्तिगत रूप सँ जनैत छी जे हिंदू धर्मक अंतर्गत मूर्ति-पूजा हुनका मान्य छनि। ओ बड़ उल्लास सँ अपना ओहि ठाम सरस्वती-पूजा करैत छथि। हमरा ओहिना स्मरण अछि जखन राजकमल जीबैत छलाह तँ हुनका आ हंसराजक संग हरिमोहन बाबूक ओहिठाम जाक' सरस्वती-पूजाक प्रसाद खा चुकल छी। तँ ओ नास्तिक तँ किन्हहुँ नहि छथि। हँ, तखन जे पंडितलोकनि हुनका पर नास्तिकताक आरोप लगबैत छथि तकर कारण अछि हुनक शिल्पगत कलाकारिता हुनका द्वारा ग्रहण क' पयबाक असामर्थ्य। हमरा स्मरण भ' आयल अछि, जखन हरिमोहन बाबू मैथिली साहित्य परिषदक बरहगौड़ियाक सभा-गोष्ठी मे *खट्टर ककाक तरंगक* 'रामायण' अंशक पारायण क' रहल छलाह, महावैयाकरण स्वर्गीय पंडित दीनबंधु झा बिच्चे मे सभा सँ पड़ा गेलाह जे हरिमोहन बाबू नास्तिक छथि, ओ मर्यादापुरुषोत्तम राम पर्यंत केँ गरियबैत छथि। हुनके किएक, हुनक माय-बाप पर्यंत केँ गरियबैत छथि। ओ नास्तिके नहि, महापतित छथि, कतबो हरिमोहन बाबू हुनका रोकलथिन जे कनेक अंतिम अंश सुनि लेल जाओ, महावैयाकरण पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़ल। ओ चल गेलाह। एहि ठाम खट्टर ककाक अंतिम उक्ति पर ध्यान देल जाओ। 'खट्टर कका रामनवमी व्रतक अवसर पर फलाहारक लेल ओरियाओल प्रसादक थार मे तुलसी दल रखैत बजलाह—हौ, तों एतबो नहि बुझैत छह? हम हुनक (रामक) सासुरक लोक छियनि ने! सासुरक हजामो गारि पढ़ैत छैक से प्रियगर लगैत छैक आर हम तँ ब्राह्मण छियनि, दोसर एना कहतैन्ह से ककर दर्प छैक? परंतु मिथिला-वासी तँ कहबे करतनि। मैथिलक मुँह बँद क' देथिन्ह से सामर्थ भगवानो मे नहि छनि'। ई थिक हरिमोहन बाबूक शिल्पक चमत्कार जे राम वा हुनक माता-पिता केँ गारि पढ़ल गेल से रामकथाक आधार ल' क' जे हुनकर चरित्र मे उभरैत छनि, मुदा से मिथिलावासी होयबाक कारण, किएक तँ मिथिला हुनक सासुर थिकनि।

हरिमोहन बाबूक गप्प-साहित्यक हमर स्थापनाक पुष्टि होइत अछि तखन, जखन हम ई देखैत छी जे हुनक 'गप्प' मैथिलीऐ धरि सीमित नहि अछि। हरिमोहन बाबूक रसिक केँ ई बूझल होइनि वा नहि जे हुनक खट्टर ककाक कतेको 'तरंग' गुजराती, मराठी, हिंदी आदि भाषा मे अनूदित भ' प्रकाशित भेल अछि। ततबे नहि, तरंगक अनुवाद दक्षिणो भारतीय भाषा मे प्रकाशित भ' चुकल अछि आ नव विधाक विशिष्टताक कारण बढ़ियाँ जकाँ प्रशंसित भेल अछि। हरिमोहन बाबूक (गप्पक) रसिक केँ ईहो बूझल होइनि अथवा नहि जे एम्हर आबिक' *खट्टर ककाक तरंगक* हिंदी अनुवाद आ सेहो सम्पूर्णताक संग भारतक प्रतिष्ठित प्रकाशक 'राजकमल प्रकाशन' *खट्टर काका* नाम सँ प्रकाशित क' चुकल अछि। एहि सँ की सिद्ध होइत अछि? खट्टर कका एक एहन विशिष्ट चरित्र अछि जकरा गप्प कह' आ कर' अबैत छैक आ से कि तँ एतेक मनोमोहक होइत छैक। जखन ओहि अनुवादक समीक्षा हिंदी पत्र 'प्रकर' मे कयल गेल तँ ताहि मे जे कहल गेल से आर हमर स्थापना केँ पुष्ट करैत अछि। ओहि मे कहल गेल जे मैथिली मे जे विशिष्ट साहित्य प्रस्तुत होइत रहल अछि से किएक हिंदी मे एतेक विलंब सँ आयल, आश्चर्य अछि। एकर माने की भेल? यैह जे मैथिली मे एतेक उत्कृष्ट रचना बहुत पहिने छपि चुकल अछि आ हिंदी औखन धरि ताहि अर्थ मे दरिद्र अछि। यैह समीक्षा हमर स्थापनाक प्रमाण बनि गेल अछि।

जेना हमरा लगैत अछि, अपना संबंध में, जे हम मूलतः नाटककार छी, गल्प लिखी वा कथा अथवा उपन्यास वा मनकथे किएक नहि लिखी—सभ मे हमर नाटककार कोनो-ने-कोनो रूप मे लक्षित भ' उठैत अछि, तहिना हरिमोहन बाबू मूलतः गप्पकार छथि। कारण जे हुनक कथे वा उपन्यास किएक न होअय, सभ मे गप्पे उजागर भ' उठल अछि। सभ रचना मे खट्टर कका भले स्वयं उपस्थित नहि भेल होथि मुदा हुनक गप्पक टोन मुखरित भए उठैत अछि। एकर प्रमाणक रूप मे हुनक 'टोटमा' आ 'अलंकार शिक्षा' सदृश रचना केँ उपस्थित कयल जा सकैत अछि। 'टोटमा' मे खट्टर कका सदेह भलेँ उपस्थित नहि छथि, मुदा बहुत दिन पर गामक स्टेशन पर उतर'वाला परदेशी केँ जे गौआँ भेंट होइत छैक सैह वस्तुतः खट्टर ककाक छद्म रूप थिक। गौएँ घोड़ी बिकयबा सँ गप्प-शप्पक आरंभ करैत अछि आ परदेशीक घरक दु:स्थिति केँ आकाश ठेका दैत अछि। आ से किएक तँ परदेसी केँ हिचकी छोड़यबाक टोटमा करैत अछि। जेँ कि टोटमा सँ हिचकी बंद भ' जाइत छैक तेँ उक्त कथाक नाम टोटमा देल गेल अछि आ अंत मे रहस्य खोलि दैत अछि तँ परदेसीक संग सभ पाठकक हँसीक फुहारा छूटि उठैत अछि। वास्तव मे ओ एहि तरहक गप्प केँ मनोवैज्ञानिक चिकित्साक विशेष आधार देलनि अछि। 'टोटमा' मे हास्य तँ थिके मुदा तकर मूल उपकरण गप्पे टा थिक। मनोविनोदक संग उक्त रचनाक सोद्देश्यता केँ उठाओल नहि जा सकैत अछि। ई सर्वविदित अछि, हिचकी केँ बंद करयबा लेल हिचकी उठ'बला लोकक मन केँ दोसर दिस बहकयबाक प्रथा अछि। एहू मे पूर्व कहल शिल्पक चमत्कार अछि।

एहिना अलंकार-शिक्षा मे गुरु-शिष्य जे कोठीक पाछू मे नुकायल रहैत छथि आ आङनक स्त्रीगण सभक झगड़ा-रगड़ाक झमेल मे गुरु एक-एक अलंकारक उदाहरण उपस्थित कयने जाइत छथि से ककर प्रतिनिधित्व क' रहल छथि? की ओ खट्टर ककाक गप्पक टोन केँ नहि उद्घाटित करैत छथि? आङनक स्त्रीगण-सभ जे अपने गप्प केँ ऊपर राख' चाहैत छथि से गप्पेक तरंगल रूप थिक।

हुनक 'विकट पाहुन' सदृश कथा-संग्रह रहनि वा *कन्यादान-द्विरागमन* सदृश कथित औपन्यासिक कृति, यदि ओहि सभ मे सँ कथोपकथन, जे वास्तव मे गप्पे टा थिक, छाँटि देल जाय तँ ओहि सभ मे रहिए की जाइत अछि? गप्पे-शप्पक प्रकार हुनक रचनाक प्राण छनि। तेँ हम कहैत छी जे गप्पकार ओ पहिने छथि तखन और किछु। तेँ हमर दावा अछि जे ओ गप्प-साहित्यक आचार्य छथि। गप्प-विधाक जन्म देनिहार छथि, गप्प-साहित्यक आविष्कारक छथि आ गप्प-साहित्यक चामत्कारिक गुण मे ओ एकसर छथि। एहि प्रसंग हुनका संबंध मे जे कहल जायत से थोड़ होयत।



खट्टर ककाक तरंग : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

हेतुकर झा

हरिमोहन झाक लेखनी सँ मैथिली साहित्यक प्रचुर सेवा भेल अछि। हिनक लिखल बहुतो लेख, कथा, कविता प्रकाशित अछि। एहि सब मे *खट्टर ककाक तरंग* सब सँ बेसी लोकप्रिय भेल। एकर अनुवाद हिंदी, बांग्ला, गुजराती, मराठी इत्यादि भाषा मे भेल।[1] एकर मान्यता क्षेत्रीय बुद्धिजीवी वर्ग मे पर्याप्त उथल-पुथल मचौलक।[2] हिनक आन कोनो रचनाक एहि तरहक प्रभाव समाज पर नहि पड़ल। एकर कारण लेखक स्वयं दैत छथि जे (खट्टर कका केँ) ''पाखंडक खंडन मे ततबा रस भेटैत छनि जे सामाजिक रूढ़ि वा अंधविश्वास पर प्रहार करबाक हेतु सदा सोंटा नेने तैयार रहै छथि...हँसी-हँसी मे तेहन मार्मिक बात कहि दैत छथिन, हास्यक पुट दैत तेहन सूक्ष्म नश्तर लगा दैत छथिन—जे श्रोता तिलमिला उठैत छथि...यैह छनि खट्टर ककाक विशेषता जाहि सँ ओ लोक केँ आकृष्ट करै छथि।''[3] एहि उद्धरण सँ स्पष्टत होइत अछि जे लेखकक ई कृति समाज केँ आकृष्ट कयलक एवं तकर मूल कारण ई जे एहि मे पाखंडक विरोध एक खास विधा सँ भेल जाहि मे हास्यक मिश्रण तर्कक 'सूक्ष्म नश्तर' सँ कयल गेल। हास्य स्वत: एक प्रिय रस थिक आ ओ तर्कक धरातल पर राखल गेल। मिथिला मे तर्कक प्रतिष्ठा बहुत प्राचीन अछि। युग-युग सँ पांडित्यक मान्यता लेल तर्क (शास्त्रार्थ) सब सँ पूज्य आधार रहल। लेखक एहि ऐतिहासिक तथ्य सँ अवगत छलाह, तेँ विरोध (पाखंडक)क हेतु कोनो आन मार्ग नहि लय एही मार्ग केँ अपनौलनि। हास्यक पुट सँ ओकरा रुचिगर कय देलथिन जाहि सँ ओ तर्क शुष्क नहि रहि गेल आओर विषय-वस्तु मात्र शास्त्रार्थक परिवेश मे संकुचित नहि रहि सामान्य पाठक तक पहुँचि गेल। आब प्रश्न उठैत अछि जे कोन तरहक पाठक मे ई प्रिय भेल आ किनका एहि सँ ठेस पहुँचलनि। दुनू संदर्भ मे पाठकक एक विशाल समुदाय धरि ई पहुँचल, जे एकर, वा कोनो कृतिक, एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अपनहुँ लेल एवं मैथिली साहित्यो लेल। एहि प्रश्नक विवेचनाक हेतु आवश्यक जे लेखकक दृष्टि मे 'पाखंड'क की तात्पर्य से बूझल जाय। तात्पर्य बुझबाक हेतु, प्रथम बारह तरंगक ('दही चूड़ा चीनी' सँ लय 'ब्रह्मानंद' धरि) अवलोकन आवश्यक। कारण, यैह बारह तरंग सब सँ पहिने लिखल गेल आ एहि सँ उपर्युक्त पाठकक दुनू वर्ग तैयार भेल। बादक तरंग एही प्रयोगक विस्तार थिक जे लेखक प्राय: अपन प्रयोगक सफलताक पश्चात उत्साह मे कयल आ ओहो बहुत-किछु सफल भेल।

मिथिला मे सांस्कृतिक ह्रास जाहि युग सँ आयल (ई प्राय: 15 हम शताब्दीक अंत सँ शुरू भेल जे अपना मे एक स्वतंत्र शोधक विषय थिक) तहिया सँ पाखंडक जोर बढ़ैत गेल। पाखंड समाजक विभिन्न धरातले केँ आक्रांत कयलक आ तकरे परिणामस्वरूप ई कहनाइ आब असंभव भ' गेल अछि जे समाज मे कतेक तरहक पाखंड कहिया ओ कोना प्रादुर्भूत भेल। पाखंडक एहि विशाल क्षेत्र सँ लेखक किछु खास तरहक पाखंड केँ चुनलनि, जकर विरोध ओ सब सँ आवश्यक बुझलनि एक खास समय ओ सामाजिक स्थितिक संदर्भ मे। समय छल स्वतंत्रता-प्राप्तिक बादक दशक आ समाज छल तत्कालीन मैथिल ब्राह्मण समाज (सम्पूर्ण मैथिल समाज नहि, कारण जे बारहो तरंगक आधार ब्राह्मण वर्ग सँ विशेष रूपेँ जुटल अछि)। 'पाखंड' विश्लेषण हेतु एतय बारहो तरंगक विवेचना प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

पहिल तरंग अछि 'दही चूड़ा चीनी'। एहि मे लेखक आक्षेप करैत छथि जे मैथिल जाति मे पौरुषक अभाव खास तरहक भोजनक आदति सँ अछि। दही-चूड़ा मिथिलाक प्रिय भोजन रहल अछि। वर्ण-रत्नाकर मे सेहो एकर प्रसंग भेटैत अछि।[4] उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध उर्दू मे लिखल गेल पोथी 'आईने तिरहतु'क लेखक चूड़ा-दही केँ मिथिलाक प्रिय भोजन माननलि।[5] इतिहासक एतेक काल धरि एक समाज सँ जुटल रहबाक कारणेँ एहि भोजन केँ सांस्कृतिक मूल्य भेटि गेल। सांस्कृतिक अवसर पर मिथिला मे ब्राह्मण-भोजन मे दही चूड़ाक विशेषता रहल अछि। तेँ लेखक मिथिलाक संस्कृति पर आक्षेप करबा लेल एहि भोजन केँ माध्यम मानल। एहि माध्यम सँ ओ सांस्कृतिक ह्रासक पक्ष पर आघात करैत छथि; प्रथम भोजन लेल मर्यादा केँ बिसरब, अर्थात् क्षुद्र बात लेल व्यवहार मे सब गौरव-गरिमा केँ ताख पर राखि देब। एक शब्द मे ई कबह जे क्षुद्रताक मैथिल-संस्कृति मे बोलबाला। दोसर अपना मे भेद-भाव गोल-लैसी, अपने मे मारि-काटि, इत्यादि।

एहि पक्ष केँ दोसर तरंग 'चाणक्यक जन्मभूमि' मे बहुत नीक जकाँ प्रचलित सामाजिक व्यवहार सँ स्पष्ट कयल गेल अछि। लेखकक शब्द मे महादेव त्रिलोचन छलाह। हमरो लोकनि त्रिलोचन छी। तेसर आँखि सँ केवल अनकर छिद्र टा सुझैत अछि। महादेव नीलकण्ठ रहथि। हमरो लोकनिक कण्ठ मे केहन विष रहैत अछि से दू गोटाक विवाह भेला पर प्रत्यक्ष देखि लैह। महादेवक छाती पर साँप लेटाइत रहैन्ह। हमरा लोकनि केँ स्वजातीयक अभ्युदय देखि छाती पर साँप लोटाय लगैत अछि। महादेव त्रिशूलधारी रहथि। हमरो लोकनिक केँ अपना भाइ-बंधुक उत्कर्ष देखि मस्तकशूल, ह्रदयशूल ओ उदरशूल ई तीनू प्रकारक शूल उत्पन्न भ' जाइत अछि। महादेव सभ सँ एकौर भ' क' रहैत छलाह। हमरो लोकनि फुट्ट भ'क' रहैत छी। महादेवक कपार मे अर्द्धचंद्र छलैन्ह। हमरो लोकनिक कपार मे जतय जाउ अर्द्धचंद्रे लिखल रहैत अछि। समाजक एहि दुर्गति केँ कहल गेल अछि महादेवक धारणाक माध्यम सँ। महादेवक पूजा मिथिला मे सब सँ बेसी लोकप्रिय अछि। सब वर्ग मे निरंतर प्रचलित रहल अछि। मिथिलाक संस्कृतिक एक ठोस प्रतीक रहल अछि। व्यंग्यक ई माध्यम इंगित करैत अछि जे एक दिस तँ एतेक पूजा होइत अछि आ दोसर दिस आपसी संबंध मे मनोवृत्ति केहन क्षुद्र भ' गेल अछि। अर्थात् पूजा-पाठ सब पाखंड भ' गेल अछि—पूजाक भावना शुद्ध रहैत तँ क्षुद्रता नहि अबैत। पूजा नहि, पूजाक ढोंग पसरल अछि। एहि तरहेँ लेखक पूजा-पाठक दुराग्रही धर्मावलंबी ब्राह्मण वर्ग पर प्रहार करैत छथि।

'माछक महत्त्व' मे सेहो एही ढोंग (वैष्णव

धर्मावलंबी) पर आक्षेप अछि। 'आयुर्वेद' एवं 'ज्योतिष' मे लेखक वैद्य ओ ज्योतिषी लोकनि पर आक्षेप करैत छथि जे ई लोकनि अपन क्षुद्र स्वार्थ-पूर्त्तिक हेतु शास्त्र केँ भजौनाइ छोड़ि आओर किछु नहि करैत छथि। वैज्ञानिक मनोवृत्तिक सर्वथा अभाव अछि। मुदा हिनका लोकनिक दाबा अपन-अपन नुस्खा पर सर्वोपरि छनि जाहि सँ मात्र समाजक शोषण कय रहल छथि। लेखक एक बेर फेर धर्मावलंबी ब्राह्मण वर्ग पर लेखनीक प्रहार करैत छथि। संगहि पश्चिमी सभ्यता मे भेल वैज्ञानिक मनोवृत्तिक उत्कर्ष दिस सेहो संकेत करैत छथि जे अंग्रेजी शिक्षाक श्रेष्ठता सिद्ध करैत अछि।

पश्चिमी सभ्यताक उच्चता 'ब्राह्मण भोजन' मे सेहो परिलक्षित अछि। एहि मे ब्राह्मण लोकनि समाजक अन्यवर्ग केँ धर्मशास्त्रक हथकंडा सँ कोना शोषित करैत रहलाह अछि तकर उल्लेख अछि। लेखक धर्मावलंबी ब्राह्मण-वर्ग पर एतेक प्रखर प्रहार एही तरंग मे कयलनि अछि। लेखकक मतेँ धर्मशास्त्रक दोहाइ पर खेपनिहार शास्त्रानुसारी ब्राह्मण लोकनि समाजक लेल बोझ परक आँटी मात्र छथि।

लेखक अपन मान्यता केँ सिद्ध करबाक लेल एहू सँ आगू बढ़ि जाइत छथि—'रामायण', 'महाभारत', 'देवताक चरित्र', 'दुर्गापाठ' ओ 'सत्यदेवक कथा' मे। रामायण ओ महाभारत धर्मग्रंथ अछि। राम युग-युग सँ धार्मिक संदर्भ मे मर्यादा-पुरुषोत्तम मानल जाइत रहलाह अछि। रामक चरित्र मे लेखक विरोधाभास देखबैत छथि जे कोनो नवीन व्याख्या नहि थिक। मुदा लेखक ओहि विरोधाभासक आधार पर ई इंगित करैत छथि जे जखन मर्यादा-पुरुषोत्तम केँ स्वयं किछु पाखंड रहनि तँ एहि धर्मक नाम पर खेपनिहार केँ कतेक पाखंड भ' सकैत अछि! एहिना महाभारतोक मान्यता प्राप्त धर्मनिष्ठ पात्र सबहक चरित्र मे दोष सिद्ध करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। 'देवताक चरित्र' मे सेहो एहने प्रयास भेल अछि। 'दुर्गापाठ' मे पाठ-परंपरा पर चोट कयल गेल अछि जे ई ह्रासोन्मुखी संस्कृतिक अभिशाप थिक। एतय पाठ-परंपरा सँ जुड़ल ब्राह्मण वर्ग पर एहि अभिशापक उत्तरदायित्व लेखक दैत छथि। पाठ-परंपरा धार्मिक कर्मकांडक एक भाग थिक। धार्मिक कर्म-कांड केँ लेखक समाज मे पसरल दरबारी मनोवृत्ति, जमींदारी मनोवृत्ति, क्षुद्रमनोवृत्ति इत्यादिक कारण मानैत छथि। 'सत्यदेवक कथा' मे लेखक एकरे स्पष्ट करैत छथि। अंत मे 'ब्रह्मानंद' मे पश्चिमी सभ्यताक उच्चता परिलक्षित करैत समाज मे धर्मांधता, मिथ्या गर्व, निष्क्रियता आदि पर प्रहार करैत छथि।

एहि तरहेँ मुख्य रूपेँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लेखक सांस्कृतिक ह्रास सँ क्षुब्ध छथि आ ओहि लेल धर्मक नाम पर पसरल पाखंड ओ ओहि नाम पर दोहाइ देनिहार पाखंडी ब्राह्मण वर्ग केँ उत्तरदायी मानैत छथि। संगहि हिनका पश्चिमी सभ्यताक मूल्यक अनुकरण मे प्रकाशक आशा देखाइत छनि। लेखकक आक्षेप शास्त्रीय दृष्टिकोण सँ कतेक गंभीर वा हल्लुक छनि से भिन्न बात भेल। महत्त्वक बात ई जे एहि तरंग सबहक पाठक तकबाक कहियो प्रयोजन नहि भेल। पाठक वर्ग अपनहि एकरा लोकि लेलनि जे एकर जनप्रियताक सूचक थिक आ तेँ ई कहि सकैत छी जे एक समय मे हरिमोहन झा मैथिली साहित्य मे एक टा आंदोलन रहलाह। मैथिली गद्य पढ़बाक दिस लोक मे प्रवृत्ति जगयबा मे एही आंदोलन केँ सब सँ बेसी श्रेय छैक। समाजशास्त्रक दृष्टि सँ लेखकक एहि कृतिक यैह पक्ष महत्त्वपूर्ण अछि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे कोन तरहक पाठक वर्ग हरिमोहन झाक 'तरंग' सँ प्रभावित भेल। जेना पहिने प्रस्तुत कयल गेल जे एहि 'तरंग' सबहक प्रहार छल मैथिल ब्राह्मणक धर्मावलंबी वर्ग पर आ उद्‌गार छल पश्चिमी सभ्यताक उत्कर्षक प्रति तेँ मैथिल ब्राह्मणक एहि धर्मावलंबी वर्गक प्रच्छन्न वा प्रत्यक्ष रूपेँ विरोधी जे वर्ग समाज मे छल ओकर आक्रोश स्वर 'तरंग'क ताल सँ मेल खेलक। सबहक अपील ओकर अपन अपील भ' गेल। एहि सँ एक टा आओर प्रश्न उठैत अछि जे मैथिल ब्राह्मण मे पोङा-पंथी वर्गक विरोधी कोन-कोन वर्ग छल आ ओकर आकार कतेक पैघ वा छोट छल? एहि प्रश्नक उत्तर तकबाक लेल मिथिलाक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य दिस अवलोकन करय पड़त।

मिथिलाक गौरव-गरिमा हिंदू धर्म एवं विद्याक एक केंद्र होयबा मे रहल अछि। धार्मिक कर्मकांडक प्रबल जोर एहिठाम रहल। संगहि प्राचीन संस्कृत विद्या मे नव्यन्याय सब सँ प्रतिष्ठित भेल। एहू शताब्दीक आरंभ मे कर्मकांडीक प्रभाव बहुत प्रबल छल आओर अंग्रेजी विद्याक प्रति कोनो आदर-भाव नहि छल। तेँ अंग्रेजी शिक्षा दिस प्रवृत्ति रखनिहार लोकनि केँ गतानुगतिकतावादी वर्ग सँ विरोध-भाव उत्पन्न भ' गेल। यैह विरोध सुनगैत-सुनगैत प्रगट भ' गेल 1930 क दशकक स्वदेशी-विलैती आंदोलन मे—ई आंदोलन भेल तत्कालीन महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक विदेश गमन[7] पर। दरभंगा राजपरिवार सदा सँ मिथिलाक धार्मिक कट्टरताक स्तंभ रहल। संस्कृत विद्या ओ कर्मकांडक प्रबल पोषकक रूप मे एहि परिवारक मर्यादा मिथिला मे सर्वमान्य छल। एहि पृष्ठभूमि मे महाराज कामेश्वर सिंह, जे पश्चिमी सभ्यता सँ बहुत प्रभावित छलाह, समुद्र-लंघन कयलनि। समुद्र-लंघन धार्मिक दृष्टि सँ महा अनुचित मानल जाइत छल। महाराजक ई डेग धर्मांध लोकनि पर सब सँ प्रबल प्रहार छल जकर फलस्वरूप हुनका विरोध मे बहुत आंदोलन भेल। महाराज जाति सँ बहिष्कृत भेलाह। गंभीर-सँ-गंभीर अपमानक शिकार भेलाह। मुदा ओ सब बरदास्त कयलनि। हुनका पक्ष मे ओहि समय मे बेसी लोक नहि भ' सकलथिन, कारण जे अंग्रेजी शिक्षा तखन कम्मे व्यक्ति केँ भेटल छलनि[8] आ तेँ पश्चिमीकरण वा आधुनिकीकरणक पक्ष लेनिहार अत्यंत छोट एवं कमजोर वर्ग छल। विलैंती पक्ष लेनिहार केँ समाज मे शास्त्रानुसारी वर्ग (स्वदेशी पक्ष) सँ बहुत तरहक अपमान 1930 एवं 1940 क दशक मे भेलनि। एकर फलस्वरूप स्वदेशी (orthodox पक्ष)आ विलैंती पक्षक विरोध बढ़िते गेल। एहि संग विलैंती पक्ष सबल होइत गेल। कारण, अंग्रेजी पढ़बा दिस झुकाव समाज मे बढ़ैत गेल।[9] मैथिल ब्राह्मण समाजक भीतर अंग्रेजी शिक्षा-प्रेमीक वर्ग स्वतंत्रता-प्राप्तिक वादक दशक अबैत-अबैत बहुत पैघ भ' गेल। हरिमोहन झाक परिवार एवं ओ अपनहुँ एहि वर्गक छलाह। संगहि पांडित्य (संस्कृत शिक्षा) क परंपरा सेहो छलनि। तेँ धर्माचरणक कमजोर स्थान सब सँ अवगत छलाह आ एहन समय मे 'तरंग' प्रवाहित कयलनि जखन ओकर पक्ष लेनिहारक संख्या पर्याप्त भ' गेल। ततबे नहि, मैथिल ब्राह्मण समाजक अतिरिक्त मिथिला मे अन्यो जातिक लोक सब एकर स्वागत कयने होयत। एकरो ऐतिहासिक कारण अछि। अन्य संदर्भ मे प्रस्तुत रचनाक लेखक विवेचना कयलनि अछि जे मिथिला मे मैथिल ब्राह्मण एवं कायस्थ केँ शेष जनसमुदाय (masses) सँ कोना विरोध रहल।[10] ब्राह्मण लोकनिक शोषण सँ निम्न जातीय वर्गक लोक सब विक्षुब्धे छल। हरिमोहन झाक 'तरंग' मे ओहू वर्गक किछु भावना प्रवाहित छल। तँ ओहू वर्गक लोक मे जकरा सब केँ लिखबा-पढ़बाक अवगति छलनि तनिका धरि 'तरंग' अवश्य पहुँचल होयत आ हुनका माध्यम सँ मौखिक रूपेँ अनपढ़ समुदाय तक हरिमोहन झाक नाम अवश्य गेल होयत।

एहि तरहेँ हरिमोहन झाक कृति (जकर विवेचना कयल गेल अछि) एक विशाल समुदायक भावना केँ प्रतिभासित कयलक। हिनक लोकप्रियता स्वाभाविके छनि, मुदा कालक्रम मे समाजक ओ संदर्भ बदलि गेल। आब ब्राह्मण लोकनि मे सेहो ओहेन धर्मांध

व्यक्तिक चर्चा असामयिक अछि। जातीय शोषणक आधार धर्मशास्त्रक नुस्खा नहि रहल। तेँ एखन (1980 क दशक) 'तरंग' सँ मोन मे ओतेक हिलकोर नहि उठत, किंतु जहिया उठल से पर्याप्त उठल।

प्रसंग-निर्देश

1. खट्टर ककाक तरंग, पृ. 214, भा. भ., पटना, 1967
2. वैह
3. वैह ''निवेदन''
4. वर्णरत्नाकर, प्रो. आनंद मिश्र एवं पंडित गोविंद झा, पृ. 139, मैथिली अकादमी, 1980
5. Aini Tirhut, पृ. 49
6. खट्टर ककाक तरंग, पृ. 8
7. स्व. कुमार गंगानंद सिंहक पत्र सबहक संकलन मे (जे अद्यावधि अप्रकाशित अछि) एहि आंदोलनक विशद वर्णन भेटैत अछि जे समाज कोना एहि सँ प्रभावित भेल। मैथिल ब्राह्मणक हेतु महाराज कामेश्वर सिंहक विदेश-गमन एक सामाजिक क्रांति आनि देलक। एकर संस्मरण ओ तत्कालीन उथल-पुथलक बहुत लिखित प्रमाण पं. दुर्गानाथ झा (ग्राम नवटोल, मधुबनी) सौजन्य सँ प्राप्त मेल।
8. 1917 मे योगानंद कुमर द्वारा तैयार कयल गेल मैथिल ब्राह्मण डाइरेक्टरी सँ पता चलैत अछि जे प्रवासी एवं मिथिला मे बसनिहार सब मिलाक' एम.ए. मात्र 6 व्यक्ति छलाह, बी.ए. मात्र 39 व्यक्ति, इंटरमीडिएट मात्र 41 व्यक्ति ओ मैट्रिकुलेट मात्र 192 व्यक्ति। 1917 सँ 1930 धरि एहि संख्या मे कोनो अत्यधिक वृद्धि भ' गेल होयत से नहि सोचि सकैत छी, कारण जे मिथिला मे अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक कोनो तेहेन प्रयास नहि भेल। ओहिनो 12-13 वर्षक अभ्यंतर केहनो infrastructure तैयार रहला सँ शिक्षा मे spectaculer वृद्धि बहुत कठिन अछि। मिथिलाक स्थिति ओहि समय मे जे छल ताहि सँ एतबे अंदाज क' सकैत छी जे किछु नगण्य वृद्धि अंग्रेजी शिक्षा लेनिहार मे भेल होयत।
9. ई बात एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे 1917क डाइरेक्टरीक अनुसार प्रवासी मैथिल छोड़ि मात्र 1 व्यक्ति मिथिलास्थ मैथिल ब्राह्मण सब मे एम.ए. छलाह। पटना कॉलेजक एडमिशन रजिस्टरक मोताबिक 1942 ई. मे 6 व्यक्ति एम.ए. मे छलाह। एकर अतिरिक्त पटना कालेजक एडमीशन रजिस्टर सँ ईहो आँकड़ा भेटल जे 1929 ई. मे प्रथम वर्ष सँ लय एम.ए.क फाइनल इयर धरि मैथिल ब्राह्मणक संख्या मात्र 14 छल जे 1932-33 मे 16 भेल आ 1936 ई. मे 21 भ' गेल। एकर अतिरिक्त आओर कोनो आँकड़ा उपलब्ध नहि अछि। मुदा एतबो सँ ई स्पष्ट होइछ जे अंग्रेजी शिक्षा लेनिहारक संख्या बढ़ैत गेल।
10. 'Elite,-Mass Contradiction is Mithila in historical perspection. Elite and Development Eds. Dr. Sachchidanand and Dr. A.K. Lal, Concept Publishing House, New Delhi, 1980. pp 187-205



मैथिलीक कबीर : हरिमोहन झा

नरेन्द्र

मैथिली केँ एक टा समर्थ आ सम्पन्न भाषाक रूप मे स्थापित आ लोकप्रिय बनयबा मे जतेक आ जेहन महत्त्वपूर्ण भूमिका विद्यापतिक अछि, ताहि सँ मिसियोभरि कम क'क' हरिमोहन झा केँ नइँ आँकल जा सकैत अछि। बल्कि हम तँ ई धरि कहबाक हिमाकत कर' चाहै छी जे हरिमोहन झाक भूमिका किछु मायने मे विद्यापति सँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि। किएक तँ विद्यापतिक साहित्य सँ लोकरुचिक परिष्कार नइँ होइत अछि। उनटे बहुतरास विकृतिऐ जन्म लैत अछि। ओ लोकक राजनीतिक आ वैज्ञानिक चेतना केँ विकसित नइँ करै छथि। बल्कि जनचेतना केँ आर बेसी भोथर बनबै छथि। किएक तँ विद्यापति दरबारी कवि छथि, मुदा हरिमोहन झा शुद्ध घरबारी कवि छथि। ओ विद्यापति जकाँ जनता सँ दूर भोग-विलासक जिनगी राजमहल मे नइँ गुदस्त करै छथि। ओ रहै छथि सामान्य लोक जकाँ सामान्य लोकक बीच।

ई बात सत्य अछि जे विद्यापति लोकभाषा केँ अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनौलनि। किएक तँ ओ बुझै छलाह जे *देसिल बयना सब जन मिट्ठा*। मुदा देसिल बयना मे जे किछु परोसि देल जाय से सब जन मिट्ठा भ' जायत—ई बात गला सँ उतर'वला नइँ अछि। किएक तँ ई नइँ हैत जे अहाँ ककरो जनभाषा मे गारि पाड़ि दियौ आ ओ बर्दाश्त क' लेत जे चलू अपन भाषा मे तँ कहलक। ई असल मे एक टा उच्चस्तरीय वितंडतावाद अछि जे शासक वर्गक विरुदावली किंवा सब तरहक कुकर्म केँ महिमामंडित करैत संस्कृतक बदला लोकभाषा मे प्रचारित-प्रसारित कयल जाय। किएक तँ सामान्य लोक जे अछि से संस्कृत तँ बुझैत नइँ अछि। ई आम लोकक दिमागक नसबंदी करबाक एक टा सुनियोजित आ कारगर औजार छल।

...तँ विद्यापति अपन कोमलकांत पदावलीक रचना देसिल बयना मे कयलनि। हमरा ई कहबा मे कोनो संकोच नइँ अछि जे ई कोमलकांत पदावली आर किछु नइँ वात्स्यायनक कामसूत्रक काव्यानुवाद भरि अछि। आ निर्लज्जताई जे ई सब टा देवी-देवता पर आरोपित कयल गेल अछि। हमरा होइए जे दुनिया मे एहन गौरव संस्कृत छोड़ि आर कोनो भाषा केँ हासिल नइँ हेतै जाहि मे देवी-देवताक अंग-प्रत्यंग केँ एहन फूहड़ आ अश्लील तरहेँ बेपर्दा कयल गेल हेतै। एतबे नहि कीर्तन भाव सँ संभोगक विभिन्न मुद्राक वर्णन कयल गेल हेतै। आ, ऊपर सँ थेथरइ ई जे एकरा अध्यात्मक जामा पहिराक' जस्टीफाइ सेहो करैत हो। हम पूछैत छी जे राजकमलक साहित्य पर अश्लीलताक फतबा जारी कयनिहार पंडित लोकनि केँ ओत' अध्यात्म तत्व किएक नइँ सूझैत छनि। अथवा अही कोटिक अन्य रचनाकार मे अध्यात्मक दर्शन किएक नइँ भेटै छनि। जँ देवी-देवताक बहन्ने दिमागी रंडीबाजी कयनाइ संस्कृति सम्मत अछि तँ एम.एफ. हुसैन मे ई सांस्कृतिक तत्व किएक नइँ भेटैत छनि।

जे-से, विद्यापति अपन यौनकुंठा आ यौन विकृति केँ साहित्यक उपजीव्य बनयबा मे अपन सम्पूर्ण प्रतिभा आ ऊर्जाक निष्ठापूर्वक उपयोग कयलनि अछि। सम्पूर्ण साहित्य मे लम्पट लोक सबक नङटइ आ व्यभिचारक परनाला बहायल गेल अछि। ओना किछु रचना भक्ति परक आ पुनरुत्थानवादी सेहो अछि। गोटेक सामाजिक समस्या केन्द्रित क'क' सेहो लिखल गेल अछि। मुदा, अइ तरहक लीक सँ हटल रचनाक संख्या ततेक कम अछि जे ओहो यौनोत्सव मे कत्तौ भुतियायल सन लगैत अछि। ओहुना विद्यापति जे गाम-गाम मे लोककंठ मे बसल छथि से अपन महेशवाणी आ नजारी केँ ल'क' *प्रथम बदरि फल पुनि नवरंग*क बदौलति नइँ।

हरिमोहन झाक लोकप्रियताक नुस्खा सर्वथा अलग अछि। ओ अपन रचना मे पतनशील सामंती संस्कृतिक जमिक' विरोध करैत छथि। ओ यथास्थितिक खिलाफ जोरदार मोर्चा लगबैत छथि। सामाजिक बदलाव लेल एक टा छटपटाहट हुनक रचनाक अन्त:स्रावी ग्रंथी मे प्रवाहित होइत रहैत अछि। सामाजिक विकास मे बाधक तत्व सबक ओ सूक्ष्म जाँच-पड़ताल करै छथि। हुनक साहित्य अन्हारक खिलाफ मशाल जरयबाक अभियान अछि। एत' आबिक' ओ शुद्ध रूपेँ बुद्धक रूप मे ठाढ़ लगैत छथि। साहित्य हुनका लेल नाम कमयबाक, धन अरजबाक आकि स्वान्त: सुखायक वस्तु नइँ अछि। ओ साहित्य केँ सोद्देश्य साधन बुझैत छथि आ सामाजिक बदलाव लेल एकरा बतौर हथियार इस्तेमाल करैत छथि। तेँ हुनकर भाषा मे एहन धार छनि। ओ समाज मे पसरल विकृति आ विद्रूपता पर, पाखंड आ आडंबर पर चोट करै छथि। तेँ हुनक एक-एक शब्द मे तीक्ष्ण व्यंग्यक बिसबिसी भेटैछ। हरिमोहन झा अपना समयक एसगर व्यंग्यकार छथि जे मिथिलाक जड़ समाज मे, मिथ्याडंबरक मुकाबला करबा लेल सत्य बजबाक खतरा मोल लेलनि।

आ तँ एकर खामियाजा सेहो भोग' पड़लनि। मैथिली साहित्य मे हुनक स्थान प्राय: औघट मे अछि। ई युगांतकारी-क्रांतिकारी साहित्यकार जँ आइ अन्य कोनो भाषा-साहित्य मे रहैत तँ लोक तरहथी पर रखैत। एहन विचारक, चिंतक आ दार्शनिक केँ लोक प्रात: स्मरणीय बनबैत। मुदा मैथिली लेखे धनसन। अइ ठाम हुनका ब्रह्मणाय नम: सँ बेसी नइँ बुझल गेल।

हरिमोहन झा जँ *प्रणम्य देवता, कन्यादान, चर्चरी* आदिक रचना नहियो करितथि तँ मात्र अपन एकहि टा रचना *खट्टर ककाक तरंग*क बदौलति कालजयी भ' सकैत छलाह। भ'यो गेल छथि। भाइ भीमनाथ जीक शब्द मे कही तँ, ''सुविधा-दुविधा दुनू सँ दूर रहथि। तकर बादो ओ जन-जनक बीच पुरस्कृतो छथि आ समादृतो। हुनक रचनाक जतेक अनुवाद भेल अछि, ततेक प्राय: कोनो आन रचनाकारक नइँ भेल हैत।''

हरिमोहन झा कतेको मामिला मे हिंदीक हरिशंकर परसाई आ श्रीलाल शुक्ल सँ सेहो आगाँक रचनाकार छथि। हिनका मे जते डाइमेंशन छनि, जेते डाइवर्सिटी छनि, जते फ्लैशेज छनि आ वस्तु पर जेहन सूक्ष्म पकड़ छनि से आन कोनो व्यंग्यकार मे दुर्लभ अछि। ई जँ अपन लेखन आइ हिंदी मे कयने रहितथि तँ निश्चित रूप सँ बहुतो व्यंग्यकार सँ पैघ मानल जयतथि।

मैथिली मे जीवकांत जी सर्वाधिक अध्ययनशील रचनाकार छथि। हुनका मे राजकमल चौधरी वला पढ़ाकूपन छनि। मुदा हरिमोहन झाक अध्ययन-मननक सोझाँ बाकी केओ पासंगो बराबर नइँ छथि। प्राचीन आ अर्वाचीन साहित्य-संस्कृति, वेद-पुराण, उपनिषद, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, आदिक जतेक हुनका गंभीर अध्ययन रहनि से जँ न भूतो न भविष्यति कहल जाय तँ मैथिलीक संदर्भ मे कम सँ कम अतिशयोक्ति नइँ हैत। दर्शनशास्त्रक तँ खैर अध्यापक आ विद्वान छलाहे। मुदा हमरा बेर-बेर ई लगैत अछि जे ओ मूल रूपेँ कवि रहथि। किएक तँ कविता हुनकर शब्द-शब्द पर कब्जा जमयने अछि। भाषा विज्ञानक हुनक समझदारी से अचंभित कर'वला अछि। एक-एक शब्द केँ जेना क' ओ बिकछाबै छथि से बहुत सधल भाषाशास्त्रीक काज अछि।

हरिमोहन झा चीजक भीतर सन्हिआयल विकृति आ विद्रुपता केँ तेहन आसानी आ नफासत सँ निकालि बाहर क' लैत छथि जे की कोनो चतुर सपेरा बीयर मे सँ साँप निकालत। तँ हिनक भाषा मे वक्रता। व्यंग्य हरिमोहन झाक लेखन शैलीक स्थायी भाव अछि। आ से स्वाभाविके अछि। जखन सम्पूर्ण जिनगी विडंबना, विद्रूपता आ विकृति किंवा हास्यास्पद परिणतिक पर्याय बनि गेल हो तँ एक टा संवेदनशील आ ईमानदार आ



जनपक्षीय लेखकक भाषा मे व्यंग्य स्वत: आबि जयतै। किछु गोटे केँ हरिमोहन झा मे हास्य तत्व भेटै छनि आ तँ हिनका हास्य सम्राट कहबाक बुद्धिमता देखबैत छथि। मुदा हम अइ बात पर जोर द' क' कह' चाहै छी जे हरिमोन झा हास्य सम्राट ने रहथि। हुनक लेखन फूहड़ मनोरंजन आकि हँसी लगयबा मात्र लेल नइँ छल। हुनक लेखन गंभीर व्यंग्य अछि। जिनका लोकनि केँ हुनक रचना पढ़िक' हँसी लगैत छनि तँ से की तँ बिनु किछु बुझनहि हँस' लगै छथि अथवा जानि-बूझि क' व्यंग्यक मारि सँ झेंप मेटयबा लेल हँस' लगै छथि। माने ई सब थेथ्थर किस्मक लोक छथि।

हरिमोहन झा तमाम किस्मक पाखंड आ मिथ्याडंबर पर समधानल चोट करैत छथि। पोंगापंथी आ आदर्शक नकली खोल मे घोंसिआयल समाज विरोधी किंवा संस्कृति विरोधी तत्व सब केँ चुनि-चुनि क' तेहन ठाम बिठुआ करैत छथि जे, 'न दबाये दबे, न दिखाये बने'। तखनो किनको ओइ मे हास्य भेटैत होनि तँ ई कानबाक गप्प!

हरिमोहन झाक *खट्टर ककाक तरंग*एक टा गंभीर व्यंग्य रचना अछि। ई एक टा कालजयी रचना सेहो अछि। मुदा अइ पर जतेक चर्चा चलबाक चाही छल से जानि नइँ किएक चलल नइँ। मैथिलीक आलोचक लोकनि (कृपया श्री मोहन भारद्वाज आ रमानंद रमण क्षमा करथु) जानि नइँ किएक एकर विवेचन आ विश्लेषण मे पर्याप्त उदासीनता देखयने छथि। प्राय: एहन पोथी पर लिखला सँ हुनका 'भठि' जयबाक खतरा छनि।

*खट्टर ककाक तरंग*क जे मुख्य आ टिपीकल मैथिल पात्रक सृजन कयल गेल अछि से प्राय: स्वयं हरिमोहन झा छथि। ओकरा माध्यमे ओ अपन विचार, आइडियोलॉजी आ जीवनदर्शन केँ रखबाक सफल प्रयोग कयलनि अछि। अइ हिसाबेँ जे नैरेटर अछि सैह असल मे उत्तम पुरुष अछि आ 'हम' जे पात्र अछि से अन्यपुरुष अछि। ई एक टा एहन नायाब शैली अछि जाहि मे बात केँ प्रभावशाली ढंग सँ अभिव्यक्त कयनाइ आसान भ' गेल छै। किएक तँ अइ विषय सब पर निबंध लिखला सँ ओ सपाट बयानीक खतरा मे फँसि सकैत छलाह। मुदा ई शैली एक टा संपूर्ण कथाक आभास आ असर सेहो पैदा करैत अछि तँ एक सीटिंग मे सब टा पढ़ि जयबाक ललक जगबैत अछि।

संपूर्ण पोथी मे जीवन आ समाजक साइते कोनो पक्ष पर कटाक्ष करबा सँ हरिमोहन झा परहेज कयलनि अछि। ओ एक टा सर्जन जकाँ धर्म सँ ल'क' धर्मशास्त्र धरि आ गीता सँ ल'क' पुराण धरिक अंग-प्रत्यंगक चीर-फाड़ करै छथि। आयुर्वेद, रामायण, दुर्गापाठ, सत्यदेवक पूजा-कथा, महाभारत, ज्योतिष, वेद, दर्शन, भूत-प्रेत, आ एत' धरि जे काव्यशास्त्रक नाम पर चल'वला ठगैतीक पर्दाफाश खूब सधल भाषा-शैली मे करै छथि। आ से ठाम-ठाम तकर शास्त्रीय प्रमाण सेहो दृष्टांत सहित दैत छथि। माने ओ कोनो मखौलिया जकाँ मनगढ़ंत ढंगें चीजक खिल्ली नइँ उड़बैत छथि अपितु वस्तुपरक ढंग सँ चीजक विवेचन प्रस्तुत करैत छथि। ओ देखैत छथि जे कोना वेद, उपनिषद, आयुर्वेद आ काव्यशास्त्र मे देहलीलाक परनाला बहायल गेल अछि। आ आश्चर्य ई अछि जे अइ तरहक साहित्य कक्षा मे छात्र लोकनि केँ पढ़ायल सेहो जाइत अछि। हरिमोहन झा उदाहरण द'द' क' बतबैत छथि जे जाहि प्राचीन संस्कृतिक हमरा लोकनि राति-दिन कीर्तन करैत छी से घृणित व्यभिचार, लम्पटई, नंगई, चोरी, अपहरण, हत्या आ बलात्कारक पतनशील दस्तावेज भरि अछि। खट्टर कका एकठाम कहै छथि जे हम अही दुआरे वेदक भाषा-टीका केँ घर मे नइँ राखै छी। बेटी-पुतोहु बिगड़ि क' दूरि भ' जायत। अइ तरहेँ हरिमोहन झा पिछड़ल समाज व्यवस्था आ अवैज्ञानिक चिंतन-प्रणाली, संगे कपोल कल्पित मिथकक खुलिक' आलोचना करैत छथि। ओ समाजक प्रत्येक वर्गक छद्म आ दोगला चरित्रक बखिया उधेड़ै छथि। एहन ठाम ओ किछु-किछु कबीर जकाँ भूमिका मे दृष्टिगोचर होइत छथि। मुदा ओ कबीर जकाँ उलटबाँसी नइँ करैत छथि।

हरिमोहन झा भूमंडलीकरणक खतरा केँ भाँपि रहल रहथि। बाजारवादाक साम्राज्यवादी मंशा केँ ओ गमि चुकलि रहथि। देशक चप्पा-चप्पा मे पसरैत उपभोक्तावादी संस्कृतिक चिंता हुनकर खट्टर ककाक 'टटका गप्प' शीर्षक रचना मे देखल जा सकैत अछि। अइ मे आधुनिकताक नाम पर पतनशील अधकचरा संस्कृति पर समाधानल चोट कयलनि अछि।



**संपर्क : पुनर्नवा, दिग्घी पश्चिम
मिश्र टोला, दरभंगा
मोबाइल : 9835106782**

मिथिलाक दिवाकर

गोविन्द झा

वास्तव मे आचार्य हरिमोहन झा (आगाँ आ.झा) मिथिलाक दिवाकर छलाह। उपहास नहि कयल जाय; हम एहि दिवाकर पर माटिक दिबाड़ी लय प्रकाश देबाक लौल कय रहल छी। कयल की जाय। आ.झाक शतक पर्व मे कोनहुना कर्तव्य पालन तँ करबहिक होयत।

आ.झा पर प्रचुर प्रकाश देल जाय चुकल अछि। पर्याप्त गुणगान कयल जाय चुकल अछि। चर्वित-चर्वण हमरा कहिओ नहि सोहायल। तेँ हम उचित कि अनुचित किछु नव प्रकाश, किछु नव नजरि देबाक प्रयास करब।

काल आ देशक प्रभाव सँ केओ बाँचि नहि सकैत अछि। आनक कोन कथा, जखन आकाशहुक दिवाकर माघ (काल) मे आ ध्रुवीय क्षेत्र (देश)मे ठिठुरि जाइत छथि तखन मिथिलाक दिवाकर ओहि प्रभाव सँ कोना बँचताह। पहिने कालक प्रभाव देखल जाय।

आ. झाक जीवन-काल तँ 1908-1984 थिक परन्तु हुनक मानस-संरचनाक काल 1850-1930 मानल जाय सकैत अछि— किछु देखल आ भोगल; किछु सुनल गुनल। ई अवधि आन-आन प्रदेश मे जागरण-काल छल; मुदा मिथिला मे घोर निशीथ-काल। जँ हम मिथिलाक इतिहास लिखितहुँ तँ एकरा कलंक-कालक संज्ञा दितिऐक। आ.झाक अधिकतर रचना मानू एही कालक कलंक सभक प्रतिक्रिया मे जन्म लेलक अछि। एहि सभ मे अधिक हृदयद्रावक अछि मान्यता प्राप्त क्रूरता। मन पाड़ू 'बाबाक संस्कार'। आ.झाक मधुवर्षी लेखनी एकरहु मधु सँ तेना बोरि देने अछि जे तत्काल अहाँक आँखि मे नोर नहि, ठोर पर मुसकी आबि गेल होयत, परन्तु पछाति आँखि नहि तँ हृदय अवस्से नोरायल होयत। 'ढाला झा' तत्काल हँसओने होयताह, पाछाँ जखन हुनक सिनुराहुलि, पतिक अछैतहि विधवा भेलि एक हेँज माटिक पुतरी लोकनि ध्यान मे अओतीह तखन...।

आलोच्य कालक किछुए कलंक आ.झाक कलम पर स्थान पाबि सकल। दुर्बल वर्गक यातना, शोषण, भीषण दरिद्रता, स्वतंत्रता आन्दोलन इत्यादि किएक नहि स्थान पओलक से आगाँ कहब।

एहि कालक एक विशेषता छल शक्तिपूजा, अर्थात् टुटपुजिया स्थानीय जमीनदार सँ ल' ब्रिटिश सम्राट धरिक प्रति अटूट भक्तिभावना।

एहि भक्तिभावनाक प्रेरक छल पहिल स्वहीनत्व भावना आ दोसर बकांड प्रत्याशा अर्थात् किछु-ने-किछु लाभक सपना। एहि आराध्य आ आराधक लोकनिक एक टा समरस वर्ग बनि गेल छल। मोटा-मोटी एकरा उच्च वर्ग कहि सकैत छी, यद्यपि एहि मे अधिक संख्या हीने कोटिक लोकक अछि। ई वर्ग मानू आत्ममुग्ध आ आत्मतृप्त छल। ई वर्ग आन वर्गक लोक केँ जन-बोनिहार, असारी-पसारी मात्र बूझैत छल। एहि आराध्य आ आराधक लोकनिक तुलना आजुक राजसी पार्टीक होस्ट आ गेस्ट सँ क' सकैत छी आ आन वर्गक लोकक तुलना बेअरा सभ सँ। गेस्ट लोकनिक विनोद आ प्रेमालाप मे बेअराक चर्चा नहि भ' सकैत अछि (उपहास मे चर्चा होइक से भिन्न बात।) आ. झाक पूज्य पिता पं.जनार्दन झा जनसीदन आ आ.झा अपनहु गेस्ट कोटि मे छलाह। प्रायः आ.झा. अपन वर्गक मर्यादाक पालन करैत आन वर्गक (खोलिक' कही तँ शूद्र वर्गक) लोक केँ अपन रचना मे कदाचिते कतहु टपए देलनि अछि। ई थिक ओहि कुख्यात वर्गभेदी काल रूपी राहुक दुर्दम्य प्रभाव जे मिथिलाक दिवाकरक आधा दृष्टिपटल केँ गरसि लेलक।

ई उच्चवर्ग आलोच्य कालीन मिथिलाक मरुभूमि मे मानू एक मरुद्यान छल। विद्या आ वैभवक मणिकांचन सँ बनल ई मन्दिर मिथिलेक नहि, समस्त भारतभूमिक गौरव बढ़ाए रहल छल। आ. झा एही मणिकांचन मन्दिरक एक भव्य मूर्ति रहथि जकर कुशल शिल्पी कहि सकैत छिअनि पूज्यपाद पंडित जनार्दन झा जनसीदन केँ। बाद मे एहि मूर्ति पर पछिमा कलाकार लोकनि बहुत किछु मीनाकारी कयलनि से भिन्न बात। एहि मन्दिरक मूर्ति सभक ठोर पर सदा काव्य, शास्त्र आ विनोदक मधु झहरैत रहैत छल। बहुत संभव जे आ.झाक मधुवर्षी प्रतिभाक मधुस्रोत यैह मन्दिर रहल होयत। *सदा आनन्द रहे एहि द्वारे।*

एहि मरुद्यानवासी लोकनिक वर्जनसूची मे प्रथम छल—एहन कोनो बात नहि बाजी जे आराध्यक हेतु अहितकर-आरोचक हो, जेना किसान-आन्दोलन, स्वतंत्रता-आन्दोलन, हरिजन-उद्धार इत्यादि। मिथिलाक सर्वोच्च आराध्य पुरुष मैथिल महासभाक मंच सँ टेन कमांडमेंट जकाँ जे सात गोट कमान द' गेलाह से देखल जाय :

सद्राजभक्तिं[1]रिति सूत्रमिह प्रधानं
पश्चात् सदाचरणपालनं[2]मंत्र सूत्रम्।
विद्योन्नतिः[3] परमिहाभिहितं तृतीयं
तुर्यं परस्पर विरोध[4]मेति प्रमोकः॥1॥
तत्पञ्चमं कथितमुद्वहनादि रीतिः
सामाजिकाखिल कुरीति[5]निराकृतिश्च।
षष्ठं पुनः कृषिवणिक्कृति[6]तत्परत्वं
तत् सप्तम् त्वनुचितव्यय[7]वारकत्वम्॥2॥
एतानि सप्त मुवि सप्तम एडवर्ड
संरक्षितैः सुकृतिमिमिथिलाधिनाथैः।
व्याख्यापितानि कृतसम्मतिकानि सन्तु
*सर्वत्र मैथिल महीसुर निर्गतानि॥3॥**

आला कमानक एहि प्रकारक आदेशक पूरा-पूरा पालन महापण्डित जनसीदन कयने होयताह; आ. झा नहि क' पओलनि। कारण, आ.झाक एक आँखि आँजल मातापिता तँ दोसर आँखि अँजलनि पाश्चात्य मनीषी लोकनि। एहि दुनू आँजनक प्रभावेँ आ.झा एक एहन समाजक सपना देखैत रहलाह जे प्राच्य आ पाश्चात्य दुनू विचारधाराक सभ दुर्गुर्ण सँ मुक्त आ सभ सद्गुण सँ युक्त हो।

आ.झा एक व्यक्ति नहि, एक टाइप, एक प्रतीक छलाह। अपन समान विचार रखनिहार एक विशाल वर्गक, विशेषतः समकालीन शिक्षित युवावर्गक प्रतिनिधि आ प्रवक्ता छलाह। तेँ एत' जाहि संकुचित, वर्ग विशेषे आ क्षेत्र विशेषे

---

* सातो सूत्र केँ श्लोकबद्ध कयलनि पं. सुरेश झा, जे मैथिल पद्यावली नामक एक छोट सन पोथी मे समाविष्ट अछि।

धरि सीमित दृष्टि आ. झाक देखाओल अछि से हुनके टा नहि, तत्कालीन समस्त मैथिल समाजक बूझल जाय। आ. झा. केँ वाणीक वरदान छलनि आन मूक समर्थक-अनुमोदक छल। तेँ आ. झाक हास्यक रसे नहि, विचारक रसायन सेहो युवावर्ग खूब पीलक। आ जेँ मैथिलीक आलोचको लोकनिक अंतर्दृष्टि ओहने संकुचित, सीमाबद्ध, वर्गबद्ध छल तेँ ओहो लोकिन बहुत दिन धरि हुनके रस-रसायन चटैत हुनके जकाँ सीमाबद्ध रहलाह। आ तहिं आ. झाक सीमाबद्धताक आलोचना दबलो कंठें नहि कयलनि।

विनोदप्रियता आ विनोदचातुरी आ. झाक प्रकृतिए नहि, व्यसन भ' गेल छल। से हिनक सभ प्रकारक रचना मे (दर्शनशास्त्रक निबन्धहु मे) गह-गह घोंसिआयल अछि। तँ की ई व्यसन हिनका गोनू झा, बिरबल, जी.पी.श्रीवास्तव आ परशुरामक कोटि मे आनि देलक? कथमपि नहि। हुनका लोकनिक हास्य स्थायी भाव (मुख्य लक्ष्य) छल तँ आ. झाक हास्य संचारी भाव जे मुख्य धाराक बीच-बीच मे हुलकी दैत साइड लाइट बनैत अछि।

बड़ प्रसिद्ध श्लोक अछि 'काव्य-शास्त्र विनोदेन'। ई जतेक चरितार्थ आ. झा मे होइत अछि ततेक आन किनकहु मे नहि। हिनका काव्य, शास्त्र आ विनोद तीनू मे समान रुचि छलनि। विनोद लक्ष्य नहि, अभिव्यक्तिक रुचिर मसाला मात्र छलनि जकर प्रयोग मुख्यत: काव्य मे कयलनि आ किछु-किछु शास्त्रहु मे। साधारण पाठक हिनक हास्य-विनोद सँ गदगद भ' एकरहि लक्ष्य बूझि लेलक आ हिनक कथा-उपन्यासक मर्म सँ वंचित रहि गेल। प्रबुद्धो पाठक वर्गक पहुँच हिनक कथे-उपन्यास धरि रहलैक। अत: साहित्यकार हरिमोहन झाक पाछाँ ठाढ़ पण्डित प्रवर हरिमोहन झा मैथिली पाठकक समक्ष अनचिन्हारे रहि गेलाह। वास्तव मे आ. झाक 'अग्रत:' जहिना काव्य (कथा-उपन्यास) छलनि तहिना 'पृष्ठत: सकलं शास्त्रम्' सेहो छलनि।

आ. झा केँ पिता बाल्यकालहि मे संस्कृतभाषा मे प्रवीण बना देलनि। ई प्रवीणता हुनका संस्कृत साहित्यक अगाध समुद्र मे डुबकी लगयबा मे समर्थ बना देलक। आगाँ बाट धयलनि अपने देशक प्रसिद्ध विद्या—भारतीय दर्शनक। पढ़लनि अङरेजी मे। तहिआ पंडित लोकनिक एहन धारणा छलनि जे अङरेजिआ पंडित 'पल्लवग्राही' होइत छथि। किछु अङरेजिआ पंडित केँ ई बात अखरलनि। ओ लोकनि पारम्परिक तलस्पर्शी पंडित केँ गुरु बना प्रौढ़ावस्था मे बटुक बनि संस्कृतक मूल ग्रन्थ पढ़ लगलाह। जानि नहि के-के एहि तरहेँ तलस्पर्शी पंडित बनि सकलाह। एहन तीन व्यक्तिक नाम हम जनैत छी। पं. रामनारायण शर्मा जे बिहार संस्कृत समितिक सचिव छलाह मुजफ्फरपुर मे लालगंजक नैयायिक प्रवर गोप्तृनाथ मिश्र सँ नव्यन्याय पढ़लनि (पचास वर्षक अवस्था मे)। प्रो. अनिरुद्ध झा सेहो एही पंडित केँ अपना ओत' राखि किछु दिन मुक्तावली पढ़लनि आ नव्यन्यायक गढ़ मे ढुकबाक प्रयास कयलनि। आ.झा संस्कृत भाषा मे स्वयं प्रवीण छलाह तेँ जतेक डुबकी मारबाक भेलनि, मारैत गेलाह। तलस्पर्श भेलनि कि नहि से तलस्पर्शी पंडिते कहि सकैत छथि, हमरा-सन अर्धपंडित नहि।

आ. झा केँ सेहो किछु दिन उजानक पंडित प्रकांड दुर्गाधर झा सँ पढ़ैत देखने छिअनि। एहि मे हम दुत आ साक्षी दुनू रही। पंडित जी केँ संग क' नित्य आ. झाक आवास रानीघाट जाइ। पंडितजी जे बुझबथिन से हमर कोन कथा, आ. झा तनिकहु संभवत: कमे बुझबा मे अबनि। जड़ि मजगूत रहत तखन ने छीप परक बात बूझबैक। आ. झाक एक प्रिय विषय छल शब्द खंड अर्थात् शब्द आ वाक्य सँ अर्थबोध कोना होइत छैक तकर विवेचन। छल तँ ई मूलत: व्याकरण विषय (तँ किछु-किछु हमहू जनैत छी,) किन्तु एहू मे नव्यन्यायक शैली अवच्छेदकावच्छिन्न घोंसिआए गेल छल। एही विषय मे पढ़ब आ. झा केँ लाभदायक भेलनि। ई विषय दू अच्छर हमहूँ जनैत छी, तेँ आ. झा प्रश्न पर प्रश्न क' हमरा पानि पिआए देथि। ई क्रम कतोक मास चलैत रहल।

ज्ञातव्य जे तहिआ आ. झा विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक शोध-परियोजनाक अंतर्गत उक्त विषय पर शोध क' रहल छलाह जे पछाति Trends of Linguistic Analysis in Indian Philosophy नाम सँ प्रकाशित भेल। वास्तव मे आ. झाक दार्शनिक कृति मे यैह पुस्तक विशेष कीर्तिकर भेल।

आ. झा दर्शनशास्त्रहु केँ चटनी बनाए 'दही-चूड़ा-चीनी'क संग मैथिलीक पाठक केँ चटओलनि अवश्य, मुदा दर्शन मे नाममात्रो लेखन मैथिली मे नहि कयल। लगैत अछि, हुनका समय धरि मैथिली सरस साहित्ये धरि छेकलि रहलीह।

आ. झा शुद्ध अर्थ मे अङरेजिआ छलाह। मिथिले मे नहि, देश भरि मे यैह अङरेजिआ बाबू लोकिन सात समुद्र पार सँ नव संस्कृति आ नव चेतना बेसाहि अनलनि। मिथिला मे एकर अग्रदूत भेलाह आ. झा। 'पंडित आ मेम' केँ लड़ओलनि। कहि नहि, एहि बेजोड़ आ बेमेल कुश्ती मे आ. झा अपने मेमक भूमिका मे छलाह कि पंडितक भूमिका मे। ओ भनहि पंडित आ मेमक लड़ाइ देखाबथु, वस्तुत: ई लड़ाइ 'मुनिक पर्णमय शान्त कुटी मे' वस्तुत: एक तमासा, एक छद्मयुद्ध (Mock Fight) मात्र बनि क' रहि गेल। एत' ने ब्रह्मसमाज बनल, ने आर्यसमाज, ने प्रार्थना समाज, ने थियोसोफिकल सोसाइटी। हँ, तरहि तर विचार-परिवर्तनक संवाहक अवश्य भेल। पंडित जी अग्निश्च वायुश्च भेलाह। मेम साहिबा चुप्पे मुसकाइत रहलीह। पंडितजीक क्रोध ढोंढ़क फुफकार वा पोआरक धधरा सिद्ध भेल। पुत्र-पौत्रादिक प्रवृत्ति देख पंडित लोकनि केँ मौनावलम्ब वा मौनस्वीकृतिए उचित बुझयलनि। जँ खट्टर काका केँ हरिक अवतार मानी तँ आ. झाक लाठी पंडिते पर बजरैत रहल—ने मेम पर, ने सी.सी. मिश्रा पर। एहि सँ ध्वनित होइत अछि जे 'पंडित आ मेम'क द्वन्द्व युद्ध मे मेमक भूमिका मे आ. झा स्वयं छलाह। जानि नहि *खट्टर काकाक तरंग* कहिआ शान्त-प्रशान्त होइत आ कहिआ आ. झाक सपनाक सांस्कृतिक मिथिला साकार होयत।

मिथिलाक समाज शास्त्रीय अध्ययन, विशेष क' ओहि कालक जाहि बीच आ.झाक तन-मन गढ़ायल, आइ धरि बड़ थोड़ भेल अछि। आ. झाक अध्ययन करैत हमरालोकनि हुनक साहित्यक मधुधार मे माछी जकाँ तेना लटपटाए गेलहुँ जे हुनक सामाजिक पृष्ठभूमि आ आ.झा पर तकर प्रभाव दिस नजरिए नहि गेल। कविवर आरसी प्रसाद सिंहक पौरोहित्य मे हमरा लोकनि प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ बेस मोटडाँट (पृष्ठ : 585, आकार 7×9 इंच, लेखक : 91 जन) प्रकाशित कयल। एहि मे सामाजिक पक्ष पर एकमात्र आलेख भेटल। डा. हेतुकर झाक। सेहो आ. झा केँ केन्द्रित क' नहि लिखल गेल। भ' सकैत अछि, एहि दिशा मे समुचित अध्ययन भेला पर हमर बहुत धारणा दुर्धारणा सिद्ध भ' जाय।

सुनैत छी जे एक शोध छात्रा विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक छत्रछाया मे आ. झाक हिंदी मे अनूदित कथा साहित्यक सांस्कृतिक आ सामाजिक पक्ष पर गहन अध्ययन क' रहलीह अछि। शिवास्ते पन्थान:। एहि प्रकारक अध्ययन भेलहि पर आ. झा केँ आओर हुनक निर्मिति कालक मैथिल समाज केँ ठीक सँ चीन्हि सकब। ता हम जे किछु कहल तकरा प्रथम दृष्टिक कच्चा माल सैह बूझल जाय।



संपर्क : **104, सती चित्रकुट**
गंगापथ, पटेलनगर (पश्चिम), पटना-23
फोन : 0612-6589004

महान गप्पकार : हरिमोहन बाबू

कुमार पवन

यद्यपि हरिमोहन बाबूक अधिकांश साहित्य सँ आब जाक' नीक जकाँ परिचित भ' पौलहुँ अछि तथापि हमरा स्मरण अछि प्राय: दस-बारह बर्खक रही तँ हुनक जाहि पहिल रचना सँ परिचय भेल रहय ओ छल *खट्टर ककाक तरंग*। पछाति अपन गामक पुस्तकालयक (जे आब नि:शेष अछि) प्रसादात *कन्यादान, प्रणम्य देवता* आ *चर्चरी* पढ़ि पौलहुँ। तकर कतोक बर्खक बाद सी.एम. कालेजक पुस्तकालय मे *रंगशाला* आ *द्विरागमन* सँ भेंट भेल छल। तहिया सँ आइ धरि ई पुस्तक सभ कतोक बेर पढ़ने होयब, से ठेकान नहि। परंच सभ बेर जेना मोन छुछुआयले रहि जाइछ। एक बेर पुन: पढ़ि लेबाक इच्छा सुगबुगाय लगैत अछि। हम प्राय: एहि प्रश्न सँ तंग रहलहुँ अछि जे आखिर कोन गुण छैक एहि रचना सभ मे जे कालातिक्रमण करैत, पुश्त-दर-पुश्त पाठक केँ रिझबैत आ अपना दिस टनैत रहल अछि? समाजक विविध प्रकारक स्थिति-परिस्थिति मे परिवर्तनक बादो लोकप्रियता वा पसिन्नक पहिल स्थान पर निरन्तर बनल रहय जे साहित्य से अवश्य विचारक केन्द्र होयबाक चाही। हालहि मे हमरा समक्ष एक टा प्रकाशकक ई स्वीकार, जे मैथिली पोथी सभक सीमित बाजार मे एखनहुँ हरिमोहन बाबूक पोथी सभ टॉप पर अछि, सँ की स्पष्ट होइत अछि?

संस्कृत वाङ्मयक गहन अध्येता साहित्यकार जाहि वर्गक गर्दा उड़ाबय लेल जीवन भरि अपन रचना सभ मे अपन प्रतिभा केँ झोंकैत आबि रहल हो यदि ओ ओहू वर्गक लोक सभ मे ओहिना प्रिय अछि तँ अवस्से ओकरा मे कोनो खास बात होयबाक चाही। की खट्टर ककाक जिज्ञासु श्रोता 'हम' केर एहि वक्तव्य सँ जे—अहाँक गद्य तेहन होइत अछि जे झगड़ो कैनिहार केँ रस भेटैत छैक। जखन अहाँक गद्य छपत तँ गारियो देन्हार राति मे चोरा क' पढ़बे करताह—ओहि खास बात दिस संकेत नहि भेटैत अछि?

पंडितक कुल मे जन्म ल' पंडिताउ वातावरण आ परिवेश मे पालल-पोसल गेल



आ पंडित सभक ज्ञानक स्रोत मे जमिक' अवगाहन कयने हरिमोहन बाबू पंडित सभक गीरह-गीरह सँ परिचित छलाह। तेँ पंडित वर्गक भकमच्छड़ छोड़यबाक क्रम मे ओ जाहि अथाह ज्ञान, तीव्र स्मरण शक्ति, तर्क कौशल आ गुदगुदबैत सरस अलंकृत भाषाक परिचय दैत छथि से ओहि वर्ग केँ अवाक रहि जयबाक लेल विवश क' दैत अछि। प्रारंभ मे भने पंडित सभ जतेक बड़बड़ायल होथु परंच अंतत: हरिमोहन बाबूक प्रतिभाक अंदक हुनका लोकनि केँ समझौता दिस धकेलि क' ल' अनलकनि। एहि मे पंडित सभ केँ प्रेरित-प्रोत्साहित कयलक ई सोच जे चल कतबो आलोचना करथु हरिमोहन बाबू, ओ छथि तँ ओही संस्कृत वला रूटक ने जकर हम सभ छी। एहन लोक सभ केँ पछाति प्रो. मनमोहन झाक ई कथन बड्ड भरोस देलकनि, ''पंडितक प्रो. झा ओना जतेक खिधांस करथु अपनो ओ पंडिते थिकाह।''[1] फलत: पंडितोक हरिमोहन बाबू ओतवे प्रिय बनल रहलाह।

हरिमोहन बाबू केँ पढ़ैत नहि जानि किएक हमरा बेर-बेर हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृत लाल नागर आ मनोहर श्याम जोशी मोन पड़ैत छथि। हिंदीक एहि तीनू कथाकारक संग हुनक प्रत्यक्ष संपर्कक कोनो साक्ष्य नहि अछि। ई संयोग कही वा भारतीय कथा परंपराक विशिष्टता जे गप्प, गल्प वा खिस्साक रस चारू मे महजूद छनि। व्यापकता वा लोकप्रियता मे अंतर भ' सकैत छैक। बहुत गोटा केँ ई स्थापना कपोल-कल्पना वा अँटकरबाजी लागि सकैत छनि परंच हमरा तँ कथा मे रस उत्पन्न करबाक, तन्मयता बनौने रहबाक कौशल समाने रूप सँ चारू मे भेटैत अछि।

विशुद्ध भारतीय परंपराक पुरना कथाधारा मे जिज्ञासा तत्वक प्रमुखता-प्रबलता रहैत छलैक। माने ई जे 'आगाँ की हेतैक' वला कौतूहल बना क' राखब कथाकारक लेल एक टा चुनौती जकाँ होइत छलनि। यदि एहि मे कथाकार सफल भ' गेलाह तँ पाठकप्रिय होयबा मे कोनो दिक्कत नहि। आधुनिक कथा मे 'एना किएक' तत्वक प्रमुखता मानल जाइत अछि। रहरहाँ

कथाकार चरमतत्वक उल्लेख कथाक प्रारंभहि मे क' ओकर कारण-भूत तत्वक विश्लेषण-विवेचन मे कथा केँ आगाँ बढ़बैत जाइत छथि। एहि शैल्पिक-विशिष्टताक आधार पर यदि विचार कयल जाय तँ हरिमोहन बाबूक रचना सभ मे जिज्ञासा वा कौतूहलक तनाव निरंतर, देखय मे अबैत अछि। 'विकट पाहुन' 'आदर्श कुटुम्ब', 'साझी आश्रम', 'घर जमाय', 'अँचारक पातिल', 'टोटमा', 'कन्याक जीवन', 'दरोगा जीक मोंछ', 'ग्रेजुएट पुतोह', 'तिरहुताम' आदि कतोक रचना एकर साक्षी अछि। एक बेर पढ़ब आरंभ करू, समाप्त कयने बिना नहि रहि सकैत छी। हरिमोहन बाबू केँ छोड़ि क' मैथिली मे एहन बहुत कम कथाकारक एहन बहुत कम कथा छनि जे पाठक केँ एना गहि क' ध' लैत होअय। तेँ आधुनिक विषयवस्तु पर आधारित हरिमोहन बाबूक कथा सभ खिस्सा बेसी बुझना जाइत अछि। ई कथा सभ अछि तँ लिखित रूप मे मुदा एकरा सभ केँ वाचिक परंपरा मे राखि क' यदि देखियौ—राखि क' की प्रयोग क' कय देखियौ—तँ अपने स्पष्ट भ' जायत। मैथिलीक क्षेत्र सँ बाहरोक क्षेत्र मे यदि ई रचना सभ लोकप्रिय अछि तँ एकर कारण हमरा जनैत यैह अछि। तेँ प्रो. मनमोहन झा केँ ई लिखय लेल बाध्य होमय पड़लनि, ''हुनक लोकप्रियताक ई एक टा आयाम सहजहि ध्यान घिचि लैत अछि जे साहित्य कोना भाषाक देबाल ढाहैत अपन विस्तार पाबि लैत अछि। से गुण प्रो. झाक लेखनक आदिए सँ रहलनि अछि। *कन्यादान* केँ मैथिलीभाषी सँ भिन्नो लोक पढ़लक, पढ़बाक लेल सिखलक। अपन भाषा क्षेत्र सँ बहरा क' भाषा केँ विस्तार द' ओकरा वृहत्तर परिप्रेक्ष्य मे मर्यादा देअयबाक काज जे प्रो. झाक साहित्य कयलकनि, से फेर आन कोनो ने।''[2]

रहरहाँ ई प्रश्न उठाओल जाइत रहल अछि जे हरिमोहन बाबू केँ 'गप्पकार' मानल जाय वा 'गल्पकार'? सामान्यत: गप्पक अर्थ गपशप, बातचीत वा संवाद मानल जाइत अछि आ गल्पक अर्थ कथा पिहानी। 'गप्प देब', 'गप्प हाँकब', 'गप्पक गर्द उड़ायब' आदि मोहावरा पर ध्यान देल जाय तँ कल्पनाक अति विस्तार वा फूसिक टाटक ठाढ़ करब लक्षित होइत अछि। एहि संदर्भ मे हरिमोहन बाबू पर विचार करैत सुधांशु शेखर चौधरी मोन पड़ैत छथि। ओ अपन 'गप्प साहित्यक आचार्य हरिमोहन बाबू'[3] शीर्षक निबंध मे हुनका 'गप्प विधा के जन्म देनिहार', 'गप्प साहित्यक आविष्कारक' आदि माननलि अछि। संपूर्ण निबंध पढ़ला उत्तर यैह बुझना जाइत अछि जे निबंध लेखकक विश्लेषणक एक मात्र आधार *खट्टर ककाक तरंग* रहलनि अछि। ओ लिखितो छथि, ''गप्प करब एक कला थिक आ गप्प गढ़ब महान कला...जाधरि खट्टर कका जीवित रहताह, हमरा लोकनिक हरिमोहन बाबू मरि नहि सकैत छथि।''[4]

स्पष्ट अछि जे जेँ कि संपूर्ण *खट्टर ककाक तरंग* संवाद शैली मे अछि, एक प्रकारक गप-शप अछि, तेँ शेखर जी ओकरहि टा गप्प माननलि अछि। वैह किए मणिपद्म जीक सेहो किछु एहने विचार छनि, ''हुनकर पंडिताउ व्यक्तित्व, मिथिलाक परम्परागत 'गप्प' विधा केँ साहित्य मे स्थापित कयलक। *खट्टर ककाक तरंगक* रूप मे ई विधा एतेक सशक्त तथा सुरुचिपूर्ण रहल जे समस्त भारतीय भाषा सबहक साहित्य एहि विधा मे मैथिली साहित्य सँ पछुआ गेल।''[5]

हमर कहब अछि जे शेखर जीक ई दृष्टिकोण एकांगी छनि। ओ बात केँ संपूर्णता मे नहि पकड़ि पौलनि अछि। यदि हरिमोहन बाबूक 'पाँच पत्र', 'कन्याक जीवन' सन किछु कथा आ किछु एकांकी केँ छोड़ि देल जाय तँ हुनक संपूर्ण साहित्य 'गप्प' अछि। चलू, बात केँ स्पष्ट करय लेल सभ सँ पहिने हरिमोहने बाबूक विचार केँ देखि लेल जाय। *प्रणम्य देवताक* 'दुटप्पी गप्प' मे ओ लिखैत छथि, ''आश्चर्य बात ई जे मैथिल गप्प लड़ैबा मे सभ सँ आगाँ छथि से गप्प लिखबा मे सभ सँ पाछाँ। जहाँ हिंदी, बांग्ला मे सहस्त्रो गल्प पाठकक मनोरंजन करैत अछि तहाँ मैथिली मे शपथो खैबाक हेतु एक टा गल्प संग्रह देखय मे नहि अबैत अछि।...एही अभावक पूर्ति हेतु, *प्रणम्य देवताक* आविर्भाव भेल अछि।[6]

'गप्प' लिखय मे मैथिल सभक पछुआयब, हिंदी-बांग्लाक सहस्त्रो गल्पक तुलना मे मैथिली मे गल्प-संग्रहक अभाव आ तकर पूर्तिक हेतु *प्रणम्य देवताक* सृजनक चर्च सँ स्पष्ट अछि जे हरिमोहन बाबू गप्प आ गल्प मे अंतर नहि कयलनि अछि। एहू ठाम हमरा *वाणभट्ट की आत्मकथा* सन अतीतक रस सँ लबालब गप्पक लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी, *बूँद आ समुद्र* एवं *एकदा नैमिषारण्ये* सन गप्पक रचयिता अमृतलाल नागरक संग *कुरु कुरु स्वाहा* सन मार्डन गप्पक सृजन कर्त्ता मनोहर श्याम जोशी मोन पड़ैत कथि। अधिक जिज्ञासु केँ खोज कयला सन्तां सटीक प्रमाण आ संदर्भ भेटि जेतनि। एतय विस्तार भय सँ उल्लेख संभव नहि।

हमरा जनैत हरिमोहन बाबूक साहित्य के 'कथात्मक गप्प' आ 'कथेतर गप्प' नामक दूटा वर्ग से राखल जा सकैत अछि। विकट पाहुन, आदर्श कटुम्ब, साझी आश्रम, घर जमाय, भदेसक नमूना, बीमाक एजेंट, अंग्रेजिया बाबू, अँचारक पातिल, रेशमी दोलाइ, टोटमा, रेलक अनुभव, दरोगा जीक मोंछ, ग्रेजुएट पुतोहु, मर्यादाक भंग, ग्राम सेविका, परिवर्तन, युगक धर्म, तिरहुताम, तीर्थयात्रा, महारानीक रहस्य, बाबाक संस्कार आ हँ, सभ सँ पैघ *कन्यादान-द्विरागमन* केँ कथात्मक गप्पक वर्ग मे राखल जा सकैत अछि। एहन गप्प सभ मे कथा छैक, कथा मे हास्य व्यंग्य, समाजक प्रति चिंता आदि सभ किछु छैक परंच सभ सँ बेसी छैक कौतूहल केँ निरंतर बनौने रहबाक क्षमता, गुदगुदबैत भाषा शैली आ अतिशयोक्तिक चमत्कारिक आकर्षण। प्रो. आनन्द मिश्र ठीके कहैत छथि, ''हुनक 'कथा' कथा सँ बेसी गप्प अछि। बेस चहटगर, तिक्त, कषाय आदि सभ रस सँ युक्त, कोनो चरित्र जावत धरि अतिशय चित्रित नहि करताह तावत् जेना संतोषे नहि होइनि।''[7]

हरिमोहन बाबूक कथेतर गप्प मे धर्मशास्त्राचार्य, ज्योतिषाचार्य, पंडितजी, कवि जी, रंगशाला, काली बाड़ीक चोर, आदर्श भोजन, चिकित्साक चक्र, सासुरक चिह्न, धोखा, प्रेतक लीला, सात रंगक देवी, नौ लाखक गप्प, अलंकार शिक्षा, ब्रह्माक शाप, भोल बाबाक चारू गप्पक संग संपूर्ण *खट्टर ककाक तरंग* केँ राखल जा सकैए। एहि प्रकारक गप्प सब मे किछु एहनो अछि जे कथात्मक तँ नहि मुदा कथाभासी अवश्य अछि। कथेतर गप्प सभ मे पांडित्यक प्रवाह, तर्कक तिकड़म, अतिशयोक्तिक अन्हड़, वक्रोक्तिक बरखा आ ठाम-ठीम कामसिक्त मांसल भाषाक तेहन आकर्षण विद्यमान अछि जे पाठक चकित रहि जाइत अछि जेना स्तंभित भ' जाइत होअय—खाहे ओ वर्णित विषय सँ सहमत होअय वा असहमत।

हरिमोहन बाबूक गप्प निधोख होइत अछि, उन्मुक्त होइत अछि, कोनो बाधा नहि मानैत अछि। जिनका मोन मे कनेको सन्देह सुगबुगाइत छनि तिनका जेना अदृश्य भोलबाबा डाँटि दैत छथिन, ''हौ तों देखलहक कहिया?'' अतएव पाठकक तात्कालिक कर्तव्य छनि जे ओ अपन बुद्धि लगायब छोड़ि कल्पनाक प्रवाह मे बहैत रहथि। कल्पनाक एही उड़ान मे गप्प सभक पठनीयताक गुणसूत्र निहित छैक।

जहिना ललित निबंध लिखय लेल व्यापक अध्ययनक संग मौलिक चिंतनक आवश्यकता होइत छैक तहिना श्रेष्ठ गप्प लिखबा ल' प्रकांड पांडित्यक संग त्वरित बुद्धि आ असीम कल्पना शक्तिक योगदान अनिवार्य होइछ। पंडित लोकनि केँ चउल मे रसिक कहल जाइत छनि। कनेक काल लेल एहि चउल केँ कात क' देखल जाय तँ एक टा रचनाकारक लेल रसिकता अनिवार्य

गुण होयबाक चाही। जे रचनाकार लोक, वस्तु आ परिस्थिति मे रस नहि लेत से की लिखत? एत' स्पष्ट बुझि लेबाक चाही जे रस लेबाक अर्थ 'मजा लेब' नहि थिक अपितु विषय केँ नीक जकाँ बूझब, ओकरा प्रति अपन सरोकार केँ जानब-पहिचानब थिक। जे रसिक नहि होयत से नीक गप्पी सेहो नहि भ' सकैत अछि। आ हरिमोहन बाबू महान 'गप्पी' छथि ताहि मे किनको संदेह नहि होयबाक चाहियनि। ओ तँ एहन गप्पी छथि जे एक दिस वेद-पुराणक गर्दा उड़ा सकैत छथि तँ दोसर दिस जेना विद्यापति सँ शृंगारिकता पैंच ल' नारीक स्तनक विविध आकार-प्रकारक बेर-बेर वर्णन क' सकैत छथि। टोटमा करैत अहाँ केँ साँस रोकि लेबाक लेल बाध्य क' सकैत छथि तँ महारानीक रहस्यक वर्णन करैत हृदय मे गुदगुदी लगा सकैत छथि। विकट पाहुन सँ भेंट करा हँसबैत-हँसबैत पेट दुखा द' सकैत छथि तँ कन्याक जीवन सँ परिचय करबैत एक टा दारुण करुणा सँ अवसन्न क' द' सकैत छथि। यैह छियनि गप्पी हरिमोहन बाबूक सफलता। हरिमोहन बाबूक रचनाक जादू सँ बाँचब कठिन अछि। आ गप्प साहित्यक पहिल आ अंतिम लक्षण छिऐ यैह अद्भुत जादू।

हरिमोहन बाबूक जन्म भेल छलनि 1908 ई. मे आ 1960 धरि प्राय: हुनक सभ प्रमुख कृति प्रकाश मे आबि चुकल छल। प्रसिद्ध तथ्य अछि जे कोनो लेखकक 'साइके'क निर्माण ओकर किशोरावस्था वा नव युवकावस्था धरि भ' जाइत छैक। केहन छलैक ओहि समयक मिथिला? तेसर आ चारिम दशकक मिथिला एकदम सँ शिथिला छलीह। आधुनिकताक लहरि सँ वंचित, शिक्षाक क्षेत्र मे पछुआयल, परंपरावादी, प्रेतवत् उनटा पयरवला पश्चमुखी समाज। ओहि समय संपूर्ण मिथिला दू टा वर्ग मे विभाजित छल। एक टा वर्ग ओ छल जाहि मे शिक्षाक इजोत आ सुख-सुविधा सँ वंचित निम्न कुल पाँजिक दरिद्र ब्राह्मण आ ब्राह्मणेतर वर्गक प्राय: सभ लोक छल। दोसर वर्ग छल सामन्तक छाँह मे पलाइत-पोसाइत कथित उच्च कुलक ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक पहिल वर्ग जतय पतनक खाधि मे पड़ल कूही होइत। ओतहि दोसर-दोसर वर्गक जीवन केहन छल तकर झलक दैत मनमोहन झा लिखैत छथि, ''ओहि समय सोतिपुरा छल मिथिलाक लखनउ। राज दरभंगाक रुपैया सँ ओतप्रोत सोतिबाबू लोकनिक जीवन ओ हुनके लोकनिक रंग मे रंगल हुनका लोकनिक नोकर-चाकर, दोस्त महीम आ मोसाहेब सब। पोखरिक अपियारी मे माछक शिकार। चर-चाँपर मे गोसिंही पहिरने बटेर बझायब। तास, सतरंज, चौपड़ि, पचीसी।''[8] भने मनमोहन झा ई बात



सोतिपुराक मादे लिखने होथि परंच हरिसिंहदेवीय व्यवस्था आ दरभंगा महाराजक सामन्ती परिवेश मे कुहरैत मिथिला मे प्राय: सर्वत्र यैह स्थिति छलैक।

एहने दमघोंटू वातावरण मे हरिमोहन बाबू शनै: शनै: चेतन भ' रहल छलाह। हिनक अवचेतन मे अनायासे दू टा बात बैसि गेलनि। पहिल तँ ई जे मिथिलाक दुर्दशाक सभ सँ पैघ कारण अछि रूढ़िवादी ब्राह्मण-वर्ग आ ओकर अतिशय शास्त्रप्रियता। दोसर यदि सभ सँ बेसी शोषित-मर्दित अछि क्यो तँ स्त्री सभ। ओ अपना आँखिए देखने छलाह जे गोत्र-मूलाभिमानी 'ढाला झा' सन-सन कुलीनताक व्यवसायी ब्राह्मण सभ केँ। बात-बात मे फ्लेक्सिबुल शास्त्रक उल्लेख कय जन-सामान्य केँ भ्रमित कयनिहार पंडित सभक धूर्तताक गीरह-गीरह चिन्हैत छलाह ओ। संगहि तत्कालीन समाज मे स्त्रीगणक दुर्दशा केँ सेहो बड्ड निकट सँ देखने छलाह ओ। अपन-अपन रूढ़ि आ अंधविश्वासक संग अशिक्षाक अन्हार मे बौआइत स्त्रीगणक स्थिति दास जकाँ छलनि। एहने अनुभव सभक परिणाम भेल जे ओ ब्राह्मण आ ब्राह्मणवाद पर टूटि पड़लाह। ओ मिथिलाक प्रगति मे सभ सँ पैघ बाधक तत्व मानैत छलाह एहने बुद्धिजीवी सभ केँ जे सामन्तक परजीवी बनि क' रहि गेल छलाह आ शास्त्र व्यवसायी बनि गेल छलाह। खट्टर ककाक अधिकांश तरंग मे एहि वर्गक लोक खूब थुर्री उड़ाओल गेल अछि। अधिकांश एहि सँ परिचित छथि। 'भोल बाबाक गप्प' मे सामवेदी जी, मलवा झा झलवा झा, सोनमनि झा, फेटकटाइ झा, बुद्धिनाथ पाठक, ढाला झा, नैआ चौधरि, पं. लूटन झा, मकरन्दा वला ज्योतिषी आदि टिपिकल चरित्रक मादे सूचना भेटैत अछि। संगहि, मिथिलाक ब्राह्मण समाज मे व्याप्त शास्त्रीयताक मूर्खता मोह, अंधविश्वास, लोभ-गोत्र मूलाभिमान भोगाभिलाष आदि यथेष्ट परिचय भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त 'पंडित जी', ज्योतिषाचार्य आदि रचना तँ चिचिया-चिचिया क' ब्राह्मण वर्गक करतूति आ तकर समाज पर पड़ैत दुष्प्रभाव केँ देखबैत अछि। एही तरहें हुनक *कन्यादान* सँ ल' क' पछातिक अनेक रचना जेनाकि 'ग्रेजुअट पुतोहु', 'परिवर्तन', 'रसमयीक ग्राहक', 'तीर्थयात्रा' आदि मे रूढ़िवादी आ परंपरा केँ कसि क' जकड़ने पंडित सभक जबरदस्त चित्रण भेल अछि। निश्चित रूप सँ एहि क्रम मे हरिमोहन बाबू उपहास, कटाक्ष, व्यंग्य, हास्य आ अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णनक मदति लेलनि अछि। स्वाभाविके छलैक जे पंडित वर्ग छिलमिला जाइत।

हरिमोहन बाबू केँ ब्राह्मण वर्ग आ हुनक औजार (शास्त्र) पर आक्रमणक फल भोगय पड़लनि। पं. त्रिलोकनाथ मिश्र, प्रो. रमानाथ झा, डॉ. जयकान्त मिश्र आ डॉ. सुभद्र झा सभ सीधा-सम्मरि ल' क' सोझे हुनका पर टूटि पड़लाह। रमानाथ झा तँ हुनक साहित्य केँ सोझेँ 'विपटाक साहित्य'[9] घोषित क' देलथिन। डॉ. जयकान्त मिश्र केँ सेहो बड्ड कष्ट छनि, ''श्री हरिमोहन बाबूक एक स्वरूप अछि समाज सुधारक केर। से जखन विकट रूपेँ हिनका आक्रांत कए लैत छनि तखन हमरा सभक अत्यंत पवित्र ओ आंतरिक शुद्ध ओ कोमल भावना केँ ठेस लगाय दैत छथि। केओ-केओ एही कारणेँ श्री हरिमोहन बाबू केँ नास्तिक, भौतिकवादी वा मैथिल-विरोधी विचारधाराक मानैत छथि। हम एतबे कहब जे जखन श्री हरिमोहन बाबू उच्च ओ भव्य कलाकार रहैत छथि तखन ओ गारि नहि पढ़ैत छथि, निन्दा नहि करैत छथि, ध्वंसात्मक बुद्धि नहि रखैत छथि। कारयित्री प्रतिमा कोनहु कवि ओ लेखकक स्वच्छ ओ स्वस्थ कला केँ सर्जन करैछ। तस्मात् जखन 'समाज-सुधारक' अथवा 'ध्वंसक' बनबाक आग्रह रहैत छनि आ कलाकार रहबाक चेष्टा कम भए जाइत छनि तखने श्री हरिमोहन बाबू मे ई दोष देखि पड़ैछ।''[10]

हरिमोहन बाबू केँ नास्तिक, भौतिकतावादी वा मैथिलविरोधी मानयवला 'केओ-केओ' मे के सभ छलाह से जयकान्त बाबू खोलि क' नहि कहलनि अछि। यदि से कहबाक प्रयास करितथि तँ संभवत: आँगुर पहिने अपनहि दिस

उठितनि। आ से करबाक साहस संभवत: नहि छलनि। हरिमोहन बाबू केँ नास्तिक वा भौतिकता वादी कहय मे ततेक हर्ज नहि छलैक। परंच, यदि क्यो हुनका मैथिल विरोधी कहने होयथिन, तँ ई सर्वथा आपत्तिजनक। ई तँ सोझे गारि छैक। हरिमोहन बाबू केँ मैथिल-विरोधी कहनिहारक नजरि मे संभवत: मैथिलक अर्थ वैह भोजन भट्ट, रूढ़िवादी, कुलाभिमानी, पेटपोसना, निर्लज्ज ब्राह्मण सभ छनि जकर सभक जीवन भरि खबरि लेलनि हरिमोहन बाबू। यदि यैह बात रहल होइक तँ पहिने हुनका लोकनि केँ कोनो मनोचिकित्सक सँ अपन इलाज करा लेबाक चाहैत छलनि। आशा करैत छी, जयकान्त बाबूक नजरि मे मैथिलक एतेक तुच्छ अर्थ नहि हेतनि। जयकान्त बाबू हरिमोहन बाबू पर कतेक खोंझायल छथि से देखल जाय, ''मात्र खौंझाएल वा खिसिआयल आलोचना, शुष्क काकु वा कटाक्ष करैत छथि...हुनक उद्देश्य अपन समस्त पवित्र उपादेय, आदरणीय संस्कृति ओ आदर्श केँ विध्वंस करैत 'उघाड़ि महं करिष्ये' करब अछि।''[11]

जयकांत बाबू केँ एहि बात पर आपत्ति नहि छनि जे हरिमोहन बाबू 'कवित्व मे परिणत होइत भावुकता' वला कथा सभ लिखथि। कारण, ओ कथा सभ एकदम अहिंसक अछि। हुनका आपत्ति छनि जे ओ समाज सुधारक किएक बन' चाहलाह आ एहि क्रम तथाकथित पवित्र (?), उपादेय (??) आदरणीय (???) संस्कृति केँ उघाड़ि क' राखि देलनि। झाँपल रह' दितथिन तँ युग-युग सँ महानताक भ्रम दैत, पेटपोसा सबहक रोजगारक साधन बनल शास्त्र सबहक पोल नहि ने खुजितैक! जाहि शासनक बलेँ बैसल-बैसल 'दही-चूड़ा-चीनी' भेटि रहल छलैक मैथिल (?) सभ केँ तकर धज्जी उड़ाब'क पाप करबाक कोन काज छलनि हरिमोहन बाबू केँ।

हमरा तँ लगैए जयकान्ते बाबू सन-सन खौंझायल पंडित सभक ढाही सँ हरिमोहन बाबू केँ बचयबाक लेल बटुक भाइ केँ ई लिखय पड़ल हेतनि, ''कथाकार हरिमोहन मात्र कथाकार छथि समाज सुधारक नहि। जँ से रहितथि तँ ओहो राम मोहन राय जकाँ भाषण करितथि।''[12]

आब एहि पर की कहल जाय? भाषण देनिहार की सदा सुधारके होइत अछि। लेखनीक माध्यमे समाज-सुधार मे अपन योगदान नहि देल जा सकैत छैक? आ समाज-सुधार लेल जँ भाषणे आवश्यक तँ बटुक भाइक जानकारीक लेल ई सूचना जे मैथिल सभाक अधिवेशन (खास क' तृतीय) सभ मे हरिमोहन बाबू ईहो काज कयने छलाह। जयकान्त बाबूक कष्टक एक टा कारण हरिमोहन बाबूक ईहो भाषण रहल अछि। अस्तु। हमरा तँ लगैए मिथिला-मैथिलक लेल जे दर्द हरिमोहन बाबूक हृदय मे छलनि से बहुत कम लोक बुझि पौलक। ओ शिथिला भेलि मिथिला मे गति आनय चाहैत छलाह। मिथिलाक लेल हुनका मोन मे एक टा सपना छलनि। हुनक 'रेलक अनुभव' 'तीर्थयात्रा', 'मर्यादाक भंग', 'सात रंगक देवी' आदि रचना केँ पढ़ि जाउ। अपन माटिपानि लेल, अपन लोक लेल ओ की सोचैत छलाह से एकदम सँ स्पष्ट भ' जायत।

मिथिलाक लेल एही चिंतनक क्रम मे पतनक गर्त मे पड़लि नारीक दुर्दशा केँ ओ अपन लेखनक विषय बनौने छथि। तत्कालीन मिथिला मे पंडिताउ रहल हो वा मूर्खाउ परिवेश नारी सभतरि उपभोगक सामग्री बनलि अपन नियति केँ भोगय लेल आ कूही होइत रहय लेल विवश छलीह। ओ युग छलैक कुलीनताक अहंकार मे डूबल अकर्मण्य ब्राह्मण सबहक। ओकर सबहक पेशा छलैक बिआह करैत रहब आ सासुरे-सासुर घुमि-घुमि क' पेट पोसैत रहब। एहन लोक सभ लेल स्त्री छलि मात्र उपभोगक वस्तु। से धरि जतेक मूर्ख रहितैक ततेइ सुभितगर। स्त्रीक प्रति पुरुषवर्गक ई अन्याय हरिमोहन बाबू केँ नीक नहि लगनि। हुनक आँखि खुजि गेल रहनि। ओ रूढ़ि आ परंपराक कूप सँ बाहर आबि गेल छलाह। पश्चिम सँ आयल आधुनिक शिक्षाक लहरि हुनका मे नव चेतना जगा चुकल छलनि। दोसर, भने खोलि क' स्त्रीगण पुरुष वर्गक अन्यायक प्रतिकार नहि कयने होअय परंच अवसर पओला पर चुकलि नहि छलि। निर्दोष सीताक प्रति रामक प्रसिद्ध अन्यायक प्रतिवाद कतेको मैथिली लोकगीत मे भेल अछि। यदि एक टा सोहर मे वनवासिनी सीता लव-कुशक जन्मक समाचार पठयबाक क्रम मे कहैत छथि जे—

वन सँ बहार भेल हजमा कि तोंही मोरा हित वसु रे,

ललना रे देश-देश नोतवा खिरा दे राम जनु बुझथि रे,

तँ एकर पाछाँ सीताक केहन आक्रोश छनि, से सहजहि बूझल जा सकैत अछि। सीताक प्रति रामक एहि अतार्किक मूर्खतापूर्ण क्रूर व्यवहार केँ मैथिलानी सभ कहियो नहि बिसरि पौलनि।

हरिमोहनो बाबू नहि बिसरि पौलाह। खट्टर ककाक चारिम तरंग 'रामायण' मे जाहि तरहें ओ राम पर आक्रमण कयलनि अछि, से हुनक सात्विक क्रोधक परिचायक थिक। एहि तरंगक प्राय: आधा भाग एही प्रसंग मे खर्च भेल अछि। ओ लिखैत छथि, ''सीताक जन्म विरोगे गेल। बेचारी केँ कहियो सुख नहि! कहाँ-कहाँ रने-वने स्वामीक संग फिरलीह। और जखन सुखक बेर ऐलैन्ह त स्वाती दूधक माछी जकाँ फराक क' देलथिन...सीता सन देवीक एहन अंत! ओ भरि जन्म राम केँ सेवलनि। हुनके तोषार्थ आगि पर्यन्त मे कूदि पड़लीह। परन्तु ओहि सर्वश्रेष्ठ सतीक प्रति हुनका लोकनिक केहन व्यवहार भेलैन? आठम मास मे घर सँ निकालि बाहर क' देलथिन! बेचारी मिथिलाक कन्या छलि। सी अक्षर बाजय वाली नहि। दोसरा ठामक रहितैन्ह तँ बुझा दितैन्ह।...विश्वक इतिहास मे आइ धरि एहन अन्याय ककरो संग नहि भेलैक अछि! स्वाइत पृथ्वी फाटि गेल।''

विस्तार भय सँ अधिक उद्धरण देवाक लोभ संवरण करैत एतबे कहल जा सकैत अछि जे जनिका संदेह होइन से पुन: एक बेर एहि तरंग केँ पढ़ि जाथि। की एहि तरंग मे मिथिलाक स्त्रीक दुर्दशाक उत्तरदायी पुरुषक प्रति लेखकक आक्रोश नहि झलकैत अछि। बहुतो लोक महावैयाकरण दीनबंधु झा द्वारा 'रामायण' पाठक बहिष्कारक घटनाक उल्लेख कयलनि अछि। ई उल्लेख एना कयल गेल अछि जेना हरिमोहन बाबू महावैयाकरणक समक्ष अपन 'अपराध'क स्पष्टीकरण दैत ठाढ़ भेल होकि। एहि तरहें एहि प्रसंग दूटा पक्ष अछि—(1) महावैयाकरणक पिनकब आ (2) हरिमोहन बाबू द्वारा देल गेल स्पष्टीकरण। एहि तरंगक प्रारंभिके अंश सुनैत मातर महावैयाकरण तरंगि उठलाह। कारण? रामक चरित्रक अन्य विसंगति पर तँ तरंगक उत्तरार्द्ध मे विचार कयल गेल अछि। पूर्वार्द्ध मे तँ सीताक प्रति रामक अन्यायेक चर्च अछि। महावैयाकरण केँ एहि सँ कष्ट किएक भेलनि? वर्णित प्रसंग सँ व्यंजित होइत अछि जे कोना पुरुष-सत्ता द्वारा एक टा स्त्रीक मान-मर्यादा, वेदना आ जीवन केँ तुच्छ क' कय बूझल गेल। प्रकारान्तर सँ हरिमोहन बाबू ओही समाज पर चोट क' रहल छलाह जकर प्रतिनिधि छलाह महावैयाकरण जी। हुनकहु समाज मे तँ स्त्री मात्र उपभोगक वस्तु छलीह। तेँ महावैयाकरण जीक पिनकब स्वाभाविके। रहल दोसर पक्ष तँ ओहि सँ हरिमोहन बाबूक विनम्रता झलकैत छनि भय वा कायरता नहि। एक टा आओर बात छैक। ओ अपनहुँ ओही पंडित समाजक छलाह मुदा आधुनिकता बोध सँ युक्त। हुनक अपनहु जड़ि ओही समाज मे छलनि। तेँ पंडित लोकनि वा पुरुखलोकनि पर चोट करबाक क्रम मे बरोबरि चतुरताक परिचय दैत छलाह। एही कारणे रहरहाँ वदतोव्याघातक शिकार होइत नजरि अबैत छलाह। जेना अपने कहल-लिखल

पर पानि फेरि रहल होथि। नहि तँ एही तरंगक अंत मे खट्टर कका केँ ई कहबाक कोन प्रयोजन छलनि, ''सासुरक हजामो गारि पढ़ैत छैक से प्रियगर लगैत छैक और हम तँ ब्राह्मण छिऐन।''

अपन लक्ष्य पर आक्रमणक क्रम मे ओ बड्ड सम्हरि-सम्हरि क' चलतै छलाह आ बरोबरि लक्षित केँ भ्रम मे दैत रहैत छलथिन। खट्टर ककाक किछु वचन छनि—

1. हौ, हम छी भँगेरी! कखन की बाजि जायब तकर कोनो ठेकान रहैत अछि?

2. हौ, हमर कोनो कायमी विचार रहैत अछि? जखन जे सूर मे चढ़ि गेल।

3. जखन फेर हमरा दोसर सूर चढ़त त एहि तरंगक जबाबो लिखा देबह।

एही तरहे *चर्चरीक* 'नैवेद्य' केँ पढ़ि जाउ। साफ बुझा जायत जे ई सभ खिसिआयल लोक केँ शांत करबाक उपक्रम छनि। कहुना ओ सभ हँसी ठट्ठा बुझि क' शांत भ' जाथु। बहुतो गोटा केँ हरिमोहन बाबूक ई उचिती हुनक दुर्बलता लागि सकैत छनि। एहि संदर्भ मे तत्कालीन परिस्थिति केँ ध्यान मे राखब आवश्यक अछि।

हँ, *द्विरागमनक* अंतिम अध्याय मे बुच्ची दाइक नाना पं. धर्मानन्द शास्त्री जे सी.सी. मिश्रक माथ सँ पश्चिमी सभ्यताक भूत उतारय लेल प्रदीर्घ प्रवचन दैत छथि से बहुत हद धरि विचित्र लगैत अछि। प्रवचन बहुत विस्तृत अछि तेँ किछु पाँति, ''नारीक मुख्य पुत्र-प्रसविनी होयबाक छनि, पुस्तक प्रसदिनी होयबाक नहि। पुरुषक देखाउस कय ओ कोनो-कोनो युग मे लिखनाई-पढ़नाइ सीखि ज्ञान विज्ञान उपार्जन क' लेथु किंतु ओ योग्यता विकासक क्रम मे क्षणिक फेन मात्र थिक असली प्रवाहक स्रोत नहि...।'' हरिमोहन बाबूक मूल विचार सँ ई मेल नहि खाइत अछि। कनेक काल लेल ई पात्र-विशेषक अपन विचार मानल जा सकैत छल। परंच जाहि तरहें भरत वाक्यक शैली मे उपन्यासक अन्त मे ई लिखल गेल अछि आ एकर जे प्रभाव नायक सी.सी.मिश्र पर देखाओल गेल अछि, से चौंकाबैत अछि, ''सी. सी. मिश्र मनहि मन विवेचन करय लगलाह—आधुनिक प्रगतिशील युगक क्रांतिकारी विचार और एहि वृद्धक प्राचीन सात्विक आदर्श मे कतेक अन्तर अछि? एक मदिराक समान मनोहर, दोसर जलक समान शीतल।'' *कन्यादान* आ *द्विरागमन* मे पाछाँ स्त्री शिक्षाक समस्या पर जतेक विचार कयल गेल अछि सभ पर जेना एक्के बेर पानि फेरैत बुझाइत अछि *द्विरागमनक* अंतिम अध्याय। ई वदतोव्याघात, द्वन्द्व, ओझराहटि वा प्रतिगामी चिंतन कही से हरिमोहन बाबूक बादोक किछु लेखन मे भेटत। कनेक ध्यान सँ



'भोल बाबाक गप' सभ केँ पढ़ि जाउ। चकरा जायब। वस्तुत: लेखकक 'साइके' मे जड़ि जमौने नव आ पुरान केर द्वन्द्व एकर कारण अछि। ओ आधुनिकता आ परंपराक बीच डोलैत छथि आ सत्यक अन्वेषण कय, सार भार ग्रहण'' करबाक प्रयास करैत रहैत छथि। एहि मे कतहु-कतहु चूक भ' जायब स्वाभाविके छैक। तथापि आधुनिकताक पलड़ा भारी छैक।

एही क्रम मे हरिमोहन बाबूक साहित्य मे रहि गेल किछु कमी दिस ध्यान जाइत अछि। जेना ओ अपन राष्ट्र मे होइत समकालीन हलचल सँ कटल बुझाइत छथि। ओ समय छलैक स्वतंत्रता आंदोलनक। मुदा तकर कोनो तेहन उल्लेख हुनक साहित्य मे नहि भेटैछ। तेँ एहि संदर्भ मे रमानन्द झा रमणक उपराग[13] वाजिबे छनि। प्रो. कार्तिक नाथ मिश्र एही बात पर कतेक आक्रोश मे छथि, से देखल जाय ''प्रारंभिक जीवन सामन्ती दरबार मे कुमार साहब लोकनिक बीच, पिताक अभिभावकत्व मे व्यतीत भेलनि। ओतय सर्वहारा, बुद्धिजीवी, गायक एवं अन्यान्य कलाकार सभक शोषण होइत देखितहुँ, हिनक विद्वान पिता एवं स्वयं अपने आजीवन मौन रहलाह...हिनक संपूर्ण वाङ्मय मे विभिन्न प्रकारक शोषणक धधकैत समस्या पर एक्को वाक्य देखबा मे नहि अबैत अछि। यथास्थितिवादी जीवन दर्शनक अनुयायीक रूप मे राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याक प्रति, गीताक 'कूर्मोङ्गानीक' बनल रहलाह। एहि कमजोरी सँ जँ ऊपर उठल रहितैक तँ हमरा लोकनि हिनका मिथिलाक मैक्सिम गोर्कीक रूप मे देखितहुँ।''[14]

ई कमी तँ हरिमोहन बाबू मे निश्चित रूप सँ छनि। एतबहि टा नहि हिनक साहित्य मे निम्नवर्गक शोषणक कथा तँ छोड़ू उल्लेखो टा बहुत कम अछि। ओ मुख्यत: पंडित आ स्त्रीक कथाकार मानल जाइत छथि। एहि सभ सँ इतर जे ब्राह्मणेतर वर्ग छल से कतोक उपवर्ग मे बँटल आ जटिल यथार्थ सँ युक्त छल। बिना एकर चर्च केँ ककरो साहित्य कोना पूर्ण भ' सकैत छैक? हरिमोहन बाबू एहि मामिला मे पछुआ गेलाह। एक ठाम उदय चंद्र झा विनोद लिखैत छथि, ''कनियाँ माइक ओरिआओन सँ प्रारंभ क'क' 'द्वादश निदान' तकक रचनाक माध्यमे ओ आजीवन मुक्तिक लड़ाइ मे लागल रहलाह।''[15] प्रश्न उठैत अछि ककर मुक्तिक लड़ाइ मे? निश्चित रूप सँ ब्राह्मण समाजक। कारण, हुनक संपूर्ण साहित्य मे मैथिल समाजक ब्राह्मणेत्तर वर्ग (खास क' दलित-मुस्लिम आ निम्न वर्ग) कतय अछि।

सत्य अछि जे हरिमोहन बाबूक गद्य संसारक क्षेत्र सीमित अछि। मुदा जतबा ओ लिखलनि से मनोयोग पूर्वक लिखलनि। एहि मे हुनक गहन अध्ययन, सूक्ष्म अवलोकनक क्षमता, वर्णन कौशल, तार्किकता, जीवनक प्रति अटूट संपृक्तिक संग अद्‌भुत भाषा शैली देखाइ पड़ैत अछि। यैह कारण अछि जे जो एखनो पाठक लोकनक लेल प्रिय आ महान बनल छथि आ हुनक पाठक प्रियता लेखक लोकनिक लेल परम सेहन्तास्पद!

संदर्भ संकेत

1. चरैवेति...चरैवेति, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. 29
2. वैह, पृ.-28
3. अभि. अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. 214
4. वैह
5. हरिस्मरणम्, वैह, पृ.-82
6. दुटप्पी गप्प, *प्रणम्य देवता,*
7. *मिथिला मिहिर,* 10 अप्रैल 1977
8. दर्शनाभिलाषी, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. 71
9. 'कथाकार श्री हरिमोहन झा' शीर्षक निबंध मे डॉ. जयकान्त मिश्र द्वारा उद्धृत, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. 183
10. वैह, पृ.-181
11. वैह, पृ.-182
12. हरिमोहन बाबू की छथि, श्री छत्रानन्द, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ.-280
13. श्री हरिमोहन झाक कथा दृष्टि, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. 191
14. हरिमोहन बाबू-एक अध्ययन, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. 239
15. हिनका अपार स्नेह दैत छनि पाठक, अभिनन्दन ग्रंथ, पृ.-275



संपर्क : **द्वारा, डॉ. पी. के. झा**
पी. जी. टी. हिन्दी, केन्द्रीय विद्यालय
कटिहार-854105 (बिहार)
मो. : 9430038969

बेर-बेर मोन पड़ै वला...

शोभाकान्त

पिता अपन खेल-कूद करैत पुत्र सँ कहलथिन, ''हरिमोहन खेलत-फिरत, क्यों न लगावत तेल?''

पुत्र खेलाइते-खेलाइते उत्तर देलक, ''अभी खेल से मेल है, नहीं तेल से मेल।''

ई सुनि आँगनक ओसारा पर ठाढ़ पुत्रक माय दिस देखैत पिता कहलथिन, ''देखियौक छौए वर्षक अछि और एखने सँ दोहा बनबैत अछि। आत्मावै जायते पुत्रः।'' ओना पुत्र एहि उम्र सँ अनुप्रास मिलावै मे रुचि लेबए लागल छल। एहन-एहन शब्द विन्यास करैत रहैत छल जे सुनटा-उनटा एक समान पढ़ल जाय—चमचम चमच, नूआ नवीन आनू, उजान मेला मे न जाउ...। छोटे उमेर सँ अपन शब्द सामर्थ्य देखैनिहार ई कुमर बाजितपुरक जनार्दन झा जनसीदनक साहित्य घरानाक अगिलका पीढ़ी छल। ओना तँ एहि परिवारक पितृपक्ष दरभंगाक वीरसायर गामक ओहि वंश सँ जुड़ल अछि जाहि मे महामहोपाध्याय सेहो छथि। कुमर बाजितपुर तँ जनसीदन जीक मातृक छल, जकर सम्बन्धक तार राजा शिव सिंह सँ जोड़ल जाइत छल। जनसीदन जी अढ़ाइए वर्षक उम्र मे अपन पिता (नाथ झा)क मृत्यु सँ अनाथ भ' गेला तँ मातृक आबि गेला। फेर तँ एतहिक वासी भ'क' रहि गेलाह। सतभैया माम सबहक दुलरुआ भागिन रहथि, बाल्यकाले सँ अपन अद्भुत संस्कारक कारणे। पढ़ल-लिखल मातृक परिवेश मे जनसीदन जीक विकास भेल छल ओहि युग मे। ओहि युगक ने जानि कतेक पैघ-पैघ रचनाकार सभक मार्गदर्शक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जनसीदन जी केँ बड़ सम्मानक दृष्टि सँ देखैत रहथिन, ''आपकी कृति को देखना क्या है!'' हरिमोहन झा एहने अविस्मरणीय पिताक पुत्र रहथि।

जनसीदन जी केँ छत्तीसम वर्षक उम्र धरि पुत्र प्राप्त नहि भेलनि तँ कष्टहरणी घाट (मुंगेर)क एक महात्माक उपदेशानुसार धार्मिक अनुष्ठान भेल आ 1908 ई. मे मिथिलाक सब महिला द्वारा पुत्रक सौभाग्य आ दीर्घायु लेल कैल जाय वला व्रत जीतिया दिन हरिमोहन झाक जन्म भेल छल। ई एक टा संयोग अछि जे मिथिलाक दू टा रचनाकार हरिमोहन झा आ यात्रीक जन्म देवताक अनुष्ठानक बाद भेल आ ओ दुनू रूढ़िभंजक, परंपरा तोड़क आ युग प्रवर्त्तक भ' गेलाह। जँ यात्रीक पाँति उधार ली तँ दुनू गोटेक स्वर हैत—

नहि अबइ अछि काज कोनो ब्रह्म
नहि अबइ अछि काज ई कुल-गोत्र
शिखा-सूत्र चानन ठोप
अबइ अछि किछु काज नहि ई पुरनका आटोप...

परम्परावादी ग्रामीण परिवेश मे आधुनिकताक बहैत बसातक सिहकी मे जीवन शुरू भेल रहनि तकर कारण छल पिता संग बाल्यावस्था मे पर्याप्त रहला हरिमोहन बाबू। अपन गाम कुमर बाजितपुर सँ सासुर लोमा धरिक जीवन यात्रा मे ने जानि कतेक बेर सम्बन्धी सभक एहि गाम ओहि गाम मे बहुत रास हास-परिहास सुनैत रहथि। षट्रस आ बतरस मे जीबैवला मैथिल तँ जन्मजाते विनोद प्रिय आ वक्रोक्ति बजवा मे पूर्ण रूप सँ सक्षम होइत अछि। लोक सब केँ बजबाक अपूर्व छवि-छटा देखबा-सुनबा मे खूब मोन लगनि। एहि ठाम महिलो सब केँ अन्योक्ति-वक्रोक्ति आ कहबी सब सुनि आन ठामक लोक केँ ओ सब पंडिताइन बुझाइत छथिन। जाहि भूमिक पनिभरनीओ बाबूबरही वला जमाय सँ चौल करैत पूछि दइ छनि, ''ओझा कका लोहार केहन छथि...'' आ ओहि पनिभरनी केँ गुमान सेहो छइ ''भूखले रहब तँ सुतले रहब आ सूतिक' उठब तँ ऐँच क' चलब...'' लगैत अछि एतुका पानिए मे हास-परिहास घोरल अछि।

हरिमोहन बाबू केँ अपन पिताक लिखल व्यंग्यात्मक रचना पढ़बा मे खूब रुचिगर लागनि। *पुनर्विवाह* (जनसीदन जीक उपन्यास)क हास्य प्रसंग पढ़ि-पढ़ि ओहिना लिखबाक विचार मोन मे अबनि। पिताक संग दरभंगा रहैत काल *मिथिला मिहिर*क ऑफिस मे जाक' *सुधा, माधुरी, इन्दु, मनोरंजन* आ ताहि समय अनेको पत्र-पत्रिका पढ़वा मे बेश मोन लगनि। ऐहने परिवेश मे *कन्यादान* लेल कलम ल' क' बैसनहार, *प्रणम्य देवताक* मूर्ति गढ़निहार आ *खट्टर ककाक* संग बतरसक आनन्द लइबला तैयार भ' रहल छल।

1929 मे जखन *मिथिला* प्रकाशित होमय लागल छल तँ हास्य-व्यंग्यक रचना सँ पत्रिका केँ आकर्षक बनैबाक भार हरिमोहन बाबू पर देल गेल छल। बाद मे एहि पत्रिकाक सम्पादक द्वय मे सँ भोलालाल दासक विचार भेलनि जे पत्रिका केँ आर बेसी आकर्षक आ लोकप्रिय बनैबाक हेतु एक टा धारावाहिक उपन्यास छापल जाय। उपन्यास लिखबाक भार हरिमोहन बाबू पर पड़ल आ एहि क्रम मे *कन्यादान* सन पोथी लिखा गेल। 1933 ई. मे ओहि वर्ष हरिमोहन बाबू दर्शनशास्त्र सन गम्भीर आ नीरस विषयक व्याख्याता बनलाह। *कन्यादान* सन मनलग्गू उपन्यास आ सेहो दर्शनशास्त्रक विद्वानक कलम सँ...पचीस वर्षीय हरिमोहन बाबूक एहि प्रथम कृति केँ मैथिली पाठक कोन रूपेँ स्वीकारने छल से हुनके सँ सुनू, ''*कन्यादान*क उपमा चौठिक चन्द्रमा सँ दैल जा सकैछ। कतेको गोटे दही-केरा सँ स्वागत केलथिन तँ कतेको गोटे ढेप फेकए लगलथिन।'' विषपिपड़ी जकाँ कटैत व्यंग्य आ खाटी मैथिल परिवेश आ पात्रक संग नदीक धार जकाँ प्रवाहमान भाषा *कन्यादान* केँ लोकप्रियक संग अपन कालक महत्त्वपूर्ण उपन्यास बना देलक। सामाजिक विसंगति आ ओकर दुष्प्रभाव हरिमोहन बाबू केँ जतेक क्षुब्ध करैत छल ताहि सँ बेसी ओ द्रवित होइत छलाह लोकक आन्तरिक पीड़ा सँ। *रंगशाला* (1949) मे एक टा कथा अछि 'कन्याक जीवन' एकर तितिरदाइ एखनो मैथिल नारीक एक वर्गक प्रतीक छथि। कथाक अंत मे अपन सन नारी सबहक सम्बन्ध कहैत छथि, ''अहाँ अपना सँ हमर किएक मिलान करैत छी। अहाँ पुरुष छी। और हमरा लोकनि जखने कन्या भ'क' जन्म लैत छी तखने सभ किछु अवधारि लैत छी। ओहि समय नेना मे ज्ञान नहि रहए ते अहाँक बराबरी करैत रही। हमरा सँ जे अपराध भेल हो से बिसरि जायब। एँ! अहाँ पुरुष भ'क' कनैत छी? दुर्! तखन हमरा लोकनि कोना धैर्य धारण करब? जँ हम सभ अपन नोर बहाबए लागी तँ गामक गाम दहा जायत?'' पुरुषक समक्ष एखनो नारीक विषम स्थिति मे कहाँ कोनो क्रांतिकारी परिवर्तन भेल अछि। तितिर दाइ सन नारी सब केँ देखि यात्री कहने रहथि, ''भुस्साक आगि जकाँ नहु-नहु जरै छी मने-मन हमहू...''

बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक दशक मे मिथिला भूमि अनमेल विवाह, बहु विवाह, बाल विवाह, सामन्ती परिवेश, रूढ़िवाद दरिद्रता, अशिक्षा आ ने जानि कतेक तरहक सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक समस्याक मकड़जाल मे फँसल छल, छटपटाइत छल। फँसल तँ एखनो अछि एहि भूमिक सामान्य जनजीवन। ओहिकालक अवशेष आ ओकर प्रभाव ततेक गहींरगर जकाँ धँसल छैक जे जहाँ-तहाँ

पें पी फुटिए जाइत अछि। आधुनिकता आ पुनर्जागरणक ताप इम्हर तेहन कहाँ रहल जे पुरनका समस्या-संस्कार केँ झुलसाक' नव पेंपी फूटय...हरिमोहन बाबू जाहि-जाहि स्थिति आ कुसंस्कार और रूढ़िगत परम्परा पर चोट केलथिन से कने-मने- दरकल, मुदा टूटल नहि! *कन्यादानक* बाद मिथिलांचल मे सामाजिक-परिवर्तनक नाम पर जे कोनो छोट-मोट आन्दोलन भेल तँ ओइ सँ कोनो हड़बिड़ो नहि मचल। आधुनिकताक हवा किछु घर तक मे जाक' थमि गेल आ मूल मिथिलाक सुगंधि ने जानि गाँव-गाँव सँ कोनाक' बिलाय लागल! हरिमोहन बाबू कोनो साक्षात्कार मे कहने छथि, ''देखू हम सत्य केँ सत्य कहैत छिएक, जे देखैत छिएक, जे स्वाभाविक छैक तकर वर्णन करैत छिएक...मिथिलाक सत्य विद्यापतिक समय सँ एखन एक्के अछि—

दुखहि जनम भेल
दुखहि गमाओल
सुख सपनहुँ नहि भेल...

कन्यादानक बाद *प्रणम्य देवताक* खिस्सा सब सूनि-पढ़िक' बहुतो केँ होश गुम्म भ' गेल छल। कतेकोक ठकमुड़ी लागि गेल छलनि। हास्य-व्यंग्यक तेहन घरगर शाब्दिक अस्त्र छल हरिमोहन बाबू लग जाहि सँ पैघ-पैघ तथाकथित सामाजिक मुँहपुरुष लोक सबहक मोन-मिजाज दुरुस्त भ' गेल छल। आब तँ बहुसंख्यक मुँह-पुरुष लोकनि थेथर भ' गेल छथि। *प्रणम्य देवताक* प्रकाशन काल मे कने-मने लोक-लाज रहल हैतै। मुदा थेथरइक परम्परा मिथिलाक सनगर माटि मे अपन जड़ि धँसबए लागल रहै, ओहि सँ पूर्वहि। *कन्यादान* ल'क' प्रशंसा आ फज्जति सुनि मैथिलीक जगजियार रचनाकार केँ *प्रणम्य देवता* शीर्षस्थ स्थान पर आनि देलक। तेहन-तेहन परिवेश आ पात्र सामने केने छलाह कि समाजक आडम्बर, कृत्रिमता आ सांस्कृतिक मिथ्याचार नीक जकाँ देखार भेल छल। हास्य-व्यंग्यक माध्यम सँ सामाजिक छद्म आ बनावटीपन केँ देखार करबाक संग प्रताड़ित लोक सबहक लेल एक टा आस्था सामान्य सँ सामान्य पाठक वर्ग मे जागृत करबा मे सामर्थ्यवान रहल *प्रणम्य देवताक* खिस्सा सब। *प्रणम्य देवताक* सब टा खिस्सा भले हास्य व्यंग्यक रहल अछि मुदा ओकर सम्बन्ध मोन आ बुद्धि सँ अछि। 'विकट पाहुन' सँ ल'क' 'अंगरेजिया बाबू' तक अबैत-अबैत कैक बेर किताब राखिक' सोचबा लेल बाध्य होअय पड़ैत अछि...मैथिली साहित्य मे जँ हरिमोहन बाबू बारि देल जाय, गद्य मे हास्य-व्यंग्य वला स्थान खाली भ' जायत। जहिया हरिमोहन बाबू लिखब शुरू केने रहथि तँ एहि विधा मे गोनू झाक खिस्सा सामने छल। ओना प्राचीन साहित्य मे हास्य-व्यंग्य अपन उपस्थिति देखबैत अछि नाटक विदूषकक माध्यम सँ। सामन्ती परिवेश मे मनोरंजन लेल हास्य-विनोदक प्रयोग बेसी छल। साहित्य मे समाज समग्र रूप तेजी सँ आबए लागल तँ हास्य-व्यंग्य अपन श्रोता/पाठक केँ केवल गुदगुदिए नहि लगबैत अछि अपितु पढ़निहार वा सुननिहार के चेतना केँ सेहो सोचए लेल बाध्य करैत अछि। कोना विषय वा पात्र केँ कागज पर शब्दक माध्यम सँ उतारनाइ आ ओकर स्वरूप अथवा परिस्थिति केँ हू-ब-हू बनाक' पाठक धरि ल' अननाइ एक टा कठिन साधना थिक। तहू मे व्यंग्य-हास्यक माध्यम सँ जाहि मे भदेसपन आ फुहड़ता ऐबाक पूरा गुंजाइश रहैत छैक। हरिमोहन बाबू सन अँखिगर सृजनकर्ता हास्य-व्यंग्य केँ एकदम नीचा सँ उठाक' मानवीय आ सामाजिक चिन्तन सँ जोड़ि साहित्यक एक टा प्रमुख विधा बना शीर्ष पर ल' अनलनि। व्यंग्यकार सामाजिक संरचना सँ सोझे-सोझ सम्बद्ध भ' जाइत छथि। अपन बात केँ तीक्ष्ण बनेबाक लेल स्थानीय लोकोक्ति, कहबी आ रूढ़ भेल पारम्परिक शास्त्रीय सूक्ति सभ अनैत छथि सहज आ स्वाभाविक ढंग सँ। हुनकर कलमक नोक सँ निकलल हास्य-व्यंग्यक बाण सँ धर्मशास्त्राचार्य आ ज्योतिषाचार्य, पंडितजी-कवि जी, अंगरेजिया बाबू, हुट्ठा धरिक ज्ञान लेने निट्ठाह गृहस्थ सँ ल'क' कविराज-नैयायिक आ बीमा-एजेंट अर्थात् सभ तरहक लोक घायल भेल। पाहुनक चर्चा भेने विकट पाहुन अवश्ये लोक केँ मोन पड़ि जाइत छैक। जमाय सँ पीड़ित आ प्रताड़ित ससुर तँ सब दिन सँ देखबा मे अबितै छथि। हँ आब प्रताड़नक कने ढंग बदलि गेल छै। मुदा एखनो तँ नौ मन पीड़िते छैक तँ एक मन और...सामाजिक वा व्यैक्तिक कोनो तरहक असंगति होइ आ तइ पर हरिमोहन बाबूक दृष्टि पड़िते मगज मे उसना बनए लगैत छलनि आ ताहि मे जम्हीरी नेबो आ हरिअर मिरचाई मिलाक' खूब चहटगर स्वाद ल' अनैत छलथिन। सुनैत छी हुनक पिता सिरमा मे काव्य प्रकाशक संग पाक प्रकाश सेहो रखैत रहथिन।

मिथिलांचलक सामान्य जीवन एखनहुँ शास्त्रीय वचन आ रूढ़ि भेल मान्यता सँ निर्देशित भ' रहल अछि। कतहु भले पुरबा-पछबा हवा चलल हो, मुदा एतुका सामाजिक पर्यावरण मे कोनो असर नहि! भदवा, दिक्शूल, मासान्त-मासादि तँ स्थायी जकाँ अछि। कृषि पर निर्भर रहबाक कारण फसिल कटनी, खरिहान मे मेह गारबाक, दाउन, कोठी भरब सब केँ लेल मुहुर्त ने जानि कहिया कोन स्थिति तय भेल आ दिन आ समय पतरा पर आधारित भ' गेल-से एखनो धरि चलि रहल अछि। चूल्हि कहिया गाड़ल जाय, नव वधु कोन तिथि और समय केँ पहिल-पहिल भानस करथि—सब लेल दक्षिणा ल'क' पंडित जी लग जाइये पड़त। एक दिस उच्चतम तकनीकक शिक्षा और दोसर दिस सर्वभक्षी भ' गेल छात्र सब लेल कोन दिन आ कोन मुँहे विदा होथि से सोचल जाइत अछि। वाहन कीनिक' सोझे मंदिर ल' जाक' चानन-सिनूर-फूल माला पंडित द्वारा मंत्रोच्चारण सामान्य बात भ' गेल अछि। खट्टर कका एहन व्यक्ति छथि जिनक भांगक बाद सब शास्त्र, आचार-विचार, धर्म-कर्म आ ने जानि की-की नहि मोन पड़ैत छनि। तेहन-तेहन रूप आ अर्थ कहता जे अहाँ केँ जानल-बूझल अर्थ ने जानि कतए चलि जायत। अहाँ केँ चुप रहै टा पड़त। खट्टर कका जखन प्रकट भेल रहथि तँ बड़ किछु कहल गेल, केना हुनकर सत्कार भेल से हरिमोहन केँ नीक जकाँ बुझल छलनि, ''खट्टर कका जखन बहराएलाह तँ मिथिला मे बड़का हो हल्ला मचल जे खट्टर कका केँ बंद कयल जाय। पंडित सब छड़ी-छाता चमकाबए लगलाह जे अनैतिक अछि, अश्लील अछि आ वैह पंडित सब बीच राति मे लालटेन जराक' चुपचाप चोर जकाँ खट्टर कका पढ़ल करथि...''।

हरिमोहन बाबू जहिया सँ लिखनाइ आरम्भ कैलनि तहिया सँ एखन धरि लगभग अठहत्तर-उनासी वर्ष सँ मैथिली मे सब सँ बेसी पढ़ल जाय बला आ लोकक ध्यान अपना दिस आकृष्ट करै वला रचनाकार बनल छथि। *कन्यादान* केँ ई सौभाग्य प्राप्त छै जे एहि पुस्तक के भार-दौड़क सनेश संग लोक बेटी-पुतोहु आ सर-सम्बन्धी केँ पठबैत छल जँ एकरती पढ़ल-लिखल रहै। एहने मे मिथिलाक बेटी, जेकर सासुर भदेश मे छल आ घरवला निट्ठट गृहस्थ साक्षर मात्र ओकरा *कन्यादान* भेटलै, ''सरस्वती देवी सूतिक' उपन्यास पढ़य लगलीह आ मौजे लाल झा भरि राति सरोसत्ती सरोसत्ती रटैत रहलाह। सरस्वती खिसियाक बजलीह, ''*कन्यादानक* लेखक केँ हम की कहिऔन? हुनका बुच्ची दाइ तँ सुनलथिन, किंतु एहन-एहन भुच्च मुर्खराज सभ नहि सुझैत छथिन। हमरा तँ उनटे कपार पर पड़ल। एहि पर लिखयवला केओ नहि!'' मैथिली साहित्यक पाठक वर्ग तैयार भेल हरिमोहन झा सँ, सेहो की तँ पैघ! मैथिली मे तँ हुनका पैघ आ विशाल पाठक वर्ग तँ अछिए संगहि अनुवादक माध्यम सँ आनो आन भाषाक एक टा पैघ पाठक वर्ग हुनका भेटल छनि। एकर एक मात्र कारण अछि हुनकर हास्य-व्यंग्य रचना। क्षणिक मनोरंजन लेल नहि। समाजक असंगति आ छद्म केँचीड़ि-चीड़िक' देखार क' देबाक सामर्थ्य हुनका छलनि तेँ एखन धरि हुनकर महत्व बनले अछि। सामान्यो मैथिल केँ दिन भरि मे दू-चारि बेर हरिमोहन बाबू आ हुनकर पात्र सब निश्चिते मोन पड़ैत छथिन...।



संपर्क : खाजासराय, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मोबाइल : 9304884025

हरिमोहन बाबू केँ मन पाड़ैत

रामलोचन ठाकुर

साहित्य, सही आ सार्थक साहित्य अपन समय आ समाजक साक्ष्य होइत अछि; ओकरा प्रतिबिम्बित करैत अछि। दोसर तरहेँ कहने समय आ समाज साहित्य केँ प्रेरित-प्रभावित करैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण थिक। मुदा बेसी महत्त्वपूर्ण बात ई थिक जे साहित्य अपन समय आ समाज केँ कते आ कोन तरहेँ प्रभावित करैत अछि। कोनो साहित्यक आ साहित्यकारक मूल्यांकन एही आधार पर होइत अछि, होयबाक चाही।

साहित्य अपन समय आ समाज केँ प्रतिबिम्बित करए, ओकर साक्ष्य-वहन करए से आवश्यके नहि अनिवार्य थिक। परंच ताहि लेल आवश्यक जे रचनाकार ताहि सँ, तकर नीक-अधलाह सँ नीक जकाँ परिचित होथि। वातानुकूलित कमरा मे बैसि रिक्सावलाक कथा-व्यथा नहि लिखल जा सकैछ। आ जँ लिखलो जायत तँ से सतहीए होयत। बांग्लाक विख्यात कथाशिल्पी मानिक किशोरावस्था मे एक खेप घर सँ पड़ा गेल छलाह। लोक ताकि-हेरि छोड़ि देलकनि। किछु दिनक पश्चात् ओ स्वयं आपस अयलाह। पुछला पर पता चललै जे एहि मध्य ओ माझी लोकनिक संग नाव पर छलाह। माझी समाजक यैह अनुभव हिनक *पद्मानदीक माझी* उपन्यास के कालजयी आ विश्वजनीन बना देलक। जकर अनुवाद विश्वक प्राय: पच्चीसो भाषा मे भेल अछि। संयोग सँ ई वर्ष, अर्थात् 1908 ई., हिनको जन्मशती वर्ष थिक।

हरिमोहन बाबू अपन समयक कथा लिखलनि, अपन समाजक कथा लिखलनि। ई समय कोन छल? ई समय छल मैथिलीक पुनर्जागरणक। एहि पुरर्जागरणक पुरोधा किरण जी आ यात्री जी हिनक समकालीन छलथिन। हिनका लोकनिक समक्ष दू गोट समस्या छल। प्रथम तँ अपन भाषा-साहित्यक अस्तमित अस्मिताक रक्षा, विजातीय भाषा-साहित्यक कवल सँ तकर उद्धार आ दोसर सामाजिक संस्कार आ एहि दुनू समस्याक समाधान लेल हिनका लोकनिक अस्त्र छल साहित्य। ई लोकनि राजा राममोहन राय जकाँ समाज सुधारक नहि छलाह। तँ साहित्यक सृजन भेल प्रथम कार्य। मुदा साहित्यक सार्थकता, ओकर उपयोगिता-उपादेयता तँ तैखन छै जखन कि लोक पढ़य। अर्थात् पाठक वर्ग हो, जकर नितान्त अभाव छल। एहि पाठक वर्ग केँ तैयार करबाक लेल आवश्यक छल जे साहित्य लोकक रूचिक अनुकूल हो। स्वभावत: समाज-सचेतन हरिमोहन बाबू हास्य-व्यंग्यक सहारा लेलनि। हमरा जनैत हास्य-व्यंग्य हिनक साहित्यक मूलभाव नहि, अंगीभाव मात्र थिक। रचना केँ आकर्षक बनेबाक निमित्त आवरण-आभूषण। गुड़ खुआ कान छेदबाक प्रक्रिया सन। आ अपन एहि अभिनव प्रयास मे हिनका आशातीत सफलता भेटलनि। एक विशाल पाठक वर्ग, जाहि मे मैथिली भाषीक अतिरिक्त आनो भाषा-भाषी अछि। हिनक लोकप्रियता इर्षाक कारण सेहो भेल। हिनक हास्य-सम्राटक उपाधि हिनका विभूषित करबाक लेल नहि हँसी उड़ेबाक लेल, हल्लुक करबाक लेल देल गेल छल। मन रखबाक थिक जे कविपति विद्यापति केँ कविकोकिल आ चन्दा झा केँ कविश्वरक उपाधियो मखौल उड़ेबाक क्रमहि मे देल गेल छलनि।

हरिमोहन बाबूकक समस्त कथा-उपन्यास ओही समाजक सन्दर्भ मे अछि जाहि समाज सँ ई स्वयं अबैत छथि। ई स्वाभाविके थिक। अपन समाजक नाड़ी-नक्षत्र ई नीक जकाँ जनैत छलाह। मिथिलाक बृहत्तर समाजक कथा ई नहि लिखलनि। संभव थिक तकर स्थिति-अवस्थान सँ ई पूर्ण परिचित नहि छलाह। प्रत्येक व्यक्तिक एक सीमा होइत छै। हिनको सीमा छलनि। ओनहुना मिथिलाक वर्चस्व हिनक अपने समाजक हाथ मे छल। हमरा लोकनि जनैत छी जे कोनो युद्ध मे सेनापतिक पराजय ओहि दलक पराजय होइत छै। तँ ई अपने समाज केँ लक्ष्य बनओलनि।

हरिमोहन बाबूक समाज अर्थात् मैथिल महासभा द्वारा रजिस्टर्ड मैथिल समाज, महराजी मैथिल समाज। पहिने कहलौं जे मिथिलाक बागडोर एही समाजक हाथ मे छलै जे स्वयं मे विकृतिक, रूढ़िक पेटारा छल। संस्कृतिक नाम पर अपसंस्कृति, परंपराक नाम पर रूढ़िक वर्चस्व छलै। समस्त अन्याय-अविचारक अखाड़ा छल। मैथिल संस्कृतिक अनन्य उपासक (दृष्टव्य आधार-स्तंभ, *मिथिला दर्शन,* जन.-1958) हरिमोहन बाबू लेल ई वेदनादायक स्थिति छल। ओ व्यथित छलाह। ओ जनैत छलाह जे एहि विकृतिक विरोध बिनु कयने, एहि पाखंड पर प्रहार बिनु कयने निदान असंभव। ओनहुना जे साहित्य अन्याय-अविचारक अनदेखी करैछ, विकृतिक विरोध सँ विमुख रहैछ से साहित्य केँ ने मात्र अमर्यादित करैछ अपितु ओकर सार्थकता केँ ओकर, उपयोगिता-उपादेयता केँ सेहो संदिग्ध क' दैछ। किन्तु ओ प्रत्यक्ष प्रहार नहि कयलनि। प्रत्यक्ष प्रहार मे विरूप प्रतिक्रियाक संभावना छलै। अर्थात् पाठकक अभाव, जे पूर्वहि सँ वर्त्तमान छल। तँ ई हास्य-व्यंग्यक आवरण मे अपन अस्त्रक उपयोग कयलनि। लोक हुलसि केँ हिनक रचना सभ पढ़लक। भभा-भभा क' हँसलक। आ पश्चात्, जेना कवाछु लागल होइ, अपन देह-माथ नोचए लागल। नोचए लागल सभ नहि, समाजक ठीकेदार वर्ग। मैथिल संस्कृतिक स्वयंभू सेवक, परंपराक पहरेदार सभ। हरिमोहन बाबूक प्रति अपशब्दक अमार लगा देलक। जेहादक घोषणा कयलक। मुदा चद्दरि सँ मुँह झाँपि हुनक नव-नव रचनाक रसास्वादन करैत रहल।

मैथिली साहित्यक आलोचक लोकनि सेहो हिनका प्रति सदाशय नहि छलाह। रहबे केना करितथि। ईहो लोकनि तँ ओही समाज सँ छलाह जाहि पर हरिमोहन बाबू प्रहार कयने छथि। आलोचक केँ निष्पक्ष हेबाक चाही मुदा निरपेक्ष नहि। किन्तु मैथिली आलोचना तँ अपन जन्मलग्नहि सँ पूर्वा नक्षत्रक पर्यायवाची रहल अछि। कहल गेल आ कहल जाइत अछि जे ओ 'गप्प' लिखलनि—ओ ठीके गप्प लिखलनि, मुदा से घुर तरक गप्प नहि; यद्यपि ओ मैथिलक गप्पी स्वभाव सँ पूर्ण परिचित छलाह। मैथिली मे कथा केँ पूर्व मे गल्पे कहल जाइत छलैक। बांग्ला मे ई विधा आइयो एही नामे जानल जाइछ।

किछु लोकक आरोप छनि जे हरिमोहन बाबू पाठक तँ बनओलनि, मुदा से अपने पाठक।

हिनका लोकनि सँ हम कहए चाहबनि जे महानुभाव, आब तँ चुकि गेलौं। जीवित छलाह तहिए जँ जाकए निवेदन करितियनि जे श्रीमान किछु पाठक हमरो जोगार क' देल जाओ तँ संभव थिक ओ कोनो जोगार धरा दितथि।

किछु दिन पूर्व एक पोथी पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल। चेतना समिति द्वारा प्रकाशित पोथी थिक, *मैथिली साहित्यक रूपरेखा*। संपादक छथि डॉ. बासुकीनाथ झा। एहि मे एक टा आलेख अछि 'मैथिली गद्यक विकास' लेखक छथि डॉ. जयकान्त मिश्र। एक ठाम ई लिखैत छथि, ''दोसर पोथी थिक श्री गिरेन्द्रमोहन मिश्रक *किछु देखल किछु सुनल* नामक आत्मकथा। ई पोथी हम एखन धरि स्वयं देख नहि सकलहुँ अछि किन्तु एकर सम्बन्ध मे जतेक सुनल अछि ताहि सँ बुझि पड़ैत अछि जे ई जीवनी लेखन मे मैथिलीक प्राय: सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ होयत।'' एहि दृष्टान्तक पश्चात् हमरा जनैत, मैथिली आलोचना इतिहास लेखनक मादे बेसी किछु कहबाक प्रयोजन नहि रहि जाइत अछि। अस्तु।

हरिमोहन बाबू कविता सेहो लिखने छथि। गद्यक अपेक्षा कविता थोड़ अबस्से अछि, मुदा ततबा थोड़ तँ नहिये जे अचर्चित रहि जाय। हिनक काव्यभाषा बेस सहज अछि। विषय-वस्तु उएह समाजक विकृति-विरूपता। तँ प्रहारो तदनुरूपहि। एतौ हास्यक चमत्कार, व्यंग्यक विलक्षणता देखल जा सकैछ। एगो बानगी—

लै पिठार सरबा सँ मूनल जहिना भारक घूर।
तहिना रहथु पुतहु सासुर मे, झाँपति नहि हो दूर॥

हास्य-व्यंग्य मैथिली साहित्यक आरंभ कालहि सँ ओकर अविच्छिन्न अंगक रूप मे रहल अछि। उदाहरण लेल कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक *धूर्त्तसमागम* नाटक देखल जा सकैछ, जे कालान्तर मे हिन्दीक भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक अन्हेर नगरीक प्रेरणा-पृष्ठभूमि भेल— एकरा जँ मैथिल स्वभावक अनुकूल कहल जाय तँ से अनर्गल नहि होयत। मैथिलीक साहित्यकार सदा सँ एकर महत्तागुणवत्ता सँ परिचित छलाह आ तँ एकर उपयोग सँ कहियो पश्चादप्रद नहि भेलाह। कविवर सीताराम झा आ जनकवि यात्री अपन काव्य मे एकर विलक्षण प्रयोग कयने छथि। हरिमोहन बाबू अपन प्रतिभाक परस सँ एकर विलक्षणता केँ व्याप्ति-विस्तार देलनि, एकरा आर धारदार बनओलनि आ एकरा माध्यमे अपन साहित्य केँ लोकप्रियताक चरम पर पहुँचओलनि, सफलता सार्थकताक शिखर पर पहुँचओलनि।



संपर्क : चिराग अपार्टमेंट, फेज-2
4, इटालगाचा रोड, कोलकाता-700028

नवजागरण आ हरिमोहन झाक साहित्य

तारानन्द वियोगी

मैथिली साहित्य मे हरिमोहन झाक आविर्भाव एहन समय मे भेल छल, जखन परीक्षाक घड़ी उपस्थित छल। समाज नहुँ-नहुँ बदलि रहल छल आ साहित्य अपन सक्क भरि तकरा व्याख्यायित करबा मे लागल छल। मैथिली मे संस्थाबद्ध आ व्यवस्थित लेखन-परम्परा अर्द्धशताब्दी पूरा करबा पर आबि गेल छल। मैथिली गद्य अपन एक स्वरूप बना चुकल छल, जे संवेदनात्मक आ ज्ञानात्मक दुनू प्रकारक अभिव्यक्ति मे अपन सामर्थ्य देखा रहल छल। एम्हर, मैथिली पत्रकारिता अपन स्वायत्त छवि बना चुकल छल, जाहि मे हिन्दीक आश्रयक आवश्यकता नहि गेल छलै। कैक गोट उपन्यासो लिखल जा चुकल छल आ कथा सभ सेहो। मुदा, परीक्षाक घड़ी दू अर्थ मे उपस्थित छल। एक तँ ई जे तत्कालीन रचनाकारक पीढ़ी अपन उच्चतम उदात्त स्वर प्रस्तुत क' चुकल छल ओ लोकनिक अपना युगक श्रेष्ठतम (The Best) अभिव्यक्ति क' चुकल छलाह आ आब देखबाक छलै जे मैथिली साहित्य आगाँ कोन बाट पकड़ैत अछि। आ दोसर ई जे नवजागरणक तत्व अपन एक फेज पूरा क'क' दोसर फेज मे प्रवेश क' रहल छल। मैथिली मे नवजागरणक सूत्रपात संस्कृत पंडित लोकनिक नेतृत्व मे भेल छल। पचास बर्ख मे ई अपन एक स्पष्ट परंपरा स्थापित क' चुकल रहय। एम्हर, अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार बढ़' लागल छल। संस्कृत पढ़ल-लिखल रचनाकार वर्गक साहित्य आबि चुकल छल आ आब देखबाक रहै जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल रचनाकार नवजागरण तत्त्व केँ कोन तरहेँ आगू ल' जाइत छथि आ अपन परम्पराक विकास कोन रूप मे करैत छथि।

हरिमोहन झाक लेखन मैथिली साहित्यक एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय थिक। मिथिला-समाजक आत्मसंघर्षक ई एक अविस्मरणीय दस्तावेज थिक। उनैसम शताब्दी मे जे भारतक विभिन्न भाषा-क्षेत्र मे नवजागरणक हलचल मचल रहै, तकर सुस्पष्ट प्रभाव आ विकास कोन तरहेँ मिथिला-समाज केँ आन्दोलित आ समृद्ध केलक तकर आकलन हुनकर साहित्य मे कयल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनि अवगत छी जे भारतीय नवजागरणक दू टा स्पष्ट धारा छल। एक दिस यूरोपीय आदर्श केँ आधार बना क' अपन समाज केँ पुनर्गठित आ चेतनासम्पन्न करबाक आग्रह छल, जकर अग्रणी राममोहन राय आदि भेलाह। तँ दोसर दिस, एकर प्रतिक्रिया मे पुनरुत्थानवादी चेतनाक आविर्भाव भेल, जकर जड़ि वैदिक संस्कृति मे निहित छलै आ जे अपन गौरवमय अतीत सँ सकारात्मक तत्त्व सभ केँ ल'क' समाज केँ पुनर्गठित आ चेतनासम्पन्न करबाक अभियान चलौलक आ जकर अगुआ स्वामी दयानन्द आदि भेलाह। सुनिश्चित रूप सँ मिथिला पर एहि पुनरुत्थानवादी चेतनाक गँहीर प्रभाव पड़लै।

मिथिलाक जातीय प्रबन्धन कौशल सँ जे क्यो अवगत छथि, हुनका सभक समक्ष स्पष्ट हेतनि जे मिथिला पर जहिया कहियो कोनो विजातीय संकट आयल अछि, ई ओकर प्रतिकार मे युद्ध लड़बाक बदला अपन घरे केँ मजगूत केलक अछि आ तकर सामना करैक लेल अपन सामाजिक प्रतिरोध-प्रणाली (इम्यून सिस्टम) केँ सक्रिय केलक अछि। एकर परिणाम आर भने जे किछु भेल होउक, हमरा लोकनि देखैत छी जे सुधारवादी धारा अपन वर्चस्व प्राप्त केने रहल अछि। हरिमोहन झाक साहित्य एहि सुधारवादी धाराक चरम उन्मेष थिक। ई बात भिन्न थिक जे मिथिलाक यथास्थितिवादी। बौद्धिक समाज एकरो स्वीकार करबाक लेल तत्काल तैयार नहि भेल आ हरिमोहन झा केँ हास्य रसावतारक कोटि मे फिट कयल गेलनि आ हुनका पर गंभीर चर्चा सँ परहेज कयल गेलै।

भारतीय नवजागरणक धुरी छल बुद्धिवाद, से सभ क्यो जनैत छी। से चाहे यूरोपीय आदर्शक आधार पर समाज केँ पुनर्गठित करबाक आग्रह होउक आकि वैदिक आदर्शक आधार पर, दुनू मे एहि बुद्धिवादक जोर सर्वोपरि छल। हमरा लोकनि अवगत छी जे मैथिली नवजागरणक प्रथम फेज केँ सुधारवादी धारा केँ हरिमोहन झा समर्थन केलनि आ ओही लाइन केँ ल'क' आगू बढ़लाह। अंग्रेजी-शिक्षित बौद्धिक द्वारा देसिल परम्परा केँ देल गेल ई प्रथम व्यापक समर्थन छल। मुदा, देखबाक थिक जे ई बुद्धिवाद, अपन प्रखर आ मुखर रूप ल'क' हरिमोहन झाक लेखन मे प्रकट भेल। वैवाहिक सुधार सँ ओ अपन लेखन-यात्रा शुरू कयने छलाह मुदा, हुनक मूल इष्ट छलनि—सर्वांगीण सांस्कृतिक सुधार, जकर स्फुटन नहुँ-नहुँ हुनका लेखन मे तेज होइत गेल आ *कन्यादान* लिखबाक थोड़बे दिनका बाद ओ *प्रणम्य देवता* आ *खट्टर ककाक तरंग* धरि आबि गेलाह। हरिमोहन झाक एहि



लेखन-यात्रा मे मिथिला-समाजक आत्मसंघर्ष कें नीके ना चीन्हल जा सकैत अछि आ बुद्धिवाद कें सेहो नहुँ-नहुँ जमीन पकड़ैत परखल जा सकैत अछि।

रूढ़ि आ निघेंस कें चिन्हार आ देखार करबाक प्रवृत्ति हरिमोहन झाक साहित्यक प्रधान लक्षण थिक। एहि लेल ओ व्यंग्य कें अपन औजार बनौलनि। हुनका सँ अपेक्षा कयल जा सकैत छल जे एहि तमाम रूढ़िक विरूद्ध ओ प्रगतिक एक प्रतिमान ठाढ़ करितथि। ओ अंग्रेजी-शिक्षित वर्ग सँ अबैत छलाह तँ ई आशा कयल जा सकैत छल जे ई प्रतिमान क्यो अंगरेजिया बाबू होइतथि। मैथिल परम्पराक रूढ़िक ओ आलोचना केने रहथि तँ बहुतो लोक एकरा अंगरेजिया बाबू द्वारा सनातन संस्कृति पर आक्रमणक रूप मे देखल करथि। मुदा हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे प्रगतिक ई प्रतिमान अंगरेजिया बाबू सेहो साबित नहि भ' सकलाह। एहि सांस्कृतिक उत्थर प्रवृत्तिक सेहो ओ जमिक' आलोचना केलनि। एक दिस जँ रूढ़ि मे फँसल म्रियमाण सनातन संस्कृति छल तँ दोसर दिस जीवनक गंभीर मसला सभ कें हल करबाक इच्छाशक्ति सँ शून्य अंगरेजिया संस्कृति। आखिर रस्ता कतय छल? रस्ता एहि दुनू सँ फराक छल। *खट्टर ककाक तरंगक* बाद हरिमोहन झा कोनो उपन्यास नहि लिखि सकलाह। एक व्यापक फलक कें ल'क' मैथिल समुदायक महागाथा-स्वरूप कोनो उपन्यास जँ ओ लिखि सकितथि तँ कदाचित ओ रस्ता देखाइ पड़ि सकैत छल। एखन ओ रस्ता कथाक प्रभाव मे निहित छै। योगवाशिष्ठ मे एक प्रश्न-प्रसंग अबैत छैक जे ई संसर की थिक? उत्तर देल जाइछ जे कोनो मार्मिक कथा सुनि चुकलाक बाद श्रोताक ऊपर ओकर बचल-खुचल प्रभामंडल थिक ई संसार। यैह बचल-खुचल प्रभाव बीचक रस्ता थिक, प्रगतिक प्रतिमान थिक—जे हरिमोहन झाक लेखन सँ उद्‌भूत होइछ। यैह हरिमोहन झाक मूल्यो थिकनि आ हुनकर सीमा सेहो।

हरिमोहन झाक व्यक्तित्व मे हमरा लोकनि समन्वय आ सम्मिश्रण के अनेको रंग देखि सकैत छी। एक दिस जतय संस्कृत परंपरा आ अंग्रेजी परंपराक बीच समन्वयक मुखर प्रयास हुनका लेखन मे भेटैत अछि, ओतहि दोसर दिस प्राचीनता आ आधुनिकताक सेहो एक करिश्माई सम्मिश्रण हुनका लेखन मे पाबि सकैत छी। हुनक उपन्यासक बुच्ची दाइ अक्षर-बोध आ नागर संस्कृति सँ अनभिज्ञ होइतो ज्ञान आ बुद्धि मे कनेको कम नहि छथि—से हरिमोहन झा शब्द मे तँ कहनहि छथि, घटनावलिक द्वारा तकरा साबितो करैत छथि। बुच्ची दाइ पुरुष-वर्चस्व सँ कात दने आगू बढ़ैत अपन रस्ता निकालि लैत छथि, मुदा आन कतेको ठाम जीवनक महाप्रश्न सभ कें उपस्थित करबाक उत्साह मे ओ स्त्री-पराधीनताक सनातन स्वर कें सहमति प्रदान करैत सेहो भेटि जाइत छथि, जेना 'पाँच पत्र' मे। तहिना, मैथिल राष्ट्रीयता आ भारतीयताक समन्वयक सेहो अनेक सूत्र हुनक लेखन मे दृष्टिगत होइछ। तहिया राष्ट्रीय जागरणक एक प्रधान लक्ष्य छल—एकात्मकता। से एकात्मकता एहन, जकर पृष्ठभूमि रूढ़ि आ विश्वास सँ नहि, बुद्धिवाद सँ निर्मित भेल होइक। हमरा लोकनि देखैत छी जे हरिमोहन झा निरन्तर एहन रूढ़ि सभक भंजन करैत छथि जे मैथिलक एकात्मकता कें खण्डित करैत रहल अछि। राष्ट्रीय जनान्दोलनक समर्थनक स्वर प्राय: पहिल बेर हुनक लेखन मे सुनाइ पड़ैछ, जे कि मैथिलक दुनिया लेल एक नव आयाम छल।

बीसम शताब्दीक तेसर दशक मे मैथिली साहित्य लग जे परीक्षाक घड़ी उपस्थित छल, तकर समाधान हरिमोहन झा अत्यन्त योग्यतापूर्वक केलनि। एहि तथ्य कें आरो अधिक विश्लेषित क'क' देखबाक बेगरता अछि। आलोचक लोकनि आम तौर पर हुनका सुधारवादी मानैत रहलाह अछि आ हुनक महत्त्वक आरेखन एहि सन्दर्भ मे केलनि अछि जे पूर्व सँ चल आबि रहल सुधारवाद कें ओ अपन सहमति प्रदान केलनि। ई बात हम पहिनहुँ कहलहुँ अछि। देखबाक थिक जे पूर्वक सुधारवाद सँ हरिमोहन झाक सुधारवाद कोन अर्थ मे भिन्न छल? पूर्वक रचनाकार लोकनि धर्मशास्त्रक सीमा मे रहिए क' सुधार चाहैत छलाह। एहि सीमा मे रहैत जतबा आधुनिकीकरण भ' सकौ, ततबे हुनका मान्य छलनि। एहि सीमा कें हरिमोहन झा तोड़लनि। ओ धर्मशास्त्र पर प्रहारात्मक रूख अपनौलनि। हुनका साहित्य मे बुद्धिवाद आ तर्कवादक सर्वोपरि मूल्य छनि। हुनक रुझान एहन सन छनि जेना जे तर्क नहि क' सकैछ से मूर्ख अछि, जे तर्क करैछ नहि से नि:स्वत्व अछि आ जे तर्क करत नहि से आन्हर अछि। ई हुनका साहित्यक एक एहन प्रवृत्ति थिक जे मैथिली साहित्य कें साक्षात रूप सँ भारतीय नवजागरणक संग जोड़ैत अछि।

आवश्यकता अछि जे हास्यावतारक चौखटि सँ बहार क'क' जागरण दूतक रूप मे हुनका आँकबाक प्रयास कयल जाय। आइ जे सांस्कृतिक संकट उपस्थित अछि ताहि मे हुनक सर्वोपरि प्रासंगिकता एही सँ सिद्ध भ' सकत।



संपर्क : **बद्रिका आश्रम, महिषी, सहरसा (बिहार)**
मो. : 9431413125